काका हाथरसी

फुलझड़ियां



हाथरसी

हास्य रचनावली

फुलझड़ियां

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली

प्रकाशक प्रभात प्रकाशन, चावडी बाजार, दिल्ली 6 • संस्करण प्रथम, 1982
सम्पादक गिरिराज शरण अग्रवाल • © काका हाथरसी • मूल्य साठ रुपये
मुद्रक मित्तल प्रिंटर्स, के-13, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

PHULJHARIAN (Complete Works of Kaka Hathrasi vol I) Rs 60 00

निवेदन

खण्ड : एक

काका ने सर्वाधिक मात्रा मे 'फुलझडियाँ' लिखी हैं। आप सोचेंगे यह' फुलझडी' क्या है ? वस्तुत यह है हिंदी का कुण्डलिया छद जिसमे छह पक्तिया होती हैं, किन्तु जो एक विशिष्ट शास्त्रीय पद्धति से बधा होता है। काका ने इसे ही 'फुलझडी' नाम दिया है। 'कुण्डलिया' छद जिस शब्द से प्रारम्भ होता है, उसी से समाप्त होता है। जैसे—

पॉकिट मे पीडा भरी, कौन सुने फरियाद ?
यह महँगाई देखकर, वह दिन आते याद।
वह दिन आते याद, जेब मे पैसे रखकर,
सौदा लाते थे बजार से थैला भरकर।
धक्का मारा युग ने मुद्रा की क्रैडिट मे,
थैले मे रुपये हैं, सौदा है पॉकिट मे।

किन्तु काका ने इस बन्धन को समाप्त कर फुलझडी के रूप मे कुण्डलिया छद को नया आयाम दिया। उनके ये छक्के इतने अधिक प्रसिद्ध हुए कि बाद के कितने ही हास्य कवियो ने इस शैली का लाभ उठाया।

प्रस्तुत प्रथम खण्ड मे काका की 450 कविताओ के 2000 के लगभग छक्के 'फुलझडिया' सकलित किए गए है।

आज काका हाथरसी हास्यरस के सर्वप्रिय और सर्वाधिक चर्चित कवि है। अब तो वे हास्यरस के पर्याय ही बन गए है। अपनी रचनाओ की ताजगी और सादगी के कारण काका जनता के कवि बन चुके है। वे सहज हास्य के कवि है। दूर की कौडी लाने अथवा बाल की खाल निकालने के श्रमसाध्य चक्कर मे वे नही पडते। उनकी कविता मे जहा कही व्यग्य उभरा है, वह भी कष्ट की सीमा तक पहुचाने वाली चुभन से दूर है। यदि उनकी रचनाओ मे चमत्कार के दर्शन करने है तो "लिंग भेद", "नाम बडे, दर्शन छोटे", "काका कोश" तथा 'नाम बडे हस्ताक्षर खोटे" जैसी रचनाओ का देखना पर्याप्त होगा।

हम जो कुछ भी भोगते हैं, वह समाज मे और समाज के कारण ही भोगते है।

समाज मे निहित अनेक विसगतिया हमारे दर्द और द्वन्द्व का कारण बनती हैं। काका जी ने अपनी फुलझडियो मे इनमे से लगभग सभी पर व्यग्य-प्रहार किए हैं। ये चाहे सामाजिक कुरीतिया हो अथवा आधुनिक कृत्रिम सभ्यता की विसगतिया, धार्मिक दुराग्रह हो अथवा आर्थिक विषमताए और शोषण की वृत्तिया, देश मे विद्यमान राजनीतिक विडबनाए एव विद्रूपताए हो अथवा असगत साहित्यिक परिस्थितिया। परन्तु उनके व्यग्य का उद्देश्य मात्र व्यग्य नही है। उनके व्यग्य मे निहित प्रयोजनीयता भी हास्य के आकर्षक और मायावी आवरण मे इस प्रकार झिलमिलाती है, जैसे बिहारी की सहज सलज्ज नायिका के चचल नयन घूघट पट से झाकते हैं। उन्होने अपनी बात कुछ इस अन्दाज से व्यक्त की है कि व्यग्य का आलबन भी उसे कटुता से ग्रहण न करके मन ही मन मुस्कराता रहता है।

ब्रजक्षेत्र का निवासी होने के कारण काका पर ब्रजभाषा का सहज प्रभाव है। उनकी भाषा मे न तो कही सस्कृत के कठिन शब्द हैं और न अन्य भाषाओ के अप्रचलित शब्द। हास्य-व्यग्य की दृष्टि से भाषा का जो सहज, सरल और स्वाभाविक रूप होना चाहिए, वैसा ही रूप काका की फुलझडियो मे उपलब्ध है। काका ने शब्दो के अनोखे प्रयोग और शब्दो की सर्जरी द्वारा भी हास्य की सृष्टि की है। अनेक स्थलो पर शब्दो का ऐसा प्रयोग किया गया है कि उनका अर्थ समझ मे आते ही हसी का फव्वारा-सा छूटने लगता है। अपनी काका कोश नामक लबी कविता मे उन्होंने शब्दो के अनेक रोचक अर्थ लगाए हैं :

भूतपूर्व का अर्थ है बहुत पुराना भूत,
मात-पिता जिससे डरें, उसका नाम सपूत।
उसका नाम सपूत, मूग छाती पर दलता,
आजादी के माने, मानो उच्छृखलता।
बदल गए शब्दार्थ, क्योकि बदली मर्यादा,
चेला माने "गुरु" "गुरु" के माने दादा।

इस खड मे सकलित कक्के के छक्के आपको गुदगुदाएगे, हसाएगे, आप कितनी ही गहरी चिन्ता मे डूबे हो, अपनी बत्तीसी छिपा नही पाएगे।

—डा० गिरिराजशरण अग्रवाल

विषयानुक्रमणिका

काका का जीवन परिचय 9
अगूठा छाप नेता 29
अंग्रेजी वन्दर 29
अतद्वन्द्व 29
98 गुण + 2 अवगुण 30
अणु विस्फोट 31
अदभुत औषधि 31
अनशन 32
अनुपात की बात 32
अभियान 33
अमरीकन हथियार 33
अमरीकी अष्टक 33
अर्थ कामना 34
अर्थवाद 34
अयाष्टक 34
अलकरण-हरण 35
अलीगढ का अन्दाज़ 35
अवमूल्यन 36
अश्रु विमोचन 37
असम-समस्या 39
असली और नकली 39
असली डाकू 40
आनू-नीन 40
आगरा-अनुभूति 41
आजादी की आग 44
आजादी के लाभ 45
आज्ञाकारी 45
आपात की बात 46
आम चुनाव 46
आर्य भट्ट (उपग्रह) 46
आशावाद 47
इश्क हकीकी 47
इस्तीफा 47
उज्जैन महिमा 48
1971 के मिस्टर 49
उल्टा पासा 50
उल्टी चक्की 50
ऊट और गधा 50
एक प्रश्न 52
एशिया 72 53
ऐतिहासिक 'बाबूजी' 53
ओनासिस-कैनेडी विवाह 54
काकी की फटकार 54
ओवर लोड 54
कट्रोल बनाम ब्लैक 55
कजूस 55
कजूस-कथा 56
कच्चा-सौदा 58

'कट' की हठ	58
कम्यूनिसिपल्टी	59
'कर' कमाल	59
'कर' दाता की पुकार	59
करुणाञ्जलि	60
कर्ज का मर्ज	60
कर्जा	60
कर्मयोगी	61
कलकत्ता-कीर्ति	61
कलयुगी कुंडलिया	63
कलियुगी वायु	63
कलियुगी होली	63
कवि-कल्पना	64
कविता का 'भाव'	64
कवि-सम्मेलन	65
कवि-सम्मेलनीय अनुभव	65
काका-काकी सवाद	66
काका की ऊंट-गाड़ी	67
काका-कोश	68
काकी उवाच	71
'का' की करुण कथा	71
कागजी कर्तव	71
कानपुर का काव्य	72
कान महान्	73
कार-चमत्कार	76
कालिज-स्टूडैण्ट	77
किसका डर ?	78
किस्सा कुर्सी का	79
कीलर-काण्ड	79
कीलर के लल्ला हुआ	80
कुत्ता-भक्त	81
कुत्तो के विस्कुट	82
कुमारी-क्लब	82
कूकर की पूछ	84
'कूपं' का कसाला	84
क्रिकेट मे 'कर' के करिश्मे	85
खटमल-मच्छर-युद्ध	85
खबरदार कविताए	86
गड़बड़ गुरु, चतुर चेला	93
खरदूषण	93
खल-वदना	94
गलती का छक्का	94
गुड़ और चीनी	94
ग्राम्य-जीवन	94
घाटे पर घाटा	95
घनचक्कर	95
घर का दूध	96
घासलेट और मक्खन	96
घड़ा-कुडली	96
चदे के फदे	97
चकबन्दी	98
चना-चीत्कार	98
चमचा-चरित्र	99
चले जाओ ससुराल	101
चाँद पर चढ़ाई	102
चाँद पर हनीमून	102
चाय-चक्रम्	102
चिकमगलूर के अंगूर	103
चित्त भी मेरी पट्ट भी मेरी	104
चुबन-चमत्कार	105
चुबन-चेतना	105
चुनाव की चोट	105
चुनाव-चक्कर	105
चुनाव-चातुर्य	106
चुनाव-चुटकी	108
चुनाव-दर्शन	108
चुनाव-सग्राम	109
चूक गए चौहान	115

चूल्हे-चौके का रोमांस	115	तिकड़म	130
चूहे और मुर्गे	116	तीन का अपशकुन	131
चेयरमैनों की राय	116	तीन का तमाशा	131
चैन की सांस	116	तीन की तराजू	135
चोटी के कवि	117	तेल के सोते	136
चोरों की रपट	117	तेली को ब्याह	136
छापा	117	तोप का लाइसैन्स	137
छापे	118	त्याग और भाग	137
छायावादी कवि	119	दंत-मंजन	138
छीनान्दोलन	119	दवाओं का दबदबा	138
जनसंख्या	119	दशमलव-पद्धति	138
जन्म और जमाई	120	दशमलव-प्रणाली	139
जमने वाले कवि	121	दहेज की बरात	139
जय बम् भोला	122	दाढ़ी और दाम्पत्य	141
जयहिन्द	122	दाढ़ी-दर्शन	142
जया-अमिताभ विवाह	122	दाढ़ी-महिमा	142
जलेबियां	123	दादा-छात्र	143
जहां न पहुंचे रवि···	123	दान-दर्शन	143
जिन्दा रेकार्ड	123	दार्शनिक दलबदलू	145
जैसे को तैसा	123	दिल की बीमारी	146
झूठ-माहात्म्य	125	दिल्ली-दर्शन	146
टटोलो	125	दुतरफा दृष्टिकोण	149
टाटरी बनाम लाटरी	125	दो-तिहाई बहुमत	149
टिट फॉर टैट	126	दो प्रश्न	150
डाईवोर्स कोर्स	127	पद्धास	150
डाक से डाका	127	लाल बुझक्कड़ उवाच	150
डिम्पल-राजेश विवाह	127	धक्का शाही	151
डैडी/पिताजी	128	धन्य अपोलो !	151
तथाकथित पत्रकार	128	धमधूसर कव्वाल	151
तदबीर-तकदीर	128	धर्माष्टक	152
तस्करी-तर्क	129	धार्मिक शंका	153
तर्क का अर्क	129	नई दिल्ली में नया वर्ष	153
तर्क-मरट	130	नई फैशन	154
तारिका बनाम दाढ़ी	130	नई समस्या	154

नई सरकार 155
नया बजट 156
नटवरलाल 157
नगरपालिका 157
नव रस-निरूपण 157
नवाबी सनक 158
नागपुर-नीति 158
नाम बड़े दर्शन छोटे 160
नाम बड़े हस्ताक्षर छोटे 164
निचोड़ की होड़ 167
नारी की कटारी 167
निमन्त्रण और परोसा 167
निराकार और साकार 169
निष्काम हड़ताल 169
नेता-अभिनेता 170
नेता के तीन रूप 170
नेता-नीति 170
नेता-नती मन्त्रणा 171
नेत्रदान 171
नोट की वोट 171
न्यायालय में भ्रष्टाचार 171
न्यूट्रम बम 172
पंचभूत 173
पंचशील के पंच 173
पंजाब-पुलिस 173
प॰ पेटूराम 174
पकड़-धकड़ 174
'प' दी पकड़ 175
पक्के गायक 175
पजामा और लंगोटी 176
पजामा बनाम पैंट 177
पतिव्रता 177
पत्नी-परिभाषा 177
पत्नीव्रता··· 178
पत्युपदेश 179
परदारेषु मातृवत् 179
परमार्थ 179
परान्न दुर्लभ लोके 180
परिचय 180
परिवार-नियोजन 181
परीक्षा-दीक्षा 181
पवित्रता 181
पश्चाताप 182
पहलवानी पकड़ 182
पाच की प्रतिष्ठा 183
पांचों धाम 183
पाचन-शक्ति 184
पारा-नियन्त्रण 184
पारिवारिक चित्र-विचित्र 184
पिकनिक ट्रिप 186
पिनक 186
पिल्ला 187
पूंजीवादी चुनौती 188
पुलिस-महिमा 190
पोशाक का प्रश्न 190
पोस्टकार्ड की फरियाद 191
पौराणिक तथ्य 191
प्रधानमन्त्री के रेडियो भाषण पर 191
प्रश्नोत्तर 192
प्रसिद्धि-प्रसंग 192
प्राकृतिक चिकित्सा 193
प्रिवीपर्स-संघर्ष 194
फाइल महिमा 194
फिल्मी-ताड़का 195
फिल्मी-नवेलिया 195
फिल्मी फुलझड़ी 196
फिल्मी-फुलझड़िया 197
फिल्मी-विज्ञापन 197

फिल्मी होली	198	भग की तरग	219
फल और पत्थर	199	भगाष्टक	219
फान परेड	201	भागलपुर भ्रमण	220
फैशन फोरकास्ट	201	भात बनाम भत्ता	221
फारनर बनाम फाइवनर	202	भारतीय कलाकार	221
फ्लू दशन	202	भाषा विधयक	222
बदर के वाल्व	203	भूत महगाई का	222
बचत-योजना	203	भूमि भवन-कर	223
बनाट की सनसनाहट	203	मत्री पद की लूट है	223
दाग वदना	204	मत्री-पुत्र	224
बदनाम शृखला	204	मद्र सप्तक के कवि	224
बनारसी साडी	204	मई मीमासा-1969	224
बम्बई की बानगी	206	मक्खन महिमा	225
बम्बइ म पानी की कमी	209	मक्खीमार आदोलन पर	226
बरात की दावत	209	मतदाता-परिचय पत्र	227
बस कण्ट्रोल	210	मद्य निषध	227
बापू के तीन बदर	210	मध्यावधि स्वप्न	228
बाबा जी	211	मन की मौज	228
बालक-बुद्धि	211	मनहूस सप्ताह मे बम्बई-यात्रा	229
बाल-वष मनाओ सहष	212	मसूरी-क्वीन	230
बीना बास बाबू दाम	212	मसूरी-यात्रा	230
बीस की टीस	213	मस्त गृहस्थ	234
बुढापे का विवाह	214	महगाई	236
बुढापे की खीज	214	महगाई का टोकरा	236
बुढापे की होली	214	महगाइ-कुडली	237
बुढापे का प्यार	214	महगाइ क्यो ?	237
बेकारी	215	महगाइ बनाम फैशन	237
बेचारा अध्यापक	216	महावीर	238
बेनजीर छक्के	216	महिला-वष	238
बेनजीर 'मीना	216	मा का दूध	238
बैगन-गुणगान	217	माओ फ्लू	239
बोगस फिल्म-कम्पनी	218	माता	240
बोनस मक्खी	219	मायाराम	240
[illegible]	219	मार व चमत्कार	240

माला-महिमा	243
मिट्टी का शेर	243
मिनिस्टरी का नुस्खा	244
मिलावट 1964-65	244
मिस और मिस्टर	245
मिस मसूरी	245
मुफ्तखोर	245
मुफ्त रस	248
मुर्गी या अण्डा	248
मुर्दों मे रोमाच	248
मुह के मुहावरे	248
मूछ-माहात्म्य	253
मृत्यु-कर	255
मेंडक-वन्दना	255
मेरठ की माया	256
मेरी इच्छा	257
मेल बनाम फीमेल	258
मैंडम और मच्छर	258
मोटा और पतला	359
मोटी पत्नी	262
मोटू मामा	262
युग-बोध	262
युद्धबन्दी	263
रन-रिसर्च	263
रामराज मे कामराज	263
राशि-चमत्कार	263
राष्ट्रगान का लाभ	264
राष्ट्रीय पशु	264
राष्ट्रीय पशु बाघ (चीता)	264
रिश्वत	264
रिश्वत-महिमा	265
रिश्वत-रानी	265
रूस मे हिन्दी	265
रेनी लव	266
रेल-हड़ताल	266
रैंगिंग	267
लड़ाई दुखदाई	267
लक्ष्मी बनाम गृहलक्ष्मी	267
लखपति	268
लव-लीला	268
लाउडस्पीकर-वंदना	271
ला-वर	273
लाल तिकोन से	273
लिंग-भेद	274
लिंग-भ्रम	276
लूट-नीति	276
लोकतन्त्रीय प्रेम	277
ल्यूना-लूलू	277
वकील	277
वर-विरोध	277
वर्षा-विरह	278
वाइफ से लाइफ	280
वाहन वर्णन	281
विनय-कला	282
विचित्र आशीर्वाद	283
वित्तमन्त्री से इण्टरव्यू	283
विदाई-दृश्य	283
विदा-वेला	284
विधाता की भूल	284
विधाता को चुनौती	284
विरहिनी	285
विरही	285
विविध भारती	285
वृन्दावन-यात्रा	285
शका	286
शका-समाधान	287
शतरज-कुडली	287
शब्द-सामर्थ्य	287

शर्मिला-पटौदी विवाह	288	सिगरेट-माहात्म्य	306
शिखर-वार्ता	288	सिगरेट-समीक्षा	307
शिमला-समझौता	289	सिद्धान्तवादी	308
शिव का धनुष	289	सिनेमा की सनक	308
शुभ कामना	290	सीमेण्ट का थैला	308
शुभ सम्मति	290	सुं की सुराही	309
शेख अब्दुल्ला की रिहाई	291	सुपुत्र	311
शाभा-शोध	291	सुरक्षा परिषद् मे बुद्धू	311
श्लील-अश्लील	294	सुरा-समर्थन	312
श्वान-परिवार	295	सूखा बनाम बाढ	314
सकट-काल	296	सूझ-बूझ	315
सक्षिप्तीकरण	297	स्वतन्त्रता का नमूना	315
सभोग-योग	297	स्वतन्त्रता-दिवस	315
सयाजक की तलाश	298	स्वतन्त्र पत्नी	316
सच्चा विद्यार्थी	298	स्वर्ण-नियन्त्रण	317
सजा म मजा	299	स्वर्गाष्टक	317
सत्य और झूठ	299	स्वागत	318
सत्रह रस	299	स्वास्थ-विज्ञान की उलटी गगा	318
सफल नेता	300	हजारी नोट पर चोट	321
सफल प्रत्याशी	300	हजूर और मजूर	322
सफल लेखक	300	हथियार-रहस्य	322
समझ का फेर	300	हाउस फुल	322
समझौता भग	301	हाथरस के लाला	323
समान अधिकार	301	हार-पर-हार	323
सरस्वती के घर लक्ष्मी	301	हिजडिस्तान	324
सवाल मे बवाल	302	हितोपदेश	324
ससुराल-धन दहेज	302	हिन्दी का मटका	325
सस्ती कविता	302	हिन्दी-प्रेम	325
सहनशक्ति	303	हिन्दी बनाम अगरेजी	325
सहानुभूति-अनुभूति	303	हिन्दी-भक्त	326
साड-वन्दना	303	हिन्दू-कोड-बिल	326
सावधान	304	हिप्पीवाद	327
साहब-सम्प्रदाय	305	हेमा-धर्मेन्द्र-विवाह	328

••

काका हाथरसी : एक परिचय

डाक्टर वैद्य बता रहे, कुदरत का कानून।
जितना हँसता आदमी, उतना बढ़ता खून॥
उतना बढ़ता खून, हास्य में की कंजूसी।
सुन्दर सूरत-मूरत पर छाई मनहूसी॥
कह 'काका' कवि,हास्य-व्यग्य जो पीते डट के।
रहती सदा बहार, बुढ़ापा पास न फटके॥

हास्य-व्यग्य के विशिष्ट कवि 'काका हाथरसी' का यह मात्र सिद्धान्त-कथन ही नही है, वरन् उन्होंने इस गुण को अपने जीवन का अभिन्न अग बना लिया है। बच्चों मे, बूढ़ो मे, घर मे, समाज मे, मच पर, बैठको मे—सभी स्थलो पर आपको उनकी मुस्कराहट और खिलखिलाहट देखने को मिलेगी। परिवार के छोटे-से-छोटे सदस्य के साथ भी वे गभीरता के कृत्रिम आवरण को उतार कर बात करते है, हँसी-मज़ाक करते है। घर म प्रवेश करते ही परिवार का हर सदस्य खिलखिलाता हुआ मिलेगा। यदि नही मिलेगा तो काका की निश्छल हँसी उसको हँसने के लिए मज्बूर कर देगी।

अपने जीवन के प्रारंभिक चरण मे काका ने जो-कुछ सहा है, सघर्षों और द्वद्वो के मध्य मे जैसा जीवन व्यतीत किया है, भूख और श्राति के जिन क्षणो मे अपने को व्यवस्थित किया है, गरीबी और दैन्य की जिस अवस्था मे भी मस्ती के साथ दिन काटे है, वे सारे दु ख, सघर्ष और अभाव मानो एक साथ ही रेचनक्रिया (कैथार्सिस) की ओर बढ गए और अभावो के साये म पलन वाला हमारा कवि उनपर एकसाथ अट्टहास कर उठा।

बात सन् 1942 की है। इस समय तक काका हाथरसी न 'काका' ही बने थे और न 'हाथरसी' नाम से प्रसिद्ध ही हुए थे। तब वे केवल प्रभुलाल गर्ग थे, जिन्हे प्राय लोग प्यार से 'प्रभु जी' या 'गर्ग जी' कहने मे आनन्द का अनुभव करते थे। एक छोटे-से दायरे के व्यक्ति इस बात को जानते थे कि काका कविता करते हैं। सार्वजनिक रूप से कविता सुनाने का अवसर भी एक विचित्र प्रकार से आया।

उन्हें एक रिश्तेदार की बारात में हाथरस से दघेंटा नामक गाव में जाना पड़ा। बारात जैसे ही दघेंटा पहुची, काका ने नोट किया कि वहा चारो ओर चीटो का एक सागर-सा लहरा रहा है। बैठें तो चीटे, चलें तो चीटे, भोजन करें तो पत्तलो पर चीटे और सोए तो बिस्तरो पर चीटे। तात्पर्य यह कि किसी को सौ मन चीटे एकत्रित करने का ठेका भी मिल जाए तो वह 'दघेंटा' से एकत्र कर सकता था। काका के दिमाग ने यह भी भापा कि यह विचित्र गाव है, जहाँ के आदमी तो पिद्दी-से हैं और औरतें लम्बी-तगडी, एकदम मर्दानी।

बारात चढी, विवाह-कार्य सम्पन्न होने लगे, वर और कन्या दोनो पक्षों के व्यक्ति एकत्रित होकर एक जगह बैठे। वार्तालाप होने लगा। तभी किसीका ध्यान काका की ओर गया और उनसे कविता सुनाने का सामूहिक आग्रह किया गया। काका ने थोडा-सा सोचा, एक तनाव-सा आया, होठो पर मन्द मुस्कान खिल उठी और उन्होने कहना प्रारम्भ किया

हाय रे दघेंटा, तोमे भरे निरे चेंटा।
मर्द सुअर के से घेंटा, करकेंटा-सी लुगाई है।।

तीसरी पक्ति कहने ही वाले थे कि कच्ची मिट्टी का एक ढेला तडाक् से काका की खोपडी पर आकर पडा मानो हिरोशिमा पर बम फटा हो। वह ढेला तो टूटकर चूर-चूर हो गया, परन्तु उस ढेले के साथ ही काका के हास्य-किले का फाटक जरूर खुल गया।

कविता सुनाने का एक अन्य अवसर मिला तो फिर वही 'तू-तू, मैं-मैं' हुई। काका को हाथरस से ही एक बारात मे मथुरा के समीपस्थ बेसवा कस्बे मे जाने का अवसर मिला। उस समय बारातें आज की तरह मात्र एक रात की नही होती थी। कई-कई दिनो तक दावत और उत्सव का कार्यक्रम चलता रहता था। जनवासा जैसा था, सो तो था ही, जब पहले दिन की दावत का सामान वहा आया तो उसे देखकर बारातियों की नाक-भौ सिकुडने लगी। खाना किसीको भी पसन्द न आया। क्या किया जाए ? अपनी बात कन्यापक्ष को कैसे बताई जाए ? यह समस्या सभी बारातियों को सता रही थी।

काका इस समय तक आसपास के क्षेत्र मे अपने उपनाम के साथ प्रसिद्ध हो चुके थे। हा, दाढी अवश्य नही रखी गई थी। यार लोगो को आखिर रास्ता सूझ ही गया। उन्होंने यह भार काका पर छोडते हुए कहा—"यार काका ! आज शाम कूँ बेटी वारे के घर पै दो-चार फुलझडी ऐसी छोडो कै मजा आय जाय।"

नये कवि की 'पढास' को तुष्ट करने के लिए इतना आग्रह ही पर्याप्त था। तुरत-फुरत आठ फुलझडियाँ तैयार कर ली गईं। प्रतीक्षा की घडी समाप्त हुई। बारात 'बराहार' के लिए बेटी वाले के दरवाजे पर पहुची। भोजन की पट्टियां बिछा दी गईं। पत्तलें सज गईं। भोजन परोसा जाने लगा। पूर्व-योजना के अनुसार

काका से उनकी कविता का अनुरोध किया गया। वे तैयार बैठे ही थे, इसलिए बिना किसी ननुच के उन्होंने पहली फुलझड़ी छोड़ी।

खट्टा-खट्टा रायता, मिर्चें दीनी झोंक।
आंखों से आंसू बहे, लगा नाक में छोंक॥
लगा नाक में छोंक, बराती भूखे भड़ुआ।
तोड़ें किन्तु न टूट सकें, दोनों से लड़ुआ॥
कह'काका' कविराय, सुनो री चन्दो चच्ची।
पूड़ी चक्लाछाप, कचौड़ी भेजी कच्ची॥

दुर्भाग्य की मार और सयोग की बात कि वहां घरात की औरतों में कोई चदादेवी भी निकल आई। 'चदो चच्ची' शब्दों का प्रयोग तो केवल 'कच्ची' की तुक मिलाने के लिए हुआ था, परन्तु कुछ लोग इतने अधिक नाराज हो गए कि वे आपे म न रह सके। क्रोध से भिनभिनाते हुए बोले—"औरतन पै आक्षेप कियौ जाय रह्यौ है, जे हमारी वेइज्जती है, मारौ सारेन कू।"

यह तो बारातियों के लिए घोर अपमान की बात थी। भोजन के लिए उठे हुए हाथ रुक गए। गाली के उस तेज स्वर से सभी सन्नाटे में आ गए। काका ने वहा भी कि भाइयो, कोई बात नही है। दूसरी बारातो मे औरतें पद्यात्मक गालिया देती हैं, यहा के मर्द गद्यात्मक गाली दे रहे है, भोजन भी पचाओ और गालियों को भी। परन्तु नई रोशनी के युवक बात कहा मानने वाले थे! वे अड गए और कहने लगे—"यार काका, आपको गालिया अच्छी लगती है तो खाइए, हम तो खाएगे नही।"

दोनो ओर 'तू-तू, मैं-मैं' का बाजार गर्म हो गया। बेसाख्ता गालियों की बौछार होने लगी। बात काफी बढ गई। भीड इकट्ठी हो गई। हाथो में जूते, चप्पलें और डडे आ गए। बस चलने की ही देर थी, तभी बेटी वाले की ओर से एक बडी-बडी मूंछो वाले नम्बरदार की तेज-तर्रार आवाज गूज उठी—"निकार ला रे छोरा! बन्दूक, कहा समझि रखी है सारेन नें।" भीड में से आवाज आई—"कहा है वह काका का बच्चा?" परन्तु वे तो काका थे, काका के बच्चा नहीं, इसलिए अपने एक मित्र को साथ लेकर चुपचाप वहा से गायब हो गए।

किसी भी बाराती ने भोजन नही किया। सभी नाराज थे। यह बात दूसरी है कि शाम को बेटी वालो ने और साथ ही उस मुछन्दर ने क्षमा मागी, बेटे वाले के पैरो पर टोपी रख दी। नाराजी तो दूर हो गई, परन्तु काका के बम का विस्फोट तो हो ही चुका था।

काका का व्यक्तित्व उनका स्वय का निर्मित है। विरासत म उनको कुछ नही मिला। अपने साहित्यिक जीवन के सुदीर्घ और सुदृढ भवन के निर्माण के लिए एक-एक सामग्री उन्होंने स्वय जुटाई है, यहा तक कि उसकी चिनाई का भ्रातिपूर्ण

कार्य भी उन्होने स्वय किया है। परिणामत इस भवन की नीव इतनी मजबूत रखी गई है कि अनेकानेक सघर्षो और अभावो के 'झटके' उसे हिला नही पाए। कोई भी भूकप उसमे दरार न डाल पाया। एक एक सीढी चढकर वे अपनी प्रसिद्धि की अट्टालिका पर पहुचे है। किसी अन्य आधुनिक कवि को अपने जीवन मे इतनी लोकप्रियता प्राप्त नही हुई, जितनी काका हाथरसी को प्राप्त हुई है। रेल के प्रत्येक डिब्बे, प्रत्येक मोटर, प्रत्येक हवाई जहाज, बाजार अथवा चौराहे पर काका के नाम अथवा उनकी दाढी को पहचानने वाले मिल ही जाते है। स्टेशनो पर उनके लिए इतनी भीड लग जाती है, जैसे किसी 'फिल्म स्टार' के लिए और फिर यही आवाज आती है—"वे रहे काका हाथरसी।"

काका हाथरसी का जन्म अग्रवाल वैश्य परिवार मे हुआ। उत्तरप्रदेश मे व्रजभूमि के अन्तर्गत एक व्यापारिक नगर है हाथरस। काका के प्रपितामह गोकुल महावन से आकर यहा बस गए थे। उन्होने यहा बर्तन-विक्रय का कार्य प्रारम्भ किया। पितामह श्री सीताराम जी ने अपने पिता के व्यवसाय को जारी रखा। उनके वृद्धि को प्राप्त परिवार मे सम्पत्ति का बटवारा होने पर बर्तन की दुकान परिवार की दूसरी शाखा पर चली गई। परिणामतः काका के पिता श्री शिवलाल गर्ग को एक बर्तनो की दुकान पर मुनीमी करनी पडी। इन्हीके परिवार मे सवत् 1963 की आश्विन कृष्णा 15 (18 सितम्बर, 1906) को 'काका' का जन्म हुआ।

यह वह समय था जबकि प्लेग ने हजारो घरो को उजाड दिया था। यह महामारी देश के एक भाग मे फैलती तो एक ओर स गाव और शहर सबको समाप्त करती चली जाती। शहर से गावो और गावो से नगरो की ओर व्याकुलता के साथ भागती, बिलखती भीड हृदय को कपित कर देती थी। कितने ही घर उजड गए, बच्चे अनाथ हो गए। किसी-किसी परिवार मे नन्हे-मुन्नो को पालने वाला भी कोई नही रहा। काका के परिवार पर भी जैसे बिजली गिर पडी। वे अभी 15 दिन के ही थे कि सभी को बिलखता छोडकर उनके पिता स्वर्ग सिधार गए। 20 वर्ष की मा बरफीदेवी, जिन्होने अभी ससार को जानने-समझने का प्रयत्न ही प्रारम्भ किया था, इस वज्रपात से व्याकुल हो उठी मानो सारा विश्व उनके लिए सूना और अन्धकारमय हो गया। पिता के पश्चात गृहस्थी को सम्हालने की समस्या विकटतर हो गई। बडे भाई भजनलाल की अवस्था उस समय मात्र दो वर्ष की थी। मा पर दो-दो बच्चो के पालने का उत्तरदायित्व आ गया।

मुनीमी के अपने थोडे से काल मे शिवलाल जी कोई सम्पत्ति अर्जित न कर सके थे। पैतृक रूप से प्राप्त एक छोटा-सा मकान हाथरस मे था। अब वह बरफीदेवी को काटने को दौडता था। जब जीवन का सहारा ही चला गया तो किसके सहारे उस मकान मे रहती। प्लेग अपने पूरे जोर पर था और हाथरस मे साधन-

हीनता की चरमावस्था, परन्तु इस निराशा और दुरवस्था मे भी माता का विवेक समाप्त नही हुआ। उन्होने अपने दोनो बच्चो को सीने से लगाया और अपने मायके इगलास की ओर दौड पडी। अपनी बहन के अनिर्वचनीय दु ख मे उनके भाइयो ने पूरी सहानुभूति प्रकट की। धीरे-धीरे काका और उनके भाई इसी परिवार के अग हो गए।

इस बीच मा ने अपने भाइयो के परिवार के प्रत्येक सदस्य की सेवा म स्वय को अर्पित करके अपनी शोकाकुल स्थिति को टालने की पूरी चेष्टा की, परन्तु उनको कही पर भी मानसिक शाति न मिली। हृदय म उठने वाली हूक हिलोरें उनको कपित कर जाती। उमड-उमडकर आते आसुओ को पीते हुए अवरुद्ध कठ से उन्होने जीवन के उन दु खद क्षणो को व्यतीत करने का असफल प्रयास किया और एक दिन अपने पति द्वारा छोडे हुए हाथरस के सूने मकान म आ गईं। बालको के भविष्य और उनके पालन पोषण की समस्या उन्ह दिन-रात व्याकुल कर रही थी। अतत मामाओ ने काका के पालन पोषण के लिए आर्थिक सहायता की व्यवस्था कर दी। उनके खर्चे के लिए नियमित रूप से आठ रुपया माहवार आने लगा। काका के मामा हलवाई की दुकान करते थे। प्रत्येक सप्ताह वे हाथरस आते और अपने साथ लड्डू-पेडो का चूरा भी बाध लाते जो उनके नाश्ते का आधार बनता था। काका के शब्दो मे—'एक समय रोटियां बनती थीं, दोनो समय उनका सेवन किया जाता था। घी, दूध, दही के दर्शन दुर्लभ थे।"

समय बीतते देर नही लगती।

सन् 1916 तक अर्थात् काका के 10 वर्ष का होने तक भी उनकी शिक्षा का नियमित प्रबध न हो पाया। ऐसी स्थिति मे उनके मामाश्री उनको अपने घर इगलस (काका की ननसाल) लिवा ले गए और वहा के स्कूल मे दाखिल करा दिया। काका शरारत-पसद प्रारभ से ही थे, अत विद्यालय मे नियमित रूप से पिटाई होती थी। जब हमने इस पिटाई के सबध म काका का ज्यादा कुरेदा तो उन्होंने कुछ अधिक सच्ची बात इस तरह बताई—

"कविता के कीटाणु बचपन से ही हमारे अन्दर प्रवेश कर गए थे। इसम अपना दोष भी क्या है जी? विद्यार्थी-जीवन इगलास मे बिताया, जहां हमारी ननसाल थी। तहसीली स्कूल म पढते थे, जब-तब कुश्ती भी लडते थे।

"उन दिनो (सन् 1921) विद्यार्थियो की पिटाई खूब होती थी, हम भी पिटते थे, लेकिन शर्म की वजह से घर आकर नही कहते थे। जिस दिन अधिक पिटाई हो जाती तो कह देते कि आज कुश्ती लडे थे, उसम चोट लग गई है। हमारी मामी रात को हमारी सिकाई कर देती थी।

"तहसीली स्कूल छोडने के बाद इगलास के ही एक वकील साहब से दो घटे रोजाना अग्रेजी पढने लगे। वकील साहब काफी भारी-भरकम, गोल-मटोल थे।

जब कभी वे बाजार मे निकलते तो छोटे-छोटे बच्चे 'बिना सूड का हाथी आया' कहकर भाग जाते थे। दुर्भाग्य से एक दिन हमारे काव्य-कीटाणुओ ने भी जोर मारा और यह कविता लिखने लगे—

एक पुलदा बाधकर, कर दी उसपर सील।
खोला तो निकले वहा, लखमीचन्द वकील॥
लखमीचन्द वकील, ऊट-गाडी मे जायें।
पहिये चू-चू करे, ऊट को मिरगी आयें॥'

"अभी दो लाइन और लिखने की सोच रहे थे कि हमारा विरोधी एक लडका इस कविता को छीनकर वकील साहब को दे आया। उस दिन हमारी जो पिटाई हुई है उसे इस जन्म मे तो भूलने का प्रश्न ही पैदा नही होता, अगले सात जन्म तक भी याद रहेगी। वे वकील साहब तो स्वर्गवासी हो चुके है, सौभाग्य से यदि हम भी उनके पास पहुच गए तो बदला लिए बिना नही मानेंगे, क्योंकि अब जमाना जो बदल गया है। पहले अध्यापक जी छात्रो को पीटते थे, आज के छात्र अध्यापको को पीटते हैं।"

एक अन्य शरारत का जिक्र करते हुए काका ने कहा—

"हमारे मामा स्व० मन्नीलाल जी नाटक खेलने-खिलाने मे बहुत दिलचस्पी रखते थे। इधर-उधर से कुछ चन्दा इकट्ठा करके शेष धन अपने पास से लगाकर जनता को बिना टिकट नाटक दिखाते।

"एक बार 'श्रीमती मजरी' नामक नाटक होना था। इसमे हास्य-अभिनेता के रूप मे एक पात्र हैं नैना जी। राजस्थानी वेश-भूषा, एक आंख से काने यह महाशय कोर्ट मे ऊटपटाग गवाही देकर दर्शको को खूब हँसाते हैं। इस पार्ट को खेलने के लिए कई लडके उम्मीदवार थे, किंतु उन दिनो अपने अन्दर भी हास्य के कीटाणु यथेष्ट मात्रा मे विद्यमान थे, इसलिए यह भूमिका हमे ही प्राप्त हुई।

"नाटक वाले दिन मेकअप रूम मे हम मेकअप की प्रतीक्षा मे बैठे थे। पाउडर लगना था, पगडी बधनी थी, मूछें लगनी थी, कानी आख कागज पर बनाकर असली आख के ऊपर चिपकानी थी, इतने काम होने थे, किन्तु मेकअप करने वाला लडका हमसे ईर्ष्या रखता था, क्योंकि वह भी इसी पार्ट का उम्मीदवार था। बहुत देर हो गई हमको बैठे-बैठे। वह लडका अन्य पात्रों का मेकअप कर रहा था। हमारे बार-बार बुलाने पर भी उसने ध्यान नही दिया तो हम एक शरारत सूझी। वही पर कोयला पडा हुआ था, पत्थर पर थोड-सा पानी डाला और कोयला घिसकर हमने अपने मुखमडल पर पोत लिया। थोडी देर मे सब अभिनेता टीपटाप हो गए तो मामा जी ने कहा—अरे, वह प्रभु कहा है? नैना जी का पार्ट है उसका।—हमारी तलाश होने लगी। यद्यपि हम वही बैठे हुए थे, किन्तु कोई नही पहचान सका, क्योंकि चेहरे पर कोयला पुता हुआ था। हम चुप-

चाप रूठे हुए बैठे थे, लेकिन मन म अभिनय करने की उ सुकता फुदक रही थी, अत हमसे नही रहा गया। दूर से ही चिल्लाकर कहा—"मामा जी, मैं यहा हूँ।" उन्होने हमारी शक्ल देखकर कहा—"अरे, तेरा तो नैना जी का पार्ट है, भूत बना हुआ क्यो बैठा है? किसने किया है तेरा मेकअप?' हमने झूठ-मूठ उसी लडके की ओर इशारा कर दिया जो मेकअप कर रहा था। मामा जी ने उसे डाटते हुए "कहा—क्यो वे गधे, नैना जी का मेकअप ऐसा ही होता है?" उस बेचारे ने बहुतेरी सफाई दी कि मैंने नही किया है, किन्तु हमने उसकी एक नही चलने दी। रोते हुए हमने कहा—"झूठ बोलता है, तूने ही तो लगाया है हमारे मुह पर कोयला घिसकर।" मामा जी ने उसके गाल पर एक चाटा जड दिया। इसके बाद वह रूठकर भाग गया। उसे मनाने के लिए आदमी दौडे। इधर हमारा मुह साबुन से धुलाकर जल्दी से मेकअप किया गया।

"उस शरारत के कारण उस दिन नाटक एक घटे लेट शुरू हुआ, किन्तु उस लडके का पिटवाने मे उस दिन हमारी आत्मा को जो शान्ति प्राप्त हुई थी वह आज तक याद है।"

इगलास से शिक्षा प्राप्त करके हाथरस आने के बाद

सन् 1922 की वह दोपहर कितनी सुखद होगी, जबकि हमारे चरितनायक को एक आढत की दुकान पर तक्पट्टी लिखने का काम मिला। आयु 16 वर्ष के लगभग थी। दुकान पर अनाज से भरी हुई गाडिया आती थी, उसने अनाज तोल कर बोरो मे भरा जाता था। इन बोरो के वजन का हिसाब रखना ही उनका काम था। सुबह सात बजे अपनी नौकरी पर पहुचना होता था, दोपहर को भोजन और सध्या के समय बगीची आदि के लिए अवकाश मिलता था। इसके बाद पुन रात्रि म देर तक दुकान पर काम करना पडता था। वेतन था छह रुपय मासिक। अभावो और सघर्षों को ढोने वाली मा को उस समय कितना सुख मिला होगा जब उसके पुत्र ने महीने के अन्त म उसकी हथेली पर अपना एक माह का पूर्ण वेतन रखा होगा।

काका को नियमित विद्यालयी शिक्षा न मिली तो क्या! भविष्य और भाग्य उनको निरन्तर उत्प्रेरित कर रहा था। बाल्यावस्था से ही उनम अध्ययन की उत्कट अभिलाषा थी। धीरे धीरे इस रुचि का विकास हुआ और परिस्थितियो न इसमे किसी-न किसी प्रकार सहयोग प्रदान किया। यद्यपि आढत की दुकान पर इतना अधिक काम था कि साधारण स्थिति का व्यक्ति उसके परिश्रम के साथ अन्य कोई बात सोच भी नहीं सकता था, तथापि काका को जब भी अवकाश मिलता, वे किसी न किसी पुस्तक के पढने म खो जाते। समय मिलने पर स्थानीय 'गोखले-पुस्तकालय' से पुस्तके लाकर पढने म ही परम आनन्द प्राप्त होता। इस प्रकार

स्वाध्याय से ही उन्होंने हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया।

अपने कार्य के प्रति लगन और उत्साह के परिणामस्वरूप काका ने निरन्तर विकास किया है। कार्य के प्रति उनकी ईमानदारी और तत्परता से प्रभावित होकर एक अन्य दुकानदार ने उन्हें अपनी दुकान पर रख लिया। वेतन भी अब अधिक मिलने लगा। यहा पर मिले कार्य मे पहले की अपेक्षा शारीरिक परिश्रम भी कम था। यहा वे सही अर्थों म मुनीम हो गए। भाग्य ने और अधिक साथ दिया। स्थान मे फिर परिवर्तन हुआ और पचीस रुपये मासिक पर रोकड रखने का कार्य मिल गया। अब काका युवावस्था की ओर कदम बढा चुके थे। आयु थी इक्कीस वर्ष के लगभग और सन् था उन्नीस सौ छब्बीस। इसी वर्ष काका का विवाह भी हुआ परन्तु सौभाग्य के इन दिनो के पीछे अभाव और सघर्षों के कितने क्षण छिपे थे, यह किसने जाना-समझा था? इतना अवश्य है कि दिन के प्रखर प्रकाश के पश्चात् जब रात्रि की कालिमा पृथ्वी पर व्याप्त हो जाती है तो सुखकर प्रभात का उदय भी अवश्य होता है। इसी कारण चेतन मनुष्य सुख दु ख के घात प्रतिघातो को निश्चिन्त भाव से सहन करता चलता है।

सन् 1928 मे काका पर एक बार पुन आकस्मिक वज्रप्रहार हुआ। अपनी जिस नौकरी के बल पर उनके जीवन मे किंचित् स्थायित्व आ चला था, वह अचानक ही छूट गई। व्यापार के गिरते दिनो मे जब लाला जी ने अपने कर्मचारियो की छटनी की तो काका भी उसकी चपेट मे आ गए। एक बार फिर चिन्ता और असामजस्य का वातावरण बन गया। परिवार का उत्तरदायित्व उठाने के लिए वे अपने कधे सबल कर ही रहे थे कि उनको तोडने का अचीन्हा प्रयत्न किया गया। क्या करें, क्या न करें? परेशानियो ने अनेक प्रश्न खडे कर दिए, परन्तु उत्तर किसीका भी दिखाई नही दे रहा था। ऐसी जटिल परिस्थिति मे भी काका की मस्ती कम नही हुई। इसका प्रमाण उनके शब्दो मे—"जब दुकान पर काम कम हो गया तो हम भी नौकरी से निकाल दिया गया। घर म खाने के लाले पड गए। परन्तु मैं उस स्थिति मे भी हाथरस की नहर के पुल पर बैठकर बासुरी बजाया करता था।"

अधकार मे क्षीण प्रकाश-किरण के समान कभी-कभी नई-नई योजनाओ के माध्यम से आशा और सुख का ससार झिलमिलाता हुआ दिखाई देता था और एक दिन ऐसा अनुभव भी हुआ कि कोई स्वर्ण-किरण धीरे-धीरे उनके वायुमडल को आलोकित करती जा रही है। दैववशात् उनका परिचय प० नन्दलाल शर्मा मे हुआ। शर्मा जी हारमोनियम और तबला बजाना जानते थे, काका को बासुरी बजाने का अच्छा अभ्यास था। दोनो ने सलाह की—"क्यों न हम इस विषय पर एक पुस्तक लिखकर उसको छपाए? खाली तो हैं ही, समय भी कट जाएगा, अब तो यह पहाडा जैसा लगने लगा है।"

समस्या इतनी शीघ्र सुलझने वाली न थी। प्रश्न उठा कि पुस्तक लिख भी ली तो उसके प्रकाशन के लिए धन कहा से आएगा? काका के पास उस समय कुल-जमा पूजी थी—अस्सी रुपये। सारी स्थिति अपने बडे भाई भजनलाल जी को बताई। उन्होंने आधे मन से स्वीकृति दे दी। मां के पास प्रश्न का कोई उत्तर नहीं था। वह तो अभी तक आर्थिक कष्ट सहती आई थी, उसे दु ख झेलने का अभ्यास था। सुबह से शाम तक दोनो निठल्लुओ को बैठा देखकर उसे अत्यधिक क्षोभ होता, परन्तु वह कहते-कहते भी उसको पी जाती। निरन्तर अभ्यास और परिश्रम के पश्चात पुस्तक तैयार हो गई। नाम रखा गया—'हारमोनियम, तबला, बासुरी मास्टर' (म्यूजिक मास्टर)। पुस्तक छापने के लिए मथुरा के 'अग्रवाल प्रेस' के स्वामी श्री प्रभुदयाल मीतल से बात की गई और पुस्तक छपकर तैयार हो गई। पुस्तक का आशातीत स्वागत हुआ। यही पुस्तक सगीत-कार्यालय, हाथरस की रीढ की हड्डी बनी। तब से आज तक इसके 21 सस्करण प्रकाशित हो चुके है। यह घटना नवम्बर, 1930 की है। बहुत कम व्यक्ति यह जानते होगे कि हास्य रस के प्रसिद्ध कवि काका हाथरसी और 'सगीत' मासिक एव सगीत-कार्यालय का सस्थापक प्रभुलाल गग एक ही व्यक्ति हैं। पाच वर्ष तक पुस्तक की आय से उत्साहित होकर काका न सन 1935 मे 'सगीत' मासिक पत्र प्रकाशित करने की योजना बनाई। यह पत्र आज तक अपनी समृद्ध अवस्था मे सगीत की सेवा कर रहा है, परन्तु इसके प्रकाशन के प्रारम्भिक वर्षों म सपादन से लेकर डिस्पैचिंग तक का सारा कार्य उनको स्वय ही करना पडता था। आज कौन विश्वास करेगा कि अनेकानेक कठिन परिस्थितिया मे पलने वाला यह पत्र निरन्तर चालीस वर्षों से प्रकाशित हो रहा है।

सगीत कला के प्रतिनिधि के मासिक पत्र 'सगीत' के प्रकाशन के साथ ही काका ने 'सगीत विशारद', 'सगीत सागर' और 'रागकोप' नाम से तीन सगीत ग्रन्थो की रचना भी की। इनम सगीत सागर' और 'सगीत-विशारद के क्रमश 8 और 9 सस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। इसके साथ ही उनके द्वारा सस्थापित सगीत-कार्यालय, हाथरस से शताधिक सगीत सबन्धी उच्चस्तरीय ग्रन्थों का प्रकाशन भी हुआ है, जिनमें अनेक दुलभ ग्रन्थ हैं।

काका की प्रथम कविता 'गुलदस्ता' मासिक के मुखपृष्ठ पर सन 1933 म प्रकाशित हुई। यह पत्र 'चांद' के सपादक स्व० आर० सहगल के सपादकत्व म प्रकाशित होता था। उस समय काका की आयु लगभग 29 वर्ष थी। अपनी प्रथम कविता के प्रकाशन पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए काका ने कहा—'सवप्रथम अपनी रचना 'गुलदस्ता' के मुखपृष्ठ पर देखकर मुझे ऐसी प्रसन्नता हुई थी जैस किसी विधायक को मत्रीपद मिलने पर होती है।" यह कविता काका के वास्तविक नाम (प्रभुलाल गर्ग) से प्रकाशित हुई थी। कविता यह थी

घुटा करती हैं, मेरी हसरतें दिन-रात सीने में,
मेरा दिल घुटते-घुटते सख्त होकर सिल न बन जाये।
उन्हीकी याद मे, मैं रात-दिन चीखें लगाता हूँ,
यही डर है दिले-नादा, यह बिडला मिल न बन जाये।
बिना लाइसेंस के वो शोख घुस आता है इस दिल मे
बचाना दोस्तो, ये दिल चुहो का बिल न बन जाये।
वे मोटी हैं तो होने दो, मैं पतला हू तो रहने दो,
नजर लगकर मेरी मोटर कही साइकिल न बन जाये।
उदू से जब वे लडती हैं, तो बन्दा लेता है चन्दा,
लडाई जीत कर वह नाजनी, चर्चिल न बन जाये।
कलब मे नाचती हैं साथ लेकर एक साहब को,
बचाना मेरी गीता को, कही बाइबिल न बन जाये।
अदाए उनकी बरछी हैं, निगाहे उनकी खजर हैं,
बचे रहना मिया, जालिम है वह कातिल न बन जाये।
ये सीना चाक कर डाला, जलाकर खाक कर डाला,
परेशा होके आखिर खाक मेरी दिल न बन जाये।

इस प्रकार डॉ० शेरजग गर्ग का यह कथन—"इन्होंने (काका ने) लगभग पचास वर्ष की आयु मे कविताए लिखनी शुरू की"[1] नितात भ्रामक है, क्योकि लगभग 40 वर्ष की आयु (सन् 1946) मे तो काका की प्रथम पुस्तक 'काका की कचहरी' भी प्रकाशित हो चुकी थी।

सन् 1940 से 1942 के बीच का समय काका को उनके सीमित क्षेत्र से निकालकर जनता के बीच लाया। आत्मलीनता समाजोन्मुख हो गई। उस समय तक के 'प्रभुलाल' अब 'काका' बन गए। स्वय नही बने, जनता द्वारा ही बनाए गए। अपनी ननसाल इगलास मे अभिनीत किए जाने वाले सामाजिक नाटकों मे कॉमिक पार्ट करने का अभ्यास हाथरस मे गुल खिलाने लगा। हाथरस मे 'अग्रवाल-नवयुवक सभा' की ओर से मचित होने वाले नाटकों मे काका कई बार विदूषक के रूप मे उतरे। उन्होंने इस बीच 'काका' नाम के एक ऐसे समाज-विरोधी कृत्यो में लगे व्यक्ति का रोल अदा किया, जो समाज को अभिशप्त करने वाली कुप्रथाओं का हिमायती था। इस पात्र के हास्य-व्यग्य युक्त अभिनय ने समाज की गर्हित रूढिवादिता और विद्रूपता को सभी के सामने नगा कर दिया। उन्होंने इतनी कुशलता से इस पात्र का अभिनय किया कि मच से उतरकर लोक-जीवन मे भी 'काका' नाम उनको पुरस्कार मे प्राप्त हो गया।

1. स्वातत्र्योत्तर हिन्दी कविता मे व्यग्य : पृ० 362

सन् 1942 मे उन्होंने 'आज की दुनिया' नाम से एक सामाजिक नाटक भी लिखा, जो उसी वर्ष 'अग्रवाल नवयुवक सभा' द्वारा अभिनीत किया गया।

विदूषक का अभिनय काका के हास्य-भवन मे प्रवेश का द्वार भी बना। हास्य-कवि के रूप मे उन्हे सबसे पहला मच मिला अपने नगर मे लगने वाले दाऊ जी के मेले मे। प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ला 6 (देवछट) पर हाथरस मे दाऊ जी का मेला लगता है। (हाथरस श्रीकृष्ण के ज्येष्ठ भ्राता बलराम जी का क्रीडा-क्षेत्र रहा है। उन्हीके नाम पर यहा एक मदिर बना हुआ है।) सन् 1944 मे आयोजित कवि-सम्मेलन मे अन्य स्थानीय कवियों के साथ काका को भी आमन्त्रित किया गया। एक गैस के हडे के प्रकाश मे 10-12 कवियों को जनता ने श्रद्धा के साथ सुना। कवि सम्मेलन समाप्त होते ही हडा बुझा दिया गया और कवियो को पूडिया खिलाकर छुट्टी दे दी गई। पारिश्रमिक तो दूर की बात थी, उस समय के एक कवि-सम्मेलन आयोजक के कथनानुसार--'तब ऐसे आयोजनो पर केवल 20-25 रुपये खर्च आता था।'

सन् 1944 के पश्चात् काका की इस मचीय सीमा का विस्तार प्रारभ हो गया। अलीगढ, मथुरा, अतरौली, खुर्जा, इगलास आदि मे आयोजित किए जाने वाले कवि-सम्मेलनो मे अन्य हाथरसी कवियो के साथ काका को भी अनिवार्य रूप से आमन्त्रित किया जाता था।

सन् 1946 में 'काका की कचहरी' नाम से काका की हास्य-कविताओ की प्रथम पुस्तक प्रकाशित हुई। इसमे उन्होंने अपनी कविताओ के साथ ही तत्कालीन कई अन्य अच्छे हास्य-कवियो की रचनाओ को भी सकलित किया है। इसके पश्चात् दाढी रखने तक उनकी दो पुस्तकें और प्रकाशित हुईं—पिल्ला (1950), म्याऊ (1954)।

काका की दाढ़ी, जो अब उनका 'ट्रेडमार्क' ही बन चुकी है, सन् 1954 मे उनके चेहरे पर अपना अधिकार जमा बैठी। इसी दाढी के प्रताप से काका जनता के प्रिय कवि बन गए। काका ने स्वय दाढी की महिमा इस प्रकार गाई है :

'काका' दाढी राखिए, बिन दाढी मुख सून।
ज्यो मसूरी के बिना, व्यर्थ देहरादून॥
व्यर्थ देहरादून, इसी से नर की शोभा।
दाढी ही से प्रगति, कर गये सत विनोबा॥
मुन विसिष्ठ यदि दाढी, मुह पर नही रखाते।
तो क्या वे भगवान राम के गुरु बन जाते ?

सन् 1957 मे भारत के प्रथम स्वतन्त्रता-सग्राम की शताब्दी मनाई गई। इस वर्ष दिल्ली के लाल किले मे आयोजित कवि-सम्मेलन मे काका को भी प्रथम बार आमन्त्रित किया गया। परन्तु इस बार प्रत्येक आमन्त्रित कवि से 'क्रांति' पर एक

कविता लिखने को कहा गया। काका ठहरे हास्यरस के कवि। वे वीररस म किस रास्ते म घुसपैठ करें ? समस्या विकट थी। आखिर काका अपनी रचना लेकर लालकिले के मच पर पहुच गए। जब सात-आठ कवि मच पर दहाड चुके, तब काका का नाम पुकारा गया। वीर रस के बाद हास्य को जमाना बहुत मुश्किल काम था, परन्तु काका ने क्राति को भी हास्य-रस मे डुबो दिया जिसका प्रमाण उनकी 'क्राति का बिगुल' कविता है। (यह कविता इसी पुस्तक के कविता-खड म सगृहीत है) कविता-पाठ समाप्त होते ही ठहाको के साथ मच पर विराजमान कविया की आवाजें आने लगी—"वीर रस म इससे अच्छा हास्य और क्या होगा ?" सम्मेलन के सयोजक पथश्री गोपालप्रसाद व्यास ने काका को अपन कठ से लगा लिया और गद्गद स्वर से कहा—"काका! आज तुम्हारा झडा लालकिले पर गड गया।" और वास्तव म झडा गड ही गया।

इसके बाद हास्य-व्यग्य के आकाश मे काका का सितारा अपने पूर्ण प्रकाश के साथ प्रकाशित हो उठा। परिणामत दुलत्ती (1961), काका के कारतूस (1963), काकदूत (1964), काका की फुलझडिया (1965), काका के कहकहे (1966), काका की काकटेल (1967), चकल्लस (1668), काकाकोला (1968), हँसगुल्ले (1969), काका के धडाके (1969), कह काका कविराय (1970), फिल्मी सरकार (1972), जय बोलो बेईमान की (1973) नाम से 13 कविता-पुस्तकें प्रकाशित हुई। इनमे 'काकदूत' हास्य व्यग्य से परिपूर्ण खड-काव्य है। इसमे वियोगी काका न 'काक' के माध्यम से रुष्टा काकी के पास अपना सदेश भेजा है। अपने दूत कौआ को काकी के पास पहुचने का मार्ग बतात हुए काका ने देश के 35 मुख्य नगरो का वर्णन किया है। इन नगरो म भ्रमण के माध्यम से काका ने भारत की सस्कृति, शिक्षा, आचार-विचार, व्यवहार, राजनीति, धर्म-पाखण्ड, आर्थिक स्थिति और व्यवसायो पर हास्य व्यग्य की रग बिरगी पिच-कारिया छोडी है। हिन्दी-कविता को इस बात से गौरव का अनुभव होगा कि काका की अकेली पुस्तक 'काका की फुलझडिया' की दो लाख प्रतिया बिक चुकी है।

सन् 1963 मे 'काका के प्रहसन' नाम से उनके आठ प्रहसनो का सग्रह प्रकाशित हुआ। अपनी सरसता, सरलता और परिहासात्मक शैली के कारण उनको अपार सफलता प्राप्त हुई। काका के य प्रहसन अब तक सैकडो जगह क्लबो, स्कूलो एव कॉलेजो मे सफलतापूवक स्टेज किए जा चुके हैं।

सन् 1966 मे आपने अपनी 'महामूर्ख सम्मेलन' पुस्तक को पूरा किया जिसम हास्य व्यग्यात्मक निबध सकलित किए गए हैं। यह इसी वर्ष प्रकाशित भी हुई।

सन् 1974 तक 'हिज मास्टर्स वायस' (एच० एम० वी०) ने काका की कविताओ के तीन रिकार्ड उनके स्वर मे तैयार किए तथा 1975 म बम्बई की 'सिनो-रिया एड कम्पनी' ने एक घटे का कैसिट भी रिलीज किया।

सन् 1966 और 1967 काका के जीवन के स्वर्णिम वर्ष हैं। सन् 1966 की 15 अक्तूबर को 'व्रज कला केन्द्र, हाथरस' ने एक भव्य आयोजन करके काका के 'साठा' होने के उपलक्ष्य में उनकी 'हीरक जयन्ती' मनाई। इस दो दिवसीय विशाल समारोह के मुख्य अतिथि तत्कालीन सूचना एवं प्रसारणमन्त्री श्री राजबहादुर जी थे।

इस अवसर पर आयोजित कवि-सम्मेलन में डॉ० हरिवंशराय 'बच्चन', भवानीप्रसाद मिश्र, आनन्द मिश्र, बालकवि 'वैरागी', डॉ० बरसानेलाल चतुर्वेदी, राधेश्याम 'प्रगल्भ', बलबीरसिंह 'रंग', सरस्वतीकुमार 'दीपक', सोम ठाकुर आदि तीस कवि उपस्थित थे। इस कवि-सम्मेलन की अध्यक्षता पद्मश्री गोपालप्रसाद व्यास ने की थी।

सन् 1967 की 15 अगस्त को काका लिखित एक विशिष्ट ग्रंथ 'तुक्तम् शरणम् गच्छामि' का विमोचन-समारोह कलकत्ता में ऋषि जैमिनी कौशिक बरुआ द्वारा आयोजित किया गया। इस ग्रंथ में 31 हजार तुकों का संग्रह हुआ है। हिन्दी का यह इस प्रकार का प्रथम प्रयास था। इस आयोजन का उद्घाटन करने के लिए बंगाल के तत्कालीन राज्यपाल श्री धर्मवीर जी उपस्थित थे। उन्होंने ही ग्रन्थ का विमोचन किया। कलकत्ता के 'बिरला सभागार' में आयोजित किया जाने वाला यह अविस्मरणीय उत्सव था, जिसमें वहां कि 108 संस्थाओं ने काका को माल्यार्पण किया। विशेष अतिथि थे—टी-बोर्ड के चेयरमैन श्री भगवानसिंह।

देश में कहीं भी होने वाले कवि-सम्मेलन का संयोजक छिपे-प्रकट मन से यह अवश्य चाहता है कि काका आकर सम्मेलन के मंच को सुशोभित करें। यही कारण है कि भारत के लगभग प्रत्येक प्रांत में जाकर वे हास्य-रस का डंका बजा चुके हैं, कई करोड़ श्रोता उनकी फुलझड़ियों को सुनकर हास्य में गोते लगा चुके हैं, अपने चेहरों की मनहूसियत भगा चुके हैं। भारत के अतिरिक्त विदेशों में भी काका की कविता पढ़ने और सुनने की इच्छा नित्य-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। उनकी लोकप्रियता का यह एक समुज्ज्वल प्रमाण है कि सन् 1974 में बैंकाक (थाईलैण्ड) और सिंगापुर के निवासियों ने उन्हें अपने यहां आमंत्रित किया और मार्च-अप्रैल के 22 दिनों में काका ने अपनी हास्य-रचनाओं से वहां के निवासियों को गद्‌गद कर दिया।

काका की इस लोकप्रियता का रहस्य क्या है? इसपर दृष्टिपात करेंगे तो हमें ज्ञात होगा कि उन्होंने जो कुछ भी लिखा है, जीवन को जीकर लिखा है, लगता है कि वे चौराहे पर खड़े समाज की सभी विद्रूपताओं को सहजभाव से देख रहे हैं और उससे भी अधिक सहज रूप में उन्हें व्यक्त कर रहे हैं। उन्होंने छिछली शिष्टता एवं मान्यता, कृत्रिमता, प्रदर्शनवृत्ति, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, आर्थिक व राजनैतिक क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार, अतिचार, रूढ़िवादिता अथवा श्रेष्ठ परम्पराओं को खंडित करने की प्रवृत्ति आदि पर डटकर व्यंग्यबाणों का

प्रहार किया है। ये वे वृत्तिया हैं, जिनसे समाज का अधिकाश भाग ग्रस्त रहता है, परन्तु इस व्यग्य का लक्ष्य मात्र व्यग्य नही है, उनके व्यग्य मे खुरखुरेपन, विखडन-वृत्ति, तोड-फोड की ही प्रधानता नही है, वे मात्र कटु वक्ता ही नही है, उनके व्यग्य मे निहित प्रयोजनीयता भी हास्य के आकर्षक और मायावी आवरण मे से उसी प्रकार झिलमिलाती है, जिस प्रकार बिहारी की सहज, सलज्ज, सरल नायिका के चचल नयन घूघटपट से झाकते है। उन्होंने अपने व्यग्य को कबीर के कोडे नही बनाया, वरन् अपनी बात कुछ इस अदाज से व्यक्त की है कि उसका प्रहार तीखा होते हुए भी इस प्रकार का है कि व्यग्य का आलम्बन भी उसको कटुता से ग्रहण न करके मन-ही-मन मुस्कराता रहता है।

एक बार बम्बई मे 'विविध भारती' (आकाशवाणी) पर काका से प्रश्न किया गया—"आपकी प्रसिद्धि और प्रगति का कारण क्या है ?"

काका का उत्तर था—"मुझे आगे बढाने वालो मे पद्मश्री गोपालप्रसाद व्यास, डॉ० धर्मवीर भारती और आकाशवाणी, टेलीविजन एव हिज मास्टर्स वायस के साथ-साथ हिन्द पॉकेट बुक्स प्रमुख हैं। व्यास जी ने मुझे लालकिले का मच दिया तो डॉ० भारती ने 'धर्मयुग' मे लगभग एक वर्ष तक 'काका की फुलझडिया' स्तम्भ मे छापकर मेरा नाम देश-विदेश के कोने-कोने तक पहुचाया। उसीसे प्रभावित होकर 'हिन्द पॉकेट बुक्स' ने मेरी पुस्तकें प्रकाशित करके 'घरेलू लाइब्रेरी योजना' द्वारा लाखो-लाखो पाठकों तक पहुचाई। इसी प्रकार 'हिज मास्टर्स वायस' ने ग्रामोफोन रिकार्डों द्वारा मेरी आवाज गुजाई। आकाशवाणी और टेलीविजन ने मेरा काव्य जन-गण-मन तक पहुचाया।

इसीका यह परिणाम है कि यात्रा करते समय कुछ व्यक्ति काका की आवाज सुनकर ही पूछने लगते है—"क्षमा करिए, आप काका हाथरसी हैं क्या ?"

जनवरी, 1975 मे जब 'विश्व हिन्दी सम्मेलन' में भाग लेने काका जी नागपुर गए तो वहा फिजी से पधारे हुए एक प्रतिनिधि ने काका से भेंट करते हुए कहा—"आप नही जानते काका जी, हमारे देश मे आप कितने प्रसिद्ध है। लीजिए अपनी कविता सुनिए।" इतना कहकर उन्होंने काका की दो फुलझडिया अपने श्रीमुख से सुनाकर आसपास खडे हुए विदेशियो को मुग्ध कर दिया। काका ने गद्गद होकर बुक स्टाल से (जो एम० एल० ए० होस्टल के हॉल मे लगा हुआ था) अपनी एक पुस्तक खरीदकर उनको भेंट कर दी। वहा पर कई विदेशी विद्वान काका से यह कहते देखे गए—"हम आपको अपने देश मे बुलाएगे।"

एक बात का उल्लेख रह गया। हास्य-काव्य के अतिरिक्त 'काका' को चित्र-कला से भी विशेष लगाव है। गर्मियो मे वे प्रत्येक वर्ष एक महीने गगा जी पर तथा दो महीने मसूरी पहाड पर रहते हैं और वहा काव्य-साधना के साथ-साथ चित्र बनाते रहते हैं। अब तक वे सैंकडो सगीतज्ञो के तैल-चित्रो का निर्माण कर

चुके हैं, जो उनके सगीत-कार्यालय के हॉल मे देखे जा सकते है। मसूरी मे काका के ठहरने का प्रबन्ध रायबहादुर श्री गूजरमल मोदी द्वारा 'मोदी भवन' म अथवा सर पदमपत सिंघानिया द्वारा कमला कॅसिल (जे० के० हाउस) म हो जाता है। इन दोना उद्योगपतियो की 'काका' पर विशेष कृपा या श्रद्धा है। काका का कहना है कि मैं ग्रीष्म ऋतु के तीन महीनो म कवि-सम्मेलना म नहीं जाता। इन दिनो अपनी हास्य-बैटरी चार्ज करता हू।

काका की कलम का कमाल कार से लेकर बेकार तक, शिष्टाचार स भ्रष्टाचार तक, पापाचार से पत्रकार तक, विद्वान से गवार तक, फैशन से राशन तक, रिश्वत से त्याग तक और कमाई से महगाई तक देखने को मिलता है। तात्पर्य यह है कि उन्होंने प्रत्येक क्षेत्र मे धडल्ले से प्रवेश किया है।

इस युग की एक भयकर समस्या है खाद्य-पदार्थों म मिलावट की, जिसके माध्यम से भ्रष्टाचारी व्यापारी-समुदाय एक रात म ही लखपति बनने के स्वप्न देखता है। उसको इस बात से कोई मतलब नही है कि समाज के स्वास्थ्य पर इसका क्या दुष्प्रभाव होगा। इस अनैतिक कार्य को रोकने का जितना अधिक प्रयास हुआ है उतना ही यह प्रसार पाता गया है। किराना व्यापारिया द्वारा जिन्सों म किन किन वस्तुओ की मिलावट की जाती है, इसका कच्चा चिट्ठा काका ने कितनी सरलता से खोला है

पिसे हुए धनिये म लकडी का बुरादा,
हीग म गोद, गोद मे कतीरा
शहद म शीरा, और जीरे म बुहारी का जोरा
प्रेम से मिलाते हैं, तिलक लगाते है
महीने म दो बार गगा जी नहाते हैं
आपके द्वारा निर्मित चने के रगे हुए छिलके
पानी मे मिल के
चाय का रग लाते हैं
सुपाडियो मे छुहारे की गुठली मिलाते हैं
गरम मसाले के आकर्षक लेबल छपाकर
उसमे पैक कराते है, दुकान का कूडा।
जवान मरे चाहे बूढा।

अपने पापो को छिपाने के लिए तिलक लगाने वाले और पापो से मुक्ति प्राप्त करने के लिए गगा म स्नान करने वाले इन अनाचारियो पर किए गये इस व्यग्य मे उस समय और तेज़ी आ जाती है जब इस कविता के नायक सेठ पिस्ताप्रसाद पसारी अन्त मे गाते हैं

किस्मत हमारे साथ है,
जलने वाले जला करें।
डडडा डडडा डडडा डटडा,
डडडा डडडा डडा डडा ॥

भारत की आर्थिक विषमताओं का एक बड़ा कारण निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होती जनसख्या है। इसके कारण देश का आर्थिक तत्र टूटता जा रहा है, देश पर विदेशी ऋण का भार बढता जा रहा है, परिणामत असगतिया और विषमताए उत्पन्न हो रही हैं। काका ने इस समस्या को गम्भीरता से देखा है। तत्सबधी उनका व्यग्य द्रष्टव्य है

यदि यही रहा क्रम बच्चो के उत्पादन का,
तो कुछ सवाल आगे आएगे बडे-बडे।
सोने को किंचित् जगह धरा पर मिले नही,
मजबूरन हम-तुम सब सोएगे खडे-खडे।

सरकार ने परिवार-नियोजन का सन्देश प्रसारित करने के लिए करोड़ों रुपये खर्च कर दिए। हर प्रकार की सुविधाए प्रदान की, इनाम दिए, परन्तु समस्या का समाधान न निकला। परिवार-नियोजन की योजना की असफलता पर काका का पैना व्यग्य कितना सार्थक है

दवा वर्थ कण्ट्रोल की, सभी हो गई फेल।
हैल्थ मिनिस्टर ने कहा—'तेज चलाओ रेल ॥
तेज चलाओ रेल, होय द्रुतगामी जितनी।
निश्चय ही दुर्घटनाए भी होगी उतनी ॥
'काका', बढी हुई सब छट जाएगी बादी।
आधी रह जाएगी भारत की आबादी ॥

भारत मे फैशन की बाढ आ रही है, जिसके कारण सस्कृति और मर्यादा ढह रही है। सम्पूर्ण समाज फैशन के पीछे पागल-सा दिखाई दे रहा है। जिधर दृष्टि जाती है, रग पुते चेहरे और टापलैस वस्त्रों से सुशोभित नारिया दिखाई देती हैं। काका ने इस कृत्रिम वातावरण म जीने वाले व्यक्तियो पर सूक्ष्म दृष्टि डाली है और तज्जन्य परिस्थितियो पर तीव्र व्यग्य प्रहार किए हैं। वक्रोक्ति के माध्यम से प्रस्तुत किए गए इस व्यग्य का प्रभाव देखिए

न्यू फैशन की लूट है, लूट सके तो लूट।
अन्त काल पछताएगा, प्राण जायगे छूट ॥
प्राण जायगे छूट, धूल अक्कल की झाडो।
तग सिलाओ सूट, पुराने फेंको, फाडो ॥

कह 'काका', फैशन-सरिता म बहना सीखो।
पूर्ण नहीं तो अर्धनग्न ही रहना सीखो।।

वेशभूषा मे इस प्रकार का परिवर्तन आ गया है कि कभी-कभी यह समझना भी कठिन हो जाता है कि हमारे सामन उपस्थित प्राणी स्त्री है अथवा पुरुष ! 'कह काका, जब देखोगे लल्लू के दादा। धोखे मे पड जाओगे, नर है या मादा।।' 'मिस मसूरी' रचना मे 'आयरनी ऑफ सिचुएशन' के सहयोग से एतद्प्रकारेण वेशभूषा धारण करने वालो पर काका का व्यग्य प्रस्तुत है

माल रोड पर देखिए, मस्त नशीली चाल।
स्लीव लैस बुश्शर्ट पर, बीटल जैसे बाल।।
बीटल जैसे बाल, प्यार से पूछा हमने।
क्यो बेटा, यह ड्रैस कहा सिलवाया तुमने ?
होकर के नाराज, लगाई उसने झिडकी।
हमने लडका समझा था, वह निकली लडकी।।

अग्रेज चले गए, परन्तु अग्रेजी और अग्रेजियत छोड गए। हम आज तक इनके अभिशाप को सहन कर रहे हैं। लार्ड मेकाले द्वारा प्रसारित शिक्षा-पद्धति हमारे तन-मन पर छाई हुई है। लगता है कि उसकी आत्मा को यह देखकर परम सन्तोष का अनुभव हो रहा होगा। अब तो लोग अग्रेजी धुन मे गाते है, रोते हैं, शोक मनाते हैं, इतना ही नहीं, उनको हँसी भी अग्रेजी मे आती है। झगडा हिन्दी मे प्रारम्भ होगा और फिर वाक्-बौछार अग्रेजी मे प्रारम्भ हो जाएगी। ऐसे एक 'काले अग्रेज' द्वारा व्यक्त की गई उसकी भावनाओ के माध्यम से प्रकट होता हुआ व्यग्य कितना तीखा है

बुद्धू है वे लोग, जो समझते हैं मुझे हिन्दी का भक्त,
मेरी रगो मे दौड रहा है अग्रेजी रक्त।

× × ×

जिस प्रकार
दानवीर कर्ण ने कवच और कुण्डलो सहित
कुन्ती की कोख से लिया था जन्म,
उसी तरह—
मैंने इगलिश सूट धारण किए हुए
लिया था अवतार।

काका को हास्य-दृष्टि बहुत पैनी है। समाज म दिन प्रतिदिन घटने वाली अनेकानेक घटनाए सामान्यतया उपेक्षित कर दी जाती है, परन्तु काका इन सभी मे हास्य-व्यग्य को खोज ही लेते हैं। मिस कीलर ने देश-विदेश मे तूफान मचा दिया था। कई देशो के राज-नेता इस काड से सबद्ध थे। कई शासको के तख्ते पलट गए।

'कीलर-कांड' नाम से लिखित कविता मे इस ओर काका का सकेत द्रष्टव्य है :

प्रोफ्यूमो के केस पर, बोले एक वकील।
गहरी ज्यादा गड गई, मिस कीलर की कील ॥
मिस कीलर की कील, राजनीतिक बल पाकर।
ब्रिटिश राज्य मे घुसी, रूस मे निकली जाकर ॥
कह 'काका' कविराय, धन्य सुन्दरी सुकेशी।
रूप-जाल मे फांसे, देशी और विदेशी ॥

21 जुलाई, 1969 को मानव ने चन्द्रमा पर विजय प्राप्त की। इस अवसर पर काका ने 'चाँद पर चढाई', 'धन्य अपोलो', 'चन्दा कुण्डली' नाम से तीन फुलझडिया लिखी। हास्य-व्यग्य का कवि इस घटना को किस एगिल से देखता है आप भी देखिए :

पहुच गए चाँद पर, एल्ड्रिन आर्मस्ट्रोग।
शायर-कवियो की हुई, काव्य-कल्पना रोग ॥
काव्य-कल्पना रोग, 'सुधाकर' हमने जाने।
ककड-पत्थर मिले, दूर के ढोल सुहाने ॥
कह 'काका' कविराय, खबर यह जिस दिन पाई।
सभी चद्रमुखियो पर, घोर निराशा छाई ॥
पार्वती कहने लगी, सुनिए भोलानाथ।
अब अच्छा लगता नही, चद्र आपके माथ ॥
चद्र आपके माथ, दया हमको आती है।
बुद्धि आपकी तभी 'ठस्स' होती जाती है ॥
धन्य अपोलो, तुमने पोल खोलकर रख दी।
काकी जी ने करवाचौथ कैंसिल कर दी ॥
चदामल से कह रहे, ठाकुर आलमगीर।
पहुंच गये वे चांद पर, मार लिया क्या तीर ?
मार लिया क्या तीर, लौट पृथ्वी पर आए।
हुए करोडो खर्च, ककडी-मिट्टी लाए ॥
इनसे लाख गुना अच्छा नेता का धन्दा।
बिना चांद पर चढे, हजम कर जाता 'चदा' ॥

समाचारपत्रो मे समाचार प्रकाशित हुआ कि इग्लैड के वैज्ञानिक टैस्ट ट्यूब मे बच्चा उत्पन्न करने की प्रक्रिया मे सफल हो गए हैं। इसपर काका ने सोचा :

मिली एक अखबार से, यह विलायती न्यूज।
पढकर 'काका' बुद्धि का, बल्ब हो गया फ्यूज ॥

बल्ब हो गया फ्यूज, किया गुड़ गोबर सारा।
लगा कांपने भय से, 'लाल तिकोन' विचारा॥
इधर कर रहे हैं, परिवार नियोजन चर्चे।
उधर टैस्ट-ट्यूबों से बना रहे हैं बच्चे॥

जब लोकसभा भंग हुई तो संसद्-सदस्यों के टेलीफोन कनेक्शन काट दिए गए। निश्चित ही इस घटना से सदस्यों को क्षोभ हुआ होगा। काका ने उनके दर्द को महसूस किया :

'काका', संकट के समय, साध लीजिए मौन।
कट जाने दो कट गए, अपने टेलीफोन॥
अपने टेलीफोन, समय की है बलिहारी।
कल के चाकर, आज उपेक्षा करें हमारी॥
डाक-तार वालो ! क्या समझ रखा है हमको।
पुन: एम० पी० बन करके देखेंगे तुमको॥

भारत-पाक-युद्ध के अवसर पर 'सुरक्षा-कोष' के लिए चंदा एकत्र किया गया। समय का लाभ उठाकर कुछ उद्योगपतियों ने मंत्रियों को फोके चैक दे दिए, जो कैश ही न हो पाए। इस घटना पर काका का यह छक्का :

मंत्री जी को खुश किया, देकर फोके चैक।
टकराकर के बैंक से, चैक हो गये बैंक॥
चैक हो गये बैंक, काम अच्छा या खोटा।
अब क्या मतलब हमें, मिल गये परमिट कोटा॥
'काका', किया एक फायर, दो चिड़िया मारी।
दिया सुरक्षा फंड, सुरक्षा हुई हमारी॥

समाचार प्रकाशित हुआ कि ग्वालियर जेल में डाकू सरदार सूरतसिंह चाँदी के बर्तनों में भोजन करता है। कोई व्यक्ति स्वर्ण-पात्रों में भोजन करे, किसीका क्या जाता है, परन्तु अपने अपराधों के लिए सजा काट रहे अपराधियों को इस प्रकार की सुविधा प्रदान करना कहाँ तक न्यायसंगत है ? इस समाचार पर काका की प्रतिक्रिया प्रस्तुत है :

क्या रक्खा ईमान में, देख भाग्य के खेल।
कर मनुआ अपराध कुछ, पहुंच ग्वालियर जेल॥
पहुंच ग्वालियर जेल, छोड़ शंका आशंका।
फकाफक्क चल रहे, उधर बिजली के पंखा॥
मिट्टी के कुल्हड़ में, चाय पी रहे काकू।
चाँदी के बर्तन में, भोजन करते डाकू॥

काका के काव्य से ऐसे कितने ही उदाहरण दिए जा सकते हैं। 'न्यूज़-व्यूज़'

अथवा 'खबरदार कविताएं' शीर्षक से उनकी कितनी ही रचनाएं प्रकाशित हुई हैं, जिनमें सामान्य से सामान्य घटना को हास्य-व्यंग्य का आधार बनाया गया है।

काका ने देश के प्रत्येक प्रांत में आयोजित कवि-सम्मेलनों में भाग लिया है। विविध प्रकार के कवियों और संयोजकों के क्रियाकलापों को उन्होंने बहुत पास से देखा है। कवि जब सम्मेलन में जाते हैं तो उनका उत्साह से स्वागत किया जाता है, गले में हार डाले जाते हैं, प्रशंसा की जाती है, चाय पिलाई जाती है, फोटो खींचे जाते हैं, परन्तु कवि-सम्मेलन के समाप्त होते-होते कई संयोजक मैदान छोड़कर भाग जाते हैं, क्योंकि उनके पास कवियों को 'पत्रम्-पुष्पम्' प्रदान करने के लिए पूरा धन नहीं होता। यहां तक कि स्वागत-सत्कार करने वाले भी पलायन कर जाते हैं। उस समय अपना बोरिया-बिस्तरा उठवाने के लिए भी कोई व्यक्ति दिखाई नहीं देता। स्टेशन तक के लिए रिक्शा भी नहीं मिलता। परिणामस्वरूप बिस्तरा लादकर स्टेशन दौड़ लगानी पड़ती है। अपने इन अनुभवों को काका ने 'कवि-सम्मेलन' और 'कवि-सम्मेलनीय अनुभव' नामक फुलझड़ियों में इस प्रकार निबद्ध किया है :

कवि-सम्मेलन में गए, कविवर 'बटाढार'।
पहुंचे तो स्वागत हुआ, पड़े गले में हार॥
पड़े गले में हार, प्रशंसा अग्रिम पाई।
फोटो खींचे गए, चाय भरपेट पिलाई॥
कह 'काका' जब पूरा सब प्रोग्राम हो गया।
छोड़ मंच, संयोजक अंतर्धान हो गया॥
तीन बज गये रात्रि के, नहीं मिले श्रीमान्।
छछ गली की पूछ पर, उनका मिला मकान॥
उनका मिला मकान, पड़ गया चेहरा काला।
दरवाज़े पर लटक रहा, छह लीवर ताला॥
कह 'काका' कवि, किस्मत अपनी ठोक रहे थे।
समझदार कुछ कुत्ते, उन पर भौंक रहे थे॥

हास्य को अपने जीवन का अंग बना लेने वाले हास्य-रस के पुरस्कर्ता काव्यकार काका हाथरसी अब 75 वर्ष से ऊपर हो गए हैं, परन्तु आज भी उनके व्यक्तित्व में ज़िन्दादिली का अद्भुत पुट है। लम्बी-लम्बी-यात्राएं वे बिना हिचकिचाहट अकेले कर लेते हैं। टहलना उनको व्यसन की सीमा तक प्रिय है। रेलवे प्लेटफार्म अथवा फर्स्ट क्लास कम्पार्टमेंट की गैलरी में आप उन्हें घूमता हुआ पाएं तो गलत न समझें।

वर्धमान कॉलेज,
बिजनौर (उ० प्र०)

—डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल

अंगूठा छाप नेता

चपरासी या क्लर्क जब करना पड़े तलाश।
पूछा जाता—क्या पढ़े, कौन क्लास हो पास ?
कौन क्लास हो पास, विवाहित हो या क्वारे।
शामिल रहते हो या मात-पिता से न्यारे ?
कह 'काका' कवि, छान-बीन काफी की जाती।
साथ सिफारिश हो, तब ही सर्विस मिल पाती॥

कर्मचारियों के लिए, हैं अनेक दुख-द्वन्द्व।
नेताजी के वास्ते, एक नहीं प्रतिबन्ध॥
एक नहीं प्रतिबन्ध, मंच पर झाड़ें लक्चर।
वैसे उनको भैंस बराबर काला अक्षर॥
कह 'काका', दर्शन करवा सकता हूं प्यारे।
एम० एल० ए० कई, 'अंगूठा छाप' हमारे॥

—काका की फुलझड़ी 1965

अंगरेजी बन्दर

'काका' या संसार में, व्यर्थ भैंस अरु गाय।
मिल्क पाउडर डालकर, पी लिपटन की चाय॥
पी लिपटन की चाय, साहबी ठाठ बनाओ।
सिंगल रोटी छोड़, डबल रोटी तुम खाओ॥
कह 'काका' कविराय, पैंट के घुस जा अन्दर।
देशी बाना छोड़, बनो अंगरेजी बन्दर॥

—पिल्ला : 1950

अंतर्द्वन्द्व

बीड़ी का कश खींचकर, बोले श्री हुणदंग।
वर्तमान मूमैण्ट पर, लिखो चुटीले व्यंग॥
लिखो चुटीले व्यंग, पुराने ही गाओगे।
काव्य-मंच से 'काका', 'आउट' हो जाओगे॥
हमने कहा कि मित्र, साफ बतला दें तुमको।
समय बहुत नाजुक है, डर लगता है हमको॥

'मीसा' पर कुछ कहें तो वह हाजी मस्तान ।
आ जाये जब छूटकर, कर देगा कल्यान ॥
कर देगा कल्यान, व्यंग जे० पी० पर दागें ।
छात्रों द्वारा पिटें, छोडकर जूते भागें ॥
'मिश्रा-हत्याकाड', छुएं तो होय, धडाका ।
ताली पीटें कवि, बम से उड जायें 'काका' ॥

क्रिकेट मैच की हार का, अगर उडाये मजाक ।
चद्रशेखर तोड दें, गेंद मारकर नाक ॥
गेंद मारकर नाक, हिलाकर अपनी दाढी ।
कहे कि बदलो अपना, कैप्टिन और खिलाडी ॥
बल्ले की इक चोट, पटौदी मारे ऐसी ।
आख फोडकर शक्ल बना दे अपनी जैसी ॥

किंकर्त्तव्यविमूढ थे, लगा कलम पर ब्रेक ।
काकी के दर्शन हुए, मिली प्रेरणा नेक ॥
मिली प्रेरणा नेक, व्यग्य चूल्हे मे झोंको ।
लाइट कविता लिखो, सुरीले स्वर मे भौंको ॥
सीखो काव्य-प्रपच, मच पर फडको ऐसे ।
सर्कस के जोकर अभिनय करते हैं जैसे ॥

—काका हाथरसी . 1975

98 गुण+2 अवगुण

कौन नारि जिसको मिला, पति सौ गुण सम्पन्न ।
प्रश्न सुशीला ने किया, शीला हुई प्रसन्न ॥
शीला हुई प्रसन्न, एक मेरे प्रियतम हैं ।
सौ मे से उनमे केवल, दो ही गुण कम हैं ॥
पहला अवगुण, कामकाज कुछ नही जानते ।
दूजा यह, वे बात किसीकी नही मानते ॥

काका के धडाके 1969

अणुविस्फोट

हुआ भारत-भूमि में जिस दिन अणुविस्फोट।
उलझ-पड़े भुट्टो मियां, दिल को पहुंची चोट॥
दिल को पहुंची चोट, खोट क्या इसमें उनका।
अगर खोट है तो कुछ, है ईर्ष्यालू मन का॥
मन की बीमारी का कारण जान गये हम।
सूख गया है 'शिमला-समझौते' का मरहम॥

—काका हाथरसी 1975

अद्भुत औषधि

कवि लक्कड़ जी हो गये, अकस्मात बीमार।
बिगड़ गई हालत मचा, घर मे हाहाकार॥
घर मे हाहाकार, डाक्टर ने बतलाया।
दो घटे मे छूट जाएगी, इनकी काया॥
पत्नी रोई—ऐसी कोई सुई लगा दो।
मेरा बेटा आये, तब तक इन्हे बचा दो॥

मना कर गये डाक्टर, हालत हुई विचित्र।
फक्कड़ बाबा आ गये, लक्कड़ जी के मित्र॥
लक्कड़ जी के मित्र, करो मत कोई चिंता।
दो घटें क्या, दस घटे तक रख लें जिन्दा॥
सबको बाहर किया, होगया कमरा खाली।
बाबा जी ने अन्दर से, चटखनी लगा ली॥

फक्कड़ जी कहने लगे—"अहो काव्य के ढेर।
हमे छोड़ तुम जा रहे, यह कैसा अन्धेर?
यह कैसा अन्धेर, तरस मित्रो पर खाओ।
श्रीमुख से कविता दो-चार सुनाते जाओ॥
यह सुनकर लक्कड़ जी पर छाई खुशहाली।
तकिया के नीचे से काव्य-किताब निकाली॥

कविता पढ़ने लग गये, भाग गये यमदूत।
सुबह पाच की ट्रेन से, आये कवि के पूत॥

'मीसा' पर कुछ कहे तो यह हाजी मस्तान।
आ जाये जब छूटकर, कर देगा कल्यान॥
कर देगा कल्यान, व्यंग जे० पी० पर दागें।
छात्रों द्वारा पिटें, छोड़कर जूते भागें॥
'मिथ्या-हत्याकांड', छुए तो होय, धड़ाका।
ताली पीटें कवि, बम से उड़ जायें 'काका'॥

क्रिकेट मैच की हार का, अगर उड़ाय मज़ाक।
चंदरशेखर तोड़ दें, गेंद मारकर नाक॥
गेंद मारकर नाक, हिलाकर अपनी दाढ़ी।
कहें कि बदलो अपना, कैप्टिन और खिलाड़ी॥
बल्ले की इक चोट, पटौदी मारे ऐसी।
आंख फोड़कर शक्ल बना दे अपनी जैसी॥

किंकर्त्तव्यविमूढ थे, लगा कलम पर ब्रेक।
काकी के दर्शन हुए, मिली प्रेरणा नेक॥
मिली प्रेरणा नेक, व्यंग्य चूल्हे में झोंको।
लाइट कविता लिखो, सुरीले स्वर में भौंको॥
सीखो काव्य-प्रपंच, मंच पर फुदको ऐसे।
सर्कस के जोकर अभिनय करते हैं जैसे॥

—काका हाथरसी . 1975

98 गुण+2 अवगुण

कौन नारि जिसको मिला, पति सौ गुण सम्पन्न।
प्रश्न सुशीला ने किया, शीला हुई प्रसन्न॥
शीला हुई प्रसन्न, एक मेरे प्रियतम हैं।
सौ में से उनमें केवल, दो ही गुण कम हैं॥
पहला अवगुण, कामकाज कुछ नहीं जानते।
दूजा यह, वे बात किसीकी नहीं मानते॥

काका के धड़ाके 1969

अणुविस्फोट

हुआ भारत-भूमि मे जिस दिन अणुविस्फोट।
उलझ-पडे भुट्टो मिया, दिल को पहुची चोट॥
दिल को पहुची चोट, खोट क्या इसमे उनका।
अगर खोट है तो कुछ, है ईर्ष्यालू मन का॥
मन की बीमारी का कारण जान गये हम।
सूख गया है 'शिमला-समझौते' का मरहम॥

—काका हाथरसी 1975

अद्भुत औषधि

कवि लक्कड जी हो गये, अकस्मात बीमार।
बिगड गई हालत मचा, घर मे हाहाकार॥
घर मे हाहाकार, डाक्टर ने बतलाया।
दो घटे मे छूट जाएगी, इनकी काया॥
पत्नी रोई—ऐसी कोई सुई लगा दो।
मेरा बेटा आये, तब तक इन्हें बचा दो॥

मना कर गये डाक्टर, हालत हुई विचित्र।
फक्कड बाबा आ गये, लक्कड जी के मित्र॥
लक्कड जी के मित्र, करो मत कोई चिंता।
दो घटे क्या, दस घटे तक रख लें जिन्दा॥
सबको बाहर किया, होगया कमरा खाली।
बाबा जी ने अन्दर से, चटखनी लगा ली॥

फक्कड जी कहने लगे—"अहो काव्य के ढेर।
हमे छोड तुम जा रहे, यह कैसा अन्धेर?
यह कैसा अन्धेर, तरस मित्रो पर खाओ।
श्रीमुख से कविता दो-चार सुनाते जाओ॥
यह सुनकर लक्कड जी पर छाई खुशहाली।
तकिया के नीचे से काव्य-किताब निकाली॥

कविता पढने लग गये, भाग गये यमदूत।
सुबह पाच की ट्रेन से, आये कवि के पूत॥

आये कवि के पूत, न थी जीवन की आशा।
पहुंचे कमरे मे तो देखा अजब तमाशा ॥
कविता-पाठ कर रहे थे, कविवर लक्कड़ जी।
होकर 'बोर' मर गये थे, बाबा फक्कड़ जी ॥

—बाबा के धड़ाके : 1969

अनशन

अधिक भोज्य से आपका, वजन अधिक बढ जाय।
धन्य राजनारायणम्, बतला दिया उपाय॥
बतला दिया उपाय, साधना सात्त्विक साधो।
अखबारो मे अनशन की घोषणा करा दो॥
'डाइटिंग' हो जाय, मुफ्त मे नाम कमाओ।
मिलें आम के आम, दाम गुठली के पाओ॥

—काका के कारतूस : *1963*

अनुपात की बात

टीटी बाबू ने कहा, मत्री जी श्रीमान।
बढोतरी अनुपात पर, कुछ तो दीजे ध्यान॥
कुछ तो दीजे ध्यान, नियम था बहुत पुराना।
बिना टिकट पर एक अठन्नी था जुरमाना॥
आज रेलवे जुरमाना दस रुपे ले रही।
बीस गुना वेतन हमको क्यो नही दे रही ?

—फिल्मी सरकार : 1972

अभियान

शुरू हुआ जब देश मे, नन्दा का अभियान।
भ्रष्टाचारी जीव के, खड़े हो गए कान॥
खड़े हो गए कान, स्वार्थ पर चली कटारी।
त्राहि-त्राहि करते, खाऊ अफसर-व्यापारी॥
कह 'काका' कविराय, इधर आई महगाई।
उधर छिनी 'इनकम' की हाडी पकी-पकाई॥

बोले कक्कड़ सा'ब से, लक्कड़सिंह अमीन।
क्यों हुज़ूर ! क्या बात है, कैसे हो गमगीन ॥
कैसे हो गमगीन, किसी से खटक गई है।
क्या कारण जो तोंद, आपकी पटक गई है ॥
'काका' क्या कुछ बात हो गई ऊंची-नीची।
तुमसे भी मांगी है क्या सम्पत्ति की सूची ॥

तनुखा मिलती पांच सौ, पन्द्रह सौ का खर्च।
फिर कैसे गाड़ी चले, इस पर करो रिसर्च ॥
इस पर करो रिसर्च, हमारी 'मधुर मालती'।
एक मास में चार, साड़ियां फाड़ डालती ॥
तुम्हीं बताओ मिस्टर ! है किसके बुत्ते का।
सौ रुपये मन्थली खर्च, मेरे कुत्ते का ॥

—फु० 1965

अमरीकन हथियार

मिलने दो यदि पाक को, मिलते हैं हथियार।
इनका लाभ उठाएगी, फिर भारत सरकार ॥
फिर भारत सरकार, काम आते हैं किसके।
वियतनाम औ' कम्बोडिया साक्षी इसके ॥
युद्ध बांगला में भी, अमरीकन सप्लाई।
किसको हुई ? और कब्जे में किसके आई ॥

—काका हाथरसी : 1975

अमरीकी अष्टक

परेशान हैं आजकल, अमरीका के सेठ।
हिंद-पाक संघर्ष में, पिटे नैट से जेट ॥
पिटे नैट से जेट, मगन भारत व्यापारी।
उनकी गुडविल गई, साख बढ़ गई हमारी ॥
देश-देश से थोक नैट के आर्डर आए।
सब संकट हों दूर, विदेशी मुद्रा पाए ॥
कहते होंगे निक्सन, हाय-हाय रे महिमा।
मुफ्त हुए बदनाम, तुम्हारे लिए सवरिया ॥

—जय बोलो बेईमान की : 1973

अर्थ-कामना

लक्ष्मी मैया ! भाग्य के, खोलो शीघ्र किवाड़ ।
नोटो की कुछ गड्डिया, भेजो छप्पर फाड़ ।।
भेजो छप्पर फाड़, मूर्ख रसगुल्ले खाते ।
ज्ञानी ध्यानी प्राणी, देखे चने चबाते ।।
कह 'काका' चरणामृत, पीऊ भर-भर चुल्लू ।
पुनर्जन्म मे देवी ! मुझे बनाना उल्लू ।।

—काका के कारतूस : 1963

अर्थवाद

प्रगतिवाद बूढा हुआ, छोडो वाद - विवाद ।
'काका' कवि से लीजिए, हास्यवाद का स्वाद ।।
हास्यवाद का स्वाद, 'काव्य-कम्पनी' बनाई ।
जितने चाहो, उतने कवि कर दें सप्लाई ।।
जिस नगरी मे दो ही, कवि थे रीतिकाल के ।
वहा आज, दो सौ कवि है विपरीत काल के ।।

फोड रीति की भीत को, छोड मात्रा-छन्द ।
पिंगल मे ताला लगा, हो जाओ स्वच्छन्द ।।
हो जाओ स्वच्छन्द, मुफ्त मे दावत खाओ ।
जन्मगाठ - मुडन - शादी मे कविता गाओ ।।
'काकाकोश' मगाकर, नोट करो तुकमिल्ला ।
'व्यर्थवाद' तज, 'अर्थवाद' का पकडो पल्ला ।।

—काका के धड़ाके 1969

अर्थाष्टक

अर्थ समस्या पर हुआ, अर्धांगिन से युद्ध ।
वे हमसे नाराज थी, हम थे उनसे क्रुद्ध ।।
हम थे उनसे क्रुद्ध, प्रभो गृह-सकट टालो ।
ऊब गया हू, इस जीवन से मुझे उठा लो ।।

पत्नी कहने लगी कि लज्जा मेरी रख ले।
हे भगवान्! मैं ही मर जाऊ इनसे पहिले॥
हमने कहा कि पूरी कर दे इसकी मरजी।
'काका' कवि वापिस लेते हैं अपनी अरजी॥

—काका हाथरसी 1975

अलंकरण-हरण

आख फाड कहने लगे, एक दिल्लगीबाज।
अब तक तुमको पद्मश्री, नहीं मिली कविराज॥
नहीं मिली कविराज, पडे हो रजधानी मे।
डूब मरो काका जी, चुल्लू-भर पानी मे॥
सुनकर उनकी बात, लगा आतमा को धक्का।
शनि-मगल को हनूमान जी का व्रत रक्खा॥

मौनी-बाबा दे गए, गडा और भभूत।
दसवें महिने आ गया, घर मे एक सपूत॥
घर मे एक सपूत, पुरोहित को बुलवाया।
उस लडके का नाम 'पद्मभूषण' रखवाया॥
छलकरण से अलकरण पर मारा छापा।
बिना सिफारिश बने, 'पद्मभूषण' के पापा॥

—जय बोलो बेईमान की 1973

अलीगढ का अन्दाज

शहर 'अलीगढ' देख लें, मन मे उठी उचग।
अजब यहा के रग है, अजब यहा के ढग॥
अजब यहा के ढग, कल्पना मिली निराली।
कुछ विशेषता देखी, तुकबन्दी कर डाली॥
इन्सानो की कब्रें, चकनाचूर हो गईं।
पर 'कुत्ते की कब्र', यहां मशहूर हो गई॥

भीम और मा पर मिलें, नाम यहा भरपूर।
मक्खी, मच्छर, मौलवी, मक्खन हैं मशहूर॥
मक्खन है मशहूर, मिया, मिस्त्री, मौलाना।
'मामूभांजा' मुख्य मुहल्ला बहुत पुराना॥

'माल कोर्ट' मे कई, मवक्किल टहल रहे थे।
मुशी मिसरीलाल मिसल को मसल रहे थे॥

गए 'अयोध्यापुरी' मे, मिले न दशरथलाल।
'श्यामनगर' मे खडे थे, कस औल शिशुपाल॥
कस और शिशुपाल, नजर चहु ओर घुमाई।
'खाई डोरा' मे न एक भी खाई पाई॥
देखा 'मानिक चौक', हाय नहिं मानिक आए।
'विष्णुपुरी' मे कही विष्णु भगवान न पाए॥

फिर कुछ आगे को बढे, कर लें थोडी सैर।
कहते 'अड्डा खैर का', नही जेब की खैर॥
नही जेब की खैर, बात छोडो जनता की।
वहा पुलिसवालो की, भी पाकिट कट जाती॥
दस पैसे का एक, पान पनवाडी देगा।
सिगल पान मिलेगा, चूना डबल लगेगा॥

नगरपालिका की प्रगति, आक सके तो आक।
कीचड-कचरा देखकर, फटी हमारी नाक॥
फटी हमारी नाक, व्यर्थ की पैर - पिटाई।
'खिरनी की सराय' मे, खिरनी एक न पाई॥
'प्रेमनगर' मे पति से, पत्नी लडते देखी।
'जनकपुरी' मे सीता, इगलिश पढते देखी॥

—काका के धडाके • 1969

अवमूल्यन

दाढी गुन गाये बहुत, कबहु - कबहु पछिताय।
सारी-सरहज-समधिनें, काका कहि-कहि जाय॥
काका कहि-कहि जाय, सुनावें काको दुखडा।
लम्बो घूघट काढि, छिपावें सुमुखी मुखडा॥
हे भारत सरकार! दोष नहिं कछू तिहारो।
प्रेम - पन्थ मे अवमूल्यन, ह्वै गयो हमारो॥

—काका के धडाके 1966

अश्रु-विमोचन

आंसू पर अब तक नहीं, किया किसी ने शोध।
विषय अछूता मिल गया, सीधा-सरलसुबोध ॥
सीधा - सरल - सुबोध, अश्क पर मश्क करेंगे।
डाक्टर 'काका' पर, आलोचक रश्क करेंगे ॥
भिन्न - भिन्न भावों में, आंसू किए इकट्ठे।
चखकर देखे, कुछ मीठे, कुछ खारी - खट्टे ॥

चक्कर चला चुनाव का, करने लगे रिसर्च।
मैटर, वैटर मिल गया, हुआ नहीं कुछ खर्च ॥
हुआ नहीं कुछ खर्च, टिकिट लेने को जाते।
पार्टी - पापा के चरणों में अश्रु बहाते ॥
विजयश्री के धनी चैन की निंदिया सोए।
जब्त जमानत वाले, नौ-नौ आंसू रोए ॥

अश्रु भेद पर कीजिए गहराई से गौर।
दुख के आंसू और हैं, सुख के आंसू और ॥
सुख के आंसू और, खुशी मन में न समाए।
पुत्र कलक्टर बना, पिता के आंसू आए ॥
फेल हुआ विद्यार्थी, निकले इल्मी आंसू।
ग्लेसरीन से बन जाते है, फिल्मी आंसू ॥

शादी कर ससुराल से, लौटे लक्खी लाल।
'हनीमून' को चल दिए, सजकर नैनीताल ॥
सजकर नैनीताल, सोचते साजन - सजनी।
कब डूबे सूरज बैरी, कब आए रजनी ॥
प्रथम मिलन में, प्रणय - प्रेम के आंसू बहते।
रस के रसिक, उन्हें शृंगारी आंसू कहते ॥

दृश्य अनोखे दिखें, जब होती विदा बरात।
कन्या के आंसू बहें, वर दिखलाए दांत ॥
वर दिखलाए दांत, प्यार-ममता - निर्ममता।
मिलन - विरह का सामंजस्य देखते बनता ॥

खान - पान के मजे, बराती लूट रहे हैं।
दूल्हा जी के दिल मे, लड्डू फूट रहे हैं ॥

लाड - प्यार से पालते, बेटी के माँ - बाप।
विदा हुई तो अश्रुजल, बहा रहे चुपचाप ॥
बहा रहे चुपचाप, चकित था एक विदेसी।
क्यो रोते हैं ये, क्या बात हो गई है ऐसी ॥
कह 'काका', दहेज-पीडित है लाली - लाला।
इनको ले जा रहा, लूट कर बेटे वाला ॥

नाम रूप सब के अलग, अलग भावना भाव।
वैसे आसू निकलते, जैसे कर्म - स्वभाव ॥
जैसे कर्म - स्वभाव, रुष्ट रमणी के असुआ।
ब्रजभाषा के कवि, इनको कहते है टसुआ ॥
झूठी दया दिखाय, आख मे भर के आसू।
धोखा दे जाते हैं 'मगरमच्छ के आसू' ॥

सूर काव्य को देखिए होकर के अनुरक्त।
वात्सल्य रस उमडता, आसू पोछें भक्त ॥
आसू पोछें भक्त, प्रवाहित हो दूपित जल।
ऐसे अश्रु, आत्मा को कर देते निर्मल ॥
मारधाड के समय, जोश मे आसू आए।
कही रौद्र रस, कही वीर रस के कहलाए ॥

कृष्ण चल दिए द्वारिका, छोड गए मनाप।
गैया-बछडा रंभाए, गोपी करें विलाप ॥
गोपी करें विलाप, राधिका सुध-बुध खोई।
डूब मरें यमुना मे, होनी हो सो होई ॥
चूस गई ब्रजभूमि, विरह के आसू सारे।
इसीलिए ब्रज के सब, कुएँ हो गए खारे ॥

थकन मिटाने के लिए अपन ले रहे रैस्ट।
काकी आ धमकी वहा, थीसिस करी रिजैक्ट ॥
थीसिस करी रिजैक्ट न आगे लिखने दूगी।
आसू-डाक्टर नही, आपको बनने दूगी ॥
आसू के बीमार, यहा आसू टपकाए।
हँसी खुशी का घर, बजमारे नरक बनाए ॥

—काका के कारतूस

असम समस्या

घुसे विदेशी देश म, बदल बदल कर वेश।
जगह जगह फैला रहे, दगम-दगा द्वेष ॥
दगम दगा द्वेष, दुखी जन आह भर रहे।
तत्त्व विरोधी, अपने स्वारथ सिद्ध कर रहे ॥
हिंसा अत्याचार देखकर कापे तन मन।
'असम हो रहा अ-सम इसे सम कर दो भगवन॥

—काका के कारतूस 1963

असली और नकली

घासलेट बतला रही, हम लाए घी शुद्ध।
इसी प्रश्न पर हो गया, घरवाली से युद्ध ॥
घरवाली से युद्ध, सभाला हमने डडा।
दो बेलन पड गए, हो गया डडा ठडा ॥
कह काका'कवि, बहा आसुओ का परनाला।
मर जाने का उसी समय निणय कर डाला ॥

गैरत के कारण हुआ बुरा हमारा हाल।
दो आने का सखिया ले आए तत्काल।
ले आए तत्काल, पीसकर फकी मारी।
मुह ढककर सो गए स्वग की कर तैयारी ॥
कह 'काका' कविराय, जान ईश्वर ने रखली।
नही मरे हम, क्योकि सखिया निकला नकली ॥

असली डाकू

ये डाकू तो सूक्ष्म हैं, क्या समझावें मोहि।
असली डाकू आय जब, तब मानूगा तोहि॥
तब मानूगा तोहि, पकड सत्ता की टागें।
भोली जनता की छाती पर गोली दागें॥
कह 'काका', हथियार डाल दें भ्रष्टाचारी।
'जयप्रकाशनारायण', तब जय होय तुम्हारी॥

चूहेदानी भर गई, चूहे पकडे बीस।
पुन दूसरे दिन वही, घूम रहे पच्चीस॥
घूम रहे पच्चीस, प्रभू की अद्भुत माया।
ऋषि-मुनियो ने इसका, समाधान नहि पाया॥
कह 'काका' कवि, गुरु रिटायर जब हो जाते।
चेला जी आकर, उस गद्दी पर जम जाते॥

—जय बोलो बेईमान की : 1973

आंसू गीत

'आसू' फिल्म बना रहे, लाला लखपत राम।
गीत आसुओ पर लिखो, दें भर पेट इनाम॥
दें भर पेट इनाम, सुनो इसकी सिचुएशन।
रुदन करे हीरो, आसू पोछे हीरोइन॥
मान लिया लाला जी, दोगे अच्छे पैसे।
किन्तु हास्य का कवि, आसू पर लिक्खे कैसे ?

कैसे वैसे कुछ नही, पैसे पर दो ध्यान।
पैसे मे है जिन्दगी, पैसे मे भगवान॥
पैसे मे भगवान, उच्च कवि धक्के खाए।
सस्ती कविता लिखें, भुच्च कवि नोट कमाए॥
हास्य छोडकर लिखो, करुण रस ऐसा धासू।
हीरो की आखो से, टपकें टप-टप आसू॥

गीत पढा शूटिंग मे, खडे रहे सब मौन।
हीरो रोया ही नही, आसू पोछे कौन ?

आसू पोंछे कौन, सैट पर था सन्नाटा।
हमने मौका देख, उछलकर मारा चाटा।।
आसू झरे कि जैसे, पानी टपके नल से।
हीरोइन ने पोंछ दिए, अपने आंचल से।।

दृश्य देख दर्शक चकित, हीरो लेय उसास।
प्रोड्यूसर चिल्ला उठा, काका जी शाब्बास।।
काका जी शाब्बास, गीत तो जम नहिं पाया।
प्रैक्टीकल प्रयोग ने, बिगड़ा काम बनाया।।
हमने कहा—हुजूर, गीत कैन्सिल करवा दो।
लेकिन चाटे के तो कुछ पैसे दिलवा दो।।

सोच रहे इस फाड से, बढ़ी हमारी शान।
क्रोधित हीरो आ रहा, दोनो मुक्के तान।।
दोनो मुक्के तान, नहीं जिन्दा छोड़ेगा।
दात हमारे नकली हैं, फिर भी तोड़ेगा।।
भागे पैसे छोड़, कसम आगे को खा ली।
नहीं लिखेंगे कविता कभी, करुण रस वाली।।

काका के कारतूस •

आगरा-अनुभूति

शहर 'आगरा' देख लें, मन मे उठा विचार।
काकी को लेकर चले, कर भाडे की कार।।
कर भाडे की कार, बन्द था पुल का फाटक।
देख रहे हम खडे-खडे, ट्रैफिक का नाटक।।
फाटक खुला, ड्राइवर जी सोते से जागे।
भैंसा गाडी पास हो गई सबसे आगे।।

'वन-वे' ट्रैफिक था वहा, चालक था लाचार।
चरक चू गाडी चले, पीछे मोटर कार।।
पीछे मोटर कार, दृश्य लगता था ऐसे।
भैंसा गाडी खीच रही, हो टैक्सी जैसे।।
कठिनाई से काटी, यमुना-ब्रिज की बाधा।
तीन मिनट की जगह, लग गया घंटा आधा।।

पहुंचे जिस बाजार में, पूरी हुई न आस।
'मूड' बिगड़ कर हो गया, मन का सत्यानाश॥
मन का सत्यानास, 'नमक-मण्डी' दिखलाई।
वहां नमक की कोई भी, दूकान न पाई॥
'काका' इसको छोड़, और भी धोखा खाया।
था 'जौहरी बाजार', जौहरी एक न पाया॥

झूठ-मूठ का नाम रख, व्यर्थ मारते डींग।
जिसे 'हींग-मण्डी' कहें, वहां कहां है हींग?
वहां कहां है हींग, खरीदें किसका कूता।
हींग हुई बदनाम, बिक रहे चप्पल-जूता॥
कह, 'काका' कविराय, हो गई तबियत मैली।
'गुड़ की मण्डी' गये, न दीखी गुड़ की भेली॥

चले 'लाजपत कुंज' को, वहां रो रही लाज।
गलबहिया डाले हुए, बैठी मिस मुमताज॥
बैठी मिस मुमताज, 'गली छमछम' दिखलाई।
मिली न छमछम जान, भौंकती कुतिया पाई॥
अरे आगरे वालो! क्यों मजाक करते हो।
रहते हैं इन्सान, 'गधा-पाड़ा' कहते हो?

'चिड़ीमार टोला' गए, बोली खालाजान।
अच्छी-अच्छी उड़ गईं, चिड़िया पाकिस्तान॥
चिड़िया पाकिस्तान, करी क्या खूब तरक्की।
चिड़ीमार जी बैठे, मार रहे थे मक्खी॥
उसे छोड़कर 'छिलीईंट' की, रस्ता पकड़ी।
ईंट नहीं थी, मिस्त्री छील रहे थे लकड़ी॥

घूम-घूम कर थक गए, मन को हुआ मलाल।
चलें 'माल बाजार' को, ले आयें कुछ माल॥
ले आयें कुछ माल, मियां जी मटक रहे थे।
नाच रही बाई जी, तबले खटक रहे थे॥
काकी बोली, छोड़ो यह बाजार मुहल्ले।
'सेठ गली' में खायेंगे, चमचम - रसगुल्ले॥

उनके मुख मे रस भरा, अपने मन मे रज।
हुक्म ड्राइवर को दिया, चलिए 'बेलनगज' ॥
चलिए बेलनगज, डरे हम मन-ही-मन मे।
सुन बेलन का नाम, फुरफुरी आई तन मे ॥
कह 'काका' कवि, यह बजार भी देखा भाला।
बेलन जैसे लुढक रहे, गद्दी पर लाला ॥

'चौबे कटरा' के निकट, लाला घटम-घोट।
दालमोठ के नाम पर, करते लूट-खसोट ॥
करते लूट-खसोट, मानते खोट नहीं है।
दालमोठ मे दाल नही है, मोठ नहीं है ॥
कह 'काका', क्यो व्यर्थ ग्राहको को बहकाते।
सेव-मसूड मिलाकर, दाल मोठ बतलाते ॥

एक बहुत मशहूर है, यहा 'कचहरी घाट'।
वहा कचहरी है नही, देखी लकडी हाट ॥
देखी लकडी हाट, सत्य की नाव डुबा दी।
'शहजादी मण्डी' से कहा, गई शहजादी ?
'छीपीटोले' मे कबाडिया धरे हुए है।
जो 'अहीर पाडा' है, छीपी भरे हुए हैं ॥

और विरोधाभास का, देखा एक कमाल।
'फाटक सूरजभान' मे, बैठे चन्दालाल ॥
बैठे चन्दालाल, 'सेब बाजार' दिखाया।
सेब और सब्जी विक्रेता, एक न पाया ॥
'काका' जिधर गए दिखलाई, उल्टी झडी।
रहते हैं सर्राफ, कहे 'नाई की मण्डी' ॥

इतनी ठोकर खा चुके, फिर भी किया यकीन।
गये 'जीन मण्डी' वहा, मिली न कोई जीन ॥
मिली न कोई जीन, यहा आकर पछताये।
नाम 'दरेसी' किन्तु, दरी के दरस न पाये ॥
अच्छे-अच्छे नामो का, विध्वस मिलेगा।
जाओ 'गोकलपुरा', कस का वस मिलेगा ॥

'लेन-गऊशाला' गये, गऊ मिली ना श्याम।
'कूचा साधूराम' मे, साधू का क्या काम॥
साधू का क्या काम, सुना भैया हलमस्ता।
बस्ती देखी बहुत, आगरे मे 'नौबस्ता'॥
छाट छाट कर नाम, रखे अद्भुत बेढगे।
'राजा की मण्डी' मे, घूम रहे भिखमगे॥

काकी मन भायी नही, देखी चीज अनेक।
बोली—"हमको चाहिए असली मोती एक"॥
असली मोती एक, पकडकर उनका अचरा।
हमने कहा कि चलो डार्लिंग 'मोती कटरा'॥
कह 'काका' कवि, वहा पहुच कर हँसी कराई।
पेठा छील रहे, जोती मोती हलवाई॥

ऐसी बातो से हुआ, दिलो-दिमाग खराब।
पागलखाना देख लो, बोले ड्राइवर साब॥
बोले ड्राइवर साब, बजाया हमने हौरन।
चलो हाथरस जल्द, आगरा छोडो फौरन॥
कह 'काका' कवि, जान बचाकर वापिस आये।
इस झगडे मे ताजमहल भी देख न पाये॥

—काका के धड़ाके : 1969

आजादी की आग

रावल पिंडी से चला, मोटा कुत्ता एक।
आया दिल्ली शहर म, जर्नी कर दी ब्रेक॥
जर्नी करदी ब्रेक, इडियन कुत्ते आए।
पूछा—"*क्या दुख था भइए ? क्यो वतन छोड के धाए ?*"
"सब सुख थे, लेकिन पाबन्दी एक लगा दी।
नही आजकल वहा भौंकने की आजादी॥"

—काका के धड़ाके . 1969

आजादी के लाभ

लाभ हमे क्या-क्या हुए आजादी के बाद।
काका से ज्यादा हुईं, काकी जी आजाद ।।
काकी जी आजाद, चली मटका कर कूल्हा।
पहुच गईं क्लब, दूल्हा फूक रहे घर चूल्हा ।।
मर्दों की छाती पर, मूग दलेंगी तब तक।
भारत-भूपर 'महिला-दशक' रहेगा जब तक ।।

कौन कह रहा हुई है, मध्यावधि मे हार।
कांग्रेस दो हैं मगर, जनता पार्टी चार ।।
जनता पार्टी चार, एक जनता जनसघी।
दूजी जे० पी०, तीजी चरणसिह की सगी ।।
कह 'काका' कवि, पार्टी चौथी के युग चारण।
लात मारकर भाग गए, श्री राजनारायण ।।

'एस.एल.वी. तीन' की देखी सफल उडान।
घूम रहा है 'रोहिणी', झूम रहा विज्ञान ।।
झूम रहा विज्ञान, तीर क्या मारा हमने।
बिन राकिट के, चमत्कार दिखलाया तुमने ।।
कह 'काका' कवि, लगा नही कुछ पैसा पाई।
आसमान मे चक्कर, काट रही महगाई ।।

—काका के कारतूस . 1

आज्ञाकारी

राष्ट्रनायको का सदा, करता हू सम्मान।
लेकिन अपने स्वास्थ्य का, रखना पडता ध्यान ।।
रखना पडता ध्यान, आपका हुक्म बजाता।
सोमवार को एक जून ही खाना खाता ।।
'काका' उसी समय कुछ ज्यादा कर लेता हू।
दुपहर को ही घडा, शाम का भर लेता हू ।।

—काका के कहकहे 1966

आपात की बात

आत्मकथ्य यह सत्य है, नहीं समझना गप्प।
हुए काल आपात मे, कवि-सम्मेलन ठप्प ॥
कवि-सम्मेलन ठप्प, यद्यपि टूटी महगाई।
'टका-ऊंट' विक रहा, टका ने आख दिखाई ॥
वीर, हास्यरस, व्यग्य-रग सब छार-छार हैं।
वेकारी से गीतकार भयभीतकार हैं ॥

—काका हाथरसी 1975

आम-चुनाव

'कलमी' को ललकार कर, बोला 'लगडा आम'।
दो टागो वाले सभी, करते मुझे प्रणाम ॥
करते मुझे प्रणाम, तभी आ टपका, 'टपका'।
'तुखमी' को ले साथ, 'मालदा' उस पर लपका ॥
होकर के भयभीत, कहे 'फजली' से 'चौसा'।
मार-पीट होने वाली है, भागो मौसा ॥

कूदे 'काका' 'दशहरी', क्या वकता मनहूस।
नेहरू जी के साथ मैं, घूम चुका हू रूस ॥
घूम चुका हू रूस, मूल्य कितना है तेरा ?
खुश होकर ख्रुश्चेव, किया अभिनन्दन मेरा ॥
कहने लगा 'सफेदा', क्यो लडते नामरदो ?
सर्वश्रेष्ठ है 'तोतापरी' घोषणा कर दो ॥

—काका कोला : 1968

आर्यभट्ट (उपग्रह)

अतरिक्ष की ओर जब, बढा हमारा देश।
कुछ तो इससे खुश हुए, कुछ को पहुचा क्लेश ॥
कुछ को पहुचा क्लेश, कहे किस-किसके जी की।
आसमान आजाद, बपौती नही किसी की ॥
उडते-उडते स्वर्ग-लोक मे, यदि मिल जायें।
आर्यभट्ट जी, आर्यभट्ट से, हाथ मिलायें ॥

—काका हाथरसी 1975

आशावाद

कहा कहूं छबि आज की, भले बने हो लाल।
या तन की झाईं परैं, वहि है जाय निहाल॥
वहि है जाय निहाल, खबरिया लेउ हमारी।
आसा मे ही बीती जाय, उमरिया सारी॥
कह 'काका' कवि, ऐसौ औसर कब-कब पाओ।
अत समय मे हमे, मंत्रि-पद सो चिपकाओ॥

जैसी मरजी लाल की, वैसी बोलू बात।
रात्रि होय तो दिन कहू, दिनहि बताऊ रात॥
दिनहि बताऊ रात, अहर्निश हा-हा खाऊ।
आगे-पीछे, दाये-बायें, पूछ हिलाऊ॥
कह 'काका' तुम चाचा मेरे, मैं हू बेटा।
तुम खालिस मक्खन प्रभु जी, मैं हू सपरेटा॥

—फु० 1965

इश्क हकीकी

रूठ गई हो प्रेमिका, बीज प्रेम के बोय।
याद सताए रात-दिन, धक-धक दिल मे होय॥
धक-धक दिल मे होय, व्यर्थ जा रही जवानी।
देख आजमाकर नुस्खा, यह पाकिस्तानी॥
कह 'काका' कवि, तवा बाधकर अपने सर पर।
लेकर छाता कूदो, महबूबा के घर पर॥

—काका के कहकहे . 1966

इस्तीफा

कामराज नाडार ने, छोडी जब बन्दूक।
भय के मारे हो गए, दिल के सोलह टूक॥
दिन के सोलह टूक, रात-भर तड़पे ऐसे।
स्वर्ण-नियन्त्रण से सुनार तड़पे थे जैसे॥
कह 'काका' कवि, शयन-कक्ष से उठकर भागे।
जन्म-पत्र रख दिया, ज्योतिषी जी के आगे॥

भाग्योदय के चक्र मे, अटक गया है ठूठ।
इस्तीफा दे दीजिए, पी लोहू का घूट॥
पी लोहू का घूट, झूठ मत समझो मिस्टर।
साढे तीन साल को तुम पर चढा शनिश्चर॥
कह 'काका' कविराय, रखो पत्थर छाती पर।
सन् अडसठ मे बैठ जाउगे फिर हाथी पर॥

उज्जैन-महिमा

कवि-सम्मेलन के लिए, पहुचे जब उज्जैन।
सैर-सपाटे के बिना, पडा न मन को चैन॥
पडा न मन को चैन, घूमने निकले इकले।
जो-जो देखे दृश्य, अर्थ उलटे ही निकले॥
सुनी 'क्षीरसागर' की हमने बहुत बडाई।
किन्तु क्षीर की जगह वहा पर कीचड पाई॥

किया 'बहादुर' शब्द का, क्या अच्छा उपयोग।
नाम 'बहादुर गज' है, रहते दादा लोग॥
रहते दादा लोग, बहुत ऊचा खयाल है।
मार-धाड हो जाय, वही पर अस्पताल है॥
पहले इसी मोहल्ले मे प्रोफेसर रहते।
इसीलिए विद्यार्थी, उनको 'दादा' कहते॥

इनके भी अतिरिक्त कुछ, देखे नाम अजीब।
'दानी - दरवाजा' कहें, बसते वहा गरीब॥
बसते वहा गरीब, जमाना बडा बुरा है।
बडे आदमी रहते, वह 'कगाल पुरा' है॥
कह 'काका', यह देख हुई हमको हैरानी।
कहते 'खारा कुआ', वहा का मीठा पानी॥

खूब किया उज्जैन ने, झडे का उद्धार।
रडी-रडा हैं जहा, वह 'झडा बाजार'॥
यह झडा बाजार, दृष्टि आगे को फेरी।
मिली 'नमक मडी' भीतर मक्खन की ढेरी॥

कह 'काका' कविराय, यात्रियों को बहकाते।
ओल्ड मोहल्ले को वे 'नया पुरा' बतलाते॥

काव्यकला में घुस गई, राजनीति स्फूर्ति।
कालिदास के मार्ग पर, शास्त्री जी की मूर्ति॥
शास्त्री जी की मूर्ति, बात क्या कहें पेट की।
कहते 'घी की गली', दुकानें घासलेट की॥
'काका' डरते-डरते, 'सिंहपुरी' में आए।
सिंह एक भी नहीं, भौंकते कुत्ते पाए॥

सिंहपुरी से लौटकर, आए जब 'फ्रीगंज'।
पहुंचे एक दुकान में, हुआ हृदय को रंज॥
हुआ हृदय को रंज, समझ में बात न आई।
बना दिया बिल, चीज एक भी 'फ्री' न पाई॥
'क्षिप्रा' की क्यों मन्द-मन्द गति? समझ न आए।
'महाकाल' मन्दिर में, यात्री जीवित पाए॥

एक विरोधाभास की, और हो गई पूर्ति।
'विक्रम' के मैदान में, कवि 'रवीन्द्र' की मूर्ति॥
कवि रवीन्द्र की मूर्ति, कि विक्रम मूछों वाले।
उनके आंगन में घुस बैठे दाढ़ी वाले॥
कह 'काका' कवि, 'वाइस चासलरी' की गाडी।
वही पकड सकता है, जो रख लेगा दाढ़ी॥

—काका कोला 1968

1971 के मिस्टर

गांव छोड़, चल बम्बई, बेच भैंस औ' गाय।
तीस बार सिगरेट पी, बीस बार पी चाय॥
बीस बार पी चाय, छोडकर रसिया-ढोला।
'फिल्मी गीत' गाइयो, पीकर 'कोकाकोला'॥
कह 'काका' कविराय, अरे कलियुग के पूता।
नई रोशनी से तू क्यों, रह रहा अछूता?

जन्म-पत्र को फाड, कर कर्म-पत्र से प्यार।
बिगडे हुए रईस की झपट पुरानी कार॥
झपट पुरानी कार, व्यर्थ है घोडी-घोडा।
ला पहाड से अल्सेशन कुत्ते का जोडा॥
'काका' बनकर न्यूलाइट वाले सुम मिस्टर।
चौपाटी पर घूमो लटकाकर ट्रांजिस्टर॥

—काका की फुलझडी 1965

उल्टा पासा

घबराकर कहन लगे, भुट्टो से अय्यूब।
लडते लडत थक गए, गए जग से ऊब॥
गए जग से ऊब, हो गई गीली मूँछें।
टैंक रह गए हाफ, फौज का हाल न पूछें॥
दगा दे गये दोस्त, पड गया उल्टा पासा।
निकला बडा लडाक, आदमी वह 'छोटा सा'॥

—काका के कहकहे 1966

उल्टी चक्की

उल्टी चक्की देखकर, 'काका' दीने रोय।
कलियुग राज सुराज मे, अनहोनी भी होय॥
अनहोनी भी होय, सत्य जी रिश्वत खाए।
त्यागी निष्कामी, पद पाने को ललचाए॥
राधा सीता दुखी, सुखी है रीता फरिया।
'ड्राइएरिया' मे शराब का, बहता दरिया॥

—काका कोला 1968

ऊट और गधा

ऊट —हे गदहा साहब तुम्हे, वारम्वार सलाम।
लेउ जल्द पहचान तुम, ऊट हमारो नाम॥
ऊट हमारो नाम, तुम्हारे गुन नित गावत।
चिन्ता लागी रहे रात दिन, नीद न आवत॥
कह 'काका' कविराय, खबर लो वगि हमारी।
बीच भवर म नाव, भीर हम पर है भारी॥

गधा : घबराओ मत हे सखे ! धारो दिल मे धीर।
हिन्द देश में है भला, को तुम-सो रनधीर॥
को तुम-सो रनधीर ? टाग सुन्दर बल्ली-सी।
लम्बी-लम्बी जुल्फ, नाक है छिपकल्ली-सी॥
कह 'काका' कविराय, सुहाती तुम्हे गुलामी।
आज्ञाकारी जीव ! नेंक नहि नमकहरामी॥

ऊट : अति बुद्धी के चिह्न हैं, मित्र तुम्हारे कान।
बतला दो कब तक मिले, हमको ऊटिस्तान ?
हमको ऊटिस्तान, दिला दो मेरे अब्बा।
खिलवाऊ भरपेट 'लीद' का, तुम्हे मुरब्बा॥
कह 'काका' कविराय, फूट का मजा निराला।
न्योछावर कर दू सब, इस पर टाला-माला॥

गधा . सरकस मे यह कर दिया, हाथी ने ऐलान।
अडतालिस की जून तक, छोडें हिन्दुस्तान॥
छोडें हिन्दुस्तान, किन्तु मैं टाग अडाऊँ।
चाहे कुछ हो जाय पैर पीछे न हटाऊँ॥
कह 'काका' कवि उधर हमारा घोडा 'काना'।
रहा दुलत्ती झाड, नही खाता है दाना॥

ऊट . मेल मुझे भाता नही, करू छिन्न मे भिन्न।
तुम विलायती भूत मैं, हिन्दुस्तानी जिन्न॥
हिन्दुस्तानी जिन्न, बना रक्खे हैं राजा।
बेताला बेसुरा सुनाता, उनको बाजा॥
कह 'काका' कवि, उधर करो तुम हेचू-हेचू।
मैं अड जाऊ इधर, ऊटगाडी नहि खेंचू॥

गधा : दिल के भीतर घुस गई, मिया तुम्हारी बात।
मैं हाथी के पेट मे, ऐसी मारू लात॥
ऐसी मारू लात, तोड दू अजर-पजर।
मेरे चाचा लगते हैं लन्दन के कजर॥
कह 'काका' कविराय सुनो उटनी के शौहर।
सब्र करो कुछ रोज, गधे का देखो जौहर॥

ऊँट : मेरे चेले बन गये, सिन्ध और बंगाल।
अब मैंने पजाब मे, चली निराली चाल॥
चली निराली चाल, लगाकर पजा-अट्ठा।
देख लीजिये पलट दिया, पलभर मे पट्टा॥
कह 'काका' कवि बाध रहा लम्बा मन्सूबा।
सर करने को रहा, सिर्फ 'सरहद्दी' सूबा॥

—पिल्ला : 1950

एक प्रश्न

कभी-कभी मस्तिष्क मे, उठते प्रश्न विचित्र।
पानदान मे पान हैं, इत्रदान मे इत्र॥
इत्रदान मे इत्र, सुनें भाषाविज्ञानी।
चूहो के पिंजडे को, कहते चूहेदानी॥
कह 'काका', इसान रात-भर सोते रहते।
उस परदे को 'मच्छरदानी', क्योकर कहते?

—जय बोलो बेईमान की · 1973

एशिया-72

शोर नुमाइश का सुना, मन मे उठी उमग।
'काका' कवि दिल्ली चले, काकी जी के सग॥
काकी जी के सग, टिकट ले अन्दर धाए।
पग-पग पर मिस अगरेजी के दर्शन पाए॥
देख उपेक्षा हिन्दी की, यह सोचा मन मे।
हम दिल्ली मे नही, इस समय है लन्दन मे॥

देख चुके थे बहुत कुछ, बहुत रह गया शेष।
मडप 'राजस्थान' मे, करने लगे प्रवेश॥
करने लगे प्रवेश, साज-सज्जा लासानी।
टपक रही कण-कण से, सस्कृति राजस्थानी॥
'एनक्वारी' मे शोभित थी, माडर्न सुन्दरी।
चुनरी को अगरेजी मे, कहती थी 'छुनरी'॥

उसी भीड मे मिल गए, बोले कवि बजरग।
मडप सबसे श्रेष्ठ है, यहा 'सोवियत सघ' ॥
यहा सोवियत सघ, देखकर लाइन लम्बी।
आकर्षण बढ गया, लग गए क्यू मे हम भी ॥
'काका' खडे रहे दो घटे, भाग्य सो गया।
नौ बजे रात्रि के, फाटक बन्द हो गया ॥

प्रदर्शनी को देखकर, बनी हमारी राय।
ना देखे पछतायगा, देखे सो पछताय ॥
देखे सो पछताय, बहत्तर बार आइए।
तब पूरी 'एशिया बहत्तर' देख पाइए ॥
थक्कर बोली काकी—पैर हो गए पत्थर।
चलो—भाड मे गई सौत 'एशिया बहत्तर' ॥

—जय बोलो बेईमान की 1973

ऐतिहासिक 'बाबूजी'

अमर रहे इतिहास मे, बाबू जी का नाम।
जहा जहां पहुचे प्रभो, सफल हुए सब काम ॥
सफल हुए सब काम, जानत यात्री भाई।
रेल-मत्री रहे, न कोई रेल लडाई ॥
रक्षा-मत्री पद पाया, तब चढी जवानी।
डाल गये हथियार, हजारो पाकिस्तानी ॥

फिर कृषि-मत्री बन गये, नहीं बात यह झूठ।
हरे हो गये उन दिनो, रूखे सूखे ठूठ ॥
रूखे-सूखे ठठ, बदल काग्रेसी काया।
जनता-पार्टी मे आये, मत्री पद पाया ॥
पार्टी टूटी, कुर्सी छूटी, क्यो पछनाओ ?
इन्दिरा जी से हाथ मिलाओ, गद्दी पाओ ॥

(1981)

ओनासिस-कैनेडी विवाह

दूल्हा बासठ वर्ष का, दुलहिन कड़क जवान।
तन-मन जायें भाड़ में, धन-सम्पत्ति महान॥
धन-सम्पत्ति महान, बुढ़ापा और जवानी।
जिस दिन मिले द्वीप में, उस दिन बरसा पानी॥
इस वर्षा का भेद सुनो, प्रेमी जिज्ञासू।
स्वर्गलोक से टपके, 'कैनेडी' के आंसू॥

हाथ जोड़ हमने करी, काकी से फरियाद।
यौवन आता है प्रिये, साठ वर्ष के बाद॥
साठ वर्ष के बाद, कहें क्या तुमसे रानी।
इस विवाह को देख, भर गया मुंह में पानी॥
बासठ के ओनासिस, बासठ के ही 'काका'।
आज्ञा हो तो हम भी, कर लें धूमधड़ाका॥

(तब 'काकी' ने अपने भाई की मार्फत यह कहलाया)

काकी की फटकार

शर्म करो सठिया गये, ओनासिस की दुम्म।
धूमधड़ाका करोगे, क्या खाकर के तुम्म?
क्या खाकर के तुम्म, बनोगे बूढ़े दूल्हा?
मुंह का पानी थूक चलो घर, फूंको चूल्हा॥
खबरदार! जो मुझे छोड़ फिर इत उत ताका।
लूंगी दाढ़ी नोच, याद रखना यह काका॥

हँसगुल्ले 1969

ओवरलोड

'काका' बाइस्किल चढ़े, काकी लई बिठाय।
लल्ला-लल्ली बगल में, सोभा बरनि न जाय॥
सोभा बरनि न जाय, बीच में अटकी नैया।
चौराहे पै पगड़ीधारी, मिल्यौ सिपैया॥
ओवरलोड बताय, आंख फारी, घुर्रायौ।
द्वै रुपया को नोट, फेंकि कें पिण्ड छुड़ायौ॥

सबहि जानते रेल की, धकापेल भरमार।
डिब्बा चौवालिस को, भरे एक सौ चार ॥
भरे एक सौ चार, भीर में भटक रहे हैं।
कछु बेचारे पायदान पै, लटक रहे हैं ॥
कह काको भन्नाय, रेल सो कोउ न झगरो।
या वजमारे ने फिर हमकू ही क्यों पकरो?

—काका कोला : 1968

कंट्रोल बनाम ब्लैक

करते हैं वे घोषणा, बजा-बजाकर ढोल।
मूल्य अगर बढ़ते रहे, कर देंगे कण्ट्रोल ॥
कर देंगे कंट्रोल, यही तो चाहें 'लाला'।
धन्यवाद दें तुम्हें, गले में डालें माला ॥
कह 'काका', कर जोड़ प्रार्थना करता बदा।
करो नियन्त्रण तो चालू हो जाए धन्धा ॥

धक्का देकर धर्म को, धन की माला फेर।
चीनी बेची ब्लैक में, दो रुपये की सेर ॥
दो रुपये की सेर, पकड़ थाने पहुंचाए।
केस लड़ाय पांच सौ जुरमाना दे आए ॥
कह 'काका' जब हानि-लाभ का खाता छांटा।
दो हजार बच रहे, रहा क्या हमको घाटा ॥

—काका की कुण्डलियां : 1965

कंजूस

हलवाई की बेंच पर, बैठ-बैठ ललचाय।
बिन पैसा इस युक्ति से, मुफ्त पेट भर जाय ॥
मुफ्त पेट भर जाय, हांक तू लम्बी-चौड़ी।
दान-पुण्य में कभी न देना कानी कौड़ी ॥
कह 'काका' कविराय, मिला आटे में भूसी।
कौड़ी-कौड़ी जोड़, सीख बेटा कंजूसी ॥

—पिल्ला : 1950

कंजूस-कथा

ख्यातिप्राप्त कंजूस थे, श्री पिस्सूमल सेठ।
पंडा आए गया से, हुई सेठ से भेंट॥
हुई सेठ से भेंट, बही में नाम दिखाए।
पिंडदान करने के, फलादेश समझाए॥
लाला बोले—"हमें नहीं माफिक आता है।
दान-धर्म से दर्द पेट में हो जाता है॥"

धर्म-कर्म में देवियां, रखती हैं विश्वास।
इसीलिए पंडा गए, सेठानी के पास॥
सेठानी के पास, "देवि! पति को समझाओ।
पितरों का ऋण चढ़ा हुआ है, उऋण कराओ॥"
आश्वासन, पालागन द्वारा पेट भर दिया।
चाय पिलाकर पंडा जी को, विदा कर दिया॥

लाला आते रात्रि को, करके बन्द दुकान।
"पिंडदान कब करोगे?" लाली खाती कान॥
लाली खाती कान, सहन कब तक कर पाते।
रस्सी के घिसने से लोहे भी कट जाते॥
वह 'काका' झुक गए अन्त में तिरिया-हठ पर।
रेल-किराया दाब, चल दिए यात्रा-पथ पर॥

पंडा जी करवाएंगे, खर्च अनाप-शनाप।
पिंडदान चुपचाप हम, कर लें अपने-आप॥
कर लें अपने-आप, दक्षिणा-खर्च बचेगा।
वेष बदलकर जाय, न कोई पहिचानेगा॥
बैठ मुसाफिरखाने में, यह काम कर लिया।
चने और सत्तू खा करके पेट भर लिया॥

स्टेशन से शहर में करने लगे प्रवेश।
चेहरे पर थी दीनता, फटेहाल था वेष॥
फटेहाल था वेष, जा रहे लपके-लपके।
डंडा लिए सामने पंडा जी आ टपके॥
"वाह सेठ! यह रूप बनाया कैसा तुमने।
मुश्किल से जिजमान तुम्हें, पहचाना हमने॥"

"बोल रहे हैं मन्त्र हम, आप करो अस्नान।
पिंड तभी स्वीकार हो, करो स्वर्ण का दान॥
"करो स्वर्ण का दान, गुरु मत देखो सपने।
सोना क्या, लोहा भी पास नहीं है अपने॥
पडा जी ने कहा— "सेठ, क्यों घबराते तुम।
कर दीजिए सकल्प, बाद मे ले लेंगे हम॥"

पिस्सूमल कहने लगे, "छोडो सभी विकल्प।
सवा रुपे के स्वर्ण का, छुडवा दो सकल्प॥
छुडवा दो सकल्प, गुरु ने आँख तरेरी।
"तीर्थ-घाट पर क्यो हेटी करते हो मेरी!"
पडा का रुख देख, बढा कुछ और हौसला।
बढते-बढते, पाच रुपे मे हुआ फैसला॥

लाला घर को चल दिए, किया तीर्थ को पार।
पडा जी के हो गए रुपये पाच उधार॥
रुपये पांच उधार, महीना तीन बिताए।
अपना धन वसूल करने को पडा आए॥
लाला बोले लडके से—"सुन, बेटा घिस्सू!
कह दीजो, बीमार पडे हैं पापा पिस्सू॥"

पडा जी कहने लगे, छोडू सारे काज।
मैं अपने जिजमान का खुद ही करूं इलाज॥
खुद ही करूं इलाज, भाग जाए बीमारी।
जडी-बूटियो के अनुभव मे उम्र गुजारी॥
घोट-पीसके एक दवा, पहुचाई अन्दर।
बोले सेठ— "हमें जल्दी ले लो धरती पर॥

"कह दो, लाला मर गए, रोओ! छोड लिहाज।
लेना-देना भूलकर, भाग जाए महराज॥
भाग जाय महराज, "वचन क्यो बोलो ऐसे?"
पत्नी बोली— "जीते-जी मैं रोऊ कैसे?"
कहें सेठ ललकार, "नहीं मानेगी कब तक।
डडा एक लगे, रोएगी घटे-भर तक॥"

झूठ-मूठ रोने लगी, समझ पिया की नीत।
"हाय-हाय" को सुन हुए पडा जी भयभीत ।।
पडा जी भयभीत, पडा मूजी से पाला।
कहा कान म, "मेरे रुपये दे दो लाला!
आज न दोगे, जन्म दुबारा लेना होगा।
दान किया धन नही पचेगा, देना होगा ।।"

पिस्सूमल कहने लगे—"भाग जाउ चुपचाप।
करू शिकायत पुलिस मे, फस जाओगे आप ।।
फस जाओगे आप, आ रही है उबकाई।
जाने क्या तुमने जहरीली दवा पिलाई ।।"
कह पडा घबराय, "दया ब्राह्मण पर कीजे।
वह भी छोडे, लो यह पाच और ले लीजे ।।"

—*जय बोलो बेईमान की* 1973

कच्चा-तीवू

क्यो करते आलोचना, देते मन को क्लेश।
प्रधान मत्री नारि हैं, ऐसे दो ही देश ।।
ऐसे दो ही देश, *न्याय दर्शन* के द्वारा।
समझो श्रीलका 'सिस्टर कन्सर्न' हमारा ।।
'काका, आब्लीगेशन कभी व्यर्थ नहिं जाता।
कच्चा-तीवू दिया, हो गया पक्का नाता ।।

—*काका हाथरसी* 1975

'कट' की हठ

अमरीकन कट पैन्ट पर, ब्लाउज कट बुशर्ट।
पहिले हरीकिशोर थे, अब मिस्टर 'हरबर्ट' ।।
अब मिस्टर हरबर्ट, रूल रहे चुरट दबाये।
डेविड कट मूँछें, दिलीप कट बाल बनाये ।।
कह 'काका', 'कट' प्रगति फटाफट करते जाओ।
सूर्पणखा कट नाक, होय तब नाम कमाओ ।।

—*काका के कहकहे* 1966

कम्यूनिसिपल्टी

नगरपालिका के लिए पड़ने लागे वोट।
कहीं बोतलें खुल रहीं, कहीं बट रहे नोट॥
कहीं बट रहे नोट, और सब रहे अभागे।
वोट गिने तो कम्यूनिस्ट पार्टी थी आगे॥
कामरेड बोले—"प्रस्ताव हमारा धर दो।
कल से इसका नाम, 'कम्यूनिसिपल्टी' कर दो॥"

—काका के धड़ाके 1969

'कर' कमाल

'कर' कर-करके चौगुने, ठप्प किया व्यापार।
बैठे कर पर कर धरे, धन्य-धन्य सरकार॥
धन्य-धन्य सरकार, बचाकर 'कर' से लाओ।
उसको 'बचत-योजना' खाते जमा कराओ॥
कह 'काका' कवि, कर से कैसे बच पाए नर।
मर जाएगा तो भी देना पड़े मृत्यु-कर॥

उत्पादन-कर, आय-कर, बिक्री-कर मजूर।
लगवा दो सन्तान-कर, सदके जाउ हुजूर॥
सदके जाउ हुजूर, जाच करवाओ घर-घर।
दस रुपये प्रति लडकी, बीस लगें लडके पर॥
कह 'काका' कविराय, 'यूजफुल' राय हमारी।
हो 'परिवार-नियोजन', कोष बढे सरकारी॥

'कर' दाता की पुकार

गणतन्त्री सरकार का, कैसा उल्टा राग।
परेशान करता हमे, इनकम टैक्स विभाग॥
इनकम टैक्स विभाग, मच पर नेता आते।
अल्प सख्यको की रक्षा के ढोल बजाते॥
'काका' अपना वर्ग इसी श्रेणी मे आता।
हैं सत्तर करोड मे साठ लाख 'कर' दाता॥

—काका के कारतूस 1963

करुणाञ्जलि

ताशकन्द को तुम गए, 'ललिता' के ब्रजचन्द।
लौटे तो लौटे यहा, करके अखियां बन्द॥
करके अखिया बन्द, बिलखता जन-गण छोड़ा।
मर्त्यलोक से चले, स्वर्ग से नाता जोड़ा॥
'काका', जग मे हुआ न कोई ऐसा बन्दा।
दो-दो देशों के प्रधान, दें जिसको कन्धा॥

करुण-हास्य कैसे निभें, दोनों रस विपरीत।
असुवन से कैसे लिखूं, हास्य-व्यंग्य के गीत॥
हास्य-व्यंग्य के गीत, जबहि जब अवसर आए।
लालकिले मे लालबहादुर खूब हँसाए॥
कह 'काका', शास्त्री जी बदला भला चुकाया।
हमने तुम्हें हँसाया, तुमने हमें रुलाया॥

—काका के कहकहे। 1966

फर्ज का मर्ज

अमरीका ने कृपा कर, दिया हिन्द को कर्ज।
हिन्द देय नेपाल को, है यह उसका फर्ज॥
है यह उसका फर्ज, सिलसिला बढ़ता आगे।
नेपाली से सेठ किरोड़ीमल ले भागे॥
कह 'काका', उनसे पठान महमूद ला रहे।
चला कर्ज का मर्ज, 'इकन्नी सूद' खा रहे॥

—काका के कहकहे। 1966

कर्जा

जन-गण-गौरव स्वर्ग है, स्वर्ग यज्ञ औ' योग।
करजा लेकर खाइए निशदिन मोहनभोग॥
निशदिन मोहनभोग, करो काया [illegible]।
आत्मघात में [illegible] मज नहीं [illegible]
कह 'काका' [illegible] कुछ रोग [illegible]
मरना तो [illegible] ' लेकर [illegible]

[illegible] 1965

कर्मयोगी

राजनीति मत छोडिए, जब लग घट मे प्राण।
कबहू दीन दयाल के, भनक परेगी कान॥
भनक परेगी कान, समझिए मर्म धर्म का।
कोटा पूरा करता है प्रारब्ध कर्म का॥
'काका' कर सघर्ष कि जब तक दम मे दम है।
सन्यासी से बडा 'कर्मयोगी' कलियुग म॥

—जय बोलो बेईमान की . 1973

कलकत्ता-कीर्ति

'काका' कवि ने जब किया कलकत्ता प्रस्थान।
कुछ का कुछ देखा यहा, अक्ल हुई हैरान॥
अक्ल हुई हैरान, समझ म मर्म न आया।
गए 'धरमतल्ला', मे लेकिन धरम न पाया॥
घूमे फिरे और सारा बाजार टटोला।
कोल्हू एक नही, पर कहते 'कोल्हू टोला'॥

'मुर्गीहट्टा' मे गए, यह बजार विख्यात।
वहा बिकें स्टेशनरी, स्याही कलम दावात॥
स्याही कलम दावात, न कोई मुर्गी पाई।
'कुकुड् कू' की भी कोई आवाज न आई॥
कह 'काका', 'चीना बाजार' भी निकला जाली।
चीनी कोई नही, हजारो थे बगाली॥

पहुचे 'लाल-बाजार' मे, मिला न कोई लाल।
'बडतल्ला' म बडा क्या, छोटा भी नही ताल॥
छोटा भी नहि ताल, नाम झूठा रखवाया।
'राजा-कटरा' गए न कोई राजा पाया॥
'काका' किसने ठेका लिया नाम रखन का।
'निम्बूतल्ला' मे न एक भी नीबू देखा॥

रक्खा 'चोर बगान' का, कितना भद्दा नाम।
चोर नही दीखे वहा, व्यर्थ किया बदनाम॥
व्यर्थ किया बदनाम, 'बाघ बाजार' घुमाए।
किन्तु बाघ की जगह, यहा पर कुत्ते पाए॥
कह 'काका' कविराय, नाम कैसे रखवाए।
'मसजिद बाडी' म ज्यादातर हिन्दू पाए॥

आशा उत्कठा सहित, पहुचे 'बहू बाजार'।
बहू हाथरस के लिए, ले आए दो-चार॥
ले आए दो-चार, सेठ बैठे थे गुमसुम।
हमने पूछा—"क्यो जी, बहू बेचते हो तुम ?"
इतना सुन लाठी निकाल कर लाला लाए।
'काका' भागे, जान बच गई लाखो पाए॥

फिर 'हाथी बागान' को, करी टैक्सी एक।
हाथी कोई नही था, गदहे मिले अनेक॥
गदहे मिले अनेक, व्यर्थ करते है हल्ला।
मानिक मिलते नही, नाम है 'मानिकतल्ला'॥
काका 'थ्येटर रोड' गए पर, मिला न थ्येटर।
तीन रग के झडे, देखे 'चौरगी' पर॥

जनता को गुमराह क्यो, करते हो बेकार ?
मछली के दर्शन नही हैं, 'मछुआ बाजार'॥
है मछुआ बाजार, अफीमी वहा न रहते।
फिर भी उसको क्यो 'अफीम चौरास्ता' कहते॥
कह 'काका' कवि 'कलाकार स्ट्रीट' घुमाए।
वहाँ कही पर कलाकार जी हमे न पाए॥

पहुचे 'श्याम बाजार' जब, मिले न हमको श्याम।
फिर राधा बाजार' म, राधा का क्या काम ?
राधा का क्या काम, यहा भी धोखा खाया।
गए 'बासतल्ला' मे, कोई बास न पाया॥
कह 'काका' कविराय, ठोककर आए मत्था।
मिला विरोधाभास, धन्य नगरी कलकत्ता॥

—काका कोला 1968

कलयुगी कुंडलिया

लल्लू-पल्लू पुज रहे, पंडित धक्के खाय।
बारह सौ की भैंस है, सौ रुपये की गाय॥
सौ रुपये की गाय, प्रतिष्ठा बाढ़ी खर की।
घोड़े से तिगुनी कीमत, होती खच्चर की॥
सरस्वती पर हावी है, लक्ष्मी का उल्लू।
विद्यालय के मैनेजर हैं, लल्लू पल्लू॥

कुत्ता बैठा कार में, मानव मांगे भीख।
मिस्टर दुर्जन दे रहे, सज्जनमल को सीख॥
सज्जनमल को सीख, दिल्लगी अच्छी खासी।
बगुला के बंगले पर हंसराज चपरासी॥
हिन्दी को प्रोत्साहन दे, किसका बलबुत्ता।
भौंक रहा इंगलिश में, मन्त्री जी का कुत्ता॥

—जय बोलो बेईमान की 1973

कलियुगी बाबू

पड़े पड़े ही पलंग पर, करें चाय का ध्यान।
हवन करें सिगरेट का, होय आत्मकल्यान॥
होय आत्मकल्यान, मुक्ति का मार्ग विचारें।
ठूंसें मुख में पान, पीक आंगन में मारें॥
कह 'काका' कविराय, नहीं आदत पर काबू।
शत शत तुम्हें प्रणाम, धन्य कलियुग के बाबू॥

—काका की फुलझड़ी 1963

कलियुगी होली

काका होली खेलिए, तजकर रंग गुलाल।
लाल आंख, मुंह ब्लैक हो, गल जूतों की माल॥
गल जूतों माल, चढ़ा दो बोतल ठर्रा।
बाप दंडवत करे, देख बेटा का ढर्रा॥
गंदे गाने गाकर, गर्दभ स्वर में रेंको।
मिलें मार्ग में उनपर, गोबर कीचड़ फेंको॥

—काका कोला 1968

कवि-कल्पना

भोजन करने ट्रेन मे, बैठे कविवर 'सूड'।
सब्जी घर पर रह गई, बिगडा उनका 'मूड'॥
बिगडा उनका 'मूड', प्रेम से पूछा हमने।
"खुश्क हथेली पर क्यो पूडी रगडी तुमने ?"
उत्तर मिला कि रूखी पूडी लगती फीकी।
इसीलिए कल्पना कर रहा हू चटनी की॥

बुद्धि आपकी तीव्र है, धन्य-धन्य कविराज।
एक निवेदन हम करें, होना मत नाराज॥
होना मत नाराज, और कुछ आगे बढते।
अगर कल्पना ही की है, रबडी की करते॥
"सुन 'काका' मैं नही बजट से आगे जाऊ।
रबडी की कल्पना करू क्यो खर्च बढाऊ ?"

—फिल्मी सरकार : 1972

कविता का 'भाव'

सम्मलन के मच पर, काका किया प्रवेश।
कुश्ती लडने लग गये, रूपक, उपमा, श्लेष॥
रूपक, उपमा, श्लेष, लगाकर तुक मे धक्के।
छद छोड, छ-छ लाइन के मारे छक्के॥
अनुप्रास, कल्पना, कवित्व, कमाल देखिये।
यह तो मेरी 'दुलकी' है, 'रोहाल' देखिये॥

लटटू हम पर हो गये, सेठ हुलासीराव।
"अति शुन्दर है आपकी, कविता काकाशाव॥
कविता काका शाव, हाश्याश म्हाने भायो।
पण कविता को भाव समझ मे कोन्नी आयो॥"
सेठानी ने कहा—"भाव के पूछो वान्ने ?
छै पाती की कविता के दे दो छै आने॥"

—काका के कहकहे 1966

कवि सम्मेलन

कवि-सम्मेलन मे गए, कविवर 'वटाढार'।
पहुचे तो स्वागत हुआ, पड़े गले मे हार॥
पड़े गले मे हार, प्रशसा अग्रिम पाई।
फोटो खीचे गए, चाय भर पेट पिलाई॥
कह 'काका', जब पूरा सब प्रोग्राम हो गया।
छोड़ मच, संयोजक अतर्धान हो गया॥

तीन बज गए रात्रि के, नही मिले श्रीमान।
छूछ गली की पूछ पर, उनका मिला मकान॥
उनका मिला मकान, पड गया चेहरा काला।
दरवाजे पर लटक रहा, छह लीवर ताला॥
कह 'काका', कवि किस्मत अपनी ठोक रहे थे।
समझदार कुछ कुत्ते, उन पर भौंक रहे थे॥

—काका के कारतूस : 1963

कवि सम्मेलनीय अनुभव

कवि-सम्मेलन मे गए, बैठी ऐसी छाप।
भीड इकट्ठी हो गई, लेने ओटोग्राफ॥
लेने ओटोग्राफ, अह मे चूर हो गए।
'काका' समझे, हम भी राजकपूर हो गए॥
एक प्रशसक छै आने का, पैन दे गया।
'पत्रम् पुष्पम्' भरा लिफाफा, खीच ले गया॥

फूलो की माला निरख, मत फूलो कविराज।
पीछे क्या होगा, इसे मत भूलो कविराज॥
मत भूलो कविराज, पडी हैं माला जितनी।
सम्मेलन के बाद उपेक्षा, होगी उतनी॥
कह 'काका' कवि, तागा, रिक्शा, कुली न पाओ।
ाद बिस्तरा, प्लेटफार्म पर दौड लगाओ॥

—काका कोला : 1968

काका-काकी सम्वाद

काव्य-कला की कोठरी, छन्दन जडे किवार।
तारे लागे 'श्लेष' के, भरे 'यमक' भडार॥
भरे यमक भडार, छमाछम आई काकी।
उछल पडे खैयाम, सामने देखा साकी॥
देवी जी! कोई मौलिक कल्पना सुझाओ।
फडक उठें श्रोता, ऐसे कुछ 'भाव' बताओ॥

'भाव' बहुत उचे कहू, नोट करो भरतार।
चार रुपैया की किलो, मिले उर्द की दार॥
मिले उर्द की दार, पडे अब कैसे पूरा?
एक रुपैया पाव, बिक रहा चीनी-बूरा॥
कहो, कौन से कवि जी ऐसे भाव लिख रहे?
मटर-टमाटर, कलाकन्द के भाव बिक रहे॥

और बताऊ भाव कुछ, और बताऊ दाम?
दस पैसे मे मिलेगा, सिर्फ एक बादाम॥
सिर्फ एक बादाम, अधिक बल-ताकत चाहो।
तो असली घी के, इजेक्शन लगवा आओ॥
जिस 'वनास्पति' की करते थे, सभी बुराई।
आज उसी के लिए, तरसते लोग-लुगाई॥

क्या ले बैठी—झीकना, किया रग मे भग।
चलो सिनेमा देखने, आज हमारे सग॥
आज हमारे सग, पडेंगी तुम्हे दिखाई।
'बालकनी' की टिकट ले, रही मिस महगाई॥
हाय गरीबी, हाय गरीबी, जो चिल्लावें।
वे ही 'क्यू' मे लगे, टिकिट को धक्के खावें॥

खेल खत्म जब हो गया, वे थी क्लान्त-अशान्त।
'समझे हम तुम हो दुखी, देखी फिल्म दुखात॥'
देखी फिल्म दुखात, तुम्हे सूझा है ठट्टा।
खीच ले गया कोई, हमारा नया दुपट्टा॥

यह सुनकर हँस पडी, नये लडको की टोली।
उन्हे देखकर करुण स्वर मे काकी बोली—
—"इन्ही लडको ने ले लीना, दुपट्टा मेरा।"

—जय बोलो बेईमान की 1973

काका की ऊंट गाड़ी

मारग मे से हट गया, जब अंग्रेजी ठूठ।
आज़ादी को लादकर, लाया मेरा ऊट।।
लाया मेरा ऊट, बैठ गाडी मे जाओ।
अमरीकन अगरेज ! सामने से हट जाओ।।
कह 'काका' कविराय, ध्यान से देखो भइया।
झण्डे वाला चक्र, ऊट गाडी का पहिया।।

पन्द्रहवी तारीख से, हुआ ऊट आज़ाद।
साहब की सब साहबी, कर दीनी बरबाद।।
कर दीनी बरबाद, घुमाते जो डण्डा।
अपने हाथो लगा रहे, थाने पर झण्डा।।
कह 'काका' कवि, कोतवाल के साथ सिपगा।
घूम रहे हैं लगा-लगा कर, बैज तिरगा।।

कहा कह छवि आपकी, मेरे ऊट हजूर।
लम्बी-लम्बी टाग है, जैसे पेड खजूर।।
जैसे पेड खजूर, सुहावत रूप अनूपा।
ऊटनी के पतिदेव ! गधा के लगते फूफा।।
कह 'काका' कविराय, सुधर गर्दन का ढाचा।
बारम्बार प्रनाम अहो ! हाथी के चाचा।।

गवरमेन्ट को चाहिये, उन्हे भेज दे जेल।
जिन लोगो ने आपके, डाली नाक नकेल।।
डाली नाक नकेल, एक प्रस्ताव बनाऊ।
रख ससद मे फौरन, उसको पास कराऊ।।
कह 'काका' जो व्यक्ति रहट-मे ऊट चलावे।
तीन साल की सख्त सज़ा वह लम्बी पावे।।

धन्य-धन्य श्री ऊट जी ! मारवाड के हम।
लम्बाई का मिल गया, मुफ्त तुम्हें लैसन।।
मुफ्त तुम्हें लैसन, त्याग का पाठ पढाते।
मीठा हमको छोड, स्वय तुम कडुवा खाते।।
कह 'काका' कवि, आज तुम्हे मिष्ठान्न खिलाऊ।
आज्ञा हो तो, दो बोरा चोनी ले आऊ।।

स्वतन्त्रता की खुशी मे, झण्डा दिया लगाय।
मीठी प्याऊ के लिये, परमिट लिया मगाय।।
परमिट लिया मगाय, खाड की चारो बोरी।
दई ब्लैक मे बेच, नही इसमे कुछ चोरी।।
कह 'काका' कविराय, मौज कर रहा हिलन्दा।
'आजादी' से हुआ चचा, दो सौ का धन्दा।।

[तिरगे झण्डो से सुसज्जित 'काका' की ऊटगाडी 15 अगस्त को कांग्रेस *विशाल जुलूस के साथ हाथरस के बाजारो मे निकली थी, इन पर लाउडस्पीक* लगे हुए थे जिनपर राष्ट्रीय रेकार्ड बज रहे थे और उक्त फुलझडियो की पर्चिय बाटी जा रही थी।]

—फिल्ला 19

काका-कोश

'काका' कोश बना रहे, अर्थ अनोखे छाट।
समझौता का अर्थ है, महासचिव ऊथाट।।
महासचिव ऊथाट, मौलवी, पडित मुल्ला।
खुल्लमखुल्ला कहे, शेख माने अब्दुल्ला।।
मकतब म बच्चो को, सिखला रहे खलीफा।
लिख ला बेटे ! चरणसिंह माने इस्तीफा।।

रक्षक को भक्षक समझ, उन्नति माने रेड।
नेता माने भेडिया, जनता माने भेड।।
जनता माने भेड, अर्थ उल्टा पहचानो।
जनसेवक का सही अर्थ, तनसेवक मानो।।
'काका' कवि का कोश, अनोखा औरअजूबा।
सन्त फतेहसिंह के मानी, पजाबी सूबा।।

अफ्सर माने रौब है इनकम माने टैक्स।
भौंरा माने भगत जी, पूजन माने सैक्स ॥
पूजन माने सैक्स, सनी नारी दुखियारी।
टापलैस माने शिक्षित, आधुनिका नारी ॥
समय-समय पर अर्थ, बदल जाते युग-युग में।
गिरहकट्ट को 'कलाकार', कहते कलियुग में ॥

रिश्वत माने हक्क है, इज्जत माने नाक।
मक्खन माने खुशामद, झगडा माने 'पाक' ॥
झगडा माने पाक, बात यह सच्ची मानो।
मुँह पर करे प्रशंसा, उनको 'चमचा' जानो ॥
कह 'काका' कवि, 'एटम्' मान सत्यानाशम्।
वियतनाम के माने, लिख लो अठ्यानाशम् ॥

फार्वर्ड कहते उसे, जिसे न लाज - लिहाज।
जितनी कसम खाय वह, उतना धोखेबाज ॥
उतना धोखेबाज, धूर्त जी माला जपते।
चतुर वही कहलाय, चाल जो टेढ़ी चलते ॥
दल-बदलू का अर्थ, समझ मन्त्री का आसन।
तू - तू मैं - मैं माने, राष्ट्रपति का शासन ॥

भूतपूर्व का अर्थ है, बहुत पुराना भूत।
मात - पिता जिससे डरें, उसका नाम सपूत ॥
उसका नाम सपूत, मूँग छाती पर दलता।
आजादी के माने, समझो उच्छृंखलता ॥
बदल गए शब्दार्थ, क्योंकि बदली मर्यादा।
चेला माने गुरु, गुरु के माने दादा।

अर्थ पुरान व्यर्थ हैं, सीखो नय प्रयोग।
बीटल माने योग है, योगी माने भोग ॥
योगी माने भोग, नशे में लम्बी तानो।
हिप्पी के माने, विलायती साधु जानो ॥
कह 'काका' कविराय, ससुर माने चाचा जी।
जिनसे स्वारथ सधे, उसे कहते जीजा जी ॥

भारत माने गाधी, तिब्बत मान बुद्ध।
रशिया माने उपग्रह, चीनी माने युद्ध॥
चीनी माने युद्ध, छोडकर रोना-धोना।
नोट करो 'काका', अमेरिका माने सोना॥
महगा माने ब्रिटानिया, सस्ता माने जापानी।
काश्मीर का अर्थ समझ लो, खीचातानी॥

सोशलिस्ट जानो उसे, जो ठनठन गोपाल।
कम्यूनिस्ट का अर्थ है, कम्पलीट हडताल॥
कम्पलीट हडताल, हुकूमत मान दिल्ली।
हिंसा माने शेर, अहिंसा माने बिल्ली॥
ताकत मान डडा, पार्टी माने झडा।
ससद को मठ समझ, एम० पी० माने पडा॥

और अर्थ कुछ रह गए, उन पर दीजे ध्यान।
सन्त विनोबा की जगह, लिख दीजे भूदान॥
लिख दीजे भूदान, हाथरस माने चाकू।
कम्बल माने सम्बल, चम्बल माने डाकू॥
राजा जी को अगरेजी के, अब्बा मानो।
अन्नादुरई को उनके भी, बब्बा जानो॥

टीचर माने फटीचर, बाबू माने दास।
फोडा माने डाक्टर घोडा माने घास॥
घोडा माने घास, चट को निपुण मानिए।
सच्चा सीधा होय, उसीको गधा जानिए॥
श्री निरक्षराचार्य, बने बैठे आचारी।
राजा माने पर्स नर्स माने बीमारी॥

लडकी माने हुस्न है लडका माने इश्क।
मम्मी माने कुछ नही, डैडी माने रिश्क॥
डैडी माने रिश्क, छोड राजी-नाराजी।
ना-ना कहे नायिका, समजो हाजी-हाजी॥
कह काका' कविराय, प्रमिका माने साडी।
काकी माने कविता, काका माने दाढी॥

—काका कोला 1968

काकी उवाच

एवरेस्ट पर पहुंचकर, मार लिया क्या शेर ?
पर-नारी गुणगान के, लगा रहे हो ढेर ॥
लगा रहे हो ढेर, न मेरी करी बड़ाई।
शिमला, नैनीताल, मसूरी चढ़कर आई ॥
चोटी पर चढ़कर वह, डोले ऐंठी-ऐंठी।
मुझको देखो, दाढ़ी के ऊपर चढ़ बैठी ॥

—काका हाथरसी : 1975

'का' की करुण कथा

'का' पर कष्ट अनेक हैं, कृपा करो करतार।
देखो 'कजरकोट' का, कर डाला उद्धार ॥
कर डाला उद्धार, 'कच्छ' पर डाला डाका।
'कच्चातीवू' पर बैठा, रावण लंका का ॥
कल तक 'काश्मीर' का, देख रहे थे सपना।
आज मियां जी, 'कूच विहार' बताते अपना ॥

—काका कोला : 1968

कागजी कर्तब

व्यर्थ समझ मत कीजिये, किसी वस्तु को नष्ट।
श्रम द्वारा निकृष्ट भी, बन जाते उत्कृष्ट ॥
बन जाते उत्कृष्ट, 'वेस्ट' को बैस्ट बनाओ।
कागज-पेन्सिल, पेस्ट और कैंची ले आओ ॥
रद्दी-भद्दी चीज, फेंक कर पछताते हैं।
कभी-कभी गुदड़ी से, 'लाल' निकल आते हैं ॥

कला सीख कीजे भला, सब पर पड़े प्रभाव।
पानी पर तैराइये, कागज वाली नाव ॥
कागज वाली नाव, भाग जायेगा नाका।
कागज की बन्दूक, देख डर जायें काका ॥
फोटो-फ्रेम, फूलदानी, सीढ़िया बनाओ।
खेल-खेल में कागज के, करतब दिखलाओ ॥

—फिल्मी सरकार : 1972

कानपुर काव्य

काका आये 'कानपुर', पकड कालका मेल।
प्लेट फार्म पर मिल गये, घोटमघोट पटेल ॥
घोटम घोट पटेल, कानपुर नगर दिखाया।
गये 'नौघडा' किन्तु एक भी घडा न पाया ॥
घडा नही मिला, इसका हम मलाल नहीं था।
लेकिन 'मालरोड' पर भी तो, माल नहीं था ॥

किंकर्त्तव्यविमूढ थे, हुआ हृदय को रज।
मूड बदलने के लिए, चले 'कलक्टर गज' ॥
चले कलक्टर गज, चकित हम देख रहे थे।
कई 'कलक्टर साब', वहा गुड बेच रहे थे ॥
कह 'काका', भोली जनता को क्यो बहकाते।
मडी गुड की, उसे 'कलक्टर गज' बताते ॥

सौन्दर्य के दर्प को, करते व्यर्थ ज्लील।
हस नही, मोती नही, कहते 'मोती झील' ॥
कहते मोती झील, पडी सूखी सी खाली।
'चमनगज' मे बहते, गन्दे नाले-नाली ॥
'मूलगज' भी दिया हमे निर्मूल दिखाई।
बैंगनमल के साथ, भटकती मूली बाई ॥

'जुही' नाम अच्छा था, मिला सुखद सकेत।
निकला 'लेबर एरिया', धूआ-धक्कड-रेत ॥
धूआ-धक्कड-रेत, तिलक छापे से डरते।
सूट-बूट धारी जो, 'तिलक नगर' मे रहते ॥
हुई नवाबी खत्म, हाकते इक्के-तागे।
फिर भी उसे 'नवाबगज' कह रहे अभागे ॥

पहुचे 'चुन्नीगज' मे, कितना प्यारा नाम ?
बोतल दाबे बगल मे, मिले उमर खैय्याम ॥
मिले उमर खैय्याम, नाम सब थोथे पाये।
'हर्षनगर' मे खुशीराम जी, रोत पाये ॥
कह 'काका' कवि एक गली थी, 'रोटीवाली'।
वहा आख मटकाती, दो-दो चोटी वाली ॥

साहस कर आगे बढे, सिद्ध होय कुछ कार्य।
'आर्य नगर' मे खडे थे, खटमल सिह अनार्य॥
खटमल सिंह अनार्य, रोड 'विरहाना' आई।
नही एक भी विरही-विरहिन पडा दिखाई॥
कह 'काका' 'आचार्य नगर' दर्शन को आए।
भाग गये आचार्य, घूमते चेले पाये॥

गये 'फूल वाली गली', देखा दृश्य विराट।
फूल मिल रहे धूल मे, लगी हुस्न की हाट॥
लगी हुस्न की हाट, यात्री चक्कर खाते।
जहा कबाडी रहते, उसे 'परेड' बताते॥
कह 'काका' कवि, 'विष्णुपुरी' मे विष्णु न पाये।
छोड कानपुर, कान अपने घर आये॥

—फिल्मी सरकार · 1972

कान महान्

आख-नाक-पुतली-पलक, हाथ-पाव-मुख-दत।
नख-शिख-वर्णन से भरे, रीति-काव्य के ग्रथ॥
रीति-काव्य के ग्रथ, सभी हमने पढ डाले।
इतने पलटे पृष्ठ, पडें अँगुली पर छाले॥
बिना खून के नाखूनो की मिली बडाई।
किन्तु किसी मे, कान-प्रशसा कही न पाई॥

नददास, कवि जायसी, घनानद, मतिराम।
देव-बिहारी ने नही, लिया कान का नाम॥
नही कान का नाम, पढे रसखान व केशव।
'कालिदास' कृत 'शाकुन्तलम्' व 'कुमारसभव'॥
रत्नाकर कवि, तुलसी, सूर, चदबरदाई।
विद्यापति, पद्माकर को भी याद न आई॥

काव्य पुरातन छोडकर, परख आधुनिक काल।
पत-निराला भी चले, वही पुरानी चाल॥
वही पुरानी चाल, कान के कुछ गुण गाती।
धर्मवीर की 'कनुप्रिया' सार्थक हो जाती॥

अगर 'उर्वशी' में, दिनकर कर्णस्तुति गाते।
एक लाख से दुगुना, पुरस्कार पा जाते॥

भारतेन्दु हरिऔध ने, दिया न इस पर ध्यान।
कैसी लगती नायिका, अगर न होते कान॥
अगर न होते कान, बालियाँ नहीं सुहातीं।
कहाँ, कहाँ पर कर्णफूल-कुंडल लटकातीं॥
कैसे गातीं गीत, मार नूपुर के ठुमका।
गिरता नहीं 'बरेली के बाजार में झुमका'॥

ऐंड बैंडे, बेतुके पा जाते सम्मान।
ऐनक द्वारा बढ़ गई, मिस-मिस्टर की शान॥
मिस मिस्टर की शान, कृतिए कर्ण-करिश्मा।
बिना कान आँखों पर, कैसे टिकता चश्मा॥
मन्त्री जी के कान, विधायक कैसे भरते।
चमचा भैया कानाफूसी कैसे करते॥

छोटे बच्चों में भरा, कान ज्ञान विज्ञान।
गंदी बातें मत करो, पक जाएँगे कान॥
पक जाएँगे कान, छात्रगण समझ न पाए।
गलती करे दिमाग कान क्यों पकड़े जाएँ॥
कानों से जीवों ने, जीवन संज्ञा पाई।
हुए अवतरित, कानखजूरा कानसलाई॥

मुखमंडल के संतरी, पहरेदार प्रधान।
आँखों से आँखें लड़ीं, खड़े हो गए कान॥
खड़े हो गए कान बनो कानों के सच्चे।
आदर्शों से लुढ़क जाय, कानों के कच्चे॥
कान शब्द का दुरुपयोग, करते मनमाना।
एक आँख वाले को क्या कहते हो काना॥

कर्णेद्रिय से चल रहे तार और बेतार।
बिना कान के फोन या, हैडफोन बेकार॥
हैडफोन बेकार आपरेटर है लक्की।
कान न हों तो बैठे बैठे मारें मक्खी॥

पायलेट के कान, मार्ग को आंक रहे है।
सुनकर वायरलेस, प्लेन को हाक रहे है।।

शब्द बने हैं, कान से ही थकान-ढलकान।
पर मकान दूकान मे, घुसे हुए हैं कान।।
घुसे हुए हैं कान, हास्य की विधा बताई।
कानो तक मुह फैलाया, 'मुसकान' कहाई।।
'ए० कानन' का गायन, सुनकर बोले लाला।
एक जमाने मे प्रसिद्ध थी, काननबाला।।

कान-कीर्ति को ढूढने, क्यो जाते हो दूर।
कान-कृपा से 'कानपुर', शहर हुआ मशहूर।।
शहर हुआ मशहूर, ब्राह्मण हैं कनबजिया।
कान पकडकर पैसे लेता कानमैलिया।।
कामशास्त्र तज, कानशास्त्र पर रखो निष्ठा।
तानसेन को कानसेन से, मिली प्रतिष्ठा।।

कुडल धारे कान म, हुए अवतरित कर्ण।
देते थे जो दान मे, नित्य सवा मन स्वर्ण।।
नित्य सवा मन स्वर्ण, मानते गायक श्रोता।
बिना श्रोत्र, स्वर-श्रुतियो का अस्तित्व न होता।।
सभी इन्द्रियो से कर्णेन्द्रिय, अधिक जरूरी।
श्रवण-कीर्तन बिन है, 'नवधा भक्ति' अधूरी।।

कान्ह-कृष्ण ने कान को, जग मे किया प्रसिद्ध।
कनटोपा धारण करें, ब्रज के साधक सिद्ध।।
ब्रज के साधक-सिद्ध, मुरकिया कहा पहनते।
'कानाबाती कुर्र', कुवर जी कैसे करते।।
गीत 'कर्णछेदन' के काकी कैसे गाती।
'काका' कवि की यह कविता, कैसे बन जाती।।

—जय बोलो बेईमान की। 1973

कार-चमत्कार

[इसमें 64 कार हैं, सरकार]

'अहंकार जी' ने कहा, लेकर एक 'डकार'।
कितने कार-प्रकार हैं, इस पर करें विचार॥
इस पर करें विचार, कार को 'नमस्कार' है।
'ओंकार' में 'निर्विकार' में, व्याप्त कार है॥
'निरकार' या 'निराकार' का चक्कर छोडो।
कलियुग में 'साकार', ब्रह्म में नाता जोडो॥

मजिस्ट्रेट की कोर्ट में, होने लगी 'पुकार'।
'पेशकार' के सामने पहुंचा 'पैरोकार'॥
पहुंचा पैरोकार, प्रभो 'उपकार' कीजिए।
आया एक 'शिकार', उसे 'स्वीकार' कीजिए॥
'पुरस्कार' है यह, इससे 'इकार' न करिए।
'साधिकार' 'सुखकार', नोट पाकिट में धारिए॥

'तदाकार' हो जाइए, तजकर 'मनोविकार'।
'सरोकार' क्या कौन पर, किसका है 'अधिकार'?
किसका है अधिकार, आप से हमें प्यार है।
पूर्व जन्म के 'संस्कार' का, 'चमत्कार' है॥
'पत्रकार' 'अपकार' करे 'प्रतिकार' न करिए।
'काव्यकार' औ' 'व्यंगकार' से बचकर रहिए॥

पडे कला के फेर में, 'चित्रकार'-'छविकार'।
'नृत्यकार' जो रट रहे, कत्थक के 'तथकार'॥
कत्थक के तथकार, बिचारे 'गीतकार' जी।
करें प्रतीक्षा, नहीं मिले, 'संगीतकार' जी॥
'कलाकार' 'बकार', सडक पर घूम रहे है।
'साहूकार' सेफ से चिपके, झूम रहे है॥

'बद' अच्छा लेकिन बुरा, होता है 'बदकार'।
मूर्धन्य 'मक्कार' है, गुरु 'भूदराकार'॥
गुरु भूदराकार, आप तो 'जानकार' हैं।
उनके चेले उच्चकोटि के 'चाटुकार' हैं॥

थी 'भ्रष्टालकार' तख्त पर बैठे जब तक।
'अधकार' यह दूर नहीं हो सकता तब तक॥

ताऊ जी थे तबलिया, मामा जी मुख्तार।
'बीनकार' थे बाप जी, दादा 'लेखाकार'॥
दादा लेखाकार, बनी तकदीर हमारी।
करी वकालत पास, हुए उत्तराधिकारी॥
पुरखाओं की मिक्श्चर-कल्चर निभा रहे हैं।
मवक्किलों के सर पर, तबला बजा रहे हैं॥

पड़ी नहीं जिस पर कभी, पत्नी की 'फटकार'।
उस भौंदू भरतार को लाख बार 'धिक्कार'॥
लाख बार धिक्कार न 'हाहाकार' कीजिए।
'तिरस्कार' 'दुतकार', सभी का स्वाद लीजिए॥
'बहिष्कार' कर दें तो भी हिम्मत मत हारो।
वे मारें 'फुफकार' आप उनको पुचकारो॥

काकी जी की कर रहे, काका 'जैजैकार'।
तुकमिल्ला कुछ कार के, बतला दो सरकार॥
बतला दो सरकार, चपल नैना मटकाए।
'अलकार', 'झकार' और 'टकार' बताए॥
ड्राइंग के दूकानदार पर जल्द जाइए।
मुन्ने को 'दरकार', एक 'परकार' लाइए॥

—जय बोलो बेईमान की 1973

कालिज-स्टूडेंण्ट

फादर ने बनवा दिए, तीन कोट छै पैंट।
लल्लू मेरा बन गया, कालिज-स्टूडेंण्ट॥
कालिज-स्टूडेण्ट, हुए होस्टल में भरती।
दिन-भर बिस्कुट चरें, शाम को खायं इमरती॥
कह 'काका' कविराय, बुद्धि पर डाली चादर।
मौज कर रहे पुत्र, हड्डियां घिसते फादर॥

पढना-लिखना व्यर्थ है, दिन-भर खेलो खेल।
होते रह दो साल तक, फर्स्ट इयर मे फेल॥
फर्स्टइयर मे फेल, तेल जुल्फो मे डाला।
साइकिल से चल दिए, लगा कमरे का ताला॥
कह 'काका' कविराय, गेट-कीपर से लडकर।
मुफ्त सिनेमा देख, कोच पर बैठ अकडकर॥

प्रोफेसर या प्रिंसिपल, बोलें जब प्रतिकूल।
लाठी लेकर तोड दो, मेज और स्टूल॥
मेज और स्टूल, चलाओ ऐसी हाकी।
शीशा और किवाड, बचे नहि एकहु बाकी॥
कह 'काका' कविराय, भयकर तुमको देता।
बन सकते हो इसी तरह, 'बिगडे दिल' नेता॥

—काका की फुलझडियां · 1965

किसका डर ?

चूहा, बिल्ली, छिपकली, कुत्ते करें सलाम।
पूछ पकड कर, फेंक दे, डरने का क्या काम॥
डरने का क्या काम, शेर को भी ललकारा।
पढी वीररस की कविता, भागा बेचारा॥
न तो गैस से डरें, नही चूल्हे-चाकी से।
डर लगता है काका को, अपनी काकी से॥

अथवा डरते रेल मे, यात्रा करते वक्त।
चेन खिचे, गाडी रुके, भय लगता है सख्त॥
भय लगता है सख्त, घुसें डिब्बे मे डाकू।
मुह को कर दें बन्द, रखें छाती पर चाकू॥
पुलिस सो रही फर्स्ट क्लास मे, कौन जगाए ?
पूरा स्लीपर कोच, लूट करके ले जाए॥

किस्सा कु[illegible]

किस्सा कुर्सी का बहुत, [illegible]
तोता-मैना से अधिक, [illegible]
यह किस्सा मशहूर, [illegible]
हमको भी कुछ बात, [illegible]
"इंदिरा जी की कु[illegible]
मुरार जी पर प[illegible]"

— [illegible]

पढना-लिखना व्यर्थ है, दिन-भर खेलो खेल।
होते रह दो साल तक, फर्स्ट इयर मे फेल ॥
फर्स्टइयर मे फेल, तेल जुल्फो मे डाला।
साइकिल से चल दिए, लगा कमरे का ताला ॥
कह 'काका' कविराय, गेट-कीपर से लडकर।
मुफ्त सिनेमा देख, कोच पर बैठ अकडकर ॥

प्रोफेसर या प्रिंसिपल, बोलें जब प्रतिकूल।
लाठी लेकर तोड दो, मेज और स्टूल ॥
मेज और स्टूल, चलाओ ऐसी हाकी।
शीशा और किवाड, बचे नहि एकहु बाकी ॥
कह 'काका' कविराय, भयकर तुमको देता।
बन सकने हो इसी तरह, 'बिगडे दिल' नेता ॥

—काका की फुलझडिया 1965

किसका डर ?

चूहा, बिल्ली, छिपकली, कुत्ते करें सलाम।
पूछ पकड कर, फेंक दे, डरने का क्या काम ॥
डरने का क्या काम, शेर को भी ललकारा।
पढी वीररस की कविता, भागा बेचारा ॥
न तो गैस से डरें, नही चूल्हे-चाकी से।
डर लगता है काका को, अपनी काकी से ॥

अथवा डरते रेल मे, यात्रा करते वक्त।
चेन खिचे, गाडी रुके, भय लगता है सख्त ॥
भय लगता है सख्त, घुसें डिब्बे मे डाकू।
मुह को कर दें बन्द, रखें छाती पर चाकू ॥
पुलिस सो रही फर्स्ट क्लास मे, कौन जगाए ?
पूरा स्लीपर कोच, लूट करके ले जाए ॥

किस्सा कुर्सी का

किस्सा कुर्सी का बहुत, था दिलचस्प हजूर।
तोता-मैना से अधिक, यह किस्सा मशहूर॥
यह किस्सा मशहूर, रात को बोली काकी।
हमको भी कुछ बात, बता दो इस किस्सा की॥
"इंदिरा जी की कुरसी पर, थी घिस्सम-घिस्सा।
मुरार जी पर पहुची थीं, बस यह था किस्सा॥"

—काका-काकी के लव लैटर्स :

कीलर-काण्ड

प्रोफ्यूमो के केस पर, बोले एक वकील।
गहरी ज्यादा गढ़ गई, मिस कीलर की कील॥
मिस कीलर की कील, राजनीतिक बल पाकर।
ब्रिटिश राज्य मे घुसी, रूस मे निकली जाकर॥
कह 'काका' कविराय, धन्य सुन्दरी सुकेशी।
रूप-जाल मे फासे, देशी और विदेशी॥

बागी दोनो हो गए, हुस्न-इश्क कम्बख्त।
इनके कारण छिन गया, मैकमिलन का तख्त॥
मैकमिलन का तख्त, सख्त इतने थे धक्के।
भगदड फैली, छूटे शासन-दल के छक्के॥
कह 'काका' सुन 'जल-विहार' की कथा अनूठी।
चिल्ला पडे 'अयूब', खबर यह बिलकुल झूठी॥

कीलर! तू बडभागिनी, कौन तपस्या कीन्ह?
नेता-नक्कू-सूरमा, हैं तेरे आधीन॥
है तेरे आधीन, गुनी-ज्ञानी-अज्ञानी।
राम-कहानी छोड, पढ रहे काम-कहानी॥
कह 'काका' जिसमे तेरा फोटो छप जाता।
सडा हुआ अखबार, बिना बेचे बिक जाता॥

तू मोटर मे बैठकर, निकल गई जिस ओर।
बूढे छाती कूटते, तडपें तरुण-किशोर॥
तडपें तरुण-किशोर, जोर कर हा-हा खावें।
अगरेजी भौरा, तेरे ऊपर भिन्नावें॥

कह 'काका', विष खाय डाक्टर 'वार्ड' मर गए।
बिन प्रयास ही भवसागर को पार कर गए ॥

राजनीति के घाट पर, कीलर तेरी धूम।
प्रोफ्यूमो चन्दन घिसें, तिलक लगावें ह्यू म ॥
तिलक लगावें ह्यू म, झूमकर जब तू चाले।
मेम ईर्ष्या करें, हार्ट साहब का हाले ॥
कह 'काका' कवि, कामदेव भी मुझसे हारे।
श्वेत सभ्यता के झण्डे, ऊँचे कर डारे ॥

सत्ता से टकरा गई, हुस्न-इश्क की रेल।
मिस कीलर को हो गई, नौ महिन की जेल ॥
नौ महिने की जेल, खबर यह जिस दिन आई।
तब स हमने पानी पिया न रोटी खाई ॥
कह 'काका' कवि, कच्ची उमर, सुकोमल काया।
रे निर्मम कानून ! तुझे कुछ तरस न आया ?

हमको समझाने लगा, सत्तो सट्टेबाज।
नौ महिने की जेल म, है कुछ गहरा राज।
है कुछ गहरा राज, छूटकर जब आएगी।
एक सुघड 'उपहार', साथ अपने लाएगी ॥
सुन 'काका' कविराय, मचाते हो क्यो हल्ला ?
एक चीज तो निश्चित है, लल्ली या लल्ला।

—काका की फुलझड़ियां *1965*

कीलर के लल्ला हुआ

लन्दन से निकली नई, न्यूज सनसनीखेज।
जो मिस कीलर थी, वही अब हो गईं मिसेज ॥
अब हो गई मिसेज, गोद मे आया लल्ला।
कृपा करे तो, छत्त फाड कर देता अल्ला ॥
कह 'काका' कविराय, धरम अगरेजी सच्चा।
आज कीजिए शादी, कल हो जाए बच्चा ॥

देवी ! जब तुमको हुई, नौ महिने की जेल।
तभी हमारी अक्ल ने, कविता दई उडेल ॥
कविता दई उडेल, 'धर्मयुग' देखो थाली।
सत्य हो गई जो, भविष्यवाणी कर डाली ॥
कह 'काका' कवि, जुग-जुग जिए तुम्हारा मुन्ना।
हमें बुलाओ तो लाए, उसको झुनझुन्ना ॥

—काका कोला 1968

कुत्ता-भक्त

बाराबकी से हमे, जाना था उन्नाव।
उसी ट्रेन मे मिल गए, शर्मा-वर्मा साब ॥
शर्मा-वर्मा साब, खानदानी थे अच्छे।
सूरत-सीरत से लगते, रईस के बच्चे ॥
कुत्तो की किस्मो पर, बहस छिडी यात्रा मे।
दोनो ने पी रक्खी थी, अच्छी मात्रा मे ॥

करते 'अलसेशियन' का, शर्मा जी गुणगान।
वर्मा जी बतला रहे, 'पाइनियर' की शान ॥
'पाइनियर' की शान, सुरा ने रग दिखाया।
मार-धाड, गाली-गलौज का, नबर आया ॥
शर्मा जी का हाथ, काट खाया वर्मा ने।
वर्मा जी का कान, कुतर डाला शर्मा ने ॥

बुरी तरह घायल हुए, दोनो कुत्ता-भक्त।
भीड इकट्ठी हो गई, टपक रहा था रक्त ॥
टपक रहा था रक्त, गार्ड औ' टी०टी० आए।
इस्टेशन से दोनो, अस्पताल पहुचाए ॥
कह 'काका' कवि, चला डाक्टर का प्रिस्क्रिप्शन।
लगवा दो इनको, चौदह-चौदह इजेक्शन ॥

—जय बोलो बेईमान की : 1973

कुत्तों के बिस्कुट

बिस्कुट की दुकान पर, पहुचे घोचूराम।
देख रहे थे सेम्पिल, पूछ रहे थे दाम ॥
पूछ रहे थे दाम, साफ बतला दें तुमको।
"कुत्तो के खाने के बिस्कुट चाहिए हमको ॥"
दुकानदार बोला—"कहिए कितने दे दू सर?
यही खाएगे अथवा, ले जाएगे घर पर?"

—जय बोलो बेईमान की : 1973

कुमारी-क्लब

आधुनिकाओं ने करी, क्लब-मीटिंग अटैंड।
विषय वहा पर छिड गया—कैसा हो हसबैंड?
कैसा हो हसबैंड, कलर हो ब्राइट लाइट।
लव मैरिज के लिए करे, हमको इनवाइट॥
हर सण्डे की रात, बितायें नाइट क्लब मे।
लाइफ न्यौछावर कर दे, वाइफ के लव मे॥

'शम्मी'-सा हो चुलबुला, 'शशिकपूर'-सी शान।
मुखडे पर 'धर्मेन्द्र'-सी, मधुर-मधुर मुस्कान॥
मधुर-मधुर मुस्कान, रगीला और रसीला।
हृदय जीत ले, हो 'जितेन्द्र'-सा छैल-छबीला॥
दौलत का दरिया बहता हो, उसके नीचे।
नोट उडाता चले, हमारे आगे-पीछे॥

चन्दन-चर्चित अग हो, मनहर मन्द-सुगन्ध।
अदा दिखाकर लूट ले, जैसे 'देवानन्द'॥
जैसे देवानन्द, बजाये ऐसी सीटी।
कृष्ण-कन्हैया की वशी, पड जाये फीकी॥
हीरो कट, छह इन्ची, नीची कलम कटाये।
ऐसे गाये गीत, 'रफी' आउट हो जाये॥

स्वस्थ मस्त 'महमूद'-सा, हो कामेडी किंग।
इतना भारी भी न हो, जैसे 'दारासिंग'॥
जैसे दारासिंग, तभी बोली मिस शीला।
हमको भाता है, 'मनोज' जैसा शर्मीला॥
चहक उठी मिस अन्ना, मेरी यही तमन्ना।
'बच्चन' जैसा हो·ो, चमके मेरा बन्ना॥

फटे बास के स्वरो मे, बोली मिस फुटबौल।
भारी भरकम हो सनम, गोल मटोल सुडौल॥
गोल मटोल सुडौल, कान हों कनकौआ-से।
गोरे-गोरे गाल, लाल हों मालपुआ-से॥
बनकर पत्नीदास, सभाले चूल्हा-चक्की।
'बेलन प्रूफ' खोपडी हो, कछुआ-सी पक्की॥

भिंडी जैसी भृकुटी हो, परबल जैसी आख।
केला जैसे होठ हो, कद्दू जैसी नाक॥
कद्दू जैसी नाक, होय स्मगलर बन्दा।
मिले गाठ का पूरा, और अक्ल का अन्धा॥
इल्म शून्य हो, किन्तु फिल्म डेली दिखलाये।
पत्नी पिक्चर जाये, पिया बच्चे बहलाये॥

मिस कोयला भन्ना उठी, गलत तुम्हारे टेस्ट।
देकर उपमा व्यर्थ की, करती टाइम वेस्ट॥
करती टाइम वेस्ट, तजुर्बा यह कहता है।
श्याम-सलोना पति, सबसे अच्छा रहता है॥
इश्क नही कर सके, किसीसे चोरी-चोरा।
कौन मूर्ख डालेगी, काले पति पर डोरा?

नही चाहिए ननदिया, नही चाहिए सास।
हम हो, वे हो और बस, होय न कोई पास॥
हाय न कोई पास, मिले ऐसा नरनाहर।
मम्मी को फटकारे, कर बन्नी का आदर॥
प्रिया-प्रेम मे वह, पागल हो जाये इस तरह।
बॉबी मे हो गया, 'रिपीकपू-' 'जिस तरह॥

लड़का अपने वास्ते, जब भी करो सलेक्ट।
कालिज लाइफ में सभी, पूछ लीजिये फैक्ट॥
पूछ लीजिये फैक्ट, खोलकर दिल दिखलायें।
अब तक जितने खोट किये हों, नोट करायें॥
कहो हलफ से, किसके ऊपर मरे मिटे हो?
किस-किस कन्या से तुम, कितनी बार पिटे हो?

अन्त समय मीटिंग में, पहुँची मिस पुर्राट।
नाइलोन के ढेर पर, गिरा पुराना टाट॥
गिरा पुराना टाट, व्यथा अपनी बतलाऊँ।
प्रण करके बैठी 'दिलीप' से ब्याह रचाऊँ॥
किन्तु हाय, तक्दीर हमारी दगा दे गई।
सौत 'सायरा बानू', उसको उड़ा ले गई॥

—फिल्मी सरकार 197

कूकर की पूँछ

कैद काटे नेता बन, शेखी मारें शेख।
हज करके हाजी हुए, मार रेख पर मेख॥
मार रेख पर मेख, पड़ी फिर बन्धन बेड़ी।
अक्ल न सीधी हुई, रही टेढ़ी की टेढ़ी॥
कह 'काका' कवि, चाहे जितनी खींचो-तानो।
कभी न सीधी होय, पूँछ कूकर की मानो॥

—काका के कहकहे 1966

'कूपे' का कसाला

ढूँढ रहे थे मेल में, फर्स्ट क्लास की सीट।
कूपे में लेडी मिली, मैडम वैरी स्वीट॥
मैडम वैरी स्वीट, बर्थ ऊपर की खाली।
टी-टी से कहकर हमने, रिजर्व करवा ली॥
डाल बिस्तरा बैठ गये हम, चल दी गाड़ी।
घूर रही थी देवी जी, काका की दाढ़ी॥

इसमे आगे क्या हुआ, मत पूछो यह बात।
घुघुर-घुकुर मचती रही, मन मे सारी रात॥
मन मे सारी रात, भला कैसे सो जाते।
मैडम करवट बदले, हम बैठे हो जाते॥
अखबारो मे खबर, पढ चुके थे यह 'काका'।
कई औरतें डाल चुकी, मर्दों पर डाका॥

लगा दिया इसने कहीं, झूठ-मूठ इलजाम।
काका बैठे जेल मे, जपें राम का नाम॥
जपें राम का नाम, नाथ सकट हर लीजै।
'कूपे' से उद्धार, हमारा जल्दी कीजे॥
ब्रह्म मुहूरत मे प्रभु, नगे पैरों धाये।
रख बेरा का रूप, बैड टी लेकर आये॥

—काका के धड़ाके : 1969

क्रिकेट में 'कर' के करिश्मे

अक्षर करते समय पर, चमत्कार का काम।
विजय मिली 'वी' से जिन्हे, याद करो वे नाम॥
याद करो वे नाम, खिलाडी हिन्द-सितारे।
वीनू मनकड, विजय मर्जेकर, विजय हजारे॥
घबराया इगलैंड, देखकर तीन-तीन 'कर'।
कैप्टिन वाडेकर, गावस्कर और सोलकर॥

—जय बोलो बेईमान की : 1973

खटमल-मच्छर-युद्ध

'काका' वेटिंग रूम मे, फंसे देहरादून।
नींद न आई रात भर, मच्छर चूसें खून॥
मच्छर चूसें खून, देह घायल कर डाली।
हमे उडा ले जाने की, योजना बना ली॥
किन्तु बच गए कैसे, यह बतलाए तुमको?
नीचे खटमल जी ने, पकड रखा था हमको॥

हुई विकट रस्साकशी, थके नहीं रणधीर।
ऊपर मच्छर खींचते, नीचे खटमल वीर॥
नीचे खटमल वीर, जान संकट में आई।
घिघियाए हम—"जै जै जै हनुमान गुसाईं"॥
पंजाबी सरदार एक, बोला चिल्ला के—
"तुसी पजन', (भजन), करना है, करबाहर जाके॥"

सुबह उठे सरदार जी, पूछी हमने बात।
कैसे वेटिंगरूम में, काटी तुमने रात?
काटी तुमने रात, असी बिल्कुल नहिं डरता।
ठर्रा पीकर, ठर्र-ठर्र खर्राटे भरता॥
मच्छर चूसें खून, नशा उनको आ जाता।
सो जाते हैं मच्छर, तब तक हम जग जाता॥
—काका के धड़ाके

खबरदार कविताएं

[27 जून, 1966 को जब भूकम्प आया था]

आया जब भूकम्प तो, भागे भूपतसिंह।
चण्डीगढ़ में फट गई, सरकारी बिल्डिंग॥
सरकारी बिल्डिंग, कह रहा बच्चा-बच्चा।
धन्य-धन्य भगवान! न्याय कर डाला सच्चा॥
'काका' कोई किल्लत रही न बंटवारे में।
आधी पंजाब में, आधी हरियाने में॥1॥
—काका कोला

[श्रीमती इन्दिरा गांधी के सुपुत्र चि० राजीव के विवाह पर]

प्रकृति नटी नर्तन करे, हर्षित सब जड़ जीव।
स्वर्ण सुन्दरी सोनिया, रूप-भूप राजीव॥
रूप-भूप राजीव, इन्दिरा मां के प्यारे।
जीओ इतने वर्ष, गगन में जितने तारे॥
कह 'काका' कविराय, विश्व हीरो बन चमको।
जब जाओ ससुराल, साथ ले जाना हमको॥2॥
—काका कोला

[नन्दा जी ने इस्तीफा दिया]

नन्दा का फन्दा कटा, गाओ मंगलगीत।
जय हो भ्रष्टाचार्य जी ! हुई आपकी जीत ॥
हुई आपकी जीत, सत्य की डूबी लुटिया।
कूटनीति ने राजनीति की, काटी चुटिया ॥
कह 'काका', जो आए भ्रष्टाचार हटाने।
वे ही खुद हट गए, वाह रे वाह जमाने ॥3॥

—म्याऊं : 1954

[जब नई दिल्ली मे दो युवक एक महिला का पर्स छीनकर भाग गए।]

युवक तुम्हारी बुद्धि पर, आता हमको तर्स।
भाग गए क्यों छीनकर, देवी जी का पर्स ?
देवी जी का पर्स, समय की गति को चीन्हो।
पर्स छीनने हैं तो, प्रिवीपर्स ही छीनो ॥
प्रिवीपर्स पुरुषों के, छीन रही है महिला।
हम बदला ले रहे, खोट है किसका पहिला ॥4॥

[कांग्रेस ई० साड़ी और रजाइयों से मतदाताओं को लुभा कर रही है।—चरणसिंह]

काकी जी कहने लगीं, पढकर यह हैडिंग।
साड़ी और रजाइयां, दोनों स्त्रीलिंग ॥
दोनों स्त्रीलिंग, इन्दिरा जी हैं नारी।
नारी नारी की, करती है खातिरदारी ॥
व्यर्थ मचाते चरणसिंह, इस पर हंगामा।
बटवाओ पुल्लिंग आप, कंबल-पाजामा ॥5॥

[टेस्ट ट्यूब से इंगलैंड में बच्चा]

मिली एक अखबार से, यह विलायती न्यूज।
पढकर 'काका' बुद्धि का, बल्ब हो गया फ्यूज ॥
बल्ब हो गया फ्यूज, किया गुड़ गोबर सारा।
लगा कांपने भय से, 'लाल तिकोन' बिचारा ॥

इधर कर रहे हैं, परिवार-नियोजन चच्चे।
उधर टैस्ट ट्यूबों से बना रहे हैं बच्चे ॥6॥

—फिल्मी सरकार : 1972

['लोकसभा' भंग होने पर जब ससद के सदस्यो के टेलीफोन कट गये।]

'काका' संकट के समय, साध लीजिए मौन।
कट जाने दो कट गये, अपने टेलीफोन ॥
अपने टेलीफोन, समय की है बलिहारी।
कल के चाकर आज, उपेक्षा करें हमारी ॥
डाक-तार वालो! क्या समझ रखा है हमको।
पुन: एम० पी० बनकरके, देखेंगे तुमको ॥7॥

—फिल्मी सरकार : 1972

[बहराइच के गाव मे शादी. 4 वर्ष का दूल्हा, 9 माह की दुलहिन।]

अखबारो मे देखकर' शादी का यह पैक्ट।
गला घोट कर खुदकुशी, करे 'शारदा एक्ट' ॥
करे शारदा एक्ट, धन्य भारत की धरनी।
चार साल का बरना, नौ महिने की बरनी ॥
'काका' प्रगतिवाद को, लाघ गये अतिवादी।
वह दिन आये शीघ्र, गर्भ मे होगी शादी ॥8॥

—फिल्मी सरकार : 1972

[उत्तर प्रदेश सरकार का आदेश : जो हिन्दी मे काम नही करेंगे उनपर अनुशासन की कार्यवाही की जायेगी।]

यू० पी० का आदेश सुन, मनुआ क्यो मुसकात ?
चार दिना की चांदनी, फिर अधियारी रात ॥
फिर अधियारी रात, हुई क्या नई बात है ?
निकला था फरमान केन्द्र से, हमे याद है ॥
'करुणानिधि' जब द्रवित हुए, करुणा टपकाई।
हिन्दी की झोपडी, फोड दी बनी-बनाई ॥

अब कुछ दिन को आप भी, वाह - वाह लें लूट।
अंगरेजी के भक्तगण, फिर कर देंगे हूट॥
फिर कर देंगे हूट, प्रशासक बड़े सयाने।
एक तीर से साधा करते, कई निशाने॥
अनुशासन की धमकी से, क्यों डरते बाबू।
रहे सलामत 'द्रमुक', रखो कुर्सी पर काबू॥9॥

—फिल्मी सरकार · 1972

[51 वर्षीय आई०एस० जौहर ने जब 18 वर्षीय मीना से विवाह किया।]

दीपावली-शुभ कामना, स्वीकारिये हजूर।
पियो-पिलाओ हास्य-रस, रहे बुढ़ापा दूर॥
रहे बुढ़ापा दूर, हुस्न पर डालो डाका।
जलने वाले जला करें, क्या कर लें 'काका'?
अट्ठारह की मीना का बन करके शौहर।
इक्यावन के जौहर ने, दिखलाया जौहर॥10॥

—फिल्मी सरकार · 1972

[धुलेंडी के दिन दिल्ली-चाँदनी चौक में गधों की दौड़।]

'काका' पिछड़े वर्ग को, उठा रहा यह देश।
राजधानी में हो रही, देख गधों की रेस॥
देख गधों की रेस, दौड़ में अव्वल आये।
भाग्यवान वह गधा, 'महा-गर्दभ' कहलाये॥
घबड़ाये घोड़े, जब मूर्खिस्तान बनेगा।
वही गधा आसन, प्रधान मन्त्री का लेगा॥11॥

—फिल्मी सरकार : 1972

[कुछ उद्योगपतियों ने सुरक्षा फंड में फोके चैक दिए।]

मन्त्री जी को खुश किया, देकर फोके चैक।
टकराकर के बैंक से, चैक हो गए बैक॥
चैक हो गए बैक, काम अच्छा या खोटा।
अब क्या मतलब हमें, मिल गए परमिट कोटा॥
'काका', किया एक फायर, दो चिड़िया मारीं।
दिया सुरक्षा फंड, सुरक्षा हुई हमारी॥12॥

[एक महिला के तीन बच्चे एक साथ हुए।]

जुडवा बच्चे दे रही, उस देवी को 'धोक'।
एक साथ हो तीन तो, धन्य होय भू - लोक ॥
धन्य होय भू लोक, नियम क्या खूब निभाया।
'बच्चे दो या तीन' पोस्टर सफल बनाया॥
न्योछावर उस पर, परिवार-नियोजन सारा।
दर्शन को व्याकुल है, 'लाल तिकोन' विचारा ॥13॥

[नई दिल्ली के अस्पताल म कुमारी निशि, अरविन्दकुमार बनी।]

डाक्टर आगे बढ गए, पिछड गया करतार।
चिंता मे क्यो घुल रहे लाला जी बेकार ?
लाला जी बेकार, भाग्य अब जागे उनके।
लडकी-ही-लडकी पैदा होती थी जिनके॥
करें घोषणा नस और डाक्टर चिल्लाकर।
लडकी से लडका बनवा लो, दिल्ली आकर ॥14॥

[एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी को दान कर दिया।]

स्वर्णदान, भूदान या अन्नदान, श्रमदान।
हुए पुराने दान यह, छोड इन्हे नादान॥
छोड इन्हे नादान, समय की गति पहिचानो।
सर्वश्रेष्ठ कलियुगी दान, क्या है यह जानो ?
कन्यादान व्यथ है, पत्नीदान कीजिए।
सब सकट से मुक्त, चैन की सास लीजिए ॥15॥

[ग्वालियर जेल मे डाकू सरदार 'मूरतसिंह' चाँदी के बर्तनो मे भोजन करता है।]

क्या रक्खा ईमान मे, देख भाग्य के खेल।
कर मनुआ अपराध कुछ, पहुच ग्वालियर जेल॥
पहुच ग्वालियर जेल, छोड शका - आशका।
फकाफक्क चल रहे उधर बिजली के पखा॥
मिटटी के कुल्लड मे, चाय पी रहे काकू।
चाँदी के बतन म, भोजन करते डाकू ॥16॥

[दूध की बोतल में छिपकली निकली।]

यश-अपयश को छोडकर, कीजे ऐसे काम।
जन - जन मे चर्चा चले, मच जाए कुहराम ।।
मच जाए कुहराम, चमक दिखाओ ऐसी।
'दिल्ली दुग्ध-योजना', प्रगति कर रही जैसी ।।
अब तक निकले बोतल मे, चूहा - छिपकल्ली।
निकलेगा जब साप, धन्य हो जाए दिल्ली ।।17।।

[ओलम्पिक खेलो मे चोरों का बोलबाला : 160 से 145 साइकिलें चुरा ले गए।]

ओलम्पिक मे लग गई, चोरो मे भी होड।
चुरा ले गए साइकिल, पन्द्रह दीनी छोड ।।
पन्द्रह दीनी छोड, लीक से जरा हट गए।
काम अधूरा किया, इसीसे अक कट गए ।।
सबकी सब ले जाते, भाग्यकमल खिल जाता।
चैम्पियन बन जाते, स्वर्ण-पदक मिल जाता ।।18।।

—जय बोलो बेईमान की 1973

[30 अगस्त 1972 को तमिलनाडु मे शराबबदी हटी।]

डूबी तीस अगस्त को, नशाबद की नाव।
करुणानिधि करुणा करी, पी भरपेट शराब ।।
पी भरपेट शराब, राज्य का सकट हरती।
धन्य हो गई प्रभो ! तमिलनाडु की धरती ।।
तीस अगस्त बजाय, तीस जनवरी रखते।
तो गाधी बाबा, फूलो की वर्षा करते ।।19।।

—जय बोलो बेईमान की 1973

[एक लाख के ज्ञानपीठ पुरस्कार पर।]

दिनकर जी 'उर्वशी', 'काका' शीश नवाय।
जैसी उनके उर-वसी, मेरे उर वस जाय॥
मेरे उर वस जाय, धन्य जीवन हो जाय।
सरस्वती के ऊपर, लक्ष्मी चवर ढुलाय॥
सप्लाई कर रहे, वधाई कविगण मिलकर।
देश-देश मे, दिन-दिन दूने दमकें 'दिनकर' ॥20॥

—जय बोलो बेईमान की : 197

[रेल-एक्सीडेण्ट मे मरने वाले को पचास हज़ार मिलेंगे।]

व्यर्थ भाग्य को कोसता, बैठा है बेकार।
मर जा कटकर रेल मे, मिलें पचास हज़ार॥
मिलें पचास हज़ार, सुखी हो बच्चे बीवी।
बिना परिश्रम के, हो जाए दूर गरीबी॥
हे प्रभु ! बूढे बापू को, बैंकुठ पठा दो।
नही लड सके ट्रेन, जबरदस्ती लडवा दो॥
'काका' जिस दिन, बैंक-चैक के दर्शन पाऊ।
सवा रुपैया का तुमको, परसाद चढाऊ॥21॥

—काका हाथरसी • 1975

[पश्चिमी बर्लिन मे एक स्त्री ने [पाच बच्चे दिए।]

मिस्टर 'लाल तिकोन' ज़ी, करो न्यूज़ की जाच।
'बर्लिन' देवी ने वहा, बच्चे जन्मे पाच॥
बच्चे जन्मे पाच, पोस्टर साच कर दिए।
'बच्चे दो या तीन', जोडकर पाच कर दिए॥
नोट करें, परिवार-नियोजन के अधिकारी।
गणितशास्त्र मे कितनी, कुशल विदेशी नारी॥22॥

—काका हाथरसी • 1975

[मेडीकल की छात्रा को देखकर मुर्दे ने आँखें खोलीं।]

मेडीकल की छात्रा, बहुत उठाई रिस्क।
जिन्दों की तो क्या कहे, मुर्दे करते इश्क ।।
मुर्दे करते इश्क, आप यह बतलाते हैं।
सौंदर्य से जड़ भी, चेतन हो जाते हैं ।।
कह 'काका' कवि, जिन्दाघर हो या मुर्दाघर।
आशिक साहब मिल जाते हैं, सब जगहों पर ।।23।।

—काका हाथरसी 1975

गड़बड़ गुरु चतुर चेला

झूमत भंग तरंग में, पांडे घोटम घोट।
चेला से कहने लगे—"ले यह दस का नोट ।।
ले यह दस का नोट, चौक बाजार चला जा।
एम्बेसेडर कार मोल लेकर, झट आजा।"
चेला बोला—"गुरु एक अड़चन है भारी।
नौ बज गये, दुकानें बन्द हो गईं सारी ।।"

"तो फिर इसको छोड़कर, और काम कर एक।
घर पर हम हैं या नहीं, जल्दी जाकर देख ।।
जल्दी जाकर देख, देर बिल्कुल न लगाना।
अगर वहां हम सोये हों तो नहीं जगाना ।।"
चेला जी ने कहा—"गुरु जी क्षमा कीजिये।
टेलीफोन लगा है घर पर पूछ लीजिये ।।"

—फिल्मी सरकार 1972

खरदूषण

राज कर रहे 'पाक' पर, तिकड़म और प्रपंच।
पुश्तैनी भुक्कड़ रहे, आज ले रहे लंच ।।
आज ले रहे लंच, मंच के बनकर भूषण।
ताव दे रहे मूछों पर, मिस्टर खरदूषण ।।
कह 'काका' कविराय, नहीं दोज़ख से डरते।
जिस धरती पर पले, उसी पर हमला करते ।।

—काका के कहकहे 1966

खल-वन्दना

प्रथम करूं खल-वन्दना, श्रद्धा से सिर नाय।
मेरी कविता यों जमे, ज्यों कुलफी जम जाय॥
ज्यों कुलफी जम जाय, आप जब कविता नापें।
बड़े-बड़े कविराज, मंच पर थर-थर कांपें॥
करें झूठ को सत्य, सत्य को झूठ करा दें।
रूठें जिस पर आप, उसीको हूट करा दें॥

—काका के कहकहे 1966

गलती का छक्का

कभी गलती नहीं करता, उसे 'भगवान' कहते हैं।
करे गलती औ' स्वीकारे, उसे 'इन्सान' कहते हैं॥
न अपनी गलती पहचाने, उसे 'हैवान' कहते हैं।
करे गलती, नहीं माने, उसे 'शैतान' कहते हैं॥
करे जो जानकर गलती पै गलती, और फिर गलती।
तो उस शैतान के दादा को, 'पाकिस्तान' कहते है॥

—काका कोला 1968

गुड़ और चीनी

चीनी हमले से हुई, मिस 'चीनी' बदनाम।
गुड़ की इज्जत बढ़ गई, और बढ़ गए दाम॥
और बढ़ गए दाम, 'गुलगुले' तब बन पाए।
सवा रुपे का एक किलो, गुड़ लेकर आए॥
कह 'काका', बीबी से बोला बुन्दू भिश्ती।
गजब हो गया बेगम! गुड़ से चीनी सस्ती॥

—काका की फुलझड़ियां 196[illegible]

ग्राम्य-जीवन

ठाकुर बिन मन्दिर लखै, बाती बिन ज्यों दीप।
ऐसे ही सूनी लगे, बी० डी० ओ० बिन जीप॥
बी०डी०ओ० बिन जीप, सास, सारी, घरवारी।
सैर-सपाटे करें, तेल फूकें सरकारी॥
कह 'काका', आनन्द ग्राम्य-जीवन का पावें।
साग-सब्जियां, दूध मुफ्त ही घर आ जावें॥

—काका की फुलझड़ियां 1965

घाटे पर घाटा

भोंदूमल बेकार थे, हुआ पिलपिला हाल।
फाके होने लगे तब, पहुच गये ससुराल॥
पहुच गये ससुराल, बीस दिन करी चराई।
पाच किलो बढ गया वजन, आई चिकनाई॥
घर आये तो देखा, छह मेहमान डट रहे।
उनके दर्शन करते ही, छह किलो घट गये॥

—फिल्मी सरकार 1972

घनचक्कर

पृथ्वी चक्कर काटती, सूर्य-चन्द्र नक्षत्र।
नेता चक्कर काटते, यत्र तत्र-सर्वत्र॥
यत्र-तत्र सर्वत्र, मान्यवर वोट बटोरें।
पाच वर्ष तक नहीं, इधर श्रीमुख को मोड़ें॥
महगा गुड़, महगे चावल हैं, महगी शक्कर।
जियो जब तलक, काटो महगाई के चक्कर॥

चक्करमय ससार मे, रोते आए आप।
मम्मी पापा हँस रहे, मन-ही मन चुपचाप॥
मन ही-मन चुपचाप, बजा कुछ दिन झुनझुन्ना।
पुस्तक-पोथी लाद, मदरसे जाओ मुन्ना॥
इस चक्कर पर, चल न सकेगा काई मक्कर।
पढो, मत पढो, किन्तु क्लास के काटो चक्कर॥

नक्ल अक्ल से बन गए, बाबू जी बी०काम०।
शादी का चक्कर चला, अक्कल लगी लगाम॥
अक्कल लगी लगाम, सज गए दूल्हा बन के।
हुक्म मिला, काटिए, सात चक्कर दुलहन के॥
सर्विस के चक्कर म, दर-दर खाईं टक्कर।
इतने चक्कर कटें, बने बाबू घनचक्कर॥

—काका के कारतूस 1963

घर का दूध

सेठ सुपाडीलाल, जी, रहे खुशी से कूद।
'काका' पीकर देखिये, म्हारे घर को दूध॥
म्हारे घर को दूध, मलाई जैसो चिकनो।
हलवाई या ग्वाले से, यह गाढो कितनो?
एक घूट ले करके, हम लाला से बोले—
"सेठानी को खली खिलाते हो कि बिनौले?"

—काका कोला : 1968

घासलेट और मक्खन

'घासलेट'* जी से कहे, बाबू 'मक्खन' लाल।
हे ताऊ जी! आजकल, बुरा हमारा हाल॥
बुरा हमारा हाल, करें सब ग्राहक शका।
भारत मे बज रहा आपकी जय का डका।
कह 'काका' कविराय, तरस हम पर भी खाओ।
जान बचाने का कोई, साधन बतलाओ॥

ताऊ जी कहने लगे, फेर तोद पर हाथ।
बेटे! इस कलिकाल मे, चलो समय के साथ॥
चलो समय के साथ, शुद्धता-शुचिता त्यागो।
सत्य - धर्म - ईमान - न्याय खूटी पर टागो॥
कह 'काका' कविराय, ठगो दुनिया मक्कर से।
'चौदह कैरट' बनो, खाउ रोटी शक्कर से॥

—काका की फुलझड़िया . 1965

चंदा-कुंडली

चदामल से कह रहे, ठाकुर आलमगीर।
पहुच गए वे चाँद पर, मार लिया क्या तीर?
मार लिया क्या तीर, लौट पृथिवी पर आये।
हुए करोडो खर्च, ककडी-मिट्टी लाये॥
इनसे लाख गुना अच्छा नेता का धन्धा।
बिना चाँद पर चढे, हजम कर जाता 'चन्दा'॥

—काका के धडाके 1969

---

*वनस्पति

चंदे के फन्दे

लीजे अपने माथे में, कुछ ऊँचे व्यक्तित्व।
इसपर ध्यान न दीजिए, कैसा है कृतित्व॥
कैसा है कृतित्व, पसंदगी का फन्दा।
राजी या नाराजी में दिलवाता चन्दा॥
हो कोई परमिट-लैसंस दिलाने वाला।
जितना चाहो उतना चन्दा दे दे लाला॥

धन्धा मन्दा हो गया, रहा न पैसा पास।
चन्दा करना सीखिए, क्यों हो रहे उदास?
क्यों हो रहे उदास, बड़ा अनुभव है हमको।
चंदे के हथकंडे, चन्द बताएँ तुमको॥
विद्यालय या नाम किसी गौशाला का लो।
अथवा विधवा आश्रम की रसीद छपवा लो॥

चन्दे के बहुरूप हैं, कैसे करें बखान।
धौंस-उपाड़ लताड़ या बारफंड अनुदान॥
बारफंड अनुदान बिना माँगे ही जिसको।
चंदा होता प्राप्त, भाग्य वहन है उसका॥
हाकिम 'हुक्काम' द्वारा वसूल करवाना।
उसे चंदे का दण्ड, समझिए या जुर्माना॥

चन्दा लेने आ गया घुटमुण्डों का झुंड।
स्वामी जी हैं साथ में, शोभित तिलक त्रिपुंड॥
शोभित तिलक त्रिपुंड, देखिए हिम्मत उनकी।
बोले—नहीं रसीद काट दी इक्यावन की॥
धर्मध्वजियों ने डाला पॉकिट पर डाका।
कर देते यदि मना, नर्क ले जाते 'काका'॥

मन्त्री जी के मान का बना रहे हैं प्लान।
अभिनन्दन वन्दन करो, हो जाए कल्यान॥
हो जाए कल्यान, अर्थ सहयोग दीजिए।
इसके बदले इन्विटेशन, स्वीकार कीजिए॥

हाथ मिलाओ उनके साथ खिंचवाओ फोटो।
ड्रिंक, डिनर लेकर फिर, आइसक्रीम सपोटो॥

हो चुनाव गणतन्त्र मे, चमचे फूंके मन्त्र।
उच्च स्तर पर चल रहा, चन्दे का षड्यन्त्र॥
चन्दे का षड्यन्त्र, पकड आसामी मोटा।
अगर चीं-चपड करे, कैंसिल कर दो कोटा॥
'काका' मुहमागा पार्टी को, दे दो चन्दा।
फिर छुट्टी है तुम्हे, चलाओ गोरखधन्धा॥

अगर भाग्य से बन गई, 'उनकी' ही सरकार।
समझ लीजिए, चिन गई सोने की दीवार॥
सोने की दीवार, इशारा करें कृपालू।
बन्द फैक्ट्री, दो दिन मे हो जाए चालू॥
कह'काका'कवि, जगर-मगर हो बगले-आफिस।
जितना चन्दा दिया, दस गुना ले लो वापिस॥

—जय बोलो बेईमान की, 1963

चकबन्दी

यह कैसी असमानता, कैसा विधि का लेख।
लल्ली घर मे आठ है, लल्ला हुआ न एक॥
लल्ला हुआ न एक, किसी घर मे दस बेटे।
बेटी कोई नही, भाग्य के वह भी हैटे॥
कह 'काका' कविराय, सुनो काकी आनन्दी।
छोरी-छोरो की भी, अब होगी चकबन्दी॥

—काका के कारतूस : 1963

चना-चीत्कार

अन्नकूट के दिन लगा, दीनबन्धु दरबार।
अन्नदेव 'क्यू' मे लगे, मूग, बाजरा, ज्वार॥
मूग-बाजरा-ज्वार, चना-जौ-अरहर-मक्का।
चावल घायल हुआ, दिया गेहू ने धक्का॥
मोठ हुई भयभीत, उर्द जी बचकर भागे।
चटर-पटर कर मटर, बढ़ गई सबसे आगे॥

सभी केस सैटिल हुए, एक रह गया शेष।
कृपासिन्धु ने अन्त मे, लिया चने का केस॥
लिया चने का केस, बिचारा खडा रो रहा।
भगवन् ! मुझ पर भारी, अत्याचार हो रहा॥
बड़े बड़े ज्ञानी-ध्यानी भी मुझे सताते।
कूट-पीसकर, भिन्न-भिन्न, पक्वान बनाते॥

मानव की तो क्या चली, नही अछूते आप।
चन बने व्यजन प्रभो, खा जाते चुपचाप॥
खा जाते चुपचाप, सलोना सोहनहलुआ।
दालसेव, नुक्ता-बूदी, बेसन के लड्डुआ॥
होरे-छोले-सत्तू औ' परावठे मिस्स।
रक्षक भक्षक हैं, फरियाद करू फिर किससे ?

खाल छीलकर कर दिया, मेरा बदतर हाल।
फिर टुकडे-टुकडे किए, बनी चने की दाल॥
बनी चने की दाल, पुन चक्की मे पीसा।
पीडा से चिल्लया, मिमियाया बकरी-सा॥
फिर भी बेदर्दी मानव को, दया न आई।
गर्म तेल म तले पकौडे, बुगत बनाई॥

भून-भूनकर भाड मे, चिल्लाते मक्कार।
चन खाइए भुरभुरे, गरम मसालेदार॥
गरम मसालेदार, प्रभू सुधि भूले तन की।
सुन-सुनकर यह कथा, लार टपकी भगवन की॥
बोले होठ चाटकर, मूड आ रहा मुझको।
भाग यहा से वरना, खा जाऊगा तुझको'॥

—जय बोलो बेईमान की : 1973

चमचा-चरित्र

मक्खन महगा क्यो हुआ, सुनिए इसका राज।
खाने से ज्यादा इसे, लगा रहे हैं आज॥
लगा रहे हैं आज, अक्ल का खोलो ढक्कन।
सीखो चमचा आर्ट, मलो मत्री के मक्खन॥

इंदिरा-शासन में कुछ-चेहरे चेन्ज हो गए।
अवसरवादी चमचे, उधर अरेन्ज हो गए ॥

चमचे वोटर हों जहाँ, चमचे पैरोकार।
राज करे उस देश पर, चमचों की सरकार ॥
चमचों की सरकार, कि मंत्री - संत्री चमचे।
चपरासी, अफसर, पी०ए०, गणतन्त्री चमचे ॥
ऊपर - ऊपर त्याग और आदर्श दिखाए।
भीतर - भीतर गुटबंदी, छलछंद चलाए ॥

चमचों का युगों-युगों तक, रहा न कभी अकाल।
द्वापर में थे कृष्ण के, चमचा, मनसुखलाल ॥
चमचा मनसुखलाल, मार लकुटी गगरी में।
माखन - चाखन को घूमें, गोकुल नगरी में ॥
त्रेता में थे मेघनाथ, रावण के चमचे।
हनुमान - सुग्रीव, राम - लक्ष्मण के चमचे ॥

अभी खत्म होंगे नहीं, राजनीति के युद्ध।
अर्थ और यश के लिए, चमचे बनो विशुद्ध ॥
चमचे बनो विशुद्ध, न होते उनके चरचे।
पूँछ हिलाए जो, बनकर चमचों के चमचे ॥
डाँटो या फटकारो, फिर भी खीस निपोरें।
लात मारिए, फिर भी हाथ आपके जोड़ें ॥

धोखा खा सकते नहीं, कभी आप श्रीमान।
'काका' कवि से पूछिए, चमचों की पहचान ॥
चमचों की पहचान, रात को दिन बतला दें।
हुक्म आपका हो, दिन में तारे चमका दें ॥
इमरजेंसी चमकी, चमचों के बलबूते।
मंत्री जी को चमचे, पहनाते थे जूते ॥

—काका काकी के लव लैटर्स

चले जाउ ससुराल

काल खाय सो आज खा, आज खाय जो अब्ब।
गेंहू मदे है गय, फेरि खायगो कब्ब?
फेरि खायगा कब्ब, अरे मूरख अज्ञानी!
जल्दी-जल्दी खा, दुनिया दा दिन की फानी॥
'काका' तुम भरपट करो फिर चोरबजारी।
पाप होय सब दूर, भजो राधे-गिरधारी॥

जब अपन घर का सभी, चाट चुको धन-माल।
कुछ दिन चरने के लिये, चले जाउ ससुराल॥
चले जाउ ससुराल, फेंक ऐसे हथकण्डे।
सास ससुर दोनों जल्दी हो जायें ठडे॥
कह काका' कविराय, लगा बाहर से ताला।
हो जा अन्तरध्यान बाध सब टाला-माला॥

'काका' या ससार म, व्यर्थ राम का नाम।
नोट जेब म होय तो, बन जावें सब काम॥
बन जावें सब काम, करगी क्या महगाई।
जुग-जुग जीवें, कटरोल दफ्तर सप्लाई।
कह 'काका' कविराय, यही दुनिया म सारम॥
सब झझट को छोड, भजो भैया कलदारम॥

पढ पढ कर पत्थर भय, गुन गुन कर भये कूर।
सौ की तनखा मिल रही, बन जा मिल मजदूर॥
बन जा मिल मजदूर, मास्टरी म क्या रक्खा?
भूखा रहकर जीवन भर, खायगा धक्का॥
कह 'काका' कविराय, हो गए काजी-पाजी।
पढा-लिखाकर हम, कर गए भूल पिता जी॥

—पिञ्जा. 1950

चाँद पर चढ़ाई

पहुच गए जब चांद पर, एल्ड्रिन, आर्मस्ट्रॉंग।
शायर-कवियों की हुई, काव्य-कल्पना रोग॥
काव्य-कल्पना रोग, 'सुधाकर' हमने जाने।
कंकड-पत्थर मिले, दूर के ढोल सुहाने॥
कह 'काका' कविराय, खबर यह जिस दिन आई।
सभी चन्द्रमुखियो पर, घोर निराशा छाई॥

—काका के धड़ाके : 1969

चाँद पर हनीमून

'रजनी' जी कहने लगी, होकर के टिप टाप।
"हनीमून के वास्ते, कहां चलेंगे आप?
कहा चलेंगे आप, मजे मे रैन कटेगी।
दस घटे की रात, दस मिनट मे बीतेगी॥"
"हनीमून को चांद, बहुत अच्छा है सजनी।
क्योकि वहा चौदह दिन तक, रहती है रजनी॥"

—फिल्मी सरकार : 1972

चाय-चक्रम्

एकहि साधे सब सधे, सब साधे सब जाय।
दूध दही फल अन्न जल, छोड पीजिए चाय॥
छोड पीजिए चाय, अमृत बीसवी सदी का।
जग - प्रसिद्ध जैसे, गगाजल गग नदी का॥
कह 'काका' इन उपदेशो का अर्थ जानिए।
बिना चाय के मानव - जीवन व्यर्थ मानिए॥

कविता लिखने के लिए, 'मूड' नही बन पाय।
एक सास मे पीजिए, चार - पाच कप चाय॥
चार - पाच कप चाय, अगर रह जाय अधूरी।
इतनी ही लो और, हो गई कविता पूरी॥
कह 'काका' कवि, खण्डकाव्य को पन्द्रह प्याला।
पचपन कप मे महाकाव्य, हमने लिख डाला॥

प्लेटफार्म पर यात्री, पानी को चिल्लाय।
पानीवाला है नहीं, चाय पियो जी चाय॥
चाय पियो जी चाय, हिलाकर बोला दाढ़ी—
पैसे लेउ निकाल, छूट जाएगी गाड़ी॥
'काका' पीकर चाय, विरोधी दल का नेता।
धुआंधार व्याख्यान, सभा-संसद में देता॥

लक्ष्मण के शक्ति लगी, विकल हुए भगवान।
संजीवनि लेने गए, पवन-पुत्र हनुमान॥
पवन-पुत्र हनुमान, आ गए लेकर बूटी।
सेवन करके लखनलाल की, निद्रा टूटी॥
कह 'काका' कवि, जब खोली अक्कल की खत्ती।
समझ गए हम, इसी चाय की थी कुछ पत्ती॥

गायक, वादक, लेक्चरर, नट, नर्तक औ' भाट।
सभी चाय के भक्त हैं, धोबी, तेली, जाट॥
धोबी, तेली, जाट, ब्राह्मण, बनिया, ताऊ।
भाऊ खांय अफीम, चाय पीते चाऊ॥
कह 'काका', पीछे पीते हैं बाबू - लाला।
पहिले खुद पी लेता, चाय बनानेवाला॥

—काका की फुलझड़ियां 1965

चिकमगलूर के अंगूर

चिकमगलूर चुनाव से, चकित हुए लंगूर।
तोड़ ले गई लोमड़ी, हज्जारों अंगूर॥
हज्जारों अंगूर, रात औ' दिन कोशिश की।
फिर भी काम न आई, एक्टिंग फर्नांडिश की।
आएगी जब 'कांग्रेस (आई) की अम्मा,
संसद में तब, दुगुनी होगी दम्मक-दुम्मा॥

जगजीवन जी सोचते, रख मस्तक पर हाथ।
छोड़ा मैंने व्यर्थ ही, इस नारी का हाथ॥
इस नारी का साथ, हिल रहा दिल का फाटक।
फेल हो गया हाय हाय, कर्नाटक-नाटक॥

"बाबू जी, इसका क्या रोना क्या पछताना।
पावर में यह आये, तो उसमें मिल जाना।।"

—काका काकी के लव लैटर्स

चित्त भी मेरी, पट्ट भी मेरी

पैसा एक उछाल कर, परखो विधि का लेख।
चित्त पड़े कालेज को छोड़, सिनेमा देख।।
छोड़, सिनेमा देख, पट्ट पड़ जाए पैसा।
आज पतंग उड़ाएंगे, निश्चय कर ऐसा।।
कह 'काका', जब भी खड़ा हो जाए सिक्का।
तब समझो पढ़ना-लिखना, किस्मत में लिक्खा।।

—काका के कहकहे : 1966

चीनी-दर्शन

चाऊ को देने लगे, माऊ अपनी राय।
जन-संख्या बढ़ती रहे, ऐसे करो उपाय।।
ऐसे करो उपाय, विज्ञ हों या घनचक्कर।
बारह बच्चे वाले ही, बन सकें मिनिस्टर।।
कह 'काका' कविराय, उछलकर बोले चाऊ।
इसके आगे राय हमारी मानो ताऊ।।

आबादी बढ़ जाय तब, करो रूस को क्रुद्ध।
उल्टे पासे फेंककर, भड़का दो अणु-युद्ध।।
भड़का दो अणु-युद्ध, खत्म हो जाए दुनिया।
कुछ चीनी बच रहे और, कुछ बेगम चिनिया।।
कह 'काका', फिर चीनों का, संसार बसाए।
चमत्कार, सिलपट्ट खोपड़ी का दिखलाए।।

—काका की फुलझड़ियां 1965

चुंबन-चमत्कार

धन्य 'पदमिनी' आपने, खूब कमाया नाम।
चुम्बन लेकर 'चार्ल्स' का, किया गजब का काम।।
किया गजब का काम, पश्चिमी यह ढग-ढर्रा।
मुफ्त पब्लिसिटी मिली, फिटकरी लगी न हर्रा।।
व्यर्थ मचाते शोर, बुआ-बाप हमारे।
न तो प्रिंस के गाल घिसे, ना होठ तुम्हारे।।

—काका की फुलझड़ियां •

चुंबन-चेतना

नमस्कार या नमस्ते का, अब क्या है अर्थ?
यह ढकोसला, 'खोसला', कर डालेंगे व्यर्थ।।
कर डालेंगे व्यर्थ, साथ फिल्मों के चलिए।
चुम्बन के माध्यम से ही अभिवादन करिए।।
'काका' युवक युवतियों में, यह साहस भर दो।
न्यू लाइट से, भस्म पुरानी पीढ़ी कर दो।।

जय बोलो बईमान की • 1973

चुनाव की चोट

हार गये वे, लग गई ऐलेक्शन में चोट।
अपना अपना भाग्य है, वोटर का क्या खोट?
वोटर का क्या खोट, जमानत जब्त हो गई।
उस दिन से ही लाला जी को खन्न हो गई।।
कह 'काका' कवि, बर्राते हैं सोते जाते।
रोज रात को लेंय, हिचकियां रोते रोते।।

—काका की फुलझड़ियाँ . 1965

चुनाव-चक्कर

पिद्दी पांडे ने कहा, हाथ हमारा देख।
'काका' तेरे भाग्य में, मिनिस्टरी की रेख।।
मिनिस्टरी की रेख, फुरफुरी मन में आई।
मित्रों से ले कर्ज, जमानत जमा कराई।।
जीत गया तो मैं, अपनी सरकार बनाऊं।
हार गया तो सारा, कर्ज हजम कर जाऊं।।

मेरे दल के नियम हैं, सभी दलों से भिन्न।
'गधा' हमारी पार्टी के चुनाव का चिह्न ॥
के चुनाव का चिह्न, व्यर्थ है घोडा-घोडी।
लगे दुलत्ती, भाग जाय बैलों की जोडी।
बाल हँसिया, गाय-भैंसिया हा-हा खायें।
हेचू-हेचू के भय से, दीपक बुझ जायें ॥

अपन दल की विजय का, है पूरा विश्वास।
क्योंकि हमारे पार्टी, नेता चरते घास ॥
नेता चरते घास, वोट जब पड़ें हमारे।
डूब जायेंगे सूरज, चांद, सितारे सारे ॥
कह 'काका' कविराय, झोपडी को हम फोड़ें।
साइकिल पचर करें, टाग हाथी की तोड़ें ॥

'काका' का क्या कर सकें, नियम और कानून।
जो विरोध मेरा करे, दू गोली से भून ॥
दू गोली से भून, आन्दोलन क्या कर लेगा।
जितन अनशन होगे, उतना अन्न वचेगा ॥
मर जाने दो, मरें साधु-सन्यासी-योगी।
जनसख्या बढ गई, ठीक ऐसे ही होगी ॥

—काका कोला : 1968

चुनाव-चातुर्य

डी-ओ-जी को 'डौग कह, सी-ए-टी को 'कैट'।
इतनी इगलिश वहुत है, रख ले सिर पर हैट ॥
रख ले सिर पर हैट, पैण्ट-वुशर्ट धारना।
ग्राम-सभा म लम्बी चौडी, डीग मारना ॥
कह 'काका', सिगरेट मुफ्त पड जाए पल्ले।
करके मुँह को गोल, धुए के छोडो छल्ले ॥

देख तुम्हारा ठाठ यह, रह जाए सब दग।
चेहरा-मुहरा ठीक हो, जम जाएगा रग ॥
जम जाएगा रग, लैक्चर देना सीखो।
उल्टे-सीधे बको, मच पर चढकर चीखो ॥
कह 'काका', फिर धीरे-धीरे बदलो चोला।
श्वेत धवल धोती-कुरता, खादी का झोला ॥

दर्पण रखकर सामने, अपना रूप निहार।
होकर खड़े चुनाव में करो देश-उद्धार॥
करो देश-उद्धार, जोड़ गुण्डों से नाता।
जिनकी सूरत देख, कांप जाए मतदाता॥
कह 'काका', जो निन्दा करते नहीं अघाए।
वही विरोधी तुम्हें वोट देने को आए।

प्रोपेगेण्डा रात दिन, कीजे धुआंधार।
जीत जाय तो पार है हार जाय तो पार॥
हार जाय तो पार, नाम का लाभ उठाओ।
जीत हुई तो वैभव और सम्पदा पाओ॥
कह 'काका', कवि, छोड़ मोर्चे को सर करके—
चाहे बर्तन-भाड़े तक बिक जाए घर के।

कर्जा भी लेना पड़े, ले लो आंखें मींच।
जीत जाय तो चौगुना, एक वर्ष में खींच॥
एक वर्ष में खींच, महाजन सभी डरेंगे।
देख आपका रौब, तकाजा नहीं करेंगे॥
कह 'काका' कवि, कर्ज छोड़ होंगे आभारी।
दिलवा दो उनको कोई, ठेका सरकारी॥

कुछ चुनाव के चुटकले, और कीजिए नोट।
मिल सकते हैं आपको, सभी जनाने वोट॥
सभी जनाने वोट, लिपस्टिक घर-घर बांटो।
हाथ जोड़कर, दांत निपोर खीर सी चाटो॥
कह 'काका', झंडा लेकर घूमें घरवाली।
भावज, बूआ, जीजी, ताई, सलहज, साली॥

एक्सपर्ट इस आर्ट के, कर बुर्के की ओट।
दे सकते हैं आपको, मुर्दों के कुछ वोट॥
मुर्दों के कुछ वोट, नोट जब पा जाते हैं।
मिर्या वहीद 'वहीदन' बनकर आ जाते हैं॥
कह 'काका' कवि', झूठ-फरेब-जाल-मक्कारी।
यह चुनाव का धर्म, जानते, सब संसारी॥

सीट प्राप्त हो जाय तो, मिटें सकल संताप।
अक्कल दिन-दूनी बढ़े, छिपें पुराने पाप॥
छिपें पुराने पाप, बनाते रहिए भत्ता।
आज लखनऊ, कल दिल्ली, परसों कलकत्ता॥
कह 'काका', यह कला सीख बन जाओ नेता।
नेता को भगवान, फाड़कर छप्पर देता॥

—काका की फुलझड़ियां 19

चुनाव-चुटकी

एलेक्शन के सूरमा! नोट करो सामान।
'फर्स्ट एड' का बक्स भी, रख लेना श्रीमान॥
रख लेना श्रीमान, बनाओ जितने झंडे।
झंडों से भी दुगुने, बुक कर लेना गुंडे॥
पोलिंग पर जाओ, तो पीकर जाना मिस्टर।
तिकड़म, झूठ, फरेब, चापलूसी की मिक्श्चर॥

—जय बोलो बेईमान की : 1973

चुनाव-दर्शन

करूं आपकी वन्दना, टिकिटेश्वर भगवान।
अब अच्छी लगती नहीं, कविता की दूकान॥
कविता की दूकान, बता दो ऐसा धन्धा।
गाल लाल पड़ जाय, पेट बन जाय पुलन्दा॥
कह 'काका', श्रीमान् कृपा के होठ हिला दें।
आगामी चुनाव की हमको, टिकिट दिला दें॥

बलिहारी प्रभु आपकी, टिकिट मिल गई मोहि।
मन्त्री-पद मिल जायगा, तब जानूंगा तोहि॥
तब जानूंगा तोहि, देश के संकट काटूं।
जहां न गल्ला मिले, वहां रसगुल्ला बांटूं॥
सूखा और भुखमरी, दोनों भागें ऐसे।
देख पुलिस का लट्ठ, प्रदर्शनकारी जैसे॥

राजनीति के मंच पर, फिरा दिया लंगोट।
आये कोई सामने, लेकर देखे वोट॥
लेकर देखे वोट, बूथ पर गाड़ूं झंडा।
खड़े रहें ढाई सौ, गुंडा लेकर डंडा॥
कलियुग की सूर्पणखा, लक्ष्मण-हरण करेगी।
रावण की महफिल में, उसको वरण करेगी॥

देख हमारा घोषणापत्र छपा स्पष्ट।
बिक्रीकर औ' आयकर, सब कर होंगे नष्ट॥
सब कर होंगे नष्ट, प्रबन्ध कराऊं ऐसे।
नल-बिजली के मुफ्त कनैक्शन, लगें न पैसे॥
मूल्य रहेंगे सबसे सस्ते, सबसे न्यारे।
गली गली में खुलें, सुपरबाजार हमारे॥

टका सेर गाजर बिकें, टका सेर अंगूर।
गदहे उड़ें विमान में, कार चढ़ें लंगूर॥
कार चढ़ें लंगूर, चलाऊं ऐसा चक्कर।
हाथी की छाती पर, मूंग दलेंगे खच्चर॥
मेरी-सी सरकार, विश्व में होगी किसकी।
पानी पीना बन्द, नलों से निकले व्हिस्की॥

हार गया तो क्या हुआ, जाय भाड़ में वोट।
चन्दे में से बच रहे, दस हजार के नोट॥
दस हजार के नोट, करेगी क्या महंगाई।
बैठा बैठा पांच वर्ष तक, मार मलाई॥
'काका', इससे भला न कोई दूजा धन्धा।
आगामी चुनाव में फिर, कर लूंगा चन्दा॥

—म्याऊं . 1954

चुनाव-संग्राम

नहीं मांगते रोटियां, नहीं मांगते दाल।
लोटा-घंटी कुछ नहीं, नहीं चाहिए थाल॥
नहीं चाहिए थाल, न लेंगे शाल-दुशाला।
नहीं मांगते सोना-चांदी, मोती माला॥
कह 'काका' कविराय, न मांगू हाथी-घोड़ा।
और न चाहिए मुझे, जनाना धोती-जोड़ा॥

कोई दाता का सखी, है माई का लाल।
एस आडे वक्त म, पूरा करे सवाल ?
पूरा करे सवाल, न मागू चावल-आटा।
नमक, तेल, लकडी का, अपन पास न घाटा ॥
कह काका' कविराय, न चाहिए पान-सुपारी।
दो अक्षर की चीज, मागता 'वोट' भिखारी ॥

खडा हुआ हू द्वार पर, देख लेउ तुम झाक।
चरण कमल पर आपके, रगडू अपनी नाक ॥
रगडू अपनी नाक, लाज रख लेउ हमारी।
शीघ्र पधारो प्रभो ! खडी है बाहर लारी ॥
कह 'काका' कवि, राजनीति म चढा हुआ हू।
जनता की सेवा करने को, अडा हुआ हू ॥

वोटर जी ! करिके कृपा, दीजे अपना वोट।
पूजा करने आपकी, ले आया हू नोट ॥
ले आया हू नोट, ओट मे करू आरती।
मो सम दूजा और न कोई, पूत भारती ॥
कह काका' कविराय, मार चाँदी की ठोकर।
आसमान से कूद पडेंगे, लाखो वोटर ॥

आब मिले, आदर मिले, भरे मान सौ गेह।
मत्री पद मिल जाय तो, कचन बरसे मेह ॥
कचन बरसे मह भतीजा, जीजा साला।
जिसको चाहू, उसे बना दू अफसर आला ॥
कह काका कविराय, कार म करिके दौरा।
दौरा दौरा फिरू कि, ज्यो भन्नाता भौरा ॥

—म्याऊ 1954

चुनाव सग्राम

बोले अर्जुनसिंह से, नेता कृष्णकुमार।
चल चुनाव सग्राम म, कर कौरव सहार ॥
कर कौरव सहार, छोड शका आशका।
दुश्मन दल थर्राय, विजय का बाजे डका ॥
मिली न पार्टी टिकट, उदासी छाई बसी।
महाबली निर्दली, टिकट की ऐसी-तैसी ॥

अर्जुन उवाच

उन मित्रो से किस तरह, लड़ पाऊंगा नाथ।
लाठी खाई जेल मे, पिटे हमारे साथ॥
पिटे हमारे साथ, निकट सम्बन्धी कोई।
विरोधियो मे चचा, भतीजे, हैं बहनोई॥
कुलघाती जीवन से, मरण श्रेष्ठ गोविन्दा।
कैसे करू चुनाव-सभा मे, इनकी निन्दा॥

होश सम्हाला, तभी से, हू बापू का भक्त।
नस-नस मे भरता रहा, देश-भक्ति का रक्त॥
देशभक्ति का रक्त, तख्त पर मुझे बिठाया।
उन स्वजनो से लड़ूं, तर्क यह समझ न पाया॥
झूठ-कपट, छल-छन्द, इलेक्शन की परिभाषा।
इन दुश्कर्मों की मुझसे, मत रखिए आशा॥

अतरात्मा कह रही, है यह कार्य अशिष्ट।
प्रभु-चरणो म फेंक दी, उसने वोटर-लिस्ट॥
उसने वोटर-लिस्ट, चल दिया मुह लटकाकर।
बैठ गया इक ओर, जीप मे पीछे जाकर॥
समझ गय श्रीकृष्ण, मोह अर्जुन पर छाया।
मद-मद मुस्कान मार, उसको समझाया॥

कृष्ण उवाच

कर्त्तव्यो से हट रहा, मूरख अर्जुनसिंग।
क्या तेरे माइड की, लूज हुई स्प्रिंग?
लूज हुई स्प्रिंग, करे क्यो मन को छोटा।
लिये खड़ा जयमाल अखाड़ा, बांध लगोटा॥
विजयश्री कर प्राप्त, जमा सत्ता पर आसन।
चतुर सदा जनता पर, करते आये शासन॥

प्रलयकाल मे नष्ट हो, धरा-चन्द्र-आदित्य।
नेता-मन्त्रि अनित्य हैं, आत्मतत्त्व है नित्य॥
आत्मतत्त्व है नित्य, न इसको अग्नि जलाये।
वायु सुखा नहि सके, न जल गीला कर पाये॥

जब चाहे 'दल-बदल' करे, नेता की आत्मा।
इसमे किंचित् दखल नही, देता परमात्मा॥

यह ससार असार है, झूठे चित्र विचित्र।
कौन किसीका शत्रु है, कौन किसीका मित्र॥
कौन किसीका मित्र, व्यर्थ है रिश्ता नाता।
नही किसीका ससुर, नही कोई जामाता॥
तुझसे ज्यादा ज्ञानी, कलियुग के मिस-मिस्टर।
आज प्रेमिका बनी, जो कल तक थी सिस्टर॥

मानव द्वारा हुए सब, रिश्ते कण्ट्रीब्यूट।
फिल्मी रिश्तो की तरह, ये रिश्ते हैं झूठ॥
ये रिश्ते है झूठ, प्रमाणो से समझाऊ।
यदि तू भूल गया तो सुन, याद दिलाऊ॥
'मदर इण्डिया' मे था, जो 'नरगिस' का बेटा।
वही सुनीलदत्त, उसका शौहर बन बैठा॥

एक 'जगली' फिल्म थी, जो देखी उस रात।
इश्क लडाती 'सायरा', प्रिय 'शम्मी' के साथ॥
प्रिय शम्मी के साथ, किसी पर लगा न धब्बा।
अब 'जमीर' म वही, 'सायरा' का है अब्बा॥
नाते-रिश्तो के चक्कर मे, मत पडना बच्चा।
केवल आत्मा-परमात्मा का, नाता सच्चा॥

मैं, वह, तू सब एक है, बिखरी बुद्धि समेट।
तम्बाकू वर्जीनिया, भिन्न-भिन्न सिगरेट॥
भिन्न-भिन्न सिगरेट, याद अर्जुन को आई।
"तलब लगी है प्रभो! निकालो दियासलाई॥"
करने लगा विचार, धुए के छोडे छल्ले।
बोले कृष्णकुमार—"पडा कुछ तेरे पल्ले?"

पार्थ! स्वार्थ को छोडकर, देख देश की ओर।
अनासक्त रहकर सखे! वोटर-वोट बटोर॥
वोटर-वोट बटोर, थामकर डडा-झडा।
आगे-पीछे चलें, वीरवाके मुसटडा॥

धर्म-युद्ध मे जो प्राणी, डरता सो मरता।
भय दिखलाये बिना, प्रीत नहिं कोई करता ॥

बैठ जायगा अगर तू, नही करे सग्राम।
'अर्जुन पैसा खा गया', लग जाये इल्जाम ॥
लग जाये इल्जाम, लोक-निन्दा को लेकर।
मिलती है अपकीर्ति, मरण से भी जो बदतर ॥
उठ अर्जुन ! निष्काम कर्म से, मुख क्यो मोडे ?
धार चुनावी-धनुष, विजय के दौडें घोडे ॥

अर्जुन उवाच

आत्मा सब मे एक है, वही जीव की नीव।
भिन्न-भिन्न फिर आचरण, क्यो करते है जीव॥
क्यो करते है जीव, सीट आत्मा ले लेती।
जज-आत्मा फिर उसे, कैंसिल क्यो कर देती ?
शकाओं से धुधला हुआ, हृदय का दर्पण।
फैंका ज्ञान-प्रकाश शरण मे आया भगवन् ॥

शकाओ के हो रहे, मन मे उल्कापात।
त्याग और सन्यास मे, क्या है अन्तर नाथ ?
क्या है अन्तर नाथ, कृपा की डोर बढाओ।
पृथक्-पृथक् दोनो के, अभिप्राय समझाओ ॥
अर्जुन का यह प्रश्न, कृष्ण के मन को भाया।
नेता जी ने प्रत्याशी को, यो समझाया ॥

कृष्ण उवाच

त्याग और सन्यास के, अलग-अलग हैं भाग।
राजस-तामस-सात्विक, तीन तरह के त्याग ॥
तीन तरह के त्याग, प्रथम राजस बतलाए।
स्वेच्छा से जो दस प्रतिशत, वेतन कटवाए ॥
बगला छीना जाय, त्याग तामस पहचानो।
रिश्वत को ठुकराय, सात्विक उसको मानो ॥

कहते इस सन्दर्भ में, राजनीति के नाथ।
प्रधानमन्त्री के लिए, आवश्यक नहिं त्याग॥
आवश्यक नहिं त्याग, पड़े क्यों व्यर्थ क्लेश में।
यदि इस्तीफा देय, मचे गड़बड़ी देश में॥
देश-धर्म-रक्षार्थ, चाहिए पद पर रहना।
दुष्ट जनों से जन-गण-धन की रक्षा करना॥

अज्ञानी को भासता, ज्यों रस्सी में साँप।
झूठा देहाभास यह, ज्ञान-चक्षु से भाँप॥
ज्ञान-चक्षु से भाँप, भ्रान्ति में पड़े हुए हैं।
जीवित दीख रहे तुमको, वे मरे हुए हैं॥
मध्यावधि चुनाव-नाटक, देखा था तुमने।
मुर्दों के मत प्राप्त किए, हज्जारों हमने॥

राजनीति से ले लिया, जिसने भी सन्यास।
कोई पूँजीपति उसे, नहीं डालता घास॥
नहीं डालता घास, बोलती तूती जिनकी।
अब मुँह लेते फेर, देखकर सूरत उनकी॥
कूटनीति एक्सपर्ट, बुजुर्गों का है कहना।
दम-म-दम जब तलक, इलेक्शन लड़ते रहना॥

जो फिल्मी अभिनेत्रियाँ, कल तक थीं मशहूर।
आज बिचारी उड़ गईं, जैसे धूप कपूर॥
जैसे धूप-कपूर, साधना, बबिता, माला।
हुईं उपेक्षित, कोई नहीं पूछने वाला॥
देवानन्द, अशोक न, अभिनय से घबरायें।
इसीलिए ये बूढ़े, 'सदाबहार' कहायें॥

अब अर्जुन सुन ध्यान से, कलियुग का सन्यास।
रंगे हुए कपड़े पहिन, करते भोग-विलास॥
करते भोग-विलास, यही 'राजस' सन्यासी।
हाथी मोटर-कार, आय भी अच्छी खासी॥
एक टाँग पर खड़ा, कुम्भ में ताने छाता।
दे सकता तो शाप, यही 'तामसी' कहाता॥

अब 'सात्त्विक' सन्यास के, लक्षण कर ले नोट।
तन अभावों म हुए, लगी हृदय पर चोट॥
लगी हृदय पर चोट, पुत्र पत्नी से लडकर।
भाग चले घर छोड, क्रोध के वश मे पडकर॥
पहुचे हरिद्वार, भक्तो पर धाक जमाई।
अन्न-त्याग सेवन करते, फल-दूध-मलाई॥

उपसंहार

प्रभु के इजेक्शनो से, पुष्ट हो गया हार्ट।
अर्जुन ने स्वीकृति दई, जीप हुई स्टार्ट॥
जीप हुई स्टार्ट, साथ लटकाये चमचे।
ड्राइव करते कृष्ण, बाटते अर्जुन पर्चे॥
काकी बोली, छोडो जी, यह कथा कहानी।
नल हो जायें बन्द, घडो म भर लो पानी॥

—काका हाथरसी 1975

चूक गए चौहान

दिल्ली से लाहौर तक, मार लिया मैदान।
दो ठोकर की देर थी, चूक गए 'चौहान'॥
चूक गए चौहान, न ऐसा अवसर आवे।
पकी-पकाई छोडे, सो पीछे पछतावे॥
पाक मिया फिर, लम्बी-चौडी हाक रहे हैं।
ताशकद का चूरन करके, फाक रहे हैं॥

—काका के कहकहे 1966

चूल्हे-चौके का रोमास

आधुनिका पत्नी मिली, पति के पडी नकेल।
वाक्शास्त्र म पास थी, पाकशास्त्र मे फेल॥
पाकशास्त्र म फेल, रसोई कर दी चालू।
स्वेटर बुनने लगी, जल गए सारे आलू॥
पुस्तक खोली, पति से बोली, जल्दी आओ।
जले आलुओ के ऊपर 'बरनोल' लगाओ॥

—काका बोला : 1968

चूहे और मुर्गे

बीत गई जन्माष्टमी, पडन लागी ठड।
चीनी चूहे फट पर, लगे पेलन डड॥
लगे पेलन डड, उधर चूहो के मुर्गे।
बाग वेसुरी देते, पाकिस्तानी गुर्गे॥
कह 'काका' कवि, मत समझो यह ऊघ रहा है।
शेर हिन्द का, गतिविधि सबकी सूघ रहा है॥

आख दिखाने का हमे, क्यो करते हो कष्ट?
छल प्रपच की आग से, हो जाओगे नष्ट॥
हो जाओगे नष्ट, न रहना किसी भूल मे।
तुम क्या हो, हिटलर जैसे मिल गए धूल म॥
कह 'काका' कविराय, छोड दो झूठी आशा।
बदल गई अब यहा, अहिसा की परिभाषा॥

चेयरमैनी की राय

चेयरमैनी के लिए, द्गा उसको राय।
मेरे घर के गेट पर, बिजली दे लगवाय॥
बिजली दे लगवाय, फिटिंग करवा नल का।
आता नही कहार, कष्ट मिट जाये जल का॥
कह 'काका' कविराय, काम यह पहिले होई।
मतलब जाये निकल, बात नहि करता कोई॥

—पिल्ला 1950

चैन की सांस

बोले खीस निपोरकर, सन्नूलाल सुनार।
स्वर्ण-नियन्त्रण-नीति पर, होगा पुनर्विचार॥
होगा पुनर्विचार, खबर सुनने म आई।
बचत योजना मे भी कुछ, हो जाय ढिलाई॥
कह 'काका' कवि, ऐसा चैन पड गया उर म।
बिन रिश्वत ही सीट, मिल गई हो 'स्लीपर' मे॥

—काका की फुलझडिया 1965

चोटी के कवि

बोले माइक पकड़ कर, पापड़चन्द 'पराग'।
चोटी के कवि ले रहे, सम्मेलन मे भाग ॥
सम्मेलन में भाग, महाकवि गामा आए।
काका, चाचा, मामाश्री, पाजामा आए ॥
हमने कहा, व्यर्थ जनता को क्यों बहकाते ?
दाढ़ी वालों को भी, चोटी का बतलाते ॥

—काका कोला : 1968

चोरी की रपट

घूरे खा के घर हुई, चोरी आधी रात।
कपड़े - बर्तन ले गये, छोड़े तवा परात ॥
छोड़े तवा परात, सुबह थाने को धाये।
क्या-क्या चीज गई है, सबके नाम लिखाये ॥
आंसू भरकर कहा—"मेहरबानी यह कीजै।
तवा-परात बचे हैं, इनको भी लिख लीजै ॥"

कोतवाल कहने लगा, करके आंखें लाल।
"उसको क्यों लिखवा रहा, नही गया जो माल ॥"
नही गया जो माल, मियां मिमियाकर बोला।
"मैंने अपना दिल, हुजूर के आगे खोला ॥
मुंशी जी का इंतजाम, किस तरह करूंगा ?
तवा-परात बेचकर, रपट लिखाई दूंगा ॥"

—फिल्मी सरकार : 1972

छापा

कपड़े के स्टाक की, जल्दी करो स्टोल।
बड़ा भयंकर आ रहा, चाचा जी कन्ट्रोल ॥
चाचा जी कन्ट्रोल, बेचकर कर लो कौड़ा।
वरना गवरमेन्ट का, बजने लगे हथौड़ा ॥
कह 'काका' कविराय, फजीता होगा भारी।
चाचा झाऊलाल ! मान लो बात हमारी ॥

काहे को घबरा रहा, बेटा खाऊलाल ?
कच्ची गोली के कहीं, चाचा झाऊलाल ॥
चाचा झाऊलाल, कहां रखी है ताली ?
चल जल्दी से, खोल कोठरी ईंधन वाली ॥
कह 'काका' कविराय, फूट न जाये भण्डा ।
नीचे फ़ाइन माल, लगा दे ऊपर कण्डा ॥

अब तक के व्यापार में, रक्खा था क्या सार ।
माल रोककर बेचना, होय एक के चार ॥
होय एक के चार मुनाफ़ा, लम्बी खाऊं ।
तीन महीने की मुद्दत में, रकम बनाऊं ॥
कह 'काका' कविराय, बात इतनी हो पाई ।
इतने ही में दो दर्जन, आ गये सिपाई ॥

कपड़े के बाजार में, दीखें पगड़ी लाल ।
नाकेबन्दी हो गई, सील कर दिया माल ॥
सील कर दिया माल, लगा बाहर का ताला ।
सीधे घर को चले, बगीचा गये न लाला ॥
कह 'काका' कविराय, जनमपत्री दिखलाई ।
पंडित जी ने गिरह, बहुत 'कर्री' बतलाई ॥

—पिल्ला : 1950

छापे

ठंडी आहें भर रहे, लक्ष्मीपति श्रीमान् ।
नित्य नये छापे पड़ें, क्या होगा भगवान ?
क्या होगा भगवान, प्राण किस भांति बचायें ?
दो नम्बरवाली लक्ष्मी को, कहां छिपायें ?
धरती में गाड़ें तो, सर्प बैठ जायेंगे ?
रखें दोस्त के घर, वापस नहीं आ पायेंगे ॥

'लॉकर' लेकर सो रहा, रे मन मूरख ! जाग ।
ला-कर, ला-कर रट रहा, इनकमटैक्स-विभाग ॥
इनकमटैक्स - विभाग, बैंक के अन्दर आकर ।
धनी धुन रहे शीश, सील कर डाले लॉकर ॥

कह 'काका' जपते थे, जिसकी निश-दिन माल।
परेशान हैं आज, उसी लक्ष्मी से लाला।।

—काका हाथरसी : 1975

छायावादी कवि

कवि - सम्मेलन चल रहा, वर्षा थी ना धूप।
छत्री ताने मच पर, चढ़े महाकवि 'सूप'।।
चढ़े महाकवि सूप, चकित सब कवि कवयित्री।
श्रोता हँसने लगे, देखकर उनकी छत्री।।
सयोजक ने शका सबकी, दूर करा दी।
अहोभाग्य ! आ गये, 'सूपकवि' छायावादी।।

—फिल्मी सरकार : 1972

छीनान्दोलन

फीताशाही के तले, दबी - दबी लाचार।
फाइल फाइल हो गई, हुआ न भूमि-सुधार।।
हुआ न भूमि-सुधार, वामपक्षी मुह फाड़ा।
हड़पचन्द ने भूमि हड़प कर, झडा गाड़ा।।
अगला कदम उठायेंगे, क्या सोचा मन में।
कर-करके कल्पना, कपकपी आई तन मे।।

छीनान्दोनन से हुए, पति - पत्नी गमगीन।
जर को छीना टैक्स ने, अब छिन रही जमीन।।
अब छिन रही जमीन, सुनो काकी घर वारी।
जर-जमीन के बाद आय, जोरू की वारी।।
नई बहू छिन जाय, दूसरी लाओ गुडिया।
कहा मिले 'काका' को, तुम सी बढ़िया बुढ़िया।।

—फिल्मी सरकार : 1972

जनसंख्या

औषधि खाते नियम से, ताऊ घूरेलाल।
फिर भी घर मे एक शिशु, आ जाता हर साल।।
आ जाता हर साल, खर्च इतना कर डाला।
मसला हल न हुआ, 'परिवार-नियोजन' वाला।।

वह 'काका' कवि, कोई दोष दवाई मे है।
अथवा कुछ विशेषता, ताऊ-ताई म है॥

जनसख्या के आकडो से, मत आखें मोड।
एक वर्ष म बढ रहे, मानव एक करोड॥
मानव एक करोड, देख बम्बई शहर मे।
सोन को भी जगह नही, मिल पाती घर म॥
कह 'काका' अब, ऐसे भवन बनें धरती पर।
जैसे 'जनता' गाडी म, थ्री-टायर स्लीपर॥

—काका की फुलझडिया 1965

जम और जमाई

बडा भयकर जीव है, इस जग म दामाद।
सास-ससुर को चूसकर, कर देता बरबाद॥
कर देता बरबाद, आप कुछ पियो न खाओ।
मेहनत करो, कमाओ, इसको देते जाओ॥
कह 'काका' कविराय, सासरे पहुची लाली।
भेजो प्रति त्यौहार, मिठाई भर-भर थाली॥

लल्ला हो इनके यहा, देना पडे दहेज।
लल्ली हो अपने यहा, तब भी कुछ तो भेज॥
तब भी कुछ तो भेज, हमारे चाचा मरते।
रोने का एक्टिंग दिखा, कुछ लेकर टरते॥
'काका स्वर्ग प्रयाण करे बिटिया की सासू।
चलो, दक्षिणा देउ, और टपकाओ आसू॥

जीवन-भर देते रहो, भरे न इनका पेट।
जब मिल जाए कुवर जी, तभी करो कुछ भेंट॥
तभी करो कुछ भेंट, जवाइ-घर हो शादी।
भेजो लडडू, कपड, बर्तन, सोना-चादी॥
कह 'काका हो अपने यहा, विवाह किसीका।
तब भी इसको देउ, करो मस्तक पर टीका॥

कितना भी दे दीजिए, तृप्त न हो यह शख्स।
तो फिर यह दामाद है, अथवा लैटर - बक्स ?
अथवा लैटर - बक्स, मुसीबत गले लगा ली।
नित्य डालते रहो, किन्तु खाली-का-खाली ॥
कह 'काका' कवि, ससुर नर्क में सीधा जाता।
मृत्यु समय यदि दर्शन, दे जाए जामाता ॥

और अन्त मे तथ्य यह, कैसे जाए भूल।
आया हिन्दू - कोड - बिल, इनको ही अनुकूल ॥
इनको ही अनुकूल, मार कानूनी घिस्सा।
छीन पिता की सम्पति से, पुत्री का हिस्सा ॥
'काका' एक समान लगें, जम और जमाई।
फिर भी इनसे बचने की, कुछ युक्ति न पाई ॥

—काका की फुलझड़ियां 1965

जमनेवाले कवि

शिमला म हमको मिले, प्रोफेसर 'घड़ियाल'।
सफाचट्ट थी खोपड़ी, इधर-उधर कुछ बाल ॥
इधर-उधर कुछ बाल, लगी चन्दन की बिन्दी।
बोल रहे थे आधी इगलिश, आधी हिन्दी ॥
'काका'। कवि सम्मेलन मे, कुछ 'हैल्प' कराओ।
जमनेवाले हिन्दी के, 'पोइट' बतलाओ ॥

पड़ी हमारे हृदय पर, उनकी गहरी छाप।
करें जनवरी मास मे, कवि - सम्मलन आप ॥
कवि - सम्मेलन आप, लगगा सबको प्यारा।
शीतल वातावरण, बर्फ़ का शुभ्र नज़ारा ॥
कह 'काका' कवि, दाँत किटकिटाकर जब गाए।
कवि, कविता, श्रोता, सयोजक सब जम जाए ॥

—काका की फुलझड़ियां : 1965

जय बम् भोला

कहने लगी बिहार मे, बहुरूपिया बयार।
नौ दिन नौ घटे चली, टूट गयी सरकार ।।
टूट गयी सरकार, झाड सत्ता का झोला।
सारे मत्री बोल उठे, जय जय बम् भोला ।।
इस घटना से जीवन भर का, लाभ उठाओ।
'भूतपूर्व मत्री' लिख कर, लैटर छपवाओ ।।

—काका के धड़ाके : 1969

जयहिन्द

राम-राम, जैराम जी, नमस्कार, गोविन्द।
पकड 'नमस्ते' का गला, चढ बैठी 'जयहिन्द' ।।
चढ बैठी जयहिन्द, घुस गई घर मे 'वन्दे'।
अब तो 'आदाबर्ज' छोड आँखो के अन्धे ।।
कह 'काका' कविराय, बन्दगी भूला काजी।
चमचे चूमे चरण, मिलें मत्री-नेता जी ।।

—काका की कचहरी : 1946

जया-अमिताभ विवाह

प्राप्त हुआ प्रारब्ध को, अफवाहो का लाभ।
जया भादुडी कान्ता, कन्त बने अमिताभ ।।
कन्त बने अमिताभ, खेल हो गया खुलासा।
पूर्ण हो गई, तेजी-बच्चन की अभिलाषा ।।
कनक-छडी से, प्रीति निभाये जैसे बम्बू।
उसी भाति जुग-जुग जीवें, प्रिय गुड्डी-लम्बू ।।

कीर्तिशिखर पर पहुचकर, 'फ्लाप' होय जब आप।
तब शादी कर डालिए, मिटें सकल सताप ।।
मिटें सकल सताप, पकड हीरोइन पल्ला।
विज्ञापन हो मुफ्त, मचे चहु दिशि हो हल्ला ।।
ऐसे फिल्मी जोडों को, सम्मति दें 'काका'।
चूको मत, तुम भी कर डालो, धूम-धडाका ।।

—जय बोलो बेईमान की : 1973

जलेबियां

आए जब इंगलैण्ड से, भारत 'विलियम डग'।
खाकर गर्म जलेबिया, डग रह गए दंग ॥
डग रह गए दग, इसे किस तरह बनाता ?
ताज्जुब है, अन्दर शरबत कैसे घुस जाता।
बैरा बोला—सर ! इनको आर्टिस्ट बनाते ॥
बन जाती तब, इंजेक्शन से रस पहुचाते ॥

—काका के कहकहे : 1966

जहां न पहुंचे रवि…

कवि जी ! अर्थ-अभाव मे, व्यर्थ रहे क्यो डोल ?
सो जाए जब श्रीमती, उनका पर्स टटोल ॥
उनका पर्स टटोल, कला-प्रतिभा दिखलाओ।
पकडे जाओ रगे हाथ तो यो समझाओ ॥
"देवी ! तेरे बटुये मे, न पहुच पाया रवि।
रवि नहि पहुचे जहा, वहा पर पहुच गया कवि ॥"

—[illegible]

जिन्दा रेकार्ड

लेट रहे थे पार्क मे, हरी घास पर [illegible]
फिल्मी गाना गा रहे, एक [illegible]
एक अर्ध विक्षिप्त, [illegible]
हुए चित्त से [illegible]
पूछा—"उल्टे होकर [illegible]"
"यह रिकार्ड की [illegible]"

—[illegible]

गाडी लेकर चल दिया, आगे गाडीवान।
पीछे डगमग हो रहा, लाला का ईमान ॥
लाला का ईमान, निकाली सारी लकडी।
सौ रुपये गिन दिए, जाट ने रस्ता पकडी ॥
मार्ग रोककर लाला जी, अड गए अगाडी।
कहा चल दिए ठाकुर साहब, लेकर गाडी ?

बेईमानी कर रहे, देकर हमे जुबान।
'पूरी गाडी' तय हुई, याद करो श्रीमान् ॥
याद करो श्रीमान्, गिन दिए रुपये सारे।
लकडी-गाडी-बैल सभी, हो गए हमारे ॥
वचनबद्ध होकर के, अब क्यो आँख दिखाओ।
झगडे मे क्या रक्खा, अपने घर को जाओ ॥

घर पहुचा जब चौधरी, हो करके गमगीन।
गाडी तीन हजार की, लाला ने ली छीन ॥
लाला ने ली छीन, जाट का बेटा आया।
बदला लेने का उसने, सकल्प उठाया ॥
भरी दूसरी गाडी, पहुचा उसी जगह पर।
लाला जी गुडगुडा रहे थे, हुक्का भरकर ॥

सौदेबाजी क्या करू, पूरी गाडी लेउ।
'दो मुट्ठी रुपये', हमे बदले मे दे देउ ॥
बदले मे दे देउ, हो गई पक्की गाडी।
लाला जी खुश—और फस गया एक अनाडी ॥
गाडी खाली हुई, देउ रुपये दो मुट्ठी।
झगडा बढने लगा, हो गई भीड इकट्ठी ॥

मुट्ठी पकडी जाट ने, लाला चक्कर खाय।
खीचातानी चल रही, छूटे नही छुटाय ॥
छूटे नही छुटाय, मरुगा या मारुगा।
रुपयो के ही साथ, मुट्ठिया दोनो लूगा ॥
लाला रोने लगे, पच-फैसला कराया।
दोनो गाडी लेकर, बेटा घर को आया ॥

— मोगा एण्ड मोगा : 1980

झूठ-माहात्म्य

झूठ बराबर तप नहीं, साच बराबर पाप।
जाके हिरदे साच है, बैठा-बैठा टाप॥
बैठा-बैठा टाप, देख लो चाऊ झूठा।
'सत्यमेव जयते' को, दिखला रहा अगूठा॥
कह 'काका' कवि, इसके सिवा उपाय न दूजा।
जैसा पाओ पात्र, करो वैसी ही पूजा॥

—काका की फुलझड़ियाँ . 1965

टटोलो

बना रहे हैं चांद पर, चढने का प्रोग्राम।
जो इच्छुक हो, शीघ्र ही दर्ज कराए नाम॥
दर्ज कराए नाम, मिले कब अवसर ऐसा।
मर जाए तो यश, जीवित आए तो पैसा॥
कंकड़-पत्थर लाए, अब तक सभी अपोलो।
कर दे धन का ढेर, हमारा यान 'टटोलो'॥

व्यापारी इस तथ्य पर, क्यो न दे रहे ध्यान ?
पड़ा करोड़ो का वहा, लावारिस सामान॥
लावारिस सामान, कैमरे-टेलीवीजन।
रूसी लूनाखोद, चद्रवग्घी अमरीकन॥
'काका' इन सबको, बटोरकर ले आएगे।
दाम खडे करके, करोड़पति हो जाएगे॥

—जय बोलो बेईमान की : 1973

टाटरी बनाम लाटरी

काकी ने बाजार के, बतलाए कुछ काम।
धनिया, जीरा, टाटरी, भिडी, आलू, आम॥
भिडी, आलू, आम, लौटकर जल्दी आना।
खबरदार कोई भी, सौदा भूल न जाना॥
जाते-जाते हमने, गीत कर दिया चालू।
धनिया, जीरा, आम, टाटरी, भिडी, आलू॥

चौराहे पर मिल गये, बाबू नमक-हराम।
उतर गया मस्तिष्क से, एक चीज का नाम॥
एक चीज का नाम, याद आया सो लाये।
छोड़ टाटरी, टिकट लाटरी की ले आये॥
कहं 'काकी' ललकार, टाटरी क्यों ना लायें?
हमने उनको, लाभ लाटरी के समझाये॥

बटुए में रख लो इसे, मन में धीरज राख।
एक रुपे की लाटरी, दे जाये दो लाख॥
दे जाये दो लाख, साख बढ़ जाय तुम्हारी।
कोठी, बंगला, कार, सैंकड़ों आज्ञाकारी॥
कहं 'काका' कवि, खुली लाटरी, पेपर आया।
नहीं गये घर, होटल में ही खाना खाया॥

—काका के धड़ाके 1969

टिट फॉर टैट

गदहा कहे कुम्हार से, तू क्या पीटे मोय।
गांव छोड़ चल शहर को, मैं पिटवाऊं तोय॥
मैं पिटवाऊं तोय, गधे को आई मस्ती।
चौराहे पर पहुंच, झाड़ने लगा दुलत्ती॥
कहं 'काका' कवि चोट खा गये मोटे लाला।
लाला ने गदहे वाला, घायल कर डाला॥

—काका कोला 1964

डाईवोर्स कोर्स

सिविल कोर्ट में चल रहा, डाईवोर्स का केस।
पति-पत्नी दोनों हुए, जज के सम्मुख पेश॥
जज के सम्मुख पेश, पड़ गये फन्दे ऐसे।
बच्चे उनके तीन, बराबर बांटें कैसे?
मां कहती, सब बच्चे मेरे मुझे दीजिये।
बाप कहे, हक बराबरी का, न्याय कीजिये॥

सोच समझकर के दिया, जज ने यह जजमेंट।
कुछ दिन और चलाइये, अपना 'लव-मूमैन्ट'॥
अपना लव-मूमैन्ट, होय जब चौथा बच्चा।
दो-दो लेना बाट, फैसला कैसा अच्छा?
एक वर्ष के बाद, हुए दो जुड़वा लड़के।
रही समस्या वही, करोगे क्या अब लड़के?

—फिल्मी सरकार 1972

डाक से डाका

बजट घोषणा ने किया, पाकिट पर बम्बार्ड।
छै पैसे वाला, हुवा दस पैसे का कार्ड॥
दस पैसे का कार्ड, करें 'काका' कवि कैसे?
अन्तर्देशीय पत्र, दीजिए पन्द्रह पैसे॥
करके नीची नजर, थमा दो उनको मैटर।
क्योंकि बीस पैसे में जाएगा, 'लवलैटर'॥

—काका कोला · 1968

डॉक्टर

डाक्टर बोले, प्रभु करें, ऐसी कुछ तजबीज।
अस्पताल में भीड़ हो, 'क्यू' में लगें मरीज॥
क्यू में लगें मरीज, वायु में होय प्रदूषण।
रोगों के कीटाणु, नित्यप्रति करें आक्रमण॥
औषधि खाकर रोगी, आत्मिक लाभ उठाए।
मर्ज रहे न मरीज, स्वर्ग को सीधे जाए॥

डिम्पल-राजेश विवाह (1981)

शोर मच गया, चल गई चर्चा देश-विदेश।
प्रणय-सूत्र में बंध गये, डिम्पल संग राजेश॥
डिम्पल संग राजेश, लड़कियां लाखों क्वारी।
ईर्ष्या से सब 'हाय-हाय', कर रही बिचारी॥
कह 'काका' कवि, चली बरात 'समुद्र-महल' को।
'आशीर्वाद' दे रहा, आशीर्वाद युगल को॥

प्रिय जितेन्द्र-शत्रुघ्न ने, किया भागड़ा नाच।
चहक उठे चेहरे सुघड़, महक रही स्कॉच॥
महक रही स्कॉच, रजत पट राज दुलारे।
जीवें उतने वर्ष, गगन में जितने तारे॥
हनीमून को जाय, चाँद पर साजन-सजनी।
क्योंकि वहाँ चौदह दिन तक, रहती है रजनी॥

—जय बोलो बेईमान की 1973

डैडी/पिताजी

शिष्या को समझा रहे, त्रिगुणाचार्य त्रिशूल।
डैडी कहने की प्रथा, संस्कृति के प्रतिकूल॥
संस्कृति के प्रतिकूल, लाडली लड़की भोली।
करके नीची नजर, मंद सप्तक में बोली॥
कहूँ 'पिता जी' तो यह कठिनाई आती है।
टकराते हैं ओठ, लिपस्टिक हट जाती है॥

—काका के धड़ाके 1969

तथाकथित पत्रकार

पत्रकार दादा बने, देखो उनके ठाठ।
कागज का कोटा झपट, करें एक के आठ॥
करें एक के आठ, चल रही आपाधापी।
दस हजार बतलाय, छपें ढाई सौ कापी॥
विज्ञापन दे दो तो, जय-जयकार कराए।
मना करो तो उल्टी-सीधी न्यूज छपाए॥

(1981)

तदबीर-तकदीर

ज्ञानचंद्र के ज्ञान से, टकराए बलवीर।
क्या कारण, तदबीर पर हावी है तकदीर॥
हावी है तकदीर, रात-दिन श्रम करते हैं।
फिर भी बेचारों के पेट नहीं भरते हैं॥
सेठ 'अंगूठा छाप', मौज बंगले में करते।
चार एम० ए०, दस बी०ए० खिदमत में रहते॥

ज्ञानी बोले, खोपडी चाट रहे क्यो व्यर्थ ?
भाग्य-शास्त्र मे देख लो, इस मसले का अर्थ ॥
इस मसले का अर्थ, परिश्रम मे धन होता।
तो प्रत्येक कुली-मजदूर, लखपती होता ॥
अगर बुद्धि के द्वारा, धन अर्जित कर पाते।
सब लेखक-कवि-सम्पादक, कुबेर बन जाते ॥

—जय बोलो बेईमान की । 1973

तस्करी-तर्क

अकस्मात छापा पडा, हालत हुई खराब।
ढाई सौ बोतल वहा, पकडी गई शराब ॥
पकडी गई शराब, कोर्ट मे पेशी आई।
जज के आगे तस्कर जी, दे रहे सफाई ॥
शराबन्दी का कानून, बना सरकारी।
कर ली बन्द शराब, नहीं कुछ खता हमारी ॥

(1981)

तर्क का अर्क

प्रणय, प्रेम रस मे पगे, परामर्श मे फर्क।
एक प्रश्न पर छिड गया, पति-पत्नी मे तर्क ॥
पति-पत्नी मे तर्क, पुत्र क्या काम करेगा ?
वकील, डॉक्टर अथवा, इजीनियर बनेगा ॥
पत्नी बोली—"हम उसको डाक्टरी सिखायें।"
पति ने कहा—"एल०एल०बी० कोर्स करायें ॥"

बात समझती हो नही, बकती हो बेकार।
मेडीकल मे चल रही, रिश्वत बीस हजार ॥
रिश्वत बीस हजार, कहो फिर क्या खायेंगे ?
उसके चक्कर मे हम, दोनो बिक जायेंगे ॥
मिनिस्टरी मे चिपक सके, जिसका 'करबेंटा'।
कोर्स डाक्टरी का, कर सकता उसका बेटा ॥

झगडा तगडा हो गया, बीती आधी रात।
एक पडोसी ने कहा—"आखिर क्या है बात ?

आखिर क्या है बात, रात में शोर मचाया ॥
जिस मुद्दे पर झगड़ा था, उसको समझाया ।
पूछा—वह लड़का है कौन, कहां रहता है ?
"अगले महिने होगा जी, डाक्टर कहता है ॥"

—फिल्मी सरकार । 1972

तर्क-संकट

तीन महीने से पड़े, चाचा जी बीमार ।
लगे मनाने मनौती, बच जाऊं इस बार ॥
बच जाऊं इस बार, आपकी कथा कराऊं ।
भगवान, पांच ब्राह्मणों को, भोजन करवाऊं ॥
बेटा बोला—"ईश्वर मूर्ख नहीं चाचा जी ।
तेरह ब्राह्मण छोड़, पांच पर होगा राजी ॥"

—फिल्मी सरकार 1972

तारिका बनाम दाढ़ी

ईर्ष्या करने लग गए, क्लीन शेव्ड इन्सान ।
फिल्म-जगत में बढ़ गया, दाढ़ी का सम्मान ॥
दाढ़ी का सम्मान, देख दाढ़ी को डरती ।
वही तारिका आज, मुहब्बत इससे करती ॥
'राजश्री' ने काका कवि की, लज्जा रख ली ।
अमरीकन दाढ़ी वाले से, शादी कर ली ॥

—काका कोला 1968

तिकड़म

भाग्य भरोसे बैठकर, झोंक रहे क्यों भाड़ ?
कर्मपत्र से काम लो, जन्मपत्र को फाड़ ॥
जन्मपत्र को फाड़, पंगु गिरि पर चढ़ जाए ।
मूक होय वाचाल, मूर्ख वक्तव्य छपाए ॥
कहं 'काका' कविराय, भाग्य तिकड़म से जागे ।
बुद्धिचन्द्र पिछड़ें, बुद्धू बढ़ जाए आगे ॥

—काका कोला 1968

तीन का अपशकुन

'तीन दिसम्बर'* को किया, हमला पाकिस्तान।
तीन स्थानों पर गिरे, उसके तीन विमान॥
उसके तीन विमान, तीन की सुनो कहानी।
पकडे उस दिन तीन पायलट, पाकिस्तानी॥
कह 'काका' कवि, तीन भयंकर सीन दिखाए।
भारत से जो लडे, तीन-तेरह हो जाए॥

—जय बोलो बेईमान की : 1973

तीन का तमाशा

ज्ञानी, ध्यानी, सूरमा, नेता, राजा, रक।
सुख-दु ख, राग-विराग मे, व्याप्त तीन का अक॥
व्याप्त तीन का अक, तीन म है त्रिपुरारी।
बिना तीन के सूने, नर-नारी-ससारी॥
कर देवत्रय ध्यान, तीन की गाथा गायें।
बीन-बीन कर शब्द, तीन के तत्त्व बतायें॥

त्रय अक्षर ओंकार मे, तीन लोक का सार।
गगा-यमुना-सरसुती, त्रयो 'त्रिवेणी' धार॥
त्रयी त्रिवेणी धार, तीन पग बामन नापा।
तीन अवस्था बचपन, यौवन और बुढ़ापा॥
कह 'काका' कवि, लाल तिकोन कर रहा हल्ला।
काफी हैं बस, तीन हो गये लल्ली-लल्ला॥

सैलानी सब जानते, धनी-दीन-शौकीन।
बौम्बे, दिल्ली, कलकत्ता, मुख्य नगर हैं तीन॥
मुख्य नगर हैं तीन, तीन का बाजे डका।
तीन पखडी से घूमे, बिजली का पखा॥
त्रय भावो से युक्त, तीन बापू के बन्दर।
भारत-भू के तीन ओर है, तीन समन्दर॥

---

* 3 दिसम्बर, 1971 ई०

झडे के रग तीन हैं, करो तीन का मान।
रक्षक सेना तीन हैं, जल-थल-नभ पहिचान॥
जल-थल-नभ पहिचान, राष्ट्र के सक्ट हरते।
जन, गण, मन मिलकर, त्रिमूर्ति का वदन करते॥
तीन अक्षरो की श्रीमती, 'इदिरा' जीजी।
स्वतत्र भारत की प्रधान मन्त्री हैं, तीजी॥

दुख चिन्तन, भय तीन से, मिलकर बनता क्षोभ।
शत्रु हमारे तीन हैं, काम, क्रोध औ' लोभ॥
काम, क्रोध औ' लोभ, तीन मानव-विकार हैं।
इसीलिए यज्ञोपवीत मे, तीन तार हैं॥
जाग्रति, स्वप्न, सुपुप्ति, अवस्था तीन बताते।
तिरखाराम त्रिवेदी, तिलक त्रिपुड लगाते॥

मुख्य रूप से चल रही, तीन तरह की रेल।
पैसिन्जर से द्रुत चलें, एक्सप्रेस या मेल॥
एक्सप्रेस या मेल, यात्रा करिये सोकर।
थ्री टायर मे लेट जाइये, लम्बे होकर॥
जैसे, ए बी सी, जेलो मे तीन क्लास हैं।
इसी तरह से कुछ रेलो मे, तीन क्लास है॥

चक्की चक्कर काटती, चलें मील औ' प्रेस।
मिल जाये जब कनेक्शन, बिजली का थ्री फेस॥
बिजली का थ्री फेस, अरगजा, रोरी, चन्दन।
मार्ग भक्ति के तीन भजन, पूजन औ' बन्दन॥
भग छानकर बोले, तुक्कडचन्द तिवारी।
जय श्री राधे! तीन लोक से मथुरा न्यारी॥

सामवेद सगीत म, तीन स्वरो का योग।
तीनहि तार रबाब मे, बतलाते गुणि लोग॥
बतलाते गुणि लोग, षडज, मध्यम, गाधारा।
तीन ग्राम पर आधारित, सगीत हमारा।
कलाकार त्रय, नृत्यकला से दमक रहे हैं।
बिरजू-गोपीकृष्ण-सितारा चमक रहे हैं॥

गायन-वादन-नृत्य की, भिन्न-भिन्न हैं रीत।
इन तीनों का योगफल, कहलाता 'संगीत' ॥
कहलाता संगीत, तीन को परखा जांचा।
तीन ताल का ठेका, सब तालों का चाचा ॥
तबला-वादक, मार तिहाई सम पर आते।
झूम-झूमकर श्रोता जी, गर्दन फड़काते ॥

नीला-पीला-लाल हैं, मुख्य तीन ही रंग।
हुए तीन से तीन सौ, मिलकर इनके संग ॥
मिलकर इनके संग, खिलाड़ी जानीवाकर।
खींच ले गया नोट, तीन इक्के दिखलाकर ॥
धर्म तीन हैं, हिन्दू, मुसलमान, ईसाई।
सुषिरवाद्य है तीन, शंख, बंशी, शहनाई ॥

तीन देव कलिकाल में, रुपया-पैसा-नोट।
राजनीति के खम्भ त्रय, नेता-वोटर-वोट ॥
नेता-वोटर-वोट, काल भी तीन मानते।
भूत-भविष्यत-वर्तमान को, सभी जानते ॥
कह 'काका' कवि, साहित्यिक, सम्पादक, ज्ञानी।
तीन प्रमुख हैं, कविता, नाटक और कहानी ॥

हरड़-बहेड़ा-आमला, इन तीनों का योग।
'त्रिफला' कहते हैं इसे, हरे हजारों रोग ॥
हरे हजारों रोग, वैद्य सबको समझाता।
सोंठ, मिर्च, पीपल कूटो 'त्रिकुटा' बन जाता ॥
तीन नाड़ियों से चलती, मानव की काया।
वात-पित्त-कफ कुपित हुए, तिरदोष बताया ॥

अब तीन से सीखिये 'काका' एटीकेट।
खातिर होती तीन से, चाय-पान-सिगरेट ॥
चाय-पान-सिगरेट, कलेऊ-रोटी-ब्यालू।
सब्जी हमें सुहाती, बैंगन-गोभी-आलू ॥
तेली को आंखें दिखलाकर, बोली तेलिन।
देख, तीन हथियार, चीमटा-झाड़ू-बेलन ॥

मुख की शोभा तीन हैं, नेत्र, नासिका, गाल।
तीन रत्न मशहूर है, हीरा-पन्ना-लाल ॥

हीरा-पन्ना-लाल, तीन की बड़ी बात है।
पात बहुत हैं किन्तु, 'ढाक के तीन पात' हैं॥
तीन कुली चौपाये, गदहा-घोड़ा-खच्चर।
आलस दूर भगाते, खटमल, मक्खी, मच्छर॥

शंकर के 'तिरशूल' की, है त्रिभुवन पर धाक।
किया तीसरे नेत्र से, कामदेव को राख॥
कामदेव को राख, घुसे अम्बर की तह में।
तीन-तीन इन्सान, 'अपोलो' दस-ग्यारह में॥
कह 'काका' कविराय, तीन का पढ़ो पहाड़ा।
मुख्य तीन मौसम हैं, गर्मी-वर्षा-जाड़ा॥

काका-बूढ़ो आग्र से, आक तीन का झांक।
किलोग्राम से पूर्व थे, जब मन-सेर-छटाक॥
जब मन सेर छटाक, प्रणाली मैट्रिक आई।
तोला, माशा, रत्ती की हो गई सफाई॥
काकी क्रोधित हुई, हवा काका की बिगड़ी।
तीन साल हो गए, नहीं बनवाई तिलड़ी॥

असली, फसली, मतलबी, तीन तरह के मित्र।
पति पछाड़ होवे सती, जानो त्रिया-चरित्र॥
जानो त्रिया-चरित्र, तीन का कर अभिवादन।
तीन शिफ्ट घूमे पहिया, बढ़ता उत्पादन॥
शादी शोभा तीन, बराती, दुलहिन, दूल्हा।
भाषा का हल करे, तीन सूत्री फार्मूला॥

जिह्वा चाहे तीन रस, खट-मिट्ठा-नमकीन।
झूठ-कपट-चन्दाझपट, नेता के गुण तीन॥
नेता के गुण तीन, तीन के दोष बतायें।
जर-जमीन-जोरु, झगड़े की जड़ कहलायें॥
फल की श्रेणी तीन, अधपके, पक्के, कच्चे।
खानदान की जान, मियां, बीबी औ' बच्चे॥

नीतिशास्त्र भी गा रहा, अक तीन का गीत।
निज समान सो कीजिये, ब्याह, बैर औ' प्रीत॥

ब्याह, बैर औ' प्रीत, तीन का बल निर्बल में।
तीन लोक ले लिए, तीन मुट्ठी चावल में॥
कह 'काका' कविराय, तीन की थाह न जानी।
रामायण में लिखी, तीन दशरथ की रानी॥

फिल्मी मजनू चल दिए, डाल गले में हाथ।
'तीन देवियां' देखने, काका कवि के साथ॥
काका कवि के साथ, हमारी बारी आई।
हमने उनको 'तीन बहूरानियां' दिखाई॥
तीन सुई की घड़ी, तीन की देती शिक्षा।
लगा रहे हैं दौड़, तीन पहिये के रिक्शा॥

पंडित, दंडी, फक्कड़, साधक, संत, महंत।
तीन चलाते काल-गति, आदि, मध्य औ' अंत॥
आदि, मध्य औ' अंत, आत्मा को पहिचानो।
परमात्मा को, सत्य-शिव-सुन्दर जानो॥
कह 'काका' कविराय, तीन की समझो भाषा।
छन्द हुए इक्कीस, तीन का खत्म तमाशा॥

—काका के धड़ाके : 1969

तीन की तराजू

छान-बीन कर तीन से, सीखो कुछ तहजीब।
वश में रक्खो तीन को, नीयत-वाणी-जीभ॥
नीयत-वाणी जीभ, तीन का लाभ उठाओ।
पंडित-ज्ञानी-सन्यासी को, शीश नवाओ॥
वृद्ध-ब्राह्मण-रोगी को, संरक्षण दीजे।
मात-पिता-गुरु, इन तीनों की सेवा कीजे॥

झूठ-लोभ-अभिमान को, मत आने दो पास।
कर्म-धर्म औ' पुण्य में रखो सदा विश्वास॥
रखो सदा विश्वास, तीन से मुखड़ा मोड़ो।
आत्मप्रशंसा, हिंसा, परनिंदा को छोड़ो॥
कह 'काका', कम बोलो, कम खाओ, गम खाओ।
चोर जुआरी व्यभिचारी के पास न जाओ॥

राग-द्वेष-ईर्ष्या तजो, यदि चाहो कल्यान।
दया-क्षमा-उपकार से, आत्मा हो बलवान॥
आत्मा हो बलवान, आज्ञा मानो 'त्रय' की।
शास्त्रवचन, गुरुवचन और प्रेरणा हृदय की॥
तन-मन-धन से, जन-जन के हित में जुट जाओ।
विद्यालय-मंदिर व धर्मशाला बनवाओ॥

आभूषण सन्नारि के, विनय-शीलता-लाज।
पागल-रोगी-वैद्य पर, कभी न हो नाराज॥
कभी न हो नाराज, तीन से बचकर रहिए।
झूठ-पाप-बेईमानी, इनसे नफरत करिए॥
गर्व-गुमान-कुतर्क छोड, बनिए युगद्रष्टा।
देश 'धर्म' कर्तव्य, तीन पर रखिए निष्ठा॥

—काका हाथरसी; 1975

तेल के सोते

लगा रहे थे टकटकी, देख रहे थे बाट।
सोते-'सोते' जगाये, जय सागर सम्राट॥
जय सागर सम्राट, नवायें मस्तक तुमको।
अब नहिं आख दिखाय, विदेशी तेली हमको॥
'काका' खत्म हो गई, उनकी मोनोपोली।
आ जायें बम्बई, तेल से खेलें होली॥

—काका हाथरसी 1975

तेली को ब्याह

भोलू तेली गाव मे, करे तेल की सेल।
गली-गली फेरि करे, 'तेल लेउ जी तेल'॥
तेल लेउ जी तेल, कडकडी ऐसी बोली।
बिजुरी तडके अथवा, छूट रही हो गोली॥
कह 'काका' कवि, कछु दिन तक सन्नाटो छायो।
एक वर्ष तक तेली नही, गाव मे आयो॥

मिल्यो अचानक एक दिन, मरियल वाकी चाल।
काया ढीली-पिलपिली, पिचके दोनों गाल॥

पिचके दोनों गाल, गैल में धक्का खावें ।
तेल लेउ जी तेल, बकरिया सो मिमियावें ।।
हमने पूछी—"यह का हाल है गयौ तेरौ ।"
तेली बोल्यौ—"काका ! ब्याह है गयौ मेरौ ।।"

—काका के कहकहे : 1969

तोप का लाइसेन्स

लगा आगरा कैण्ट पर, सप्लाई का टैण्ड ।
'काका' कवि लेने गए, दस थैला सीमेण्ट ।।
दस थैला सीमेण्ट, "करा दो फाइल अर्जी" ।
हमने कहा हुजूर, "आपकी जैसी मर्जी" ।।
साढ़े पाच महीने बाद, लिफाफा आया ।
खोला—उसमे, दो थैले का परमिट पाया ।।

अगले दिन बाजार मे, मिले सेठ हरवंश ।
'काका' कवि पिस्तौल का, दिलवाओ लैसन्स ।।
दिलवाओ लैसन्स, सेठ हमने समझाए ।
दस थैला मांगें थे, तब दो थैला पाए ।।
इसी गणित को सोच-समझ कर, लम्बी हांको ।
पिस्टल चाहो तो लैसन्स, तोप का मांगो ।।

—काका कोला : 1998

त्याग और भाग

रागी बन अनुराग कर, या त्यागी बन त्याग ।
फिर भी उतना ही मिले, जितना जिसका भाग।।
जितना जिसका भाग, देखिये एक नमूना ।
पत्नी वाले है, फिर भी घर रहता सूना ।।
कह 'काका' कविराय, सुनो दादा कृपलानी ।
'वे' करती थी राज, आप भरते थे पानी ।।

—काका के कारतूस :

दंत-मंजन

दो बच्चो के साथ थे, लाला सालिगराम।
पूछा हमने प्यार से, क्या है इनके नाम?
क्या हैं इनके नाम, मुसकराये मन ही-मन।
बडा 'निरजन' कहलाता, छोटा 'दुखभजन'।
पुत्र तीसरा कल ही, जन्मा है काका जी!
उसका नाम 'दन्त-मजन', रखना लाला जी।"

—फिल्मी सरकार 1972

दवाओ का दबदबा

मूल्य बढाकर दवा का, टाइप कर दी लिस्ट।
डार-डार सरकार है, पात पात कैमिस्ट॥
पात पात कैमिस्ट, लगाया कैसा चूना।
मर जाओ या मूल्य देउ, पहले से दूना॥
कह 'काका' कवि, धन्य दवाओं के व्यापारी।
जीत गये तुम, हार गई सरकार बिचारी॥

—फिल्मी सरकार 1972

दशमलव-पद्धति

जबसे रुपये पर चढा, सौ पैसे का रग।
तब से ही 'माइड' मे, उठने लगी तरग॥
उठने लगी तरग, राज्य जब मेरा आए।
दस मिनिटो म घटा, एक पूर्ण हो जाए॥
कह 'काका', सैकिण्ड होय, दस एक मिनिट म।
परिवर्तन करवा दू, घडियो की खटखट मे॥

दस दिन का इक मास हो, दसहि मास का वर्ष।
इसी दशमलव प्रश्न पर, हो चुनाव-सघर्ष॥
हो चुनाव-सघर्ष, लगाए जय के नारे।
वेतन भोगी व्यक्ति वोट दें, मुझको सारे॥
कह 'काका', सजनी साजन के लेय बलैया।
दस दिन मे पूरी, तनखा ले आए सैंया॥

बन जाए इस युक्ति से, सोशलिस्ट सरकार।
कृपलानी औ' लोहिया, हों मुझ पर बलिहार॥
हों मुझ पर बलिहार, मत कहो 'मन-मन भावें'।
मिक्टल-विक्टल भावें, मनुआ मूड़ हिलावें॥
कह 'काका', सुन काकी खोल हृदय की तन्त्री।
कैबिनट में रक्खूंगा, केवल दस मन्त्री॥

—काका के फुलझड़ियां : 1965

दशमलव प्रणाली

बढ़ा रहा हूं देश का, उत्पादन चुपचाप।
बन बैठा दस वर्ष में, दस बच्चों का बाप॥
दस बच्चों का बाप, नित्य दस माला जपता।
महंगाई में एक एक के, दस-दस करता॥
दस सिगरिट, दस पान, चाय काफी दस प्याली।
कितनी अच्छी है 'काका', दशमलव प्रणाली॥

—काका कोला : 1968

दहेज की बारात

(ब्रजभाषा में)

जा दिन एक बरात कौ, मिल्यौ निमन्त्रण-पत्र।
फूले फूले हम फिरें, यत्र-तत्र-सर्वत्र॥
यत्र-तत्र-सर्वत्र, फरकती बोटी-बोटी।
वा दिन अच्छी नाहिं लगी, अपने घर रोटी॥
कह 'काका' कविराय, लार म्हौंडेसों टपकैं।
कर लड्डुअन की याद, जीभ स्यापिन-सी लपकैं॥

मारग में जब ह्वै गई, अपनी मोटर फेल।
दौरे स्टेशन, लई तीन बजे की रेल॥
तीन बजे की रेल, मच रही धक्कमधक्का।
द्वै मोटे गिर परे, पिच गए पतरे कक्का॥
कह 'काका' कविराय, पटक दूल्हा ने खाई।
पंडित जू रहि गए, चढ़ि गयौ ननुआ नाई॥

नीचे को करि थूथरो, ऊपर को करि पीठ।
मुरगा बनि बैठे हमहु, मिली न कोऊ सीट॥

मिली न कोऊ सीट, भीर में बनिगो भुरता।
फारि लै गयौ कोउ, हमारौ आधौ कुरता॥
कह 'काका' कविराय, परिस्थिति विकट हमारी।
पंडित जी रहि गए, उन्हीं पै 'टिकस' हमारी॥

फक्क-फक्क गाड़ी चलै, धक्क-धक्क जिय होय।
एक पन्हैया रहि गई, एक गई कहुँ खोय॥
एक गई कहुँ खोय, तबहिं घुस आयौ टी-टी।
माँगन लाग्यौ टिकस, रेल ने मारी सीटी॥
कह 'काका' समझायौ, पर नहिं मान्यौ भैया।
छीन लै गयौ, तेरह आना तीन रुपैया॥

जनमासे में मचि रह्यौ, ठंडाई कौ सोर।
मिर्च और सक्कर दई, सपरेटा में घोर॥
सपरेटा में घोर, बराती करते हुल्लड़।
स्वाद-स्वाद में खेंचि गए, हम बारह कुल्लहड़॥
कह 'काका' कविराय, पेट है गयौ नगाड़ौ।
निकरौसी के समय हमें, चढ़ि आयौ जाड़ौ॥

बेटा वारे ने कही, यही हमारी टेक।
दरबज्जे पै लै लऊ, नगद पांच सौ एक॥
नगद पांच सौ एक, परेंगी तब ही भांवर।
दूल्हा करिदौ बन्द, दई भीतर सौं साँकर॥
कह 'काका' कवि, समधी डोलें रूसे-रूसे।
अर्ध रात्रि है गई, पेट में कूदें मूसे॥

बेटी वारे ने बहुत, जोरे उनके हाथ।
पर बेटा के बाप ने, सुनी न कोऊ बात॥
सुनी न कोऊ बात, बराती डोलें भूखे।
पूरी-लड्डुआ छोड़, चना हू मिले न सूखे॥
कह 'काका' कविराय, जान आफत में आई।
'जम की भैन बरात', कहावत ठीक बनाई॥

समधी-समधी लड़ि परे, तै न भई कुछ बात।
चले घरात-बरात में, थप्पड़-घूसा-लात॥

धप्पड़-घूसा-लात, तमासो देखें नारी।
देख जग को दृश्य, कपकपी बधी हमारी।।
कह 'काका' कवि, बाध बिस्तरा भाजे घर को।
पीछे सब चल दिए, सग मे लैकें वर को।।

मार भातई पै परी, बनिगो वाको भात।
बिना बहू के गाम को, आई लौट बरात।।
आई लौट बरात, परि गयो फन्दा भारी।
दरवज्जे पै खड़ी, बरातिन की घर वारी।।
कह 'काका' ललकार, लौटिकें वापिस जाओ।
बिना बहू के घर मे, कोऊ घुसन न पाओ।।

हाथ जोरि मागी छमा, नीचो करिकें मोछ।
काकी ने पुचकारिकें, आसू दीने पोछ।।
आसू दीने पोछ, कसम बाबा की खाई।
जब तक, जीउ, बरात न जाऊ रामदुहाई।।
कह 'काका' कविराय, अर ओ बेटा बारे।
अब तो दै दै, टी टी बारे दाम हमारे।।

—काका की फुलझड़ियां 1965

दाढ़ी और दाम्पत्य

दाढ़ी औ' दाम्पत्य को, जदपि एक ही रास।
तदपि दिखे दोऊन म, प्रबल विरोधाभास।।
प्रबल विरोधाभास, बढ़े जब दाढ़ी आगे।
भय के मारे दाम्पत्य, पीछे को भागे।।
कह 'काका' कवि, काकी यो कहि गई कान मे।
द्वै तलवारें नाहिं रहि सकें, एक म्यान मे।।

रूप, जवानी, इश्क का, उतर जाय जब ज्वार।
तब दाढ़ी ही कर सके, भवसागर से पार।।
भवसागर से पार, नायिका मागे साड़ी।
बोलो मत, मुह खोलो नही, हिला दो दाढ़ी।।
कह 'काका' कवि, मब व्याधा भागेगी ऐसे।
काश्मीर से भागें, पाक लुटेरे जैसे।।

—काका के कहकहे : 1966

दाढ़ी-दर्शन

राष्ट्रपति पद के लिए, लड़ने लगे चुनाव।
ज़ाकिर जी विजयी हुए, हारे सुब्बाराव॥
हारे सुब्बाराव, विरोधी दल थर्राया।
हार-जीत कर कारण क्या है ? पता लगाया॥
'काका' ने मन्थन का, तथ्य निकाला आखिर।
दाढ़ी के कारण ही जीते, डाक्टर ज़ाकिर॥

दाढ़ी रखने मे मिला, ऋषि-मुनियो को मान।
हे ससद के सदस्यो ! दाढ़ी पर दो ध्यान॥
दाढ़ी पर दो ध्यान, एक कानून बना दो।
राजनीति मे दाढ़ी, कम्पलसरी करा दो॥
आगामी एलेक्शन म, गुल नये खिलेंगे।
केवल दाढ़ी वालो को ही, टिकिट मिलेंगे॥

दाढ़ी वाले राष्ट्रपति, दाढ़ी वाली फौज।
काका बनें कमाण्डर, तब आयेगी मौज॥
तब आयेगी मौज, टैंक पर चढ के घूमें।
सैनिक सबको प्यार करें, दाढ़ी को चूमें॥
कह 'काका' सब, दाढ़ी वाले मत्री होगे।
दाढ़ी वाले अफसर क्लर्क व सत्री होगे॥

—काका की कॉकटेल : 1973

दाढ़ी-महिमा

'काका' दाढ़ी राखिए, बिन दाढ़ी मुख सून।
ज्यो मसूरी के बिना व्यर्थ देहरादून॥
व्यर्थ देहरादून, इसीसे नर की शोभा।
दाढ़ी से ही प्रगति कर गए, सन्त विनोबा॥
मुनि वसिष्ठ यदि दाढ़ी, मुह पर नही रखाते।
तो भगवान राम के, क्या वे गुरु बन जाते ?

शेक्सपियर, बर्नार्ड शा, टालसटाय, टैगोर।
लेनिन, लिंकन बन गए, जनता के सिरमौर॥
जनता के सिरमौर, यही निष्कर्ष निकाला।
दाढ़ी थी, इसलिए, महाकवि हुए 'निराला'॥

कह 'काका', नारी सुन्दर लगती साड़ी से।
उसी भांति नर की, शोभा होती दाढ़ी से॥

कोई दाढ़ी छीलते, शुक्र-बुद्ध-इतवार।
कोई नित-प्रति खुरचते, दिन में दो-दो बार॥
दिन में दो-दो बार, ब्लेड की शामत आती।
नष्ट होय इस्पात, विदेशी मुद्रा जाती॥
कह 'काका' कवि और नहीं, कम-से-कम तब तक।
दाढ़ी रख लो, राष्ट्रीय संकट है जब तक॥

—काका की फुलझड़ियां : 1965

दादा छात्र

पढ़ना लिखना है मना, बनो डेंजर मैन।
रक्खो पाकिट में छुरा, छोड़ पैन्सिल-पैन॥
छोड़ पैन्सिल पैन, छात्र वह ही है लायक।
जो इल्मी से अच्छा समझे, फिल्मी गायक॥
मारधाड़ वाली फिल्मों से, सबक लीजिए।
'दादा' बनकर खानदान को, धन्य कीजिए॥

—फिल्मी सरकार : 1972

दान-दर्शन

दानवीर जी से हुई, प्रथम जान-पहचान।
इनके ड्राइंग रूम में, बारह रोशनदान॥
बारह रोशनदान, खानदानी हैं दानी।
घर में दो चूहेदानी, दस मच्छरदानी॥
पानदान हैं, पीकदान हैं, पायदान हैं।
साबुनदान, रायतेदान हैं, इत्रदान हैं॥

स्वर्णदान, भूदान या अन्नदान, श्रमदान।
इन दोनों को जो करें, वह दानी नादान॥
वह दानी नादान, दान के समझो माने।
प्रेमचन्द वाला 'गोदान', रखो सिरहाने॥

सभा मंच पर वाग्दान कर, चमको भू पर।
धूपदान, गुलदान रखो, टेबिल के ऊपर॥

धरती पर सोये पिता, फटा चादरा तान।
तेरहवीं पर कर रहे, बेटा शय्यादान॥
बेटा शय्यादान, न विद्यादान सुहाया।
रक्तदान का नाम सुना, जाड़ा चढ़ आया॥
कह 'काका' कवि, कदरदान बन बूढ़े दानी।
काम बुढ़ापे में, देती है कूड़ेदानी॥

कुछ दिन को यदि, कोयले का रुक जाय लदान।
ऊधम मचे खदान में, मारें कुली कुदान॥
मारें कुली कुदान, दान, का मान कीजिए।
सिगरट-बीड़ी पी कर, धूआ दान कीजिए॥
कह 'काका' कल देखा ऐसा सपना प्यारा।
जलेबियों से, तुलादान हो रहा हमारा॥

भक्तों को वरदान प्रिय, वर को कन्यादान।
पिंडदान मृत आत्मा, नेता को मतदान॥
नेता को मतदान, हमें प्रतिदान चाहिए।
घोड़ा, और खिलाड़ी को, मैदान चाहिए॥
देवी जी को दीवाली पर दीपदान प्रिय।
बाबू कलमदान, बीबी सिंगारदान प्रिय॥

और अनेकों दान हैं, कब तक करें बखान।
सब दानों में श्रेष्ठ है, अमरीकन अनुदान॥
अमरीकन अनुदान, दनादन दान लीजिए।
खुल कर सांस्कृतिक, आदान-प्रदान कीजिए॥
काकी को प्रिय सुरमादान, कटोरदान है।
'काका' का अपना उद्देश्य, बटोरदान है॥

—काका के धड़ाके : 1969

दार्शनिक दलबदलू

आये जब दल बदल कर, नेता नन्दूलाल।
पत्रकार करने लगे, ऊल-जलूल सवाल॥
ऊल-जलूल सवाल, आपने की दल-बदली।
राजनीति क्या नहीं, हो रही इससे गदली?
नेता बोले—व्यर्थ समय, मत नष्ट कीजिये।
जो बयान हम दें, ज्यों का त्यों छाप दीजिये॥

समझे नेता नीति को, मिला न ऐसा पात्र।
मुझे जानने के लिए, पढ़िए दर्शन-शास्त्र॥
पढ़िये दर्शन-शास्त्र, चराचर जितने प्राणी।
उनमें, मैं हू, वे मुझमें, ज्ञानी-अज्ञानी॥
मैं मशीन म, मैं श्रमिक, मैं ही मिल-मालिक।
मैं ही ससद, मैं ही मन्त्री, मैं ही माइक॥

हर रग के लैंस का, चश्मा लिया चढ़ाय।
सूखा और अकाल म, 'हरी क्रान्ति' हो जाय॥
हरी क्रान्ति हो जाय, भावना होगी जैसी।
उस प्राणी को प्रभु मूरत, दीखेगी वैसी॥
भेद-भाव ये हमें नहीं, भावें हथकण्डे।
अपने लिए समान, सभी धर्मों के झडे॥

सत्य और सिद्धान्त म, क्या रक्खा है तात?
उधर लुढक जाओ जिधर, देखो भरी परात॥
देखो भरी परात, अर्थ मे रक्खे निष्ठा।
कर्त्तव्यों से ऊंचे हैं, पद और प्रतिष्ठा॥
जो दल हुआ पुराना, उसको बदलो साथी।
दल की दलदल में, फसकर मर जाता हाथी॥

—फिल्मी सरकार : 1972

दिल की बीमारी

मारा चिमटा खींचकर, कर घूंघट की ओट।
उनका जम्पर बच गया, फटा हमारा कोट॥
फटा हमारा कोट, चोट का स्वाद निराला।
इसको जाने वही, पड़ा हो जिसको पाला॥
कह 'काका' कविराय, मिले जो ऐसी नारी।
बिना दवा के दूर होय, दिल की बीमारी॥

—पिल्ला : 1950

दिल्ली-दर्शन

'काका' कवि दिल्ली चले, होकर के टिपटाप।
स्टेशन पर आ गई, काकी जी चुपचाप॥
काकी जी चुपचाप, हो गई धोती ढिल्ली।
कहने लगी—हम भी साथ चलेंगी दिल्ली॥
आप घूमते फिरो, नहीं ले जाते हमको।
अर्द्धांगिनि हूं, शर्म नहीं आती है तुमको?

सम्मेलन में जा रहे, इसमें कैसी शर्म।
बिना बात समझे-सुने, हो जाती हो गर्म॥
हो जाती हो गर्म, अकारण ही लड़ती हो।
स्टेशन पर आकर, बलात्कार करती हो॥
हम कवि हैं, इसलिए निमन्त्रण हम पर आते।
कवयित्री होती, तो तुमको भी बुलवाते॥

तुमसे ज्यादा पढ़ी हूं, मुझको रहे पढ़ाय।
जो कवि की पत्नी वही, कवयित्री कहलाय॥
कवयित्री कहलाय, ब्याह जिसका हो जाता।
'ब्याहकरण' का ज्ञान, उसे खुद ही हो जाता॥
उल्टी-सीधी तुकबन्दी, करते रहते हो।
बूढ़ेपन में 'लिंग-भेद', गाते फिरते हो॥

इसका उत्तर देंय क्या? गए तर्क में हार।
दिल्ली ले आए उन्हें, काका कवि झक मार॥

'काका' कवि झक मार, चढ़े दोनों टैक्सी पर।
चलो 'चाँदनी चौक', छोड दो 'घटाघर' पर॥
काकी बोली—दिल्ली भी क्या अजब शहर है।
कहा चाँदनी, कहा यहा पर घंटाघर है?

उनका मूड बिगड गया, हुआ चित्त को क्लेश।
तब हम उनको ले गए, 'भागीरथ पैलेस'॥
भागीरथी पैलेस, शुद्ध हो जाए काया।
किन्तु वहा देखी बिल्कुल, उल्टी ही माया॥
बांये बाजू, फिल्मी मजनू अडे हुए थे।
दांये लघुशका को, क्यू मे खड़े हुए थे॥

नगर निगम की बुद्धि पर, आया हमको तर्स।
अब तक 'नया बाजार' है, जिसे हुए सौ वर्ष॥
जिसे हुए सौ वर्ष, किस हवा मे बहते हैं।
बहुत पुरानी, उसको 'नई सडक' कहते है॥
फतेपुरी पर ही 'खारी बावडी' बतलाई।
खारी-मीठी कोई भी, बावड़ी न पाई॥

'नया बांस' मे भी गए, मिला न कोई बास।
'धरमपुरा' मे पहुचकर, लेने लगे उसांस॥
लेने लगे उसांस, धरम का पता न पाया।
पापचन्द का बाप, वहां पर बैठा पाया॥
कह 'काका' कविराय 'हौजकाजी' पर आए।
न तो वहां पर हौज, न काजी साहब पाए॥

पाती लेकर हाथ में, घूम रहे कुछ शख्स।
'कूचा पातीराम' मे, मिला न लैटर बक्स॥
मिला न लैटर बक्स, व्यर्थ का हल्ला करते।
एक अशर्फी नही, 'अशर्फी कटरा' कहते॥
गए 'दरीबा' किन्तु, वहां पर दरी न पाई।
पूड़ी और जलेबी, बेच रहे हलवाई॥

फिर 'कूचा चेलान' मे, देखे व्यक्ति अनेक।
सभी गुरु घंटाल थे, चेला मिला न एक॥

चेला मिला न एक, निराशा लेकर आए।
'हाथी खाना' गए, वहां पर गदहे पाए ॥
कह 'काका', जो मन में आया, नाम रख दिया।
कहते 'दरियागंज', कहां है उसमें दरिया ?

'गली समोसा' में गए, करने को जलपान।
वहां समोसे भी नहीं, कोई भी दूकान ॥
कोई भी दूकान, बढ़ाई आगे गाड़ी।
नहीं 'पहाड़गंज' में, एक पहाड़ पहाड़ी ॥
है 'झंडेवालान', न पाया कोई झंडा।
'शक्तिनगर' आकर सब, जोश हो गया ठंडा ॥

'सीताराम' बाजार में, सीता मिली न राम।
'नाईवाड़े' में नहीं, नजर पड़ा हज्जाम ॥
नजर पड़ा हज्जाम, यहां भी धोखा खाया।
'किशनगंज' में गए, कंस से हाथ मिलाया ॥
कह 'काका' कविराय, नाम सब निकले जाली।
'मालीवाड़ा' गए, न पाया कोई माली ॥

'दिल्ली-गाइड' देख कर, आया हमको ध्यान।
टैक्सीवाले से कहा — चल 'चूड़ीवालान' ॥
चल चूड़ीवालान, बात काकी के मन की।
संभव है चूड़ी मिल जाए, न्यू फैशन की ॥
कह 'काका' कवि, सभी मुहल्ला देखा-भाला।
न तो चूड़ियां मिली, न कोई चूड़ीवाला ॥

उसे छोड़कर हम गए, जब 'बल्लीमारान'।
एक नहीं देखी वहां, बल्ली की दूकान ॥
बल्ली की दूकान, व्यर्थ का शोर मचाया।
'छीपीवाड़े' में न एक भी, छीपी पाया ॥
'जोगीवाड़ा' गए, नहीं था कोई जोगी।
और 'वैदवाड़ा' में, वैद मिले ना रोगी ॥

छोड़ वैदवाड़ा चले, काका 'कटरानील'।
न तो वहां अंगद मिले, और न पाए नील ॥

और न पाए नील, वहां देखे हलवाई।
'कुतुब-रोड' पर घूमे, लेकिन कुतुब न पाई॥
और विरोधाभास, एक हम तुम्हें बताएं।
'प्रेम नगर' के नल पर, लड़ती हैं महिलाएं॥

टैक्सी वाले के अभी, नहीं चुकाए दाम।
'शादीपुर' हम जायगे, बहुत जरूरी काम॥
बहुत जरूरी काम, मिटे मसूबे सारे।
यहा अधिकतर पाए, रडुआ और कुवारे॥
फिर भी हमने, साहस करके पूछा इतना।
यदि हम शादी करें, खर्च आएगा कितना?

यह सुन करके हो गई, श्रीमती जी लाल।
दाढ़ी की लज्जा करो, कुछ तो करो ख्याल॥
कुछ तो करो ख्याल, यहा आकर पछताई।
अब दिल्ली आऊ तो, मुझको राम दुहाई॥
हमने मुट्ठी बाध कहा लो 'टिलिलिलि लिल्ली'
'काका' को धमकाकर, और देख लो दिल्ली।

—काका कोला : 1968

दुतरफा दृष्टिकोण

कार मिली ससुराल से, न्यू माडल डीलैक्स।
पहिले दिन ही हो गया, हैवी एक्सीडेन्ट॥
हैवी एक्सीडेन्ट, उसे वापिस दे आए।
बदले मे इक फर्स्टक्लास, गदहा ले आए॥
'काका', पूछ पकड, उसपर उल्टे बैठेंगे।
आगे वह देखेगा, पीछे हम देखेंगे॥

—काका के कहकहे 1966

दो-तिहाई बहुमत

इन्दिरा जी की जीत पर, 'काका' कवि गमगीन।
जिस घर मे हम रह रहे, कमरे उसमे तीन॥
कमरे उसमे तीन, कहा काकी से हमने।
दो कमरो म लहगे, टाग रखे क्यो तुमने?
बोली—घर मे हिस्सा, केवल एक तुम्हारा।
शेष 'दो-तिहाई' पर है अधिकार हमारा॥

—फिल्मी सरकार 1972

दो प्रश्न

बोले हमसे एक दिन, पडित पन्नालाल।
मर्दों के सिर पर से, क्यो उड जाते बाल ?
क्यो उड जाते बाल, प्रश्न यह तुमसे पूछँ।
महिलाओ मे क्यो न, उपजती दाढी - मूछँ ?
कह 'काका' कवि, अक्कल के घोडे दौडाये।
तब दोनो प्रश्नो के, उत्तर आगे आये ॥

काया के जिस भाग से, लेते ज्यादा काम।
बाल नही जमते वहा, बजर होता चाम ॥
बजर होता चाम, बुद्धि पर जोर लगाते।
उन पुरुषो के सिर के बाल शीघ्र उड जाते ॥
कह 'काका,' देवी जी, दिन भर गप्प लडाती।
इसीलिये तो, दाढी - मूछ नही उग पाती ॥

पढास

काकी बोली रात्रि को, होकर कुछ नाराज।
भन्न-भन्न मच्छर करें, क्या है इसका राज ?
क्या है इसका राज ? बुद्धि पर जोर लगाया।
किन्तु समझ मे भेद नही, रत्ती भर आया ॥
कह 'काका' कविराय, गय हम भागे-भागे।
प्रश्न रख दिया, लालबुझक्कड जी के आगे ॥

लाल बुझक्कड उवाच

कवि-सम्मेलन म नही, जिनकी मिटे पढास।
काका ! ऐसे कवि रहें, व्याकुल चित्त उदास ॥
व्याकुल चित्त उदास, कल्पना ऊची लाते।
किन्तु मच पर आते, तभी 'हूट' हो जाते ॥
पुनर्जन्म मे प्राप्त हुई, मच्छर की काया।
सुना रहे निज काव्य, प्रभू की अद्भुत माया ॥

—काका के कारतूस • 1963

धक्काशाही

धक्काशाही चल रही, करिये जै जै कार।
जो धक्के बलवान हैं, उनकी है सरकार ।।
उनकी है सरकार, चीर कर भीड भडक्का।
धक्कमधक्का करके, आगे पहुचो कक्का ।।
नेता की बैटरी, कही डिस्चार्ज हो गई।
मारे धक्का चार, कार स्टार्ट हो गई।।

धक्कों से घबरा गया, डूबी उसकी नाव।
जितने धक्के दीजिये, उतना बढे प्रभाव ।।
उतना बढे प्रभाव, कभी हिम्मत मत हारो।
पीछे से आये धक्का, तुम आगे मारो।।
पक्का होता हार्ट, आर्ट जिसको यह आता।
धक्के खाकर 'जीरो' से, 'हीरो' बन जाता ।।

—फिल्मी सरकार 1972

धन्य अपोलो !

पार्वती कहने लगी, सुनिए भोलेनाथ !
अब अच्छा लगता नही, 'चन्द्र' आपके माथ ।।
चन्द्र आपके माथ, दया हमको आती है।
बुद्धि आपकी तभी, 'ठस्स' होती जाती है ।।
धन्य अपोलो ! तुमने, पोल खोलकर धर दी।
काकी जी ने 'करवाचौथ', कैंसिल कर दी ।।

—काका के धड़ाके 1969

धमधूसर कव्वाल

मेरठ में हमको मिले, धमधूसर कव्वाल।
तरबूजे-सी खोपडी, खरबूजे-से गाल ।।
खरबूजे-से गाल, देह हाथी-सी पाई।
लम्बाई से ज्यादा थी, उसकी चौडाई ।।
बस से उतरे, इक्के के अड्डे पर आये।
दर्शन करके, घोडे ने आंसू टपकाये ।।

रिक्शे वाले डर गये, डीलडौल को देख।
साहस कर आगे बढ़ा, ताँगे वाला एक॥
ताँगे वाला एक, चार रुपय मैं लूँगा।
दो फेरे करके हुजूर को पहुँचा दूँगा॥
ठेले वाला बोला—क्यों बे ताँगे वाले।
मेरे गाहक को तू, तोड़ रहा है साले?

इतने में ही आ गई, संयोजक की कार।
'एलीफैंटा' मे मिला, कमरा नम्बर चार॥
कमरा नम्बर चार, तुरत धोबी बुलवाया।
कुरता-पाजामा, उसके आगे खिसकाया॥
धोबी चौंका, जी! यह काम न बस का मेरे।
और किसीस, धुलवइयो य तम्बू-डेरे॥

पहुँचे दिल्ली जंक्शन, तब यह हुआ खयाल।
कर लें तोल मशीन पर, दस का सिक्का डाल॥
दस का सिक्का डाल, टिकट बाहर को आई।
हमने पूछा—क्या लिखा है, इसमें भाई?
कहने लगे कि 'काका' साब आप ही पढ़िये।
'कृपया चार आदमी एक साथ मत चढ़िये॥'

—काका के धड़ाके 196

धर्माष्टक

दुख दे रही सवर्ण को, अपनी ही करतूत।
दृश्य देख पछता रहा, छूआछूत का भूत॥
छूआछूत का भूत, धर्म की डगमग नैया।
बड़े मियाँ बन गये, पुराने हरिजन भैया॥
कल तक नफरत करके, दूर भागने वाले।
चाय पिलाकर आज, धो रहे उनके प्याले॥
टूट रही हिन्दू जनसंख्या, इसे बचाओ।
हरि प्रसन्न होंगे, हरिजन को गले लगाओ॥

(1981)

धार्मिक शंका

पति हैं उनके विष्णु जी, धार्मिक अपना देश।
लक्ष्मी जी की मगन में, क्यों अड़ रहे गणेश?
क्यों अड़ रहे गणेश, करें पूजन नर - नारी।
गणपति बप्पा कर दें, शंका दूर हमारी॥
विष्णुप्रिया के साथ, आप क्या चिपक रहे हैं।
खील-बताशे तजकर, लड्डू गपक रहे हैं॥

(1981)

नई दिल्ली में नया वर्ष

नये साल के नये दिन, न्यू दिल्ली के बीच।
बादल बरसे हुस्न के, हुई इश्क की कीच॥
हुई इश्क की कीच, नई लाइट के छैला।
नये - नये मजनू थे, नई - नई थी लैला॥
नये दुपट्टे, नई साड़िया, नई चोलिया।
नई - नई बन्दूकों में थीं, नई गोलिया॥

नाच - घरों में घुस गए, मिला डांस का चांस।
कुश्ती लड़ने लग गए सैक्स और रोमांस॥
सैक्स और रोमांस, बोतलें गटक रहे थे।
प्रेमी - प्रेयसि झूम - झूम कर, मटक रहे थे॥
'फ्री स्टायल' प्यार चल रहा, आजू - बाजू।
मिस मिसमिस के साथ, नाचते मिस्टर काजू॥

आगे का किस्सा सुनो, भैया भोंपूचन्द।
अर्ध रात्रि बारह बजे, बिजली कर दी बन्द॥
बिजली कर दी बन्द, सैक्स का क्लाइमैक्स था।
एक पैग पर अधिक नहीं, दस रुपे टैक्स था॥
उस दिन हमने, 'इंगलिश कल्चर' देखी ऐसी।
लन्दन और पैरिस की, कर दी ऐसी - तैसी॥

'नाइट क्लब' में नाच कर, निकली मिस अमचूर।
कामी कुत्ते गेट पर, खड़े नशे में चूर॥

खड़े नशे मे चूर, फाड़ दी चोली-साड़ी।
हम उनसे क्या कहें, नोच ले जाते दाढी॥
भय के आगे लज्जा, घुटने टेक रही थी।
सीना ताने पुलिस, तमाशा देख रही थी॥

—काका कोला 1968

नई फैशन

न्यू फैशन की लूट है, लूट सके तो लूट।
अन्तकाल पछतायगा, प्राण जायगे छूट॥
प्राण जायगे छूट, धूल अक्कल की झाडो।
तग सिलाओ सूट, पुराने फेंको फाडो॥
कह 'काका', फशन-सरिता म बहना सीखो।
पूण नही तो अर्धनग्न हो, रहना सीखो॥

कुर्ती चिपकी बदन से, चुस्त हुई सलवार।
पेट पजामा रो पडे, लहगा खाय पछार॥
लहगा खाय पछार, सिसकते साडी-जम्पर।
कुढकर कहे कमीज, मुसीबत आई हम पर॥
'काका' बूढी चुनरी, चादर-चोली बोली।
अब जब जीना बेकार, मार दो हमको गोली॥

तग चुस्त परिधान पर, क्यो सिकोडते नाक।
चल निकली इगलैंड म, 'टापलैस' पोशाक॥
टाप-लैस पोशाक, देखिए इसको साहब।
अग्रभाग आवरण हो गया बिल्कुल गायब॥
कह काका', यह कलियुग जी का चमत्कार है।
हे पाश्चात्य सुन्दरी ! तुमको नमस्कार है॥

—काका की फुलझड़ियां 1965

नई समस्या

स्वर्ण नियन्त्रण रोग से पीडित हुए सुनार।
बिना मौत मरने लगे, तब जागी सरकार॥
तब जागी सरकार किया सशोधन ऐसा।
चला झूठ का ऊट, सत्य का बैठा भैसा॥

कह 'काका' वे पूछें, गोल्ड कहा से लाए।
कह दो, गहने ऑल्ड बहू जी ने गलवाए॥

स्वर्णकार के वास्ते, मार्ग हो गया साफ।
चक्रव्यूह मे फस गये, ज्वेलर और सराफ॥
ज्वेलर और सराफ, सभी अरमान ढह गए।
जेवर रेडीमेड, धरे-के-धरे रह गये॥
कह 'काका' कवि, बतलाओ मिस्टर खरदूषण।
कैसे बेचें, चौदह कैरट के आभूषण?

—काका के कारतूस · 1963

नई सरकार

रामराज मे घुस गये, कामराज म्हाराज।
इसीलिए तो हिन्द में, हुआ जनाना राज॥
हुआ जनाना राज, भाग्य नारी के जागे।
दाढी-मूछें करें, दडवत उनके आगे॥
कह 'काका', यदि नाक बचाना चाहो लाला।
छोड कृष्ण का नाम, जपो राधा की माला॥

यू०पी० मे भी, केन्द्र मे, त्रिया-राज सरकार।
पाजामा सिलवा लिया, हमने चूडीदार॥
हमने चूडीदार, भले ही समझें ढोगी।
किन्तु चूडिया देख, प्रभावित कुछ तो होगी॥
सम्भव है कोई ऊचा-सा, पद मिल जाये।
इसी बहाने किस्मत का, फाटक खुल जाये॥

इस चुनाव - परिणाम की, सुनी रेडियो न्यूज।
तभी हमारे हृदय का, बल्ब हो गया फ्यूज॥
बल्ब हो गया फ्यूज, पुरुष नारी से हारे।
काप गये सब, पत्नी - पीडित पति बेचारे॥
कह 'काका' कविराय, उछल कर बोली काकी।
राज करें हम, काका पीसो घर मे चाकी॥

बडी भयानक खबर है, बाबू बालमुकुन्द।
मर्दों की सब छुट्टिया, हो जायेंगी बन्द॥

हो जायेंगी बन्द, बात मत समझो झुट्टी।
सिर्फ जनाने त्योहारो की, होगी छुट्टी॥
रक्षाबन्धन, करवा चौथ, तीज हरियाली।
अथवा जिस दिन व्रत राखें, देवी घरवाली॥

बोले घासीराम से, पंडित रामचरित्र।
इस चुनाव की प्रतिक्रिया, हम पर हुई विचित्र॥
हम पर हुई विचित्र, भेद क्यो मन का खोलें।
जो डालेगा घास हमें, उसकी जय बोलें॥
स्वर्णकार से बोले, एक पियक्कड भाई।
हम दोनो की किस्मत से, हारे देसाई॥

दिल्ली से जब लखनऊ, नेता हुए रिटर्न।
बोले यू० पी० बन गया, अब सिस्टर कन्सर्न॥
अब सिस्टर कन्सर्न, सुनहरी अवसर आया।
बहुत समय के बाद, भाग्य ने पलटा खाया॥
भगवन! जन्मपत्र मे, मारो ऐसी ठोकर।
'काका' भी घुस जाय, केन्द्र मे मन्त्री होकर॥

—काका के कहकहे : 1966

नया बजट

मध्यम वर्ग बजा रहा, ढोलक-झाझ मृदग।
बचत-योजना की प्रभो, काटी खूब पतग॥
काटी खूब पतग, तग इसने कर डाला।
करते-करते जमा, हुआ 'आउट' देवाला॥
'काका', अब क्यो पाच वर्ष की देर लगाओ।
जमा हमारी रकम, शीघ्र वापिस करवाओ॥

बोले छाती पीटकर, तोदल धन्ना सेठ।
हाय! मृत्यु-कर का बढ़ा, नये बजट मे रेट॥
नये बजट मे रेट, वित्तमन्त्री बेदरदी।
क्षमा छोडकर जमा-योजना, हम पर धर दी॥
'काका', कोई अनुष्ठान ऐसा बतलाए।
मरें नही हम कभी, मृत्यु-कर से बच जाए॥

इसी बजट का जब लिया, प्रोड्यूसर ने स्वाद।
बोला कुर्सी से उछल, टी० टी० जिन्दाबाद।।
टी० टी० जिन्दाबाद, बढ़ी नेहरू की ब्यूटी।
क्योंकि घट गई फिल्मों पर, एक्साइज ड्यूटी।।
कह 'काका' कवि, स्वार्थ भावना जिसकी जैसी।
उसे दिखाई पड़ी बजट की सूरत वैसी।।

—काका की फुलझड़ियां 1965

नटवरलाल

धन्य श्रीमती पुलिस जी, धन्य धन्य सरकार।
हुए आठवीं बार फिर, नटवरलाल फरार।।
नटवरलाल फरार, बात सुनते थे ऐसी।
कहीं नहीं है पुलिस, चतुर बम्बई की जैसी।।
मुक्त उपत अभियुक्त, कर रहा उल्टा दावा।
क्या समझा है मुझे, पुलिस का हूं मैं बाबा।।

—काका के कारतूस, 1963

नरकपालिका

पार्टीबन्दी हो जहां, घुसे अखाड़ेबाज।
मक्खी, मच्छर, गन्दगी, का रहता हो राज।।
का रहता हो राज, सड़क हो टूटी फूटी।
नगरपिता मदमस्त, छानते रहते बूटी।।
कह 'काका' कविराय, नहीं वह 'नगरपालिका'।
बोर्ड लगा दो उसके ऊपर, 'नरकपालिका'।।

—काका फुलझड़ियां 1965

नव रस-निरूपण

लाल-मिर्च में 'करुण' रस का, रहता भंडार।
रसगुल्लों में रम रहे, 'शान्त' और 'शृंगार'।।
शान्त और शृंगार, तनिक जिह्वा पर रख लो।
पिपरमेण्ट में 'अद्‌भुत' रस के, दर्शन कर लो।।
कह 'काका' कविराय, झांक दिल की खिड़की से।
टपके रस 'वीभत्स', प्रेयसी की झिड़की से।।

डूब 'वीर' रस मे चले, मजनूं के अवतार।
लगे सडक पर फेंकने, फिल्मी प्रेम-फुहार॥
फिल्मी प्रेम-फुहार, उपाय न देखा दूजा।
चप्पल लेकर देवी जी ने, कर दी पूजा॥
कह 'काका' कवि, दृश्य एक, रस तीन सुहाए।
'रौद्र,' 'भयानक' और 'हास्य' रस सन्मुख आए॥

—काका की फुलझड़ियां · 1965

नवाबी सनक

थर्ड क्लास मे मिले दो, सैकिडहैंड नवाब।
दिखा रहे यात्रियो को, शेखी-शान रुआब॥
शेखी-शान-रुआब, एक अमरूद ले लिया।
विक्रेता को पाच रुपे का, नोट दे दिया॥
कह 'काका' अब जोश, दूसरे को भी आया।
एक सन्तरा लिया, नोट दस का पकडाया॥

शहर लखनऊ आ गया, उतरे वहा जनाब।
कुली-कुली चिल्ला रहे, बिना माल-असबाब॥
बिना माल-असबाब, दो कुली आये भागे।
लेकिन कुछ सामान नही था, उनके आगे॥
बोला एक नवाब, हमारी छडी ले चलो।
कहा दूसरे ने—लो तुम यह 'टिकिट' ले चलो॥

—फिल्मी सरकार · 1972

नागपुर-नीति

'महाराष्ट्र' दर्शन किए, धन्य हमारे भाग।
देखा सारा 'नागपुर', मिला न कोई नाग॥
मिला न कोई नाग, और भी धोखा खाया।
'धर्मपेठ' मे गए, धर्म का चिह्न न पाया॥
कह 'काका' कवि, 'हसापुरी' घूमकर आए।
हस एक भी नही, वहा पर कौए पाए॥

'रामनगर' देखा सभी, मिले न हमको राम।
'सीतावर्डी' मे भला, सीता का क्या काम?

सीता का क्या काम, हुई दिल को हैरानी।
'गांधी-सागर' में बहता है, गंदा पानी।
काम-कला के ज्ञानी, डुबकी लगा रहे हैं॥
उसे मुहल्ला, 'गंगा-जमुना' बता रहे हैं॥

सोचा 'नेहरू-पार्क' में, होगा कोई बाग।
कीचड़-कचरा देखकर, फटी हमारी नाक॥
फटी हमारी नाक, नाम यह रखने वाले।
'नागनदी' में बहा रहे हैं, गंदे नाले॥
'काका' इससे भी ज्यादा, यह हमें खेद था।
कहते 'पीलीनदी', किन्तु पानी सफेद था॥

'काका' बो क्यों व्यर्थ ही, बहकाते हो यार।
कहते 'प्ले ग्राउण्ड' को, तुम 'मीना बाजार'॥
तुम मीना बाजार कि 'रेशम बाग' दिखाया।
न तो वहां पर बाग, न बिलकुल रेशम पाया।
पहुंचे 'गांजा खेत', न उगता देखा गांजा।
कहते जिसको 'महल', वहां 'भूतिया दरवाजा'॥

और जगह कुछ रह गई, जो हैं इम्पोर्टेण्ट।
'लकडे का पुल' कह रहे, वहां लगा सीमेण्ट॥
वहां लगा सीमेण्ट, झूठ को मस्तक टेका।
गए 'नवाबपुरा', पर एक नवाब न देखा॥
'काका,' मिला न कोई, कर्नल आते-जाते।
तांगेवाले उसको, 'कर्नल बाग' बताते॥

साहस कर आगे बढ़े, जागें अपने भाग।
मोती लेने के लिए, पहुंचे 'मोतीबाग'॥
पहुंचे मोतीबाग, कोयले पड़े हुए थे।
वर्कशाप के भूत, वहां पर खड़े हुए थे॥
धन्य नागपुर नगरी, उल्टी-सुल्टी दिखती।
है 'काटन मार्केट' वहां, पर सब्जी बिकती॥

—काका कोला। 1968

नाम बड़े, दर्शन छोटे

नाम रूप के भेद पर, कभी किया है गौर ?
नाम मिला कुछ और तो, शक्ल-अक्ल कुछ और ॥
शक्ल-अक्ल कुछ और, 'नैनसुख' देखे काने।
बाबू 'सुन्दरलाल', बनाए ऐंचकताने ॥
कह 'काका' कवि, 'दयाराम' जी मारें मच्छर।
'विद्याधर' को, भैंस बराबर काला अक्षर ॥

मुशी 'चन्दालाल' का, तारकोल-सा रूप।
'श्यामलाल' का रग है, जैसे खिलती धूप ॥
जैसे खिलती धूप, सजे बुशर्ट पैण्ट मे।
'ज्ञानचन्द' छै बार, फेल हो गए टैन्थ मे ॥
कह 'काका' 'ज्वालाप्रसाद' जी, बिल्कुल ठडे।
पडित 'शातिस्वरूप', चलाते देखे डडे ॥

देख 'अशर्फीलाल', के, घर मे टूटी खाट।
सेठ 'छदम्मीलाल' के, मील चल रहे आठ ॥
मील चल रहे आठ, कर्म के मिटें न लेखे।
'धनीराम' जी हमने, प्राय निर्धन देखे ॥
कह 'काका' कवि, 'दुल्हेराम' मर गए क्वारे।
बिना प्रियतमा तडपें, 'प्रीतमसिंह' बिचारे ॥

दीन श्रमिक भडका दिए, करवा दी हडताल,।
मिल-मालिक से खा गए, रिश्वत 'दीनदयाल' ॥
रिश्वत दीनदयाल, 'करम' को ठोक रहे हैं।
ठाकुर 'शेरसिंह', पर कुत्ते भौंक रहे हैं ॥
'काका' छह फिट लम्बे, 'छोटूराम' बनाए।
नाम 'दिगम्बरसिंह, 'वस्त्र' ग्यारह लटकाए ॥

पेट न अपना भर सके, जीवनभर 'जगपाल'।
बिना सूड के सैंकडो, मिलें 'गणेशीलाल' ॥
मिलें गणेशीलाल, पैंट की क्रीज सम्हारी।
बैग कुली को दिया, चले मिस्टर 'गिरिधारी ॥
कह 'काका' कविराय, करे लाखो का सट्टा।
नाम 'हवेलीराम', किराय का है अट्टा ॥

दूर युद्ध से भागते, नाम रखा 'रणधीर'।
'भागचन्द' की आज तक, सोई है तकदीर॥
सोई है तकदीर, बहुत-से देखे-भाले।
निकले प्रिय 'सुखदेव' सभी, दुख देने वाले॥
कह 'काका' कविराय, आंकड़े बिल्कुल सच्चे।
'बालकराम ब्रह्मचारी' के, बारह बच्चे॥

'चतुरसेन' बुद्धू मिले, 'बुद्धसेन' निर्बुद्ध।
श्री 'आनन्दीलाल' जी, रहें सर्वदा क्रुद्ध॥
रहें सर्वदा क्रुद्ध, मास्टर चक्कर खाते।
इन्सानों को 'मुंशी तोताराम' पढ़ाते॥
कह 'काका', 'बलवीरसिंह' जी लटे हुए हैं।
'थानसिंह' के सारे, कपड़े फटे हुए हैं॥

बेच रहे हैं कोयला, लाला 'हीरालाल'।
सूखे 'गंगाराम जी', रूखे 'मक्खनलाल'॥
रूखे मक्खनलाल, झींकते दादा-दादी।
निकले बेटा 'आशाराम', निराशावादी॥
कह 'काका' कवि, 'भीमसेन' पिद्दी-से दिखते।
कविवर 'दिनकर', छायावादी कविता लिखते॥

आकुल-व्याकुल दीखते, शर्मा 'परमानन्द'।
कार्य अधूरा छोड़कर, भागे 'पूरनचन्द'॥
भागे पूरनचन्द, 'अमर जी' मरते देखे।
'मिश्री बाबू' कड़वी बातें, करते देखे॥
कह 'काका', 'भण्डारसिंह जी' रोते-धोते।
बीत गया जीवन, 'विनोद' का रोते धोते॥

'शीला' जीजी लड़ रहीं, 'सरला' करती शोर।
'कुसुम', 'कमल', 'पुष्पा', 'सुमन', निकलीं बड़ी कठोर॥
निकलीं बड़ी कठोर, 'निर्मला' मन की मैली।
'सुधा' सहेली 'अमृतबाई' सुनी विषैली॥
कह 'काका' कवि, बाबू जी क्या देखा तुमने?
बल्ली जैसी मिस 'लल्ली', देखी है हमने॥

'तेजपाल जी' मोथेरे, मरियल-से 'मलखान'।
लाला 'दानसहाय' ने करी न कौडी दान ॥
करी न कौडी दान, बात अचरज की भाई।
'वशीधर' ने जीवन-भर, वशी न बजाई॥
कह 'काका' कवि, 'फूलचन्द जी' इतने भारी।
दर्शन करके कुर्सी, टूट जाय बेचारी॥

घटटे खारी खुरखुरे, 'मृदुला जी' के बैन।
'मृगनयनी' के देखिए, चिलगोजा-से नैन॥
चिलगोजा-से नैन, 'शान्ता' करती दगा।
नल पर न्हाती, 'गोदावरी,' 'गोमती,' 'गगा' ॥
कह 'काका' कवि, 'लज्जावती' दहाड रही है।
'दर्शनदेवी' लवा, घूघट काढ रही है॥

कलियुग मे कैसे निभे, पति-पत्नी का साथ।
'चपलादेवी' को मिले, बावू 'भोलानाथ' ॥
बावू भोलानाथ, कहा तक कह कहानी।
पडित 'रामचन्द्र' की, पत्नी 'राधारानी'॥
'काका' 'लक्ष्मीनारायण' की गृहिणी 'रीता'।
'कृष्णचन्द्र' की वाइफ, बनकर आई 'सीता'॥

अज्ञानी निकले निरे, पडित 'ज्ञानीराम'।
'कौशल्या' के पुत्र का, रक्खा 'दशरथ' नाम ॥
रक्खा दशरथ नाम, मेल क्या खूब मिलाया।
दूल्हा 'सतराम' को आई दुल्हिन 'माया' ॥
'काका' कोई-कोई, रिश्ता बडा निकम्मा।
'पार्वतीदेवी' हैं, 'शिवशकर' की अम्मा ॥

पूछ न आधी इच भी, कहलाते 'हनुमान'।
मिले न 'अर्जुनलाल' के, घर म तीर-कमान॥
घर मे तीर-कमान, बदी करता है नेका।
'तीर्थराज' ने कभी इलाहाबाद न देखा॥
'सत्यपाल' 'काका' की, रकम डकार चुके हैं।
'विजयसिंह' दस बार, इलेक्शन हार चुके है ॥

'सुखीराम जी' अति दुखी, 'दुखीराम' अलमस्त।
'हिकमतराम' हकीम जी, रहे सदा अस्वस्थ ॥
रहे सदा अस्वस्थ, प्रभु की देखो माया।
'प्रेमचन्द' में रत्ती-भर भी, प्रेम न पाया ॥
कह 'काका', जब व्रत-उपवासों के दिन आते।
'त्यागी' साहब, अन्न त्यागकर रिश्वत खाते ॥

रामराज के घाट पर, आता जब 'भूचाल'।
लुढ़क जाय 'श्री तख्तमल', बैठें घूरेलाल ॥
बैठें घूरेलाल, रंग किस्मत दिखलाती।
'इतरसिंह' के कपड़ों में भी बदबू आती ॥
कह 'काका', 'गम्भीरसिंह' मुंह फाड़ रहे हैं।
'महाराज' लाला की, गद्दी झाड़ रहे हैं ॥

'दूधनाथ जी' पी रहे, सपरेटा की चाय।
गुरु 'गोपालप्रसाद' के घर में, मिली न गाय ॥
घर में मिली न गाय, समझ लो असली कारण।
मक्खन छोड़ डालडा, खाते 'बृजनारायण' ॥
'काका', 'प्यारेलाल', सदा गुर्राते देखे।
'हरिश्चन्द्र जी' झूठे, केस लड़ाते देखे ॥

'रूपराम' के रूप की, निन्दा करते मित्र।
चकित रह गए देखकर, कामराज का चित्र ॥
कामराज का चित्र, थक गए करके विनती।
'यादराम' को याद न होती, सौ तक गिनती ॥
कह 'काका' कविराय, बड़े निकले बेदर्दी।
'भरतराम' ने 'चरतराम' पर, नालिश कर दी ॥

नाम-धाम से काम का, क्या है सामंजस्य ?
किसी पार्टी के नहीं, 'झंडाराम' सदस्य ॥
झंडाराम सदस्य, भाग्य की मिटे न रेखा।
'स्वर्णसिंह' के हाथ, कड़ा लोहे का देखा ॥
कह 'काका', कंठस्थ करो, यह बड़े काम की।
माला पूरी हुई एक सौ आठ नाम की ॥

—काका की फुलझड़ियां : 1965

नाम बड़े हस्ताक्षर छोटे

प्रगति राष्ट्रभाषा करे, यह विचार है नेक।
लेकिन आई सामने, विकट समस्या एक॥
विकट समस्या एक, कार्य हिन्दी में करते।
किन्तु शॉर्ट में, हस्ताक्षर करने से डरते॥
बोले काशीनाथ, जरा हमको बतलाना।
दोनों आखें होते हुए, लिखू मैं 'काना'?

इसी तरह से और भी, कर सकते हैं तर्क।
प्रोफेसर या प्रिन्सिपल, अफसर, बाबू, क्लर्क॥
अफसर, बाबू, क्लर्क, होय गडबड घोटाला।
डाक्टर नाथू लाल करें, हस्ताक्षर 'नाला'॥
कह 'काका' बतलाओ, क्या सम्भव है एसा।
लाला भैरो साह, स्वय को लिख दें 'भैंसा'॥

परिवर्तन घनघोर हो, बदल जायगी कौम।
डोगरमल सक्षिप्त मे, लिखें जायगे 'डाम'॥
लिखे जायगे डोम, नाम असली खो जाए।
गुप्पोमल को शार्ट करो तो, 'गुम' हो जाए॥
उजले कान्तीलाल, किन्तु कहलाए 'काला'।
भैया भाई लाल, पुकारे जाए 'भाला'॥

'सीरा', सीताराम हो, जाहर मल हो 'जाम'।
जीते जी लिक्खें 'मरा', मामा मगनी राम॥
मामा मगनी राम, किसीका क्या] कर लेंगे।
चिढा-चिढा कर गजधारी को 'गधा' कहेंगे॥
कह 'काका' कवि, बाबूलाल बनेंगे 'बाला'।
पडित प्यारेलाल, लिख जाएगे 'प्याला'॥

अच्छे-अच्छे नाम भी, हो जाए बदनाम।
जबकि हरीहरराम को, लिखना पडे 'हराम'॥
लिखना पडे हराम, मार अक्षर मे धक्का।
छोटे बच्चे सत्य काम को, बोलें 'सक्का'॥
कह 'काका' कवि, मदनलाल बन जाए 'मल्ला'।
छगन लाल को देख कहें, वह आया छल्ला॥

मालिक दान सहाय को लिखना होगा 'दास'।
और सारदा सरन जी, कहलाएंगे 'सास'॥
कहलाएंगे सास, हँसे सब चेली-चेला।
गुरुवर केशवलाल, करें हस्ताक्षर 'केला'॥
कह 'काका' कविराय, लोग मारेंगे ताने।
जयनारायण नेवटिया, कहलाय 'जनाने'॥

गूजरमल जी 'गूम' हों, बूचीमल जी 'बूम'।
सूरजमल से सब कहें आओ मिस्टर 'सूम'॥
आओ मिस्टर सूम, होय आपस में 'दगा'।
नदन गायक से जब, लोग कहेंगे 'नगा'॥
पुल्लिंग पर स्त्रीलिंग, हो जाएगा हावी।
कैप्टिन भारत वीर, कहे जाएंगे 'भावी'॥

लोग मनोरंजन करें, होनी हो सो होय।
गजानन्द धीमान को, 'गधी' कहें सब कोय॥
गधी कहें सब कोय, हँसे नर-नारी सारे।
श्री सूरजपरसाद, 'सूप' बन जाय बिचारे॥
स्यामनाथ जी, स्वयं करें, हस्ताक्षर 'स्याना'।
नागनाथ को देख कहें आओ जी 'नाना'॥

हिन्दू ईश्वरदत्त का, शॉर्ट नाम हो 'ईद'।
लाला लीलादत्त जी, कहलाएंगे 'लीद'॥
कहलाएंगे लीद, मजे तो अब आएंगे।
तेजपाल लीडर जब, 'तेली' कहलाएंगे॥
कह 'काका' कवि, होतीलाल कहाए 'होला'।
छोटेलाल बिचारे, बन जाएंगे 'छोला'॥

इस संक्षिप्तीकरण से, हो व्यक्तित्व खराब।
शक्ति राम बर्मन स्वयं, कैसे लिखें 'शराब'॥
कैसे लिखें शराब, दया हमको आएगी।
हरीवंश त्यागी की, 'हत्या' हो जाएगी॥
बदल जाय उपनाम, होय मानी-बेमानी।
कहलाए गोपालदास नीरज, 'गोदानी'॥

अर्थ व्यर्थ हो जाएगे, भागीरथ हो 'भार'।
मुखीनाथ रजनीश को, लिखना पड़े 'सुनार'॥
लिखना पड़े सुनार, लगे सुनने मे खोटा।
किन्तु सोम ठाकुर जी, कहलाएगे 'सोठा'॥
कह 'काका' अच्युत धर्मा, बन जाय 'अधर्मा'।
वेकल शर्मा कसे, सहन करें बेशर्मा॥

कोर्ट कचहरी बैंक मे, मच जाएगा शोर।
चोखेमल रजपूत जब, स्वय लिखेंगे 'चोर'॥
स्वय लिखेंगे चोर, हँसी हो खुल्लम-खुल्ला।
मिस्टर मुन्नीलाल, पुकारें जाए 'मुल्ला'॥
बडे नाम को छोटा किया, हो गया खोटा।
लोचन टालीवाल करें, हस्ताक्षर लोटा॥

कीर्ति नष्ट हो जाएगी, कीर्तिचन्द हो 'कीच'।
नीकचन्द सक्षिप्त मे, बन जाएगे 'नीच'॥
बन जाएगे नीच, मिलाए जब तुकमिल्ला।
पाडे पित्तीलाल, लिखे जाएगे 'पिल्ला'॥
कौशल जी आचार्य, बिचारे होगे 'कौआ'।
नौबतमल आढती, पुकारे जाए 'नौआ'॥

कुछ लोगो के हैं बडे, लम्बे-चौडे नाम।
ढाई गज का नाम है, दो अगुल का काम॥
दो अगुल का काम, आचानक दर्शन पाए।
श्री नारायण लाल यतीन्द्र कथक्कड आए॥
चारो शब्दो को लेकर जब शॉर्ट बनाया।
तो उनका सक्षिप्त नाम 'नालायक' आया॥

जानबूझकर व्यर्थ हो, क्यो होते बदनाम?
उतना दुखदायी बने, जितना लम्बा नाम॥
जितना लम्बा नाम, रखो छोटे-से छोटा।
दो अक्षर से अधिक नाम होता है खोटा॥
सूक्ष्म नाम पर कभी नही, पड सकता डाका।
उल्टो-पल्टो, शॉर्ट करो, फिर भी है 'काका'॥

—काका के धड़ाके : 1969

निचोड़ की होड़

क्लब की पिकनिक पार्टी, पहुंचे गगादीन।
रस निकालने के लिए, लाए एक मशीन॥
लाए एक मशीन, समय बचता है इससे।
इतना कहकर नीबू, एक निचोडा उससे॥
क्या मजाल अब एक बूद भी, रस टपका लें।
नहीं मानते हो, वे हमसे शर्त लगा लें॥

अफसर इनकमटैक्स के, आए मिस्टर सूद।
चुटकी से नीबू मसल, टपका दी दो बूद॥
टपका दी दो बूद, सूद जी जुग-जुग जीओ।
इसीलिए तो आप बन गए, आई०टी०ओ०॥
नीबू मे फिर भी थोडा रस, छोड रहे हो।
सेठो को तुम अच्छी तरह, निचोड रहे हो॥

—काका के धड़ाके : 1969

नारी की कटारी

नारी से मत उलझना, बडी विकट यह जाति।
अन्त काल पछताएगा, 'चरणसिंह' की भांति॥
चरणसिंह की भाति, आप ऐंठे सो ऐंठे।
साथ-साथ दाढी वाले, को भी ले बैठे॥
रीतिकाल के कवि कहते थे जिसको, अबला।
राजनीति मे गजब ढा रही, बनकर सबला॥

—फिल्मी सरकार : 1972

निमन्त्रण और परोसा !

बलिहारी जा समय की, कैसे पावें पार।
अब लल्लू के ब्याह की, करनी है ज्योनार॥
करनी है ज्योनार, उधर राशन का हल्ला।
डर लगता है, लग न जाय कोई पुछल्ला॥
कह 'काका' कविराय, बुद्धि अपनी चकराई।
दावत पर कन्ट्रोल, जान आफत मे आई॥

भोजन करके मित्र सब, होंगे अन्तरध्यान।
'काका' कवि को पकड़ कर, ले जायें शैतान॥
ले जायें शैतान, सुने नहिं कोई विनती।
बैठे-बैठे गिनें जेल में, उल्टी गिनती॥
कह 'काका' कविराय, किस तरह पीछा छूटे।
आसानी से साप मरे, नहिं लाठी टूटे॥

एक मित्र कहने लगे, बात बीच में काट।
सबस अच्छी आजकल, है आलू की चाट॥
है आलू की चाट, मटर की करो पकौड़ी।
शकरकन्द के आटे की, बन जाय कचौड़ी॥
सुन 'काका' कविराय, कह रहा काछी कलुआ।
धकापेल बनवाओ तुम, गाजर का हलुआ॥

पडित जी समझा रहे, सब पोथो का सार।
इकादशी के दिन करो, तुम निधरक ज्योनार॥
तुम निधरक ज्योनार, कि जितने न्योते जावें।
उस दिन भोजन करने को, आधे ही आवें॥
सुन 'काका' कविराय, होय सबको अनुकूला।
बाट तश्तरी भर-भर के कूटू के फूला॥

बाबू जी ने राय दी, बैठो अपने घर।
दो दो रुपये के करो, सबको मनिआडर॥
सबको मनिआडर, चहे राशन ले आओ।
अथवा चटनी लगा लगा कर, नोट चबाओ॥
कह 'काका' कविराय, काम यह सबसे अच्छा।
कूदे कूदे फिरें सभी बूढे अरु बच्चा॥

तरह तरह की बात सुन, बन्द कर लिये कान।
एक नई स्कीम से, काम हुआ आसान॥
काम हुआ आसान, शीघ्र ही अर्जी दीनी।
खाड खा गय साड, मिल गई हमका चीनी॥
कह 'काका' कविराय, सुनो भैया हलवाई।
करके फाटक बन्द बना दो पाच मिठाई॥

डिब्बे में मिष्ठान्न भर, धरी कचौड़ी आठ।
पैकबन्द तैयार है, प्रीतिभोज का ठाठ॥
प्रीतिभोज का ठाठ, पेट के कर दो अर्पण।
खाली डिब्बा देवी जी को, करो समर्पण॥
कह 'काका', श्रीमान आपका पूर्ण भरोसा।
कर लेंगे स्वीकार, निमन्त्रण और परोसा॥

एक सूचना दे रहे, हम तुमको अरजैन्ट।
डिब्बा में हो जाय, यदि कोई एक्सीडैन्ट॥
कोई एक्सीडैन्ट, मचाना मत हू-हल्ला।
चिपट गया हो अगर, इमरती से रसगुल्ला॥
कह 'काका' कविराय, अचम्भा क्या है भाई।
मिस्टर लड्डू पर, चढ़ बैठी बालूशाई॥

—पिल्ला 1950

निराकार और साकार

ज्ञानी-ध्यानी थक गए, करते-करते तर्क।
निराकार-साकार का, समझ न पाए फर्क॥
समझ न पाए फर्क, भंग का गोला खाया।
तब इन शब्दों का, निष्कर्ष सामने आया॥
कह 'काका', जो कार रखे, साकार वही है।
निराकार वह, जिसके घर में कार नहीं है॥

—काका की फुलझड़ियां : 1965

निष्काम हड़ताल

हड़तालों पर कर रहे, प्रवचन काक-भुशुंड।
मैनेजर की मेज़ पर, कीर्तन करो अखंड॥
कीर्तन करो अखंड, साथ माइक ले जाओ।
पंचम स्वर में गला फाड़कर, कला दिखाओ॥
'काका' जो प्राणी, इस नुसखे को अजमाए।
अर्थ, धर्म औ' काम, मोक्ष, चारों पद पाए॥

बीड़ी का कश खींचकर, बोले बांकेलाल।
सर्वश्रेष्ठ है आजकल, कलम-छोड़ हड़ताल॥

कलम-छोड़ हड़ताल, शान से दफ्तर जाओ।
भरो हाज़िरी, चाय पियो फिर गप्प लड़ाओ।।
'काका' यह हड़ताल, शुद्ध 'निष्काम' कहाती।
बिना काम के ही तनुखा, सीधी हो जाती।।

—काका की फुलझड़ियां 1965

नेता-अभिनेता

आजादी को हो गये, पूरे चौंतिस* वर्ष।
मिटा न पाये आज तक, सम्प्रदाय-संघर्ष।।
सम्प्रदाय संघर्ष, व्यर्थ हैं लीडर-नेता।
नेताओं से अच्छे हैं, सर्कस अभिनेता।।
कुछ दिन में ही, मेल-मिलाप सिखा देते हैं।
शेर-बकरियों में, रोमांस दिखा देते हैं।।

—फिल्मी सरकार: 1972

नेता के तीन रूप

नेता की पहचान के, तीन बताते चिह्न।
क्या-क्या हैं, इस विषय में राय हमारी भिन्न।।
राय हमारी भिन्न, आप मानो या मानो।
असली फसली नकली, तीन क्वालिटी जानो।।
असली नेता, जनता की सेवा करता है।
फसली नेता, चन्दे से पाकिट भरता है।।
नकली नेता, हैंडलूम की खादी धारे।
करवाता हड़ताल, और लगवाता नारे।।

—जय बोलो बेईमान की 1973

नेता-नीति

नेता समझाने लगे, सुनो बुलाकी दास।
सूखा और अकाल से, मन हो कभी उदास।।
मत हो कभी उदास, धैर्य रक्खो सुख-दुख में।
कुछ भी नहीं असम्भव, इस वैज्ञानिक युग में।।
ले लो ऐनक, हरे रंग के शीशे वाली।
जिधर देखिए उधर, दिखाई दे हरियाली।।

—काका कोला: 1965

---

* मूल संस्करण में 'बाइस' मुद्रित है।

नेता-नेती मन्त्रणा

नेती जी करने लगी, नेता जी से बात।
चार दिनों की चांदनी, फिरि अंधेरी रात॥
फिरि अंधेरी रात, एलक्शन का हू-हल्ला।
देखो भरी परात, उधर का पकड़ो पल्ला॥
शर्म और सिद्धांत छोड़, बेशर्मी धर लो।
गुजर सकें दो-चार साल, इतना तो कर लो॥

—फिल्मी सरकार : 1972

नेत्रदान

नेत्रदान के पक्ष में थे, डॉक्टर 'रजदान'।
हाथ जोड़ हमने कहा—क्षमा करें श्रीमान॥
क्षमा करें श्रीमान, लगाकर आंख हमारी।
सूरदास ने किसी, सुघड़ नारी पर मारी॥
तो बतलाओ उस अंधे का, क्या बिगड़ेगा।
आंख हमारी, हमको ही तो पाप लगेगा॥

—काका के धड़ाके : 1969

नोट की वोट

वोटर बोला दाबकर, दस रुपये का नोट।
दे सकता हूं आपको, अपना सिंगल वोट॥
अपना सिंगल वोट, नोट यदि दूजा पाऊं।
घरवाली का वोट आपको, और दिलाऊं॥
कह 'काका' कवि, होय जुगल जोड़ी के धन्धे।
भेजत रहु भगवान! आंख के ऐसे अन्धे॥

—काका की फुलझड़ियां : 1965

न्यायालय में भ्रष्टाचार

न्याय प्राप्त करने गए, न्यायालय के द्वार।
इसी जगह सबसे अधिक, पाया भ्रष्टाचार॥
पाया भ्रष्टाचार, मिसल को मसल रहे हैं।
ईंट-ईंट से रिश्वत के, स्वर निकल रहे हैं॥
कह 'काका', जब पेशकार जी घर को आए।
तनखा से भी तिगुने, नोट दबाकर लाए॥

प्लीडर, मुन्शी, मुहर्रिर, सब निचोड़ लें अर्क।
घायल को घायल करे, पायल वाला क्लर्क॥
पायल वाला क्लर्क, अगर कुछ बच जाएगा।
वह चपरासी के इनाम में, पच जाएगा॥
कह 'काका', जो जीत गया, सो हारा समझो।
हार गया, सो पत्थर से दे मारा समझो॥

सिविल कोर्ट के फोर्ट में, बाबू करते लूट।
ढाई सौ का सूट है, तीस रुपे का बूट॥
तीस रुपे का बूट, फ्रूट औ' मक्खन खाए।
मित्रों के संग पिए पिलाए मौज मनाए॥
इनके घर में दूध-दही की, बहती गंगा।
छाछ पी रहा, दीन मवक्किल होकर नंगा॥

गए गांव से कचहरी, करके लम्बा टूर।
डेढ बज गया, कोर्ट में आए नहीं हुजूर॥
आए नहीं हुजूर, किसीका केस न लेंगे।
क्योंकि आज सरकार 'मैटिनी शो' देखेंगे॥
कह 'काका' कविराय, नोट दस का सरकाए।
पेशकार जी तब अगली, तारीख बताए॥

—काका कोला · 1968

न्यूट्रन-बम

काकी जी कहने लगीं, सुबह-सुबह झकझोर।
न्यूट्रन बम क्या बला है शोर मचा चहुं ओर॥
शोर मचा चहुं ओर, तथ्य उनको समझाया।
गोरों ने एक ऐसा, जालिम अस्त्र बनाया॥
मानव-दानव बचें न कोई बच्ची बच्चा।
शून्य विश्व पर, राज करें अमरीकन चच्चा॥

(1981)

पचभूत

भाइ, भतीजा, भानजा, भौजाई, भूपाल।
पचभूत की छूत से, वच व्यापार सम्भाल॥
वच व्यापार सम्भाल, वडे नाजुक य नाते।
इनको दिया उधार, समझ ले वट्टे खाते॥
'काका' परम प्रवल है, इनकी पाचन-शक्ति।
जब मांगोगे, तभी झाडन लगें दुलत्ती॥

—काका कोला · 1968

पचशील के पंच

पचशील पुल पर खडे, पाच अनोखे व्यक्ति।
परिचय अपना दे रहे, किसमे कितनी शक्ति॥
किसम कितनी शक्ति, एक था उनमे अधा।
शेप चार थे—वहरा, लगडा, लूला, नगा॥
यह 'काका' कविराय, शून्य मे झाक रहे थे।
धुत्त नशे मे, लम्बी-चौडी हांक रहे थे।

वहरा बोला यकायक, ध्यान देउ उस ओर।
साफ सुनाई पड रहा, डाकू-दल का शोर॥
डाकू दल का शोर, कसम अन्धे ने [illegible]।
यह देखो। वारह डाकू, दे रहे [illegible]॥
लगडा बोला—भाग चलो वरना [illegible]।
लूला कहने लगा कि [illegible]॥
तब नगा चिल्लाया, [illegible]।
लगता है सब मिलकर, [illegible]॥

—[illegible] 1969

पं[illegible]

शहर एक [illegible], [illegible]।
[illegible] दावे [illegible], [illegible]॥
दिये [illegible], [illegible]।
[illegible] के [illegible], [illegible]॥
पीते हैं [illegible], [illegible]।
[illegible], [illegible] निम [illegible]॥

—[illegible]

पं० पेटूराम

पेट सुखी तो जग सुखी, और न दूजो काम।
होंय निमन्त्रण से सुखी, पंडित पेटूराम॥
पंडित पेटूराम, पेट की करते पूजा।
पेट-धर्म के सिवा, धर्म नहिं जग में दूजा॥
कह 'काका' कविराय, नमक पीकर के जाते।
पत्तल पर जो बचे, बांध घर को ले आते॥

—पिल्ला 1950

पकड़-धकड़

पकड़-धकड़ को देखकर, सूखे अपने प्रान।
पन्द्रह दिन को हो गये, काका अन्तरध्यान॥
काका अन्तरध्यान, सटक माला के मनके।
चरा मुफ्त का माल, रहे शरणार्थी बनके॥
कह 'काका' कविराय, याद जब आई काकी।
दिल पर चलने लगी, विरह-ज्वाला की चाकी॥

हिम्मत रक्खी जेब में, दिया अक्ल पर जोर।
लाद बिस्तरा चल दिए, इस्टेशन की ओर॥
इस्टेशन की ओर, कह रहा था पनवारी।
गाडी में से आज, फेंक दी चार सवारी॥
कह 'काका' कविराय, हो गई तबियत खस्ता।
स्टेशन को छोड, लिया अड्डे का रस्ता॥

मन-ही-मन रटते रहे, हर हर-हर महादेव!
अड्डे पर बैठे मिले, ढाई दर्जन मेव॥
ढाई दर्जन मेव, हाथ में लिये कुल्हाड़ा।
बंधी कपकपी चढ बैठा, सौ डिगरी जाड़ा॥
कह 'काका' कविराय, भरी हमने किलकारी।
हे नेहरू सरकार! बचाओ जान हमारी॥

घरं घरं की एकदम, आई जब आवाज।
हमको समझ आ गया, लेने हमें जहाज॥

लेने हमे जहाज, यहा भी किस्मत फूटी।
पश्चिम को उड गया, कल्पना निकली झूठी॥
कह 'काका' कविराय, बिस्तरा खोल बिछाये।
अपर क्लास मे बैठ, ऊटगाडी मे आये॥

—[illegible] : [illegible]

'प' की पकड़

बोले परमानन्द जी, लेकर एक [illegible]।
सारभूत ससार मे, पाये प्रमुख [illegible]॥
पाये प्रमुख पकार, प्रथम [illegible]।
फिर, पूडी-पेडा-पनीर को, [illegible]।
पेठा, पिन्नी, पाक, पकौडा, [illegible]।
पानी पीकर डबल पान, [illegible]।

पदाधिकारी, पार्टी, [illegible]।
इनसे शोभित हो [illegible]।
कवि सम्मेलन मच, [illegible]।
प्रधान जी लेकर [illegible]।
कह 'काका' कवि, [illegible]॥
पत्रम्-पुष्पम् [illegible]।

—[illegible]

कलाकार जी ने कहा, होकर भाव-विभोर।
काका ! तुम संगीत के, प्रेमी हो घनघोर॥
प्रेमी हो घनघोर, न हमने सत्य छिपाया।
अपने बैठे रहने का, कारण बतलाया॥
कृपा करें श्रीमान् ! मंच का छोड़ें पीछा।
तो हम घर ले जाएं, अपने फर्श गलीचा॥

—काका के कहकहे : 1966

पजामा और लंगोटी

आजादी की जिस समय, छूट गई बन्दूक।
क्षण में भारतवर्ष के, कर दीने दो टूक॥
कर दीने दो टूक, पजामा और लंगोटी।
ले-ले कर हथियार, लड़ गई दाढ़ी-चोटी॥
कह 'काका' कविराय, सम्हालो अपनी दिल्ली।
खाय नहीं तो लुढ़का कर, भागेगी बिल्ली॥

कब्रों पर चिपका दिये, सौ-सौ वाले नोट।
मुर्दे भागे आ रहे, देने अपने वोट॥
देने अपने वोट, भर गया लीगी डब्बा।
कूद-कूद कर नाच रहे, खालू के अब्बा॥
कह 'काका' कवि, देख लीजिए कैसा डूबा।
पाकिस्तानी पोखर में, सरहद्दी सूबा॥

हर्रा लगा न फिटकरी, मुफ्त रंग गया टाट।
ऊंट महाशय बन गये, पाकिस्तानी लाट॥
पाकिस्तानी लाट, खुदा ऐसे ही देता।
काटत-काटत जेल, पिलपिले हो गये नेता॥
कह 'काका' कविराय, हो गई रानी-बांदी।
बन्द जेल में कर दीने, सरहद्दी गांधी॥

—विन्ना 1950

पजामा बनाम पैंट

मोटे होते जा रहे, मिस्टर अफलातून।
पतली पड़ती जा रही, दिन-प्रतिदिन पतलून॥
दिन-प्रतिदिन पतलून, देख फैशन का ड्रामा।
दांत दिखाकर बोला, चूड़ीदार पजामा॥
सुन 'काका' कविराय, एक दिन ऐसा आए।
मेरी काया मे मिस पैण्ट, विलय हो जाए॥

—काका की फुलझड़ियां : 1965

पतिव्रता

कटुक वचन नित बोलकर, खोटी-खरी सुनाय।
वही पतिव्रता नारि जो, पति से पहिले खाय॥
पति से पहले खाय, लाल अंखिया चमकावै।
मन मे आवे तभी, भाग मैके को जावे॥
कह 'काका' कविराय, सुनो हे प्रेमपुजारी।
पत्नीव्रता पुरुष ही, ऐसी का अधिकारी॥

—पिल्ला : 1950

पत्नी-परिभाषा

बाबू बिस्कुटलाल से, बोले मिस्टर केक।
वाइफ ऐसी चाहिए, लाखो मे हो एक॥
लाखो मे हो एक, सैन्ट से साड़ी महके।
पार्टियो में ट्विस्ट करे, पिकनिक मे चहके॥
कह 'काका', नित नये बनावे ऐसे जूड़े।
युवक सिसकियां भरें, हिचकियां लेवें बूढ़े॥

आवें मेरे मित्रगण, बैठे उनके पास।
ताश खेलने का उसे, हो ऊंचा अभ्यास॥
हो ऊंचा अभ्यास, चकित हो प्लेयर सारे।
चले दुरंगी चाल, तुरुप नैनो की मारे॥
कह 'काका' कामिनी, किन्नरी-सी दिखती हो।
मित्रो को लव लैटर-बैटर, लिख सकती हो॥

अमरीकन कट फेस हो, रशियन जैसे बाल।
चीनी जैसे गाल हो, पाकिस्तानी चाल॥
पाकिस्तानी चाल, निरकुश होकर घूमे।
वियतनाम सैनिक उसके, अधरो को चूमे॥
कह 'काका' कवि, यौवन की छलके गगरिया।
उसे देख फीकी पड़ जाये, रीता फरिया॥

बहू वही फार्वर्ड है, जो हो अपटूडेट।
सास-ससुर के सामने, पीती हो सिगरेट॥
पीती हो सिगरेट, बदन आधा ही ढापे।
भौजी भागे दूर, ननदिया थर-थर कापे॥
'काका' करें विरोध, उडे अक्कल की बक्कल।
चौके मे घुस जाय पहन, बाटा की चप्पल॥

'बॉल डान्स' भी कर सके, किसी फ्रैण्ड के साथ।
एक हाथ हो कमर पर, एक हाथ-मे-हाथ॥
एक हाथ-मे-हाथ, रात भर जग सकती हो।
जनता को वह परी, अजन्ता-सी लगती हो॥
कह 'काका' कविराय, सजाये ऐसी सज्जा।
दर्शन करके लज्जा से, झुक जाये लज्जा॥

घोडे पर भी चढ सके, पहन चुस्त पतलून।
खून बदन मे हो न हो, लम्बे हो नाखून॥
लम्बे हो नाखून, नियम से क्लब मे जाये।
चौका-चूल्हा त्याग, चाट होटल मे खाये॥
कह 'काका' कविराय, चाय मे अडा घोले।
तुम हिन्दी मे बात करो, वह इगलिश बोले॥

—काका की कॉकटेल • 1967

पत्नीव्रता···

कथा-कीर्तन नहिं रुचे, हरि-चरचा न सुहाय।
तो फिर तू फ्लाश मे, अपना चित्त लगाय॥
अपना चित्त लगाय, रात भर गायब रहना।
आवश्यकता पडे, बेच पत्नी का गहना॥
कह 'काका' कविराय, नही माने घरवाली।
कर ताले मे बन्द, दाव पर रख दे ताली॥ —फिल्मा • 1950

पत्युपदेश

पति बनकर यदि, चाहते हो पत्नी का प्यार।
जीवन अपना ढालिए, उसके ही अनुसार॥
उसके ही अनुसार, मिले यदि न्यू लाइट की।
आलोचना करो मत उसके, चाल चलन की॥
अगर पुराने खयालात की, पत्नी पाओ॥
खैर इसी में है, उसके रंग में ढल जाओ॥

—काका के धड़ाके 1969

परदारेषु मातृवत्

लिखा 'मनुस्मृति' शास्त्र में, रखिए ऊंचा लक्ष्य।
पर-नारी को मानिए, माता के समकक्ष॥
माता के समकक्ष, यही कहते थे गांधी।
ध्यान दें तो यह, प्रयोग है समाजवादी॥
मेरी घरवाली, बन जाय तुम्हारी माता।
और तुम्हारी पत्नी लगे, हमारी माता॥
इस नाते से बाप हो गए, आप हमारे।
और मुफ्त में हम बन जाए, बाप तुम्हारे॥

—काका हाथरसी 1975

परमार्थ

श्री बरसातीलाल से, बोले मटकराम।
हम-तुम होकर संगठित, करें देश का काम॥
करें देश का काम, सुदृढ़ योजना बनाएं।
लक्ष्य रहे परमार्थ, स्वार्थ को दूर भगाएं॥
मुख्य मन्त्रिपद कौन संभाले? बात अड़ गई।
समझौते में आगे की तारीख पड़ गई॥

—काका के धड़ाके 1969

परान्नं दुर्लभं लोके

पितृ-पक्ष की प्रतिपदा, हुई श्राद्ध की रस्म।
खाद्यासर पर जम गये, पाडे पत्थर-भस्म ॥
पाडे पत्थर भस्म, फसे यजमान अभागे ।
सोलह पूडी, आठ इमरती, रख दी आगे ॥
कह 'काका' कवि, चकित हो गये लाला-लाली।
पाच मिनट मे सफाचट्ट, कर डाली थाली ॥

दोबारा परसा गया, इतना ही सामान ।
वह भी पहुचा उदर मे, घबराए यजमान ॥
घबराये यजमान, धर्म-पत्नी को डाटा।
क्यो जी ! तुमने इतना कम, क्यो गूदा आटा ?
लाली बोली—,,बुद्धू हो, तुम लाला साहब !
मैंने मानस बुलवाया था, अथवा दानव ?"

मध्यान्तर मे गुरु ने, मारी एक डकार।
चूल्हे-चक्की हिल गए, काप गई दीवार ॥
काप गई दीवार, रो पडा मुन्ना छोटा।
मैया ने पूछा—"बेटे तू क्यो कर रोता ?"
लडका बोला—"मम्मी ! यह मालूम न तुझको।
खाना निवट गया, अब यह खायेगा मुझको।"

—फिल्मी सरकार : 1971

परिचय

'काका' बैठे ट्रेन मे, जाना था कन्नौज ।
धमधूसर जी घुस पडे, ले बच्चो की फौज ॥
ले बच्चों की फौज, यात्रियो से लड़ लड के।
ठूस दिए सीटो मे, ग्यारह लडकी-लडके ॥
हमने कहा कि— "अपना कुछ परिचय दीजे सर !"
बोले—"हम परिवार-नियोजन मे हैं आफीसर ॥"

—काका के धड़ाके : 1969

परिवार-नियोजन

दरी बिछाकर बर्थ पर, बोले बांकेलाल।
रेलगाड़ियों की अभी, और बढ़ेगी चाल॥
और बढ़ेगी चाल, सुनो बेटा अलमस्ता।
दस घंटे में पहुंचो, दिल्ली से कलकत्ता॥
कह 'काका' कवि, राजनीति का राज बताऊं।
गुप्त भेद, परिवार-नियोजन का समझाऊं॥

दवा बर्थ कन्ट्रोल की, सभी हो गईं फेल।
हैल्थ मिनिस्टर ने कहा—"तेज चलाओ रेल॥"
तेज चलाओ रेल, होय द्रुतगामी जितनी।
निश्चय ही दुर्घटनाएं भी, होंगी उतनी॥
'काका' बढ़ी हुई सब, छट जाएगी बादी।
आधी रह जाएगी, भारत की आबादी॥

—काका के कहकहे 1966

परीक्षा-दीक्षा

मन्त्री जी का पुत्र प्रिय, रहने लगा उदास।
इम्तहान नजदीक है, याद नहीं इतिहास॥
याद नहीं इतिहास, युक्ति बतलाई काका।
कॉपी पर लिख देना, नाम पता 'पापा' का॥
फर्स्ट डिवीजन मार्क्स, परीक्षक देगा तुमको।
हो जाये यदि फेल, शूट कर देना मुझको॥

—फिल्मी सरकार : 1972

पवित्रता

तन पवित्र साबुन रगड़, धन पवित्र खा ब्याज।
मन पवित्र गाली दिए, मिटत हिये की खाज॥
मिटत हिये की खाज, एक की पांच सुनाओ।
पचशील सिद्धान्त यही, सबको समझाओ॥
कह 'काका' कविराय, रह गए नाटो-सीटो।
इसका अर्थ यही है, चाहो जिसको पीटो॥

—काका की फुलझड़ियां : 1965

पश्चात्ताप

पडित पेटूराम जी ! चूक गए इस बार ।
'अधिक मास' जिस वर्ष मे, आए थे दो क्वार ॥
आए थे दो क्वार, घोषणा करवा देते ।
दोनो मे ही पितृपक्ष, दो रखवा देते ॥
कह 'काका' कविराय, पेट ऊचे हो जाते ।
सोलह दिन की जगह, श्राद्ध बत्तीसो खाते ॥

—काका की फुलझडियां : 196

पहलवानी पकड

पहुचे एक दूकान पर, पहलवान महमूद ।
औट रहा था चकाचक, भरी कढाही दूध ॥
भरी कढाही दूध, नही अटी मे पैसे ।
सोच रहे थे—'दूध पियें तो पीयें कैसे ?'
फेरा सिर पर हाथ, याद आया हथकडा ।
बोले—"ढाई किलो दूध कर दीजे ठडा ॥"

चढा गए सब गटागट, मारी एक डकार ।
फिर हलवाई से कहा, "बेवकूफ हो यार ॥
बेवकूफ हो यार, न बिल्कुल तुम्हे सलीका ।
बिना शक्कर का दूध, दे दिया हमको फीका ॥"
"पहलवान जी ! गलती हुई, भाड मे डालो ।
अब जितनी शक्कर चाहो, ऊपर से खा लो ॥"

रख दी उनके सामने, शक्कर भर कर प्लेट ।
उसे फाक महमूद जी, गए सडक पर लेट ॥
गए सडक पर लेट, दिखाए लटके अपने ।
बेलन जैसे, इधर-उधर को लगे लुढकने ॥
भीड इकट्ठी हुई, हैल्थ आफीसर आया ।
हुआ दूध पर शक, सब नाली मे फिकवाया ॥

अस्पताल को ले गये, एम्बुलेंस मे डाल ।
पूछा डाक्टर ने कहो—'अब कैसा है हाल ?"

अब कैसा है हाल, "हाल क्या तुम्हें बतायें।
बीमारी हो तो इलाज, उसका करवायें॥
पचा रहे थे दूध, पेट को हिला रहे थे।
लोट पोट कर, शक्कर दूध में मिला रहे थे॥"

—फिल्मी सरकार : 1971

पांच की प्रतिष्ठा

ब्रह्मचर्य औ' अहिंसा, सत्य, धर्म, कर्त्तव्य।
पाचों का पालन करो, मुनिजन का मतव्य॥
मुनिजन का मतव्य, पाच से खतरा भारी।
स्वार्थी रिश्वतखोर, शराबी, पागल, ज्वारी॥
विधवा, भिक्षुक, पगु, बड़े बूढ़े या अंधे।
इन पाचों की हँसी, उड़ाना कभी न बंदे॥

देशभक्त, त्यागी बना, कर्मठ, सयमि, स्वस्थ।
ऐसे गुण हों पाच तो, सदा रहो अलमस्त॥
सदा रहो अलमस्त, पाच की महिमा न्यारी।
पचामृत कर पान, बुद्धि हो शुद्ध हमारी।
यह पाचों दें साथ, समय जब आए खोटा।
सच्चा मित्र, नारि, पैसा औ' सोटा लोटा॥

—भोगा एण्ड योगा : 1980

पांचों धाम

प्रात थे काग्रेस मे, दुपहर को संघिस्ट।
सोशलिस्ट तिपहर बने, साय कम्यूनिस्ट॥
साय कम्यूनिस्ट, और उत्साह दिखाया।
इन्ह छोडकर नाम, क्रांतिदल मे लिखवाया॥
'काका' शेखी मारें, चारों धाम कर लिए।
लेकिन नेता जी ने, पाचो धाम कर लिए॥

—काका के धड़ाके : 1969

पाचन-शक्ति

कहा वैद्य ने देखकर, 'बड़े साब' की नब्ज।
रिश्वत खाने से अधिक, हुई आपको कब्ज॥
हुई आपको कब्ज, न इस सीजन में चूको।
शिमला जाकर रिश्वत के, नोटों को फूंको॥
कह 'काका' कवि, जब यह रिश्वत पच जाएगी।
पाचन-शक्ति और भी आगे, बढ़ जाएगी॥

—काका की फुलझड़ियां : 1965

पान की परिभाषा

साली से ससुराल में, बोले जीजा जान।
डियर ! बनाकर दीजिए, ऐसा प्यारा पान॥
ऐसा प्यारा पान, करारा होवे पत्ता।
लगे इश्क का चूना, और हुस्न का कत्था॥
कह 'काका' कविराय, डाल चितवन की छाली।
नखरे वाली लौंग लगाना, इसमें आली॥

—काका के कहकहे : 1966

पारा-नियंत्रण

श्री मुरारजी ! दीजिए, इस मसले पर ध्यान।
पारे से सोना बना, अब क्या हो श्रीमान ?
अब क्या हो श्रीमान, व्यवस्था जल्द करो ना।
घर-घर में हो जाएगा, सोना-ही-सोना॥
"सुन 'काका' ! इन बातों से, हम नहीं डरेंगे।
स्वर्ण छोड़कर, पारे पर कण्ट्रोल करेंगे।"

—काका के धड़ाके : 1969

पारिवारिक चित्र-विचित्र

शिव शंकर के सामने, बोले माथा टेक।
"तीन ललिया हो गईं, लल्ला हुआ न एक॥
लल्ला हुआ न एक, मनोवांछित फल पाऊं।
लल्ला हो तो धल्ला भरकर, दूध चढ़ाऊं॥"
शिवजी बोले—"शर्म नहीं आती है तुझको।
कर डालूंगा भस्म, दे रहा रिश्वत मुझको॥"

लाला लोभीलाल जी, देख रहे थे बाट।
एक पुत्र की आस में, हुई पुत्रिया आठ॥
हुई पुत्रिया आठ, भयकर धोखा खाया।
आज भात, कल छोचक, परसों मुण्डन आया॥
जीवन-भर हड्डियां घिसी, तब करी कमाई।
फटे हाल हैं ससुर, माल खा रहे जमाई॥

ऐसी गलती कर रहे, भोंदू बाप अनेक।
दो बच्चों के बाद ही, लगा दीजिए ब्रेक॥
लगा दीजिए ब्रेक, सुन्दरी, सुमुखी, गुडिया।
अधिक होय सन्तान, शीघ्र बन जाती बुढिया॥
कह 'काका', क्या लाभ, हुए बारह नालायक?
कर देगा उद्धार, एक हो, लेकिन लायक॥

जिधर देखिए उधर ही, बच्चों की भरमार।
कालेजों पर क्यू लगे, परेशान सरकार॥
परेशान सरकार, बताओ कैसे निपटें?
एक क्लास में तीन-तीन, चलती हैं शिफ्टें॥
चिल्ला रहे प्रिन्सिपल, फाटक बन्द करा दो।
दरवाजे पर 'हाउस फुल' का, बोर्ड [illegible]॥

डाक्टर से कहने लगे, बाबू [illegible]॥
मेरी नसबन्दी करो, [illegible]।
उन्हे लगा दो लूप, [illegible]।
'डबल बर्थ-कण्ट्रोल', [illegible]॥
हुई जिन्दगी व्यर्थ, [illegible]।
विशेषाङ्क प्रविष्टि, [illegible]॥

जनसख्या को देखकर, आया हमको ताव।
ससद म रखवा रहे, 'काका' यह प्रस्ताव॥
काका यह प्रस्ताव, शीघ्र ही पास करा दो।
करे तीसरा बच्चा, उस पर टेक्स लगा दो॥
मम्मी, डैडी सभी होश मे आ जायेंगे।
लूप और नसबन्दी को, दौडे आयेंगे॥

—फिल्मी सरकार, 1972

पिकनिक ट्रिक

कवि मित्रो से कह रहे, कविवर भारद्वाज।
पिकनिक का प्रोग्राम है, प्रेम पार्क मे आज॥
प्रेम पार्क मे आज, छह बजे तक आ जाओ।
अपने-अपने मन पसन्द की, चीजें लाओ॥
सबसे पहले मैं अपना, कर्तव्य निभाऊ।
बगाली रसगुल्ले और मिठाई लाऊ॥

कवि 'भुल्लड' कहने लगे, घर की है कैन्टीन।
ला सकता हू समोसे, दाल सेव नमकीन॥
दाल-सेव नमकीन, मौन 'हुल्लड' ने खोला।
मैं लाऊगा सेव, सन्तरा, कोकाकोला॥
"काका से पूछा कि आप क्या-क्या लायेंगे?"
"हम अपने मुन्ना-मुन्नी को ले आयेंगे॥"

—फिल्मी सरकार : 1972

पिनक

तम्बाकू को फाककर, बोले झडूलाल।
चीनी पीछे हट गए, इसका भेद निकाल॥
इसका भेद निकाल, चतुर जन इसको जानें।
अथवा यह रहस्य, केवल हम ही पहचानें॥
वह 'काका' कवि, जब अफीम कुछ अधिक खा गए।
उलटे चलन लगे, पिनक म, वहीं आ गए॥

—काका की फुलझड़ियाँ : 1965

पिल्ला

पिल्ला बैठा कार म, मानुष ढोवें बोझ।
भेद न इसका मिल सका, बहुत लगाई खोज॥
बहुत लगाई खोज, राज साबुन स नहाता।
देवी जी के हाथ, दूध स रोटी खाता॥
वह 'काका' कवि, मागत हू, वर चिल्ला-चिल्ला।
पुनर्जन्म म प्रभो बनाना, हमको पिल्ला॥

मृगनैनी छैनी बनी, पहुची नैनीताल।
होठा पर मुर्खी दई, रग लीन दोउ गाल॥
रग लीने दोउ गाल, धाय को दीना लल्ला।
सिर से साडी हटा, बगल म दाबा पिल्ला॥
वह 'काका' कविराय, चाल मे आई तेजी।
मम बन गईं देवी जी, पढके अगरजी॥

जग रूठे, रूठा करे, मत छाडो निज टेक।
पिल्ला पालो प्रेम स, खाओ बिस्कुट केक॥
खाओ बिस्कुट केक, मूछ की करा [illegible]।
काट-पैन्ट लो डाल, गले लटकाओ [illegible]॥
वह काका' कविराय, काम यह [illegible]।
बिना पढे ही बन जाओ, [illegible]॥

गैया-बछिया बेचकर, [illegible]।
धर्म कार्य या सम नहीं, [illegible]॥
जग म दूजा कोई, [illegible]।
भूल रहा क्यो मूर्ख! [illegible]॥
वह 'काका' कविराय, [illegible]।
रे कलियुग के [illegible]! [illegible]॥

चिकना [illegible]।
[illegible]॥
[illegible]।
[illegible]॥
[illegible]।
[illegible]॥

माला फेरत जुग गया, अब तो कर पहचान।
हरि रीझें जा भगत पै, ताहि बनावें श्वान॥
ताहि बनावें श्वान, प्रथम बनता है पिल्ला।
मिस साहिब के संग, घूमता बन पुछल्ला॥
कह 'काका' कवि, होंट लिपिस्टिक के चाटेगा।
नवयौवन की हरियाली में, दिन काटेगा॥

घुर्र-घुर्र पिल्ला करे, हिरदे उठत उमंग।
मन में आवे 'कोरिया', करने जाऊं जंग॥
करन जाऊं जंग, भुजा फड़कत हैं मेरी।
रणस्थल में पहुंच करूं, दुश्मन की ढेरी॥
कह 'काका' कविराय, फीस नहीं लेता पिल्ला।
मुफ्त वीरता के इन्जैक्शन, देता पिल्ला॥

परमेश्वर से भी बड़े, कहे जात हैं नंग।
इसीलिये पिल्ला कबहुं, वस्त्र न धारत अंग॥
वस्त्र न धारत अंग, रंग यौवन का आवै।
भागे-भागे फिरें, काम जब इन्हें सतावै॥
कह 'काका' कविराय, शीघ्र पण्डित बुलवाऊं।
सुन्दर पिलिया संग क्वार में, ब्याह रचाऊं॥

या असार संसार में, क्यों चाहत सन्तान।
जब घर में मौजूद है, पिल्ला पुत्र समान॥
पिल्ला पुत्र समान, दुक्ख दारिद्र हरेगा।
मर जाने पर पिल्ला, तेरे पिण्ड भरेगा॥
कह 'काका' कविराय, अरे ओ बागड़बिल्ला!
जो चाहे उद्धार, पाल जल्दी तू पिल्ला॥ —पिल्ला 1950

पूंजीवादी चुनौती

बोले इंडीकेट से, मिस्टर सिंडीकेट।
इन्दिरा की सरकार से, सावधान हैं सेठ॥
सावधान हैं सेठ, नब्ज पहचान रहे हैं।
रक्षा को कानूनी छाता तान रहे हैं।
बेटा-बेटी, चचा-भतीजे, जीजा-साले।
मिल-जुलकर 'संपति-सीमा' के तोड़ें ताले॥

आप बनाओ योजना, करें गरीबी दूर।
पूंजीवादी लट्ठ से, कर दें चकनाचूर॥
कर दें चकनाचूर, अर्थ के हम आराधक।
बदल नहीं सकते प्रारब्ध हमारा, शासक॥
'काका' कब तक दाल दलेगी, दिल पर दिल्ली?
दूध नहीं पियेगी तो, लुढ़का देगी बिल्ली॥

ज्ञान, ध्यान, भगवान् से पूंजीवाद महान।
करता मनका छोडकर, धन का कर गुणगान॥
धन का कर गुणगान, डरो लक्ष्मी-बन्दो से।
सोशलिज्म जी रहा, हमारे ही चन्दो से॥
कम्यूनिज्म से बचने को, फदा डाला है।
जान-बूझकर हमने, यह सकट पाला है॥

जितनी सपत्ति यहा तुम, देख रहे हो फ्रैंड।
उससे दुगुनी भेज दी, अमरीका, इगलैंड॥
अमरीका, इगलैंड, कहो कितना कर लोगे?
करके 'लॉकर' सील, हमारा क्या कर लोगे?
सारी सपत्ति पर भी यदि, पड जाए डाका।
सात पुश्त तक नहीं, बिगड़ सकता कुछ 'काका'॥

हैं अपने अधिकार मे, छह दर्जन अखबार।
जब चाहे तब बदल दें, वर्तमान सरकार॥
वर्तमान सरकार, तमाशा दिखा रहे है।
जनता पर जादू का डडा, फिरा रहे हैं॥
अपना-उनका सौदा, जिस दिन पट जाएगा।
यह समाजवादी कनकौआ, कट जाएगा॥

'काका' काले रग पर, चढ़े न दूजा रग।
किसका साहस है करे, काले धन से जग॥
काले धन से जग, दूर कर दुविधा मन से।
गाल टमाटर हो जाते हैं, काले धन से॥
काले थे श्री कृष्ण, सूर की कामर काली।
काली हैं, काली माई कलकत्ते वाली॥

—जय बोलो बेईमान की 197

पुलिस-महिमा

पड़ा - पड़ा क्या कर रहा, रे मूरख नादान !
दर्पण रखकर सामने, निज स्वरूप पहचान ॥
निज स्वरूप पहचान, नुमाइश - मेले वाले ।
झुक - झुक करें सलाम, खोमचे - ठेले वाले ॥
कह 'काका' कवि, सब्जी, मेवा और इमरती ।
चरना चाहे मुफ्त, पुलिस में हो जा भरती ॥

कोतवाल बन जाए तो, हो जाए कल्यान ।
मानव की तो क्या चली, डर जाए भगवान ॥
डर जाए भगवान, बनाओ मूँछें ऐसी ।
इठी हुई, जनरल अयूब रखते हैं जैसी ॥
कह 'काका', जिस समय करोगे धारण वर्दी ।
खुद आ जाए, ऐंठ-अकड़-सख्ती-बेदर्दी ॥

ज्ञान-मान-व्यक्तित्व का, चाहो अधिक विकास ।
गाली देने का करो, नित नियमित अभ्यास ॥
नित नियमित अभ्यास, कंठ को कड़क बनाओ ।
बेगुनाह को चोर, चोर को शाह बताओ ॥
'काका', सीखो, रंग - ढंग पीने - खाने के ।
'रिश्वत लेना पाप', लिखो ऊपर थाने के ॥

—काका की फुलझड़ियां 1965

पोशाक का प्रश्न

कुरता, पगड़ी, अगरखा, थे प्राचीन लिबास ।
ब्रिटिश राज्य में हम हुए, कोट-पैंट के दास ॥
कोट - पैंट के दास, चली गांधी की आंधी ।
गांधी टोपी के बल पर, ले ली आजादी ॥
कह 'काका' कवि, जब नेहरू का युग आया ।
पहन 'जवाहरकट' जाकिट, व्यक्तित्व बनाया ॥

बागडोर जब आ गई, शास्त्री जी के हाथ ।
चतुरचन्द्र जी ने कहा, चलो समय के साथ ॥

चलो समय के साथ, बात छोड़िए हमारी।
बड़े - बड़े साहब बन बैठे धोती - धारी॥
कह 'काका' कवि, रहे, इंदिरा शासन जब तक।
क्या पहनें तब तक? यह समझ न पाय अब तक॥

—जय बोलो बेईमान की 1972

पोस्टकार्ड की फरियाद

मिस महंगाई का मिला, नये बजट का प्यार।
रेट रजिस्ट्री के बढ़े, जय केन्द्रिय सरकार॥
जय केन्द्रिय सरकार हुआ पैंतीस लिफाफा।
लेट फीस के मूल्यों में भी, किया इजाफा॥
पोस्टकार्ड ने मंत्री जी पर दई दुहाई।
क्यों हुजूर! मेरी कीमत क्यों नहीं बढ़ाई॥

—काका काकी के लव लैटर्स

पौराणिक तथ्य

द्वापर में अर्जुन बली, पहुंच गए पाताल।
मिली 'अपोलो' सुन्दरी वर लाए तत्काल॥
वर लाय तत्काल, जुड़ गई रिश्तेदारी।
पुरखों की ससुराल, हुई ननसाल हमारी॥
वक्त - जरूरत, अमरीका से ले लें कर्जा।
और उसे कर जाए हजम, तो भी क्या हर्जा?

—फिल्मी सरकार 1972

प्रधानमन्त्री के रेडियो भाषण पर

बस कंडक्टर ने कहा—"क्यों काका कविराज।
इंगलिश बोली इन्दिरा क्या है इसका राज?"
क्या है इसका राज, तनिक दाढ़ी सहलाई।
राजनीतिक की गहराई, उसका समझाई॥
यदि वे हिन्दी में, भाषण दे देतीं प्यारे।
हो जाते श्री कामराज, नाराज हमारे॥

ले सकता यमराज से, कौन लडाई मोल।
हो जाए जिस पर कुपित, कर दें बिस्तर गोल॥
कर दें बिस्तर गोल, फेंक दें उसको नीचे।
तख्त-ताज है मुख्य, राष्ट्रभाषा है पीछे॥
'काका', इतने में आया अपना स्टेशन।
उतर पडे, कण्डक्टर से कट गया कनेक्शन॥

—काका के कहकहे 1966

प्रश्नोत्तर

प्रोफेसर अखरोट से, बोले किशमिश लाल।
"मास्साब ! हल कीजिए, मेरा एक सवाल॥
मेरा एक सवाल, समझ मे बात न भरती।
मुर्गी अडो के ऊपर, क्यो बैठा करती ?"
'सर' ने कहा — "प्रबध शीघ्र करवा देंगे।
मुर्गी के कमरे मे, कुर्सी डलवा देंगे॥"

—काका के धडाके 1969

प्रसिद्धि-प्रसंग

काशीपुर क्लब म मिले, कवि-कोविद अमचूर।
चर्चा चली कि कहा की, कौन चीज मशहूर ?—
कौन चीज मशहूर, प्रश्न यह अच्छा छेडा।
नोट कीजिए, है प्रसिद्ध मथुरा का पेडा॥
आत्मा-परमात्मा प्रसन्न हो जाए 'काका'।
लडडू 'सडीला' के हों, खुरचन 'खुरजा' का॥

अपना अपना टेस्ट है, अपना-अपना ढग।
रग दिखाती अग पर, 'हरिद्वार' की भग॥
हरिद्वार की भग, डिजाइन नये-निराले।
जाते देश विदेश, 'अलीगढ' वाले ताले॥
मालपुआ स्वादिष्ट 'बरेली' वाले गुड के।
दालमोठ 'आगरा', और पापड 'हापुड' के॥

कवि-सम्मेलन मे गए, 'कलकत्ता' चतुरेश।
ढाई किलो चढ़ा गए, रसगुल्ला सदेश॥

रसगुल्ला-सदेश, तोंद पर फेरा हत्था।
ली डकार तो काँप गया, सारा कलकत्ता॥
केसर 'कश्मीरी', अमरूद 'इलाहाबादी'।
साड़ी 'बनारसी' व लिहाफ, 'फर्रुखाबादी'॥

केला 'बबइया' मधुर, सेब सुघर 'रतलाम'।
खरबूजे 'लखनऊ' के, और सफेदा आम॥
और सफेदा आम, पियो रस भर-भर प्याले।
मगवाकर सतरे प्रसिद्ध, 'नागपुर' वाले॥
कह 'काका' कवि, रोक सके किसका बलबूता?
अमरीका तक चला, 'कानपुर' वाला जूता॥

चदल-सदल के लिए, याद रखो 'मैसूर'।
शहर 'मुरादाबाद' के, बर्तन हैं मशहूर॥
बर्तन हैं मशहूर, लगे 'कटनी' का चूना।
'जयपुर' की चुनरी, सौन्दर्य बढ़ाए दूना॥
पढ़ी-अनपढ़ी-क्वारी-ब्याही-युवती-बूढ़ी।
देख-देख ललचाय, 'फिरोजाबादी' चूड़ी॥

भुजिया 'बीकानेर' की, देती स्वाद विचित्र।
काकी को 'कन्नौज' का, 'काका' लाए इत्र॥
काका लाए इत्र, 'देहरादूनी' चावल।
टेलर साहब 'मेरठ' की, कैंची के कायल॥
छुरा 'रामपुर' और, 'हाथरस' वाले चाकू।
धन्य हमारा देश, जहा के वीर लड़ाकू॥

—जय बोलो बेईमान की : 1973

प्राकृतिक चिकित्सा

चलो प्राकृतिक चिकित्सा, देखो नये प्रयोग।
बिना दवा के दूर हो, नये-पुराने रोग॥
नये-पुराने रोग, कि रोगी पड़ा हुआ था।
थर-थर काँप रहा था, जाड़ा चढ़ा हुआ था॥

उससे थोडी दूर, मौत के इतजार मे।
घबरा रहा मरीज, एक सौ छ बुखार मे ॥
डाक्टर बोला--"नर्स ! शीघ्र यह काम कीजिए।
दोनो को एक ही बैड पर, सुला दीजिए।

—काका के धड़ाके : 1969

प्रिवीपर्स-संघर्ष

राजा-रानी देखकर, न्यायालय निष्कर्ष ।
प्रिवीपर्स की जीत पर, मना रहे थे हर्ष ।
मना रहे थे हर्ष, विधा से बधा विधाता ।
कानूनो को कानूनो से, काटा जाता ॥
तिरिया-हठ से डगमग, प्रिवीपर्स की नैया ।
कब तक खैर मनाएगी, बकरे की मैया ?

—फिल्मी सरकार •1972

फाइल-महिमा

फाइल, तू बडभागिनी, कौन तपस्या कीन ?
नेता, अफसर, क्लर्क सब, है तेरे आधीन ।
हैं तेरे आधीन, मिनिस्टर बाहर जाते ।
पत्नी को घर छोड, साथ तुझको ले जाते ॥
कह 'काका', वादी-प्रतिवादी हा-हा खाए ।
जज, वकील औ' जिलाधीश जी, शीश नवाए ॥

कोर्ट-कचहरी, दफ्तरो मे फाइल की धूम ।
पूजा तेरी सब करें, हो उदार या सूम ॥
हो उदार या सूम 'दक्षिणा' लेकर आते ।
तब बाबू फाइल के, दर्शन उन्हे कराते ॥
कह 'काका,' तहसील, फौजदारी, दीवानी ।
चहु दिशि तेरा राज, बनी बैठी पटरानी ॥

लाला-बाबू-बोहरे, सत-महत-अमीर ।
तेरे फीते मे बधी, लाखो की तकदीर ॥

लाखों की तकदीर, कभी तू खो जाती है।
तो आफिस में, महाप्रलय-सी हो जाती है॥
कह 'काका' कविराय, बिगड़ जाती जब फायल।
बड़े बड़े श्रीमानों को, कर देती घायल॥

—काका की फुलझड़ियां 1965

फिल्मी-ताड़का

किसकी हिम्मत पड़ सके, आए मेरे ढिग।
मेरा सीना देखकर, भागे दारासिंग॥
भागे दारासिंग, न बनना चाहूं अबला।
निर्देशक के सिर, पर बैठ बजाऊं तबला॥
'काका' हीरोइन बनकर, जग पर छा जाऊं।
आंखों-ही-आंखों में, हीरो को खा जाऊं॥

—काका के कहकहे 1966

फिल्मी-नवेलियां

मिल जाए यदि 'माधुरी', भाग्यवान हैं आप।
निरख नवेली नारियां, कटें पाप-संताप॥
कटें पाप-संताप, ज़िन्दगी सफल बनाएं।
प्रेमी जन इनके चित्रों पर, पुष्प चढ़ाएं।
'काका' यदि निष्काम भावना से, गुण गाओ।
पुनर्जन्म में नई नवेली, 'काकी' पाओ॥

योग्य कुमारी 'योगिता', मन 'मल्लिका' सुहाय।
वीना की झंकार-सी, गूंजत 'रीनाराय'॥
गूंजत रीनाराय, ताल मात्रा औ' लय में।
जग-जाहिर 'ज़ाहिरा', कुशल भावुक अभिनय में॥
'जय', 'सचदेव', 'अमान', 'भादुड़ी', सुघड़ 'सलूजा'।
'डिम्पिल'-सा सिम्पिल, व्यक्तित्व न देखा दूजा॥

—जय बोलो बेईमान की 1973

फिल्मी-फुलझडी

मेकप करके कार म, चली फिल्म-स्टार
हाथ दे रही इधर को, उधर चलाती कार॥
उधर चलाती कार, सिपाही बोला— मैंडम !
कर दूगा चालान, गलत क्यों चलती हो तुम ?'
' दिशा ज्ञान को हाथ नहीं मैं, दिखा रही हू ।
जरा 'नल पॉलिश' गीली है, सुखा रही हू ।"

—जय बोलो बईमान की 1973

फिल्मी-फुलझडिया

जल थल, नभ, चर अचर पर, छाया फिल्मी रग।
इसी रग म सब रग, बूढ बालक यग॥
बूढे बालक-यग, कि अफसर, बाबू, लाला।
फिल्मी गीत गा रहा, जुम्मा रिक्शे वाला॥
भगवन् ! कवि जीवन स, मरा पिंड छुडाना।
पुनजन्म म मुझे, फिल्म-तारिका बनाना॥

लता सरीखे स्वर मिलें, सिम्मी जैसे सैन।
नूतन सी गर्दन मिले, निम्मी, जैसे नन॥
निम्मी जैसे नैन कृपा करना प्रभु ऐसी।
वैजन्ती सी भृकुटी, कमर हो हेलन जैसी॥
कह् काका' माला सिन्हा सी दौलत पाऊ।
बारह लाख लगाकर, बाथरूम बनवाऊ॥

आशा पारिख-स अधर तरबूजे की फाक।
जैसी विजया चौधरी, सुग्गा टाइप नाक॥
सुग्गा टाइप नाक, ख्याति हो लम्बी चौडी।
नन्दा-जैसे हो कपोल, टुनटुन सी बौडी॥
कह 'काका' कवि कला पदमिनी-जैसी पाऊ।
मीना जैसी भव्य भाव भगिमा दिखाऊ॥

नखरे हा मुमताज से, राजश्री सी चाल।
बाल साधना कट मुग्ध दना दीनदयाल॥

देना दीनदयाल, हास्यरस टपके ऐसे।
हँसती है शर्मिला, शायरा बानू जैसे॥
हो जाए बेहोश, आखें जिससे लड जाए।
मुसकाऊँ तो, गालों में गड्ढे पड जाए॥

बन जाऊँ जब तारिका, करना कृपा हजूर।
हीरो राजकपूर से, रखना मुझको दूर॥
रखना मुझको दूर, मर्द मत देना ऐसा।
गले साधना के बाधा है, शौहर जैसा॥
लेकिन इसका अर्थ न लेना, यह गिरिधारी।
जीवन भर रह जाऊँ, सुरैया-जैसी क्वारी॥

यह सब कुछ हो जाय, तब करना इतना कष्ट।
चुनी जाय मिस इंडिया, मैं ही आऊँ फर्स्ट॥
मैं ही आऊँ फर्स्ट, विश्व की करूँ यात्रा।
ललचाई नजरों से देखें, छात्र-छात्रा॥
कह 'काका' कवि, करोडपति भी हा-हा खाएँ।
निकल जाउँ जिस ओर, उधर हल्ले हो जाएँ॥

अन्तिम यह सुन लीजिए, मेरे घर की बात।
काका दुहते दूध तब, भैंस मारती लात॥
भैंस मारती लात, राय डाक्टर की पाई।
गए सिनेमा, उसका 'सगम' फिल्म दिखाई॥
वहीं रेंकने लगी भैंस, करके मुँह ऊँचा।
बड़े प्यार से, हाथ फेर कर, हमने पूछा॥
(बोल भैंसिया बोल, दुद्धू देगी कि नहीं?

—काका के कहकहे : 1966

फिल्मी-विज्ञापन

खाली है रोमांस को, फेमस फिल्मस्टार।
तीन लाख का प्लैंट हो, एक लाख की मार॥
एक लाख की कार, होय इतने ही गहने।
दो अल्स्येशन कुत्ते हों, तो फिर क्या कहने॥
गर्व-गुमान, नाज-नखरा, सब सहना होगा।
प्रेमी-कम-सेवक बन करके, रहना होगा॥

खिली कली षोडसि लली, झलकत अंग-अनंग।
हिरनी जैसे नैन हैं, खिरनी-जैसा रंग॥
खिरनी जैसा रंग, स्वर्ग से उतरी माया।
नाइलोन से बाल, फोम-सी कोमल काया॥
चार पैग का नशा, एक उसकी अंगडाई।
उड जाएगी बुलबुल, शीघ्र करो एप्लाई॥

—जय बोलो बेईमान की 1973

फिल्मी-होली

चार रंग के, चार छंद की, झोली है।
चार नवेली, बुरा न मानें, होली है॥

जया भादुडी

नये सितारे दे रहा, 'पूना इंस्टीट्यूट।
ओल्ड चेहरे हो गए, फिल्म-जगत से हूट॥
फिल्म-जगत से हूट, फट गई जैसे काई।
जया भादुडी जब, हीरोइन बनकर आई॥
पत्रकार की बेटी, सुघड सुरतिया प्यारी।
'बच्चन' हुए प्रसन्न, देख मुसकान तुम्हारी॥
दर्शन को व्याकुल, युवकों की टोली है।
बुरा न मानो, होली है॥

जीनत अमान

जब तक 'मेकअप' में रहीं, नहीं मिल सकी लिफ्ट।
हिप्पिन बनकर हिट हुई, मिली ख्याति की गिफ्ट॥
मिली ख्याति की गिफ्ट, पड गया दिल पर डाका।
'दम मारो दम...' सुनकर, उछल पड़े कवि 'काका'॥
देख रुपहली परदे पर, भूलें सब दुखडा।
जन्नत की परियां-जैसा, जीनत का मुखडा॥
कलाकंद सी मधुर, तुम्हारी बोली है।
बुरा न मानो, होली है॥

राधा सलूजा

राधा-राधा रटत ही, व्याधा सब हट जाय।
भजन सलूजा का करे, वह हीरो बन जाय॥
वह हीरो बन जाय, देख करके 'दोराहा'।
छोड़ तपस्या, विश्वामित्र कर उठे हा-हा॥
यौवन अंग-उमंग-रंग, भ्रू भंग सुरोचक।
'बलात्कार-प्रेयसी', तुम्हें कहते आलोचक॥
दिल कातिल, पर सूरत भोली-भाली है।
बुरा न मानो, होली है॥

डिंपिल कापड़िया

हापड़-पापड़ से अधिक, कापड़िया मशहूर।
खोजी राजकपूर ने, सौंपी ऋषीकपूर॥
सौंपी ऋषि कपूर, मिली बॉबी से ख्याति।
चाल-ढाल बबइया, नाक-नक्श गुजराती॥
स्निग्ध-सुकोमल गात, ज्यों रेशम की लच्छी।
'खन्ना' को इस बच्ची से, है आशा अच्छी॥
विधना ने चंदन में, केशर घोली है।
बुरा न मानो, होली है॥

—जय बोलो बेईमान की : 1973

फूल और पत्थर

फूल-पार्क में खिल रहे, भ्रमर करें गुंजार।
उस मादक माहौल में, पहुंचे कमलकुमार॥
पहुंचे कमलकुमार, कली लेती अंगड़ाई।
मतवाली-सी एक कली, उनके मन भाई॥
नजर बचाकर माली की, वह डाल मोड़ ली।
रखकर दिल पर हाथ, कली गुलाबी तोड़ ली॥

लगे बजाने पार्क में, सीटी बारम्बार।
मिस 'स्वीटी' बैठी मिली, आंख हो गई चार॥
आंख हो गई चार, इश्क की रिस्क उठाई।
उनकी जुल्मी जुल्फों में, वह कली लगाई॥

धीरे-धीरे आगे सरकी, प्रेम-कहानी।
दोनों के दिल, उमड रही थी जोश-जवानी॥

लवलैटर चलने लगे, लगा-लगाकर सेण्ट।
चन्द दिनों मे हो गया, मैरिज ऐंगेजमेंट॥
मैरिज ऐंगेजमेंट, पड गए सातो फेरे।
मैं हू सिर्फ तुम्हारी, साजन तुम हो मेरे॥
फकफक चलती रही प्रेम की, कुछ दिन गाडी।
घिसपिट कर हो गई, 'पटरिया' तिरछी-आडी॥

आगे चलकर समस्या, पैदा हुईं अनेक।
बच्चो की पल्टन बढी, लगा प्रेम म ब्रेक॥
लगा प्रेम मे ब्रेक, चढी सिर पर महगाई।
तुम-तुम से, तू-तू, मै-मैं की, नौबत आई॥
सजनी जी के बाल पकड, साजन ने खीचे।
भूल गए ये बाल, गुलाब कली से सीच॥

पति-दुख से मुख मोडकर, घर से नाता तोड।
चली गई वे मायके, सारे बच्चे छोड॥
सारे बच्चे छोड, न उस दिन खाना खाया।
क्रोधातुर पति, उसी बाग मे भागा आया॥
दाँत भीचकर फूलों पर पत्थर बरसाए।
इन्ही फूल-कलियों ने, ये दुर्दिन दिखलाए॥

कली, फूल से कह रही, भटक गया इसान।
दुख-दरिद्र के कष्ट से, नष्ट हो गया ज्ञान॥
नष्ट हो गया ज्ञान, दोष हमको दे बाबू।
क्यो बढते बच्चे, यदि खुद पर रखता काबू?
भागा आया माली, छोड अधूरी माला।
धक्के देकर, बाबू को बाहर कर डाला॥

—भोगा एण्ड योगा : 1980

फैशन-परेड

देखी नैनीताल न, फैशन की भरमार।
विदा हो गईं साड़िया, सिसक रही सलवार॥
सिसक रही सलवार, घाघरा और गरारा।
छोड़ 'बैल-बॉटम' को, आगे बढ़ा 'शरारा'॥
डैडी मम्मी धन्य, लाडली बेटी पाकर।
माल रोड पर घूम रही, लुंगी लटकाकर॥

'काका' कैसे रुक सके, न्यू फैशन का ज्वार।
कोट-पैंट आउट हुए, पिछड़ा चूड़ीदार॥
पिछड़ा चूड़ीदार, मचा क्लब में हंगामा।
मिस माला ने पहना, एलीफैन्ट पजामा॥
आधी टांग ढकी, आधी नंगी रहती है।
रूप रानिया उसे, 'मिनी-साड़ी' कहती है॥

जूड़ा भी बूढ़ा हुआ, वेणी-बन्धन खत्म।
बाल बिचारे क्या करें, राज बदलती रस्म॥
रोज बदलती रस्म, कहो क्या उन पर वारें।
लटक-लटक लट, नक्ली नागिन-सी फुंकारें॥
चोटी अब तक एक, और दो देखी तुमने।
एक लली के चार, चोटिया देखी हमने॥

नर है अथवा नारि यह, कैसे हो पड़ताल।
बीबी जी हैं बॉबकट, बाबू लम्बे बाल॥
बाबू लम्बे बाल, देखकर काकी कुन्ती।
लड़की कुरता पहन, लड़के धारें कुरती॥
फूलदार बनते थे, परदे और रजाई।
उन कपड़ों की हीरो जी ने, शर्ट सिलाई॥

—फिल्मी सरकार 1972

फैशन-फोरकास्ट

वह दिन जल्दी आ रहा, फैशन बदले रंग।
क्रीम-पाउडर तज सखी, राख लपेटें अंग॥
राख लपेटें अंग, महावर माथ चमके।
पलक लिपस्टिक मलें, तेज आंखों से टपके॥

पग-दस्ताने पहन, हाथ चप्पल लटकाए।
हिप्पिन फीकी पड़े, शान्ति फैशन में आए॥

महदी से उबटन करें, पग शोभित सिंदूर।
हजुराइन शासन करें, हा-हा खाय हजूर॥
हा-हा खाय हजूर, होठ पर काजल काला।
हाथों की अगुली में, बिछुआ पहनें बाला॥
नथ कानों में घुसे, नाक पर झूले झूमर।
कंठ करधनी सजे, हार घुटनों के ऊपर॥

—फिल्मी सरकार : 1972

'फोरनर' बनाम फाइव नर

फर्स्ट क्लास की गैलरी, ट्रेन फ्रंटियर मेल।
पाँच छात्रगण जम गए, चला ताश का खेल॥
चला ताश का खेल, "आप घुस आए किसमें।
होंगे वे डिस्टर्ब, फोरनर लेटे इसमें॥"
लड़का बोला—"डरो नहीं, मिस्टर कण्डक्टर।
अगर फोरनर है वे, तो हम हैं 'फाइव नर॥"

—फिल्मी सरकार : 1972

फ्लू-दर्शन

इंटरव्यू में छात्र की, बुद्धि रहे थे नाप।
'फ्लू' क्या होता है, इसे बता सकेंगे आप॥
बता सकेंगे आप, उछलकर बोला लल्लू।
रगों में 'ब्लू', गर्मी में 'लू', पक्षी 'उल्लू'॥
नेताओं में हैं प्रसिद्ध, जैसे 'दलबदलू'।
उसी भांति रोगों में, भी इक होता है 'फ्लू'॥

—काका हाथरसी : 1975

बंदर के वाल्व

अस्पताल में पड़े थे, बाबा बेलनदास।
लेकर कुछ फल-फूल हम, पहुंचे उनके पास॥
पहुंचे उनके पास, झपट्टा ऐसा मारा।
फल गिर पड़े और कुर्ता, फट गया हमारा॥
खाकर हम पर तर्स, नर्स आई अन्दर से।
बोली—"इनके दिल में वाल्व लगे बन्दर के॥"

—काका के धड़ाके : 1969

बचत-योजना

बचत-योजना देखकर, बोले फक्कड़दास।
इससे ऊंची योजना, एक हमारे पास॥
एक हमारे पास, देख उन्नति की सीमा।
करवा एक लाख का, एक्सीडेण्टल बीमा॥
कह 'काका', बस एक किस्त, तू जमा करा जा।
किसी मिनिस्टर की, मोटर के नीचे आ जा॥

खुला हुआ चौपट मिले, स्वर्ग-लोक का गेट।
घरवाले हों लखपती, दें असीस भरपेट॥
दें असीस भरपेट, त्याग का ऊंचा दरजा।
रहे सुरक्षित रकम, वसीयत ऐसी कर जा॥
वह 'काका' प्रतिमास, चली आएगी घर से।
एक लाख की ब्याज स्वर्ग में, मनिआर्डर से॥

बजट की सनसनाहट

गजट देख घबरा गए, भरा बजट का पेट।
महंगी ज्यादा हो गई, चाय और सिगरेट॥
चाय और सिगरेट, दाम काफी के बाढ़े।
बतलाओ अब कैसे काटें, अगले जाड़े॥
कह 'काका' कवि, चाय और काफी क्यों पीओ।
नहीं सुरा पर टैक्स बढ़ा, वह पीकर जीओ॥

सचालक जी पीटते, सम्पादक की मेज।
अखबारों पर हो गया, ढाई गुन पोस्टेज॥

ढाई गुन पोस्टेज, कहो अब कैसे निपटें ?
दो पैसे की जगह, पाँच पैसे की टिकटें ॥
कह 'काका' कविराय, आपका क्या कर लेंगी ?
अधिक लगें जो टिकट, ग्राहकों पर चिपकेंगी ।

—काका कोला · 1968

बजट-वन्दना

धन्य धन्य मंत्री प्रभो, खुश कर डाला मुल्क ।
मैदा मोटे वस्त्र से, वापस लेकर शुल्क ॥
वापस लेकर शुल्क, शान्त हो गए विरोधी ।
निन्दा-आलोचना, एक भाषण मे धो दी ॥
सुन काका ! यह पूर्व नियोजित खेल किया था ।
प्रथम लगा कर, वापस लेना सोच लिया था ॥

—फिल्मी सरकार 1972

बदनाम शृ खला

रावण कंस प्रसिद्ध थे, हिटलर-नादिरशाह ।
ओडायर-चंगेज खां, ढेरों किए गुनाह ॥
ढेरों किए गुनाह, आप मानें ना मानें ।
इनसे ज्यादा नाम, उछाला यहिया खा ने ॥
भुट्टा भी मन ही मन, यही सोचते होंगे ।
नाम नहीं होगा तो क्या बदनाम न होंगे ?

—जय बोलो बेईमान की 1973

बनारसी साडी

कवि सम्मेलन के लिए, बन्यो अचानक प्लान ।
काकी के बिछुआ बजे, खडे है गए कान ॥
खड़े है गए कान—"रहस्य छुपाय रहे हो ।
सब जानू मैं आज बनारस जाय रहे हो ॥
काका' बनिकैं व्यर्थ, थुकायौ जग मे तुमने ।
कबहु बनारस की साडी, नहिं बांधी हमने ॥

'हे भगवन सौगन्ध मैं, आज दिवाऊँ नाहिं।
कबि पत्नी मत बनाइया, काहू जनम म माहिं॥
काहू जनम म माहिं रखें मतलब की यारी।
छोटी छोटी माग न, पूरी भई हमारी॥"
श्वास खींच कें, आंख मींच आंसू ढरकाए।
असनो गालन पै, नकली मोती लुढ़काए॥

शान्त है गयौ क्रोध तब, मारी हमने चाट।
"साडिन म खरचू सबहि, सम्मेलन के नोट॥'
'सम्मलन के नोट, हाय ऐसौ मत करिया।
खबरदार दो साडी सौं, जादा मत लइया॥
हैं बनारसी ठग प्रसिद्ध, तुम सूध-साधे।
जितने मागे दाम, लगइया वा सो आधे॥'

गाठ बाध उनके वचन, पहुचे 'चौक बाजार'।
दख्यौ एक दुकान पै, साडिन को अम्बार॥
साडिन कौ अम्बार, डिजाइन बीस दिखाए।
छोटी साडी एक, दाम अस्सी बतलाए॥
घरवारी की चेतावनी ध्यान म आई।
कर 'आधी कीमत', हमने 'चालीस' लगाई॥

दुकानदार कहिबे लग्यौ, 'लेनी हो तो लेउ।
माल तोल का छोड के, साठ रुपैया देउ॥
'साठ रुपैया देउ? जची नहिं हमको भैया।
स्वीकारो तौ दै दें, तुमकू तीस रुपैया?"
घटते-घटते जब, पचास पै लाला आए।
हमने फिर आधे करकें, पच्चीस लगाए॥

लाला कौ जरि-भुजरि कें, शान है गयो लुप्त।
मारी साडी फेंक कैं, लै जा मामा मुफ्त॥
लै जा मामा मुफ्त, कहै 'काका' सौं मामा?
लाला तू दूकानदार है, या पाजामा?
अपन सिद्धात पै 'काका', अडिग रहेंगे।
मुफ्त दय तौ एक नहीं, दो साडी लेंगे॥

भागे जान बचाय कें, दाव जेब में नोट।
आगें एक दुकान पै, देख्यौ साइनबोर्ड॥
देख्यौ साइन बोर्ड, नजर वा पै दौडाई।
"सूती साडी द्वै रुपया, रेशमी अढाई॥"
कह 'काका' कवि, यह दुकान है सस्ती कितनी।
वेचिगे हाथरस, लै चलो द्वै दे जितनी॥

भीतर घुसे दुकान में, बाबू आडर लेउ।
सौ सूती, सौ रेशमी, साडी हमकू देउ॥
साडी हमकू देउ, क्षणिक सन्नाटौ छायौ।
देख हमारी सूरत, दुकनदार मुसकायौ॥
"भाग छानकें आयौ है, का दाढी वारे?
लिखे बोर्ड पै 'ड्राइ-क्लीन' के रेट हमारे॥"

—फिल्मी सरकार : 1972

बम्बई की बानगी

'काका' आए बम्बई, अजब अनोखे ढंग।
कुछ का कुछ देखा यहां, अक्ल रह गई दंग॥
अक्ल रह गई दंग, लगाई हमने फेरी।
बिजली जली हुई थी, उसको कहें 'अंधेरी'॥
गए 'बादरा' औ, 'बोरी बन्दर' के अन्दर।
देखी दोनों जगह, न पाया कोई बन्दर॥

छोड निराशा को वहीं, पहुंचे 'ठाकुर द्वार'।
प्रभू कृपा से बच गए, हो जाती तकरार॥
हो जाती तकरार, एक सज्जन को रोका।
हमने पूछा—"क्यों भैया! तुम ठाकुर हो क्या?"
इतना सुन, उसकी आंखों में जली आग-सी।
बोला—"व्हाट ठाकुर! आइ एम ए पारसी॥"

फिर 'मनहर' जी ले गए, आगे हमें घसीट।
बोले काका देखिए, यह 'डाक्टर स्ट्रीट'॥
यह डाक्टर-स्ट्रीट, इधर से उधर घुमाए।
किसी डाक्टर और नर्स के, दर्स न पाए॥

कह 'काका' सब झूठा निकला, देखा जो भी।
है 'धोबी तालाब', वहां तालाब न धोबी।।

मार्केट जिस नाम का, नहीं मिली वह जिन्स।
गए 'प्रिन्स स्ट्रीट' में, मिला न कोई प्रिन्स।।
मिला न कोई प्रिन्स, यहां भी धोखा खाया।
हमें 'किंग सर्किल' में, कोई किंग न पाया।।
बम्बई वालो! जनता को क्यों बहकाते हो?
'रेस-कोर्स' को, 'महालक्ष्मी' बतलाते हो।।

कहें 'बाणगंगा' जिसे, धनुष मिला नहिं बाण।
'कालाघोडा' की जगह, घूम रहे थे सांड।।
घूम रहे थे सांड, 'तीन बत्ती' पर आए।
देख सैकड़ों बत्ती, 'काका' कवि चकराए।।
लिवा ले गए हमें, 'मिल्स कालोनी' वाले।
कहते 'गोरे गांव', खड़े थे भैंसा काले।।

इसी तरह सप्ताह भर, करते रहे रिसर्च।
'चर्च गेट' पर भी गए, मिला न कोई चर्च।।
मिला न कोई चर्च, खर्च टैक्सी में करके।
सोचा, 'लाइनगेट' शेर देखें, जी भर के।।
कह 'काका' कविराय, निराशा लेकर आए।
'लाइन' मिला न एक, भौंकते कुत्ते पाए।।

किसने रक्खे नाम ये, किसने किया प्रचार।
भिण्डी के दर्शन नहीं, है 'भिण्डी-बाजार'।।
है भिण्डी-बाजार, नाम रखते मनमाना।
पहुंचे 'नानाचौक' न पाए, नानी-नाना।।
कह 'ग्वालिया टैंक', वहां पर टैंक नहीं है।
'कैम्प्स कोर्नर' पर, कोई भी कैम्प नहीं है।।

और अनेकों जगह की, निकली गलत रिपोर्ट।
'फोर्ट' कहें जिसको सभी, वहां कहां है फोर्ट?
वहां कहां है फोर्ट, उदासी मन पर छाई।
देखा 'रानी बाग', न हमने रानी पाई।।

यह 'काका' कवि, धन्य बम्बई तेरी माया।
गए 'लुहार चाल' में, एक लुहार न पाया॥

है अमत्य ससार यह, रे मन मूरख चेत।
कहे 'खेतवाडी' जिसे, वहा न कोई खेत॥
वहा न कोई खेत, 'मराठा मन्दिर' आए।
नही मिले भगवान, फिल्म के मजनू पाए॥
कहलाता जो कपडे का, 'मार्केट स्वदेशी'।
बिकते देखे वहा, सैकडो थान विदेशी॥

बैठे लोकल ट्रेन मे, उठी हृदय मे टीस।
जगह एक सौ बीस की, भरे चार सौ बीस॥
भरे चार सौ बीस, मुसाफिर भटक रहे हैं।
कुछ बैठे, कुछ खडे और, कुछ लटक रहे हैं॥
कह 'काका' 'कल्याण' गए, जाकर पछताए।
नही हुआ कल्याण, व्यर्थ मे धक्के खाए॥

लौटे जब कल्याण से, सकट मे थे प्राण।
नोट खिंच गए हो गया, पाकिट का कल्याण॥
पाकिट का कल्याण, बीच मे देखा 'थाना'।
उतर पडे हमको, रिपोट करने को जाना॥
कह 'काका' टी० टी० बाबू ने, दाँत निकाले।
"थाना नहिं, यह स्टेशन है, दाढी वाले॥"

देख चुके जब बम्बई, मन मे उठा विचार।
कितनी लापरवाह है, महाराष्ट्र सरकार॥
महाराष्ट्र-सरकार, देखिए गजब कर दिया।
बिना गेट के पडा, 'गेट वे आफ इडिया'॥
कह 'काका' इसमे, किवाड चढवा दो राजा!
दुश्मन हमला करे, बन्द कर लो दरवाजा॥

—काका कोला : 1968

बम्बई में पानी की कमी

तीनों ओर समुद्र है, तथ्य सभी को ज्ञात।
फिर भी पानी की कमी, आश्चर्य की बात॥
आश्चर्य की बात, काम यह शीघ्र करा दो।
यू० पी० के सब चीनी-मिल, इसमें लुढ़का दो॥
सारी किल्लत मिटें, न इसमें कुछ हैरानी।
खारापन हो दूर, पीजिए मीठा पानी।

यह सुनकर कहने लगी, महाराष्ट्र सरकार।
काका ! इस प्रस्ताव पर, फिर से करो विचार॥
फिर से करो विचार, कृपा यह जगदीश्वर की।
सागर से ही शोभा है, बम्बई शहर की॥
बचा हुआ है तब तक, जब तक पानी खारी।
मीठा होते ही पी जाए, सब नर-नारी॥

—फिल्मी सरकार : 1972

बारात की दावत

चटनी चें-चें कर रही, सोंठ रही है ऐंठ।
खाना हो तो खाइए, उठी जात है पेंठ॥
उठी जात है पेंठ, चकाचक गरम कचौड़ी।
दालसेव, तिरकोन, मसालेदार पकौड़ी॥
कह 'काका' कविराय, मार पापड़ की मारी।
याद रहेगी हमें, आपकी खातिरदारी॥

रसगुल्ला तफरी करें, चन्द्रकला के संग।
यह नज़ारा देखकर, खीर रह गई दंग॥
खीर रह गई दंग, तैश लड्डू को आया।
बरफी बोली, हाय राम ! कलियुग की माया॥
कह 'काका' कविराय, जल गई बालूशाई।
रबड़ी ने सबको समझाकर, बात बनाई॥

समधिन बाकी सुन्दरी ! हेमामालिन मात।
निम्मी-सिम्मी शर्मिला, तुम्हें देख शरमात॥

तुम्हें देख शरमात, फूलो-फलो री देवी !
बनी रहो सौभाग्यवती, रसभरी जलेबी ॥
कह 'काका' कविराय, यही आशीष हमारी।
सोलह बिटिया होय, गोद भर जाय तुम्हारी ॥

—काका की कचहरी : 1946

बर्थ-कण्ट्रोल

यात्री बोले अकड़कर, इसका क्या है अर्थ !
लेट रहे हो घेरकर, चार सीट की बर्थ ?
चार सीट की बर्थ, आदमी खड़े हुए हैं।
आप मगर की तरह, मजे से पड़े हुए हैं ॥
कह 'काका' कवि, हल्ला सुनकर टी०टी० आया।
हमने लेटे-ही-लेटे, उसको समझाया ॥

"नेता सब चिल्ला रहे, पीट-पीटकर ढोल।
जितना भी तुम कर सको, करो 'बर्थ-कट्रोल' ॥
करो 'बर्थ-कट्रोल', अर्थ को समझो बाबू।
इसीलिए तो किया, बर्थ पर हमने काबू ॥
कह 'काका', उद्धार देश का कर जाऊंगा।
नहीं हटूंगा, इसी बर्थ पर मर जाऊंगा ॥

—दुलत्ती . 1961
—फुलझड़िया . 1963

बापू के तीन बंदर

बन्दर एक बता रहा, रख कर मुह पर हाथ।
"चुप्पी से बनते चतुर, औंधू-भौंधू नाथ ॥
औंधू भौंधू नाथ, सुनो साहब-सरदारो !
एक चुप्प से हार जाय, वाचाल हजारो ॥
'काका' करो इशारो से, 'स्मगिलग' का धधा।
गूगा बन कर छूट, तोड कानूनी फन्दा ॥"

दूजे बन्दर ने कहा, जो अब तक था शान्त।
"हमने भी अपना सखे ! बदल दिया सिद्धात ॥

बदल दिया सिद्धांत, कान पर रखो हथेली।
करने दो निन्दा, करते हैं चेला-चेली॥
अवसरवादी बनो, परिस्थिति देखो जैसी।
मन्त्री-पद के आगे, दल की ऐसी-तैसी॥"

बन्दर बोला तीसरा, करके आँखें बन्द।
"रिश्वत खाओ प्रेम से, भज राधे-गोविन्द॥
भज राधे-गोविन्द, माल उनका सो अपना।
वेद-शास्त्र कह रहे, जगत को जानो सपना॥"
डूब गया परमार्थ, स्वार्थ से भरा समदर।
समय देख कर बदल गए, 'बापू' के बन्दर॥

—काका के धड़ाके 1969

बाबा जी

बाबा जी को मौज है, बाँध लिया लंगोट।
काम नहीं आराम से, खाय मुफ्त के रोट॥
खाय मुफ्त के रोट, नहीं भोजन का टोटा।
धमकाने के लिए, धर्म का रखते सोटा॥
कहं 'काका' कविराय, सुनो बाबा की चेली।
सात जन्म का हाल, पूछ लो दिखा हथेली॥

पिल्ला • 1950

बालक-बुद्धि

थे पिकनिक के मूड में, चुन्नू-मुन्नू यार।
चले नहाने झील में, कुरते दिए उतार॥
कुरते दिए उतार, दृश्य यह देखा आकर।
आँधी, दोनों कुरतों को, ले गई उड़ाकर॥
चुन्नू बोला—"बच्चों को भगवान बचाते।
पहिने होते कुरते तो, हम भी उड़ जाते॥"

—जय बोलो बेईमान की : 1973

बाल-वर्ष, मनाओ सहर्ष

बाल-वर्ष है, 'बाल' का, ध्यान रखो इस साल।
होली जलने दीजिए, नहीं भूनिए बाल॥
नहीं भूनिए बाल, अपशकुन इसको जानो।
पंडित और बुजुर्गों की, यह आज्ञा मानो॥
इम्तहान में समय, कापियों को भरने दो।
बिना अक्ल, जो नकल करें उसको करने दो॥

रेलबजट की घोषणा, सुनी आ गया लुत्फ।
पांच वर्ष के शिशु करें, रेलयात्रा मुफ्त॥
रेलयात्रा मुफ्त, हुई यदि लम्बी दूरी।
बच्चों के संग, अभिभावक है बहुत जरूरी॥
मंत्री जी बस, इतनी कृपा और कर दीजे।
मम्मी-पापा को भी, कुछ कन्सेशन दीजे॥

गायक-वादक-एक्टर, कवि-शायर-कव्वाल।
बाल-वर्ष में कीजिए, सिर के लम्बे बाल॥
सिर के लम्बे बाल, बनें चेहरे की ब्यूटी।
छोटे हों या बड़े, निभाएं अपनी ड्यूटी॥
'काका' कवि की भांति, बन सब दाढ़ी वाले।
अकवि, हास्यकवि होय, खुलें किस्मत के ताले॥

महिला-वर्ष मना चुके, बाल-वर्ष यह वर्ष।
'बाप-वर्ष' अगला मने, पिता मनाएं हर्ष॥
पिता मनाएं हर्ष, सिलसिला रखना जारी।
सन इक्यासी 'वृद्ध-वर्ष' की, आए बारी॥
'काका' के विवाह की, होगी स्वर्ण-जयन्ती।
काकी नाचें, ट्विस्ट करेंगे पोते पन्ती॥

—काका की कचहरी 1979 के संस्करण में प्रकाशित

बीवी 'बॉस', बाबू 'दास'

रिश्वत दी, मक्खन मला, पूर्ण हुई तब आस।
अपने आफिस में बनी, अपनी बीवी 'बॉस'॥
अपनी बीवी 'बॉस', प्रगति का देखें सपना।
बाबू क्लर्कों पर हो जाए, काबू अपना॥

साथ-साथ सजधज कर, दोनों दफ्तर जाते।
कल के सभी विरोधी, आज सलाम झुकाते ॥

रखते थे जो दुश्मनी, बने हमारे फ्रेंड।
चाय-नाश्ता कराते, समझ बॉस-हसबेंड ॥
समझ बॉस हसबैंड, भाग्य ने धक्का खाया।
मगल ग्रह उड गए, पड गई शनि की छाया ॥
वे चमकें चपला-सी, हम पर रहे उदासी।
'जोरू का गुलाम', कहते बाबू-चपरासी ॥

मैडम के माइण्ड मे, बढता गया करेंट।
हमे ट्रीट करने लगी, वे अपना सर्वेन्ट ॥
वे अपना सर्वेन्ट, पिया पर तरस न खाती।
प्यास न होने पर भी, हमको डाट पिलाती ॥
दफ्तर मे वाइफ की, लाइफ बना रहे हैं।
घर पर आकर, बच्चे-बच्ची खिला रहे हैं ॥

—काका के कारतूस : 1963

बीस की टीस

कहते राजा-रक सब, तेरह-तीन कलक।
लेकिन मध्यप्रदेश को, अशुभ बीस का अक ॥
अशुभ बीस का अक, बीस ने किया सफाया।
बीस वर्ष ही काग्रेस-शासन, चल पाया ॥
कह 'काका' कविराय, बीस से बचना भैया।
बीस महीने मे डूबो, 'सविद' की नैया ॥

अक बीस की टीस से, ऐसा हुआ दिमाग।
बीस मार्च को ही किया, मुख्यमन्त्रि-पद-त्याग ॥
मुख्यमन्त्रि-पद-त्याग, बीस से रहना बचके।
अगले बीस माह मे, लगें बीसियो झटके ॥
कह 'काका' कवि, कुफल बीस का अबतक भोगा।
अगर चार सौ और जुड गए, तब क्या होगा ?

—काका के धडाके : 1969

बुढापे का विवाह

ब्याह बुढापे मे किया, मिली अनोखी जोट।
लाला जी है पिलपिले, लाली जी अखरोट ॥
लाली जी अखरोट, सिल रही उनकी चोली।
निगल रहे है लाला जी ! ताकत की गोली ॥
कह 'काका' फिर भी, करन्ट नही आया तन मे।
मार तमचा मर जाऊ, यह आई मन मे ॥

—पिल्ला : 1950

बुढ़ापे की खीज

अरे बुढापे बावरे, तू क्या देखै मोहि ?
पुनर्जन्म यौवन मिले, तब देखूगा तोहि ॥
तब देखूगा तोहि, उपेक्षा करते चाकर।
उत्तर देती बहू-बेटिया, मुह मटकाकर ॥
बैठक म बाबा, बच्चो को खिला रहे है।
या कुत्ता-बिल्ली को, डडा दिखा रहे हैं ॥

—जय बोलो बेईमान की : 1973

बुढापे की होली

होली पर हर साल ही, मन मे रहे मलाल।
साली कोई है नही, किसके मलै गुलाल ॥
किसके मलै गुलाल, तसल्ली कर लेते हैं।
काकी के बूढे गालो पर, मल देते हैं ॥
कह 'काका' कवि, जैसे भोजन के बिन थाली।
ऐसे ही साली बिन लगता, जीवन खाली ॥

—भोगा एण्ड योगा . 1980

बुढापे कौ प्यार

काकी जी कहिबे लगी, मन की खोल किवार।
पहिलें जैसौ अब नही, रह्यौ तुम्हारौ प्यार ॥
रह्यौ तुम्हारौ प्यार, देखि सिसकारी भरते।
हँस-हँस के बालन में, अगुरी फेरौ करते ॥
सुनिके उनके वचन, फुरफुरी आई तन में।
फेरि दई अगुरी, उनकी बूढ़ी जुल्फन में ॥

बोली सैन चलाइ, क्यों ढोंग दिखाओ व्यर्थ।
असली-नकली प्यार कौ, समझूं हूं मैं अर्थ॥
समझूं हूं मैं अर्थ, खवाती हलुआ जा दिन।
वाह-वाह कहि, पीठ ठोकते मेरी वा दिन॥
कह 'काका', देवी जी, गलती भई हमारी।
लाओ, आज इकट्ठी ठोकें, पीठ तुम्हारी॥

फुल पावर से पीठ पै, मार्‌यौ हमने हाथ।
ज्यों डनलप की पर्थ पे, पड़ी गधा की लात॥
पड़ी गधा की लात, खोलिके मुंह कौ फाटक।
बोली—"रहन देउ यह रीतौ-थोथौ नाटक॥
याद करौ वह दिना, मिसमिसी तुमने मारी।
दाँत गड़ाय, कर दई, दागी बांह हमारी॥"

यह सुन 'काका' चल दिए, रखिबे उनकौ मान।
कहिबे लगी कि का भयौ, कहां चले श्रीमान॥
कहां चले श्रीमान, व्यर्थ सरमाय रहे हौ।
हँसी-हँसी की बात, रूठि के जाइ रहे हौ॥
"रूठे ना हैं, बाहु प्यार कूं आनी दिखावै।
दाँत गुसलखाने में हैं, उनकूं लै आवें॥"

—काका हाथरसी : 1975

बेकारी

बेकारी में खाट पर, लगा रहे हैं लोट।
मन न लगा तो छत्त की, गिनने लागे सोट॥
गिनने लागे सोट, राज जब आया अपना।
गेहूं-चीनी-दूध, हो गया हमको सपना॥
कह 'काका', जै हिन्द नहीं लेते अब 'नक्कू'।
आप कर रहे मौज, चल रहा हम पर चक्कू॥

—पिल्ला : 1960

बेचारा अध्यापक

कौन जन्म के हुए प्रभु, उदय हमारे पाप।
अध्यापक बन, कर रहे, प्रायश्चित चुपचाप ।।
प्रायश्चित चुपचाप, छात्र जीवन जब पाया।
हुई तनिक-सी भूल, गुरु का डडा खाया ।।
पिटना जारी है, अध्यापक बनते-बनते।
तब गुरु से पिटते थे, अब चेलो से पिटते ।।

—काका के धड़ाके : *1969*

बेनज़ीर-छक्के

बेनज़ीर दुख्तर मिली, वाह ! पाक-सरकार।
बेनज़ीर शिमला हुई, बेनज़ीर बाज़ार ।।
बेनज़ीर बाज़ार, गज़ब का देखा आलम।
बेनज़ीर से रगे गए, अखबारी कालम ।।
बेनज़ीर दिन, बेनज़ीर था भीड-भडक्का।
बेनज़ीर थे, माल रोड पर धक्कमधक्का ।।
खीचा जिस दूकान ने, बेनज़ीर का ध्यान।
बेनज़ीर मानी गई, शिमला की दूकान ।।
शिमला की दूकान, ज़रूरत क्या नज़ीर की ?
जो किताब ली बेनज़ीर ने, बेनज़ीर थी ।।
बेनज़ीर 'पाकीज़ा' का, वह बेनज़ीर 'शो'।
स्पेशल करके दिखलाया, बेनज़ीर को ।।

—जय बोलो बेईमान की : *1973*

बेनज़ीर 'मीना'

मीना ! तेरी याद म, सीना है गमगीन।
तू दुनिया से दूर है, कैसे करें यकीन ?
कैसे करें यकीन, कला का डला ले गई।
रजो गम से भरा, पिटारा हमे दे गई ।।
बेनज़ीर भुट्टो को, 'पाकीज़ा' दिखलाया।
खुद को भूली, बेनज़ीर तुझको बतलाया ।।

—जय बोलो बेईमान की : *1973*

बैंगन-गुण-गान

निर्विकार, निर्वसन हो, रहते नग-धडग।
'टुनटुन'-जैसा अग है, 'कामराज'-सा रग॥
कामराज-सा रग, सब्जियो के तुम नेता।
इसीलिए तो हरा मुकुट, सिर शोभा देता॥
तुमको चाहें, गायक-वादक-फिल्मी वाला।
रफी-लता - निम्मी, सिम्मी - वैजतीमाला॥

ब्रह्मचर्य-व्रत धारकर, रहे कुवारे आप।
मूली देवी से किया, शुद्ध प्रेम निष्पाप॥
शुद्ध प्रेम निष्पाप, निभाते नीति धर्म है।
मूली का ठडा मिजाज तो, आप गर्म हैं॥
कह 'काका' कवि, जब तुम दोनो घुल-मिल जाते।
'एअर कडीशड' साग का, स्वाद दिखाते॥

सब्जी-मण्डी मे रही, सदा आपकी धाक।
भिण्डी-गाजर-तोरई, बैंगन पर मुश्ताक॥
बैंगन पर मुश्ताक, टमाटर हा-हा खाए।
टिण्डे कद्दू-मटर-चुकन्दर, चरण दबाए॥
कह 'काका' कवि, बथुआ-पालक हैं किस लायक?
शाक-सब्जियों के तुम, होल-सोल सचालक॥

सर्व गुणो की खान हो, श्रीयुत बैंगन देव।
तुम्हे देख ईर्ष्या करें, आम-सन्तरा-सेव॥
आम-सन्तरा-सेव, फ्रूट या फल कहलाते।
छै-छै महीने 'शीतजेल' मे, रक्खे जाते॥
'फल' की इच्छा का विरोध करती है गीता।
बैंगन से लव करती, विश्वसुन्दरी 'रीता'॥

टापलैस पोशाक म, आई सजकर सेम।
इठला कर कहने लगी, हम बना लो मेम॥
हम बना लो मेम, आपने ली उबकाई।
फिर भी वह सौन्दर्य, मानिनी बाज न आई॥
तब तुमने कर डाली, उसकी सूरत ऐसी।
लक्ष्मण ने कर दी थी, शूर्पणखा की जैसी॥

आलू-अरवी आपके, चरणों की है धूल।
पहले से ही 'फूल' है, वह गोभी का फूल॥
वह गोभी का फूल, करेला होता कड़ुआ।
करे धर्म का ढोंग, व्यर्थ काशीफल भड़ुआ॥
हीरे का क्या मूल्य, जौहरी ने ही जाना।
'काका' एवं 'वरुआ' ने, तुमको पहिचाना॥

—काका कोला : 1968

बोगस फिल्म-कम्पनी

धन्धा मन्दा हो रहा, जमे न कोई रंग।
घरवाली टें-टें करे, महगाई से तंग॥
महगाई से तंग, कला का गला दबाओ।
विज्ञापन की चोट मारकर, नोट कमाओ॥
कर्म-धर्म-ईमान छोड़, मि० धमधूसर।
इल्मी हो या न हो, बनो फिल्मी प्रोड्यूसर॥

फर्जी अर्जी मार कर, दाबो ऐसा फ्लैट।
चम-चम चमकें कुर्सियां, टेबिल-सोफा-सैट॥
टेबिल-सोफा-सैट, आधुनिक मजनूं लैला।
'इन्टरव्यू' देने को आए, छैली-छैला॥
फीस झपटकर, नाम रजिस्टर कर लो सारे।
आशावादी डोरी में, लटकें बेचारे॥

पिक्चर साइन हो गई, मचा रहे थे शोर।
जीरो जी, हीरो बने, नाच उठा मन-मोर॥
नाच उठा मन-मोर, डेट शूटिंग की आई।
दफ्तर खाली, भाग गए प्रोड्यूसर भाई॥
निकली बोगस फिल्म-कम्पनी, धक्के खाए।
नोट गवाए, लौट के बुद्धू घर को आए॥

(1981)

बोतल मे मक्खी

नौ-नौ आसू रो रहे, धर्म-कर्म ईमान।
भारत की रक्षा करो, दीनबन्धु भगवान॥
दीनबन्धु भगवान, बर्फ की तोडी सिल्ली।
उसके अन्दर निकली, मरी हुई छिपकल्ली॥
कह 'काका' कविराय, उछलकर बोली कक्की।
'हाय! दूध की सीलबन्द, बोतल मे मक्खी॥

—काका की फुलझड़ियां 1965

ब्लैकिस्ट

अजगर करे न चाकरी, पछी करे न काम।
चाचा मेरे कह गए, कर बेटा आराम॥
कर बेटा आराम ब्लैक मे जो कुछ जोडा।
बैठा-बैठा चाट, उसीको थोडा-थोडा।
कह 'काका', खा हवा फैन की ठडी-ठडी।
स्पेशल मे देख सिनेमा, लेकर रडी।

—पिल्ला 1950

भंग की तरंग

तथ्य न पाया पान मे, सिगरट मे नहि सार।
लस्सी, लेमन, चाय, सब गईं भग से हार॥
गई भग से हार, न भावे कोकाकोला।
मुरा गई शरमाय, भग का देखा गोला।
कह 'काका', जो औंधा हुआ न गहरी पीकर।
उस प्राणी ने जीवन व्यर्थ, गवाया जीकर।

—काका के कहकहे 1966

भंगाष्टक

हरिद्वार के खेत मे, गधा चर रहा घास।
कुछ पौधे थे भग के, उसी घास के पास॥
उसी घास के पास, भग ने मारा ताना।
"मेरे पास क्यो नही आते, गदहे नाना?"

बोले गर्दभराज—"भंग जो पीता-खाता।
वह इंसान नहीं रहता, गदहा बन जाता॥
घास छोडकर यदि मैं, तुझसे नेह लगाऊं।
सम्भव है गदहे से भी, बदतर हो जाऊं॥"

—फिल्मी सरकार : 1672

भागलपुर-भ्रमण

मित्र-गोष्ठी का मिला, भागलपुर से तार।
'अपर इण्डिया' ट्रेन मे, 'काका' हुए सवार॥
काका हुए सवार, 'किऊल' जकशन आए।
फर्स्ट क्लास मे, सोलह विद्यार्थी घुस आए॥
प्लेटफार्म पर देखें, टी० टी० मिस्टर चिब्बा।
हमने कहा कि चैक कीजिएगा, यह डिब्बा॥

बाबू जी कहने लगे, हमसे यों चुपचाप।
"इन लडको से क्या हमे, पिटवाएगें आप?
पिटवाएगे आप, चलें जैसे, चलने दो।
तनुखा लेकर हमे, पेट अपना भरने दो॥"
कह 'काका', तिगुना खर्चा करके पछताए।
टिकट फर्स्ट का, लेकिन फोर्थ क्लास मे आए॥

शाम घूमने के लिए, गए 'खलीफा बाग'।
न तो खलीफा जी मिले, और न कोई बाग॥
और न कोई बाग, बहुत पछताए जाकर।
कुछ थे चूडीवाले, कुछ थे फोटोग्राफर॥
हमे देख इक दुकानदार ने, मारा ताना।
"चूडी ले जाओ, दाढीवाले मौलाना॥"

सोचा हमने देर तक, करके आखें बन्द।
चूडी का कुछ भी नहीं, दाढी से सम्बन्ध॥
दाढी से सम्बन्ध, यहा से पिंड छुडाया।
फिर रिक्शे मे चढे, 'नया बाजार' दिखाया॥
घिसा-पिटा यह नाम, कई शहरो मे पाते।
बहुत पुराना उसे, 'नया बाजार' बताते॥

इससे आगे और भी मिला विरोधाभास।
घुसे 'कचौडी-गली' मे, मन हो गया उदास॥
मन हो गया उदास, व्यर्थ ही इसमे आए।
कहे कचौडी गली, पराठे विकते पाए॥
उसे छोडकर चले, 'लाजपत-पार्क' दिखाया।
वहा लाजपत जी का, नाम-निशान न पाया॥

गलत नाम देखे सभी, हुआ हृदय को रज।
कपडे का बाजार है, कहते 'सूजागज'।
कहते सूजागज, फुरफुरी मन मे आई।
तितली थी 'मसूरगज' मे, रगी रगाई॥
भागलपुर वालो! किस दुनिया मे रहते हो?
ऐरोड्रम है, उसको 'रेसकोर्स' कहते हो॥

—काका कोला . 1968

भात बनाम भत्ता

देख अजगरानन्द का, लम्बा-चौडा रूप।
हाथ जोड हमने कहा, हे निष्काम स्वरूप॥
हे निष्काम स्वरूप, निछावर तुम पर जन-मन।
किस चक्की का पिसा हुआ, खाते हो भगवन्?
सुन 'काका' कविराय, पकड सत्ता का पत्ता।
दाल-भात को त्याग, प्रेम से खाओ भत्ता॥

—काका की फुलझडियां : 1965

भारतीय कलाकार

कला-कला चिल्ला रहा, मालूम है परिणाम?
कब-कब कितनी बार हो, कलाकार का नाम?
कलाकार का नाम, चमक दो दिन दिखलाता।
पुरस्कार पाता, अखबारो मे छप जाता॥
पुनः दूसरी बार, याद वह आता है तब।
अत समय मे मृत्यु-सूचना, छपती है जब।

—चिन्मी सरकार : 1972

भाषा-विधेयक

हिन्दी से होने लगा, अंगरेजी का युद्ध ।
वापिस करीं उपाधियाँ, हुए विद्वजन क्षुब्ध ॥
हुए विद्वजन क्षुब्ध, मिली सब नाम कमाया ।
लौटाईं तब उससे भी, दुगुना यश पाया ॥
देख दृश्य यह, उबल पड़े मिस्टर खरदूषण ।
'कामराज' को पहना दो, यह सब 'आभूषण' ॥

चले सीना तानकर, 'कडधम डगडम' दास ।
सभी टापते रह गए, हुआ विधेयक पास ॥
हुआ विधेयक पास, साथ 'जयचन्द' हमारे ।
तब तक अड़ियल नीति, देश से टरें न टारें ॥
खुशखबरी लन्दन वाले, डैडी को भेजी ।
हिन्दी, हारी, जीत गई मम्मी अंगरेजी ॥

मद्रासी मामा अभी, और खा रहे ताव ।
शीघ्र लाएँगे केन्द्र में, एक नया प्रस्ताव ॥
एक नया प्रस्ताव, एकता का सर फोड़ें ।
भारत-भू पर 'द्रविडस्तान', बनाकर छोड़ें ॥
कह 'काका' कवि बोले, पाव मियाँ रमजानी ।
हटे हिन्द से, हिन्दी-हिन्दु-हिन्दुस्तानी ॥

—काका कोला 1968

भूत महंगाई का

दिन-दिन बढ़ती है उधर, जातिवाद की छून ।
इधर गरीबी ला रहा, महंगाई का भूत ॥
महंगाई का भूत, लूट होती है दिन में ।
रेल और बस लुटें, *व्याप्त है भय जन-गण में* ॥
भ्रष्ट मुनाफाखोर, अर्थ पर डालें डाका ।
देख रहे हैं टुकुर-टुकुर सत्ता के काका ॥

—काका के कारतूस 1963

भूमि-भवन-कर

गुप्ता जी क्या कर गए, यह रहस्य मत पूछ।
रस निचोडकर ले गए, उन्हें दे गए छूछ॥
उन्हें दे गए छूछ, पूछ शासन की पकडी।
तब से ही 'उत्तर प्रदेश' में झगडा-नगडी॥
कह 'काका' कवि, पुरुषों में दलबन्दी भारी।
इसलिए इन पर, शासन करती है नारी॥

भूमि भवन-कर लग गया, जय हो कृपानिधान।
चिल्लाते ही रह गए, लाला और किसान॥
लाला और किसान, दोहरी मार लगाई।
इधर किराय बढे, उधर बाढी महगाई॥
कह 'काका' कविराय, नहीं इनसे डर सकते।
अनशन या हडताल प्रदर्शन, क्या कर सकते?

—काका की फुलझड़िया 1965

मंत्री पद की लूट है···

मंत्री पद की लूट है, लूट सके तो लूट।
अन्तकाल पछताएगा, प्राण जाएगे छूट॥
प्राण जाएगे छूट, मेज पर रक्खे पेपर।
बदल पार्टी, इस्तीफा पर कर सिगनेचर॥
कह 'काका' कवि, स्वतन्त्रता का लाभ उठाओ।
राष्ट्रध्वजा फहरा करके, फोटो खिचवाओ॥

लगे खुजाने खोपडी, श्रीयुत घोटमघोट।
तरस रहा क्यों बावरे, बरस रहे है नोट॥
बरस रहे हैं नोट, देख कलियुग का नाटक।
तिकडम की चाभी से, खोल भाग्य का फाटक॥
उल्टी बहने लगे, ज्ञान-गगा की धारा।
धर्म-कर्म को छोड, पी गई चुटिया पारा॥

कोठी, बगला, कार लखि, मनुआ लेत हिलोर।
आंधी के ये आम हैं, दोनों हाथ बटोर॥

दोनों हाथ बटोर, 'विधायक' भाग्य-विधाता।
बुद्धिमान श्रीमान, बने बुद्धू मतदाता॥
'काका' सरकारी चद्दर, चमकाय मुकद्दर।
भाग जाएँगे सात पुश्त के, दुख-दारिद्दर॥

—काका कोला : 1968

मंत्री-पुत्र

रसगुल्ले सब खा लिए, और मिठाई छोड़।
मम्मी से कहने लगा, मुन्ना नाक सिकोड़॥
मुन्ना नाक सिकोड़, सख्त हैं लड्डू ऐसे।
तुम्हीं बताओ मम्मी, इनको तोड़ूँ कैसे?
"तोड़ लिए तेरे पापा ने, चार विधायक।
तुझसे लड्डू नहीं टूटता है, नालायक?"

—काका के धड़ाके 1969

मंद्र सप्तक के कवि

बन ठन, रस में सने, आए श्री नवनीत।
श्रोताओं तक आपका, पहुँच न पाया गीत॥
पहुँच न पाया गीत, पंक्तियाँ फिर दुहराईं।
जनता से ऊँची-नीची, आवाजें आईं॥
हमने कवि से कहा—"शोर पर ध्यान न धरिए।
आप 'मन्द्र सप्तक' के कवि हैं, धीरे पढ़िए।"

—फिल्मी सरकार 1972

मई मीमांसा-1969

स्वामी मच्छरदास से, बोले मक्खीचूस।
बाबा! बारह मास में, 'मई' मास मनहूस॥
मई मास मनहूस, राष्ट्रपति गए हमारे।
यही माह था, जब नेहरू जी स्वर्ग सिधारे॥
इसी महीने आन्ध्र-राज्य में, बाढ़ आ गई।
तेलंगाना सनक, सैकड़ों जान खा गई॥

स्वामी जी कहने लगे, दोनों पहलू देख।
सिर्फ अँधेरे पक्ष का, क्यों करता उल्लेख?

क्यों करता उल्लेख, विश्व पर धाक जमाई।
एवरेस्ट पर विजय, मई-महिने मे पाई॥
चमत्कार अद्भुत, देखा इस साल मई मे।
देख। 'अपोलो' दस ने, किया कमाल मई मे॥

—काका के धक्के 1969

मक्खन-महिमा

रे मनुआ ! मन-मथन कर, गा मक्खन के गीत।
चोटी पर चढ़ना चहै, सेवन कर नवनीत॥
सेवन कर नवनीत, टोस्ट पर रख-चख लेना।
फिर भी बाकी बचे, लगाने को रख लेना॥
राजनीति के केस, हजारो देखे-भाले।
सन्त्री से मन्त्री बन जाते, मक्खन वाले॥

बात आज की छोडिए, कलियुग है घनघोर।
द्वापर मे मशहूर थे, मोहन माखनचोर॥
मोहन माखनचोर, कथावाचक बतलाते।
माखन के मिस, मिस ललिता के घर घुस जाते॥
कृष्ण-भक्ति से भरा, 'सूरसागर' है पूरा।
मोहन को मक्खन मल, अमर हो गए 'सूरा'॥

रघुपति राघव राम या, जयजय सीताराम।
यह धार्मिक मक्खन हुआ, जानें भक्त तमाम॥
जानें भक्त तमाम, साक्षी है रामायण।
नर की छोडो बात, रीझ जाते नारायण॥
शास्त्रीय यह शोध, न समझो हलकी-फुलकी।
राम-नाम मक्खन से, मोक्ष पा गए तुलसी॥

आफिशियल बटरिंग का, जिनको है अभ्यास।
काम करें या ना करें, खुश रहता है बॉस॥
खुश रहता है बॉस, बुद्धि का खोलो ढक्कन।
छुरी छोड मलना सीखो, 'चमचा' से मक्खन॥
कह 'काका' दफ्तर जाओ, अथवा मत जाओ।
जिस दिन तनखा बटे, नोट गिनकर ले आओ॥

व्यापारी कब चूकते, लग जाता जब दाव।
महगा मक्खन कर दिया, जब-जब हुए चुनाव॥
जब-जब हुए चुनाव, खपत ज्यादा बढ़ जाती।
जनता जब नेता जी से, मक्खन लगवाती॥
भूतपूर्व मन्त्री वोटर को, बटर लगाते।
पाच वर्ष तक चल जाए, इतना मल जाते॥

राजनीति को छोडकर, आगे दीजे ध्यान।
मक्खन ने पैदा किए, कवि, लेखक, विद्वान॥
कवि लेखक विद्वान, पक्ति मे बडे-बडे है।
दूधनाथ जी अभी, वही के वही पडे है॥
तेलचद, घीलाल बिचारे, यू ही मर गए।
माखनलाल चतुर्वेदी जी, नाम कर गए।

कवि 'निराश' जी किसलिए, बैठो हो चुपचाप?
सम्पादक जी को लिखो, पत्र पोलशन छाप॥
पत्र पोलशन छाप, न रूखी रचना भाए।
खेद सहित, चिट फिट होकर, वापिस आ जाए॥
जिस रचना पर थोड़ा-सा, मक्खन चिपकाया।
फौरन स्वीकृत हुई, और मनीआर्डर आया॥

कवि-सम्मेलन होय जब, यत्र-तत्र-सवत्र।
चिकनी भाषा मे लिखो, सयोजक को पत्र॥
सयोजक को पत्र, तजुर्बा है यह हमका।
उत्तर आए या ना आ, तुम जाए धमको॥
हूट हो गए तो भी, अपना क्या जाएगा?
पत्र-पुष्प से युक्त, लिफाफा मिल जाएगा॥

—फिल्मी सरकार : 1972

मक्खीमार आन्दोलन पर

चल मनुआ दिल्ली चलें, करें देश-उद्धार।
तन-मन धन अर्पण करें, यही धर्म का सार॥
यही धर्म का सार, और कर्तव्य हमारा।
आन्दोलन चल रहा, वहा पर मक्खीमारा।

कह 'काका' कवि, टक्कर मार रहा आत्मिक बल।
हमें जल्द-से-जल्द, राजधानी तू ले चल॥

मक्खी मारे नित्य जो, दया न मन में लाय।
वह नर इस कलिकाल में, बिनु प्रयास तर जाय॥
बिनु प्रयास तर जाय, पुण्य यह सबसे सस्ता।
इस सुकृत्य से मिले, स्वर्ग का सीधा रस्ता॥
कह 'काका' कवि, माला जपना छोड़ो झक्की।
सुबह एक सौ आठ, नियम से मारो मक्खी॥

मक्खी से ही क्या गरज, चाहे जिसको मार।
'अजर-अमर है आत्मा', यह गीता का सार॥
यह गीता का सार, व्यर्थ तू क्यों रोता है?
हे अर्जुन! जो मैं कहता हूं, सो होता है॥
कह 'काका' कवि, पीस अहिंसा की चक्की से।
रे अज्ञानी! मोह कर रहा, क्यों मक्खी से?

—काका के कारतूस 1963

मतदाता-परिचयपत्र

होंगे आम चुनाव जब, यत्र तत्र सर्वत्र।
मतदाताओं को मिलें, फोटो परिचय-पत्र॥
फोटो परिचय-पत्र, मुखौटे चार मंगाओ।
अलग-अलग शक्लों के, फोटो चार खिंचाओ॥
चार नाम से वोट, आपके चार पड़ेंगे।
इस युक्ती से शकधर भी, शक नहीं करेंगे॥

—काका के कारतूस · 1963

मद्य-निषेध

नेता जी के वास्ते, खड़ी द्वार पर कार।
भाषण 'मद्य निषेध' पर, नहीं हुआ तैयार॥
नहीं हुआ तैयार, जोर तो बहुत लगाया।
कोई न्यू प्वाइंट, खोपड़ी में न समाया॥
'काका' जब दो-चार, पिये व्हिस्की के प्याले।
भाषण सुनकर, झूम उठे सब सुनने वाले॥

—काका की कचहरी : 1946

मध्यावधि स्वप्न

देवी जी कहने लगी—"सुनो चौधरी साब !
पार पडेगी किस तरह, इस चुनाव की नाव ?
इस चुनाव की नाव, कभी आहे भरते हो।
और कभी सोते-सोते, बड-बड करते हो।।"
"जगा दिया, सब गुड गोबर कर डाला तुमने।
प्रधान मंत्री का पद, प्राप्त किया था हमने।"

—फिल्मी सरकार : 1972

मन की मौज

मन मे आए सो करो, बकता रहे समाज।
सुनते रहिए प्रेम स, आत्मा की आवाज।।
आत्मा की आवाज, व्यर्थ है दारू-बन्दी।
स्वराज्य मे भी, खाने-पीने पर पाबन्दी ?
अपना शासन है तो फिर, अनुशासन कैसा ?
उछल रहा पाकिट मे, दो नम्बर का पैसा।।

छोडो पक्ष-विपक्ष को, नोट करो यह लक्ष्य।
सदा रहेगा एक ही, जन्मजात अध्यक्ष।।
जन्मजात अध्यक्ष, नही इस्तीफा देगा।
पुनर्जन्म मे भी, वह ही अध्यक्ष बनेगा।।
अपनी डिक्टेटरशिप, अपनी 'मोनोपोली'।
हुकम उदूली करे, मार दो उसको गोली।।

झडा हमे न चाहिए, क्या इसका उपयोग।
झडा से डडा बडा, कहते दादा लोग।।
कहते दादा लोग, जिए बन करके काटा।
जो न तुम्हारी सुने, खींच कर मारो चाटा।।
तोड शान्ति की टाग, क्रान्ति का बिगुल बजाओ।
कम्यूनिज्म से चार कदम, आगे बढ जाओ।।

नेता ऐसा चाहिए, जिसका गर्म दिमाग।
जिसने जितनी बसो मे, लगवाई हो आग।।

लगवाई हो आग, खोपडी कितनी फाडी ?
किसने कितनी रेलों की, पटरिया उखाडी ?
इन शुभ कर्मों म जो, फर्स्ट डिवीजन लाए।
वह हमारी पार्टी का, नेता बन पाए॥

'शहरी-सम्पत्ति' प्लान पर, शीघ्र दीजिए ध्यान।
बाबू काबू मे करो, कुछ दूकान-मकान॥
कुछ दूकान-मकान, सेठ जी मार्गे जितना।
कर लीजे स्वीकार, किराया देंगे उतना॥
प्रश्न सामने आया, यह मकान है किसका?
नारा होगा—जो रहता मकान है उसका॥

भारतीय गणतन्त्र मे, देखो नये प्रयोग।
उच्च कोटि की सीट पर, निच्च कोटि के लोग।
निच्च कोटि के लोग, बहाए उल्टी गगा।
एसेम्बलि मे टिवस्ट करेंगे, मिस्टर नगा॥
सभी 'ओल्ड' कानून, 'मोल्ड' करके धर देंगे।
पति-पत्नी का भी, राष्ट्रीयकरण कर देंगे॥

—फिल्मी सरकार : 1972

मनहूस सप्ताह मे बम्बई-यात्रा

बैठे गाडी मे तभी, चिल्लाया अखबार।
कैनेडी पर कर दिया, ओसवाल्ड ने वार॥
ओसवाल्ड न वार, बम्बई मे पग धारे।
मुख्यमन्त्री हुए उसी दिन, प्रभु के प्यारे॥
कह 'काका' फिर, ओसवाल्ड रूबी ने मारा।
मारधाड से हृदय, धडकने लगा हमारा॥

इस चक्कर मे हो गए, नष्ट सभी प्रोग्राम।
यह हफ्ता मनहूस है, जान बचाओ राम॥
जान बचाओ राम, 'मूड' सब ऑफ हो गया।
पॉकिट मे जो नामा था, वह साफ हो गया॥
कह 'काका', पजाब मेल के बोले ताऊ।
दस रुपये दो तो, स्लीपर मे सीट दिलाऊ॥

मंसूरी-क्वीन

वहुत दिनों से मच रहा, संसद में यह द्वंद्व।
राजाओं के जल्द ही, प्रिवीपर्स हों बंद॥
प्रिवीपर्स हों बन्द, चली आपस में चर्चा।
अब कैसे चल सके, हमारे शाही खर्चा?
राजा-रानी ने मिल करके, स्कीम बनाई।
चलो देवियो! मसूरी पर करो चढ़ाई॥

दंग रह गए देखकर, मसूरी का सीन।
जिस होटल में देखिए, नाच रही है क्वीन॥
नाच रही हैं क्वीन, शराब उलीच रही हैं।
नम्बर दो के नोट, धड़ाधड़ खींच रही हैं॥
घटिया सूरत 'मेकअप' से, बन जाती बढ़िया।
दिन की बुढ़िया शक्ल, रात में लगती गुड़िया॥

—काका के धड़ाके : 1969

मंसूरी-यात्रा

देवी जी कहने लगीं, कर घूंघट की आड़।
"हमको दिखलाए नहीं, तुमने कभी पहाड़॥"
तुमने कभी पहाड़, हाय तकदीर हमारी।
इससे तो अच्छा, मैं नर होती, तुम नारी॥"
कह 'काका' कविराय, जोश तब हमको आया।
मानचित्र भारत का, लाकर उन्हें दिखाया॥

देखो इसमें ध्यान से, हल हो गया सवाल।
यह शिमला, यह मसूरी, यह है नैनीताल॥
यह है नैनीताल, यहीं घर बैठे-बैठे।
दिखला दिए पहाड़, बहादुर हैं हम कैसे?
कह 'काका' कवि, चाय पियो औ' बिस्कुट कुतरो।
पहाड़ क्या है, उतरो चढ़ो, चढ़ो, फिर उतरो॥

यह सुनकर वे हो गईं लड़ने को तैयार।
मेरे पल्ले में पड़े, तुमसे मर्द हजार॥

तुमसे मर्द हजार, मुझे समझा है बच्ची।
बहका लोगे, कविता गढ़कर झूठी-सच्ची।।
कह 'काका' भयभीत हुए, हम उनसे ऐसे।
अपराधी हो कोतवाल के, सम्मुख जैसे।।

आगा-पीछा देखकर करके सोच-विचार।
हमने उनके सामने, डाल दिए हथियार।।
डाल दिए हथियार, आज्ञा सिर पर धारी।
चले मसूरी, रात्रि देहरादून गुजारी।।
कह 'काका' कविराय, रात-भर पडी नहीं कल।
चूस गए सब खून, देहरादूनी खटमल।।

सुबह मसूरी के लिए, बस में हुए सवार।
खाई खदक देखकर, चढ़ने लगा बुखार।।
चढ़ने लगा बुखार, ले रही वे उबकाई।
नींबू चूरन-चटनी, कुछ भी काम न आई।।
कह 'काका', वे बोलीं—"दिल मेरा बेकल है।"
हमने कहा—"पति से लड़ने का यह फल है।।"

उनका 'मूड' खराब था, चित्त हमारा खिन्न।
नगरपालिका का तभी, आया सीमा-चिह्न।।
आया सीमा-चिह्न, रुका मोटर का पहिया।
लाओ टैक्स, प्रत्येक सवारी डेढ़ रुपैया।।
कह 'काका' कवि, हम दोनों हैं एक सवारी।
आधे हम हैं, आधी अर्धाङ्गिनी हमारी।।

बस के अड्डे पर खड़े, कुली पहनकर पैण्ट।
हमें खींचकर ले गए, होटल के एजेण्ट।।
होटल के एजेन्ट, पड़े जीवन के लाले।
दोनों बाहें खींच रहे, दो होटल वाले।।
एक कहे, मेरे होटल का भाड़ा कम है।
दूजा बोला, मेरे यहां 'फ्लश-सिस्टम' है।।

हे भगवान ! बचाइए, करो कृपा की छाह ।
ये उखाड़ ले जाएगे, आज हमारी वाह ॥
आज हमारी वाह, दौडकर आओ ऐसे ।
तुमने रक्षा करी ग्राह से, गज की जैसे ॥
कह 'काका' कवि, पुलिस-रूप धरके प्रभु आए ।
चक्र सुदर्शन छोड, हाथ मे हटर लाए ॥

रख दाढी पर हाथ, हम देख रहे मजबूर ।
रिक्शेवाले ने कहा, आदावर्ज हुजूर ॥
आदावर्ज हुजूर, रखू बिस्तरा टोकरी ।
मसजिद मे दिलवा दू तुमको मुफ्त कोठरी ॥
कह 'काका' कवि, क्या बकता है गाडीवाले ।
सभी मिया समझे है, तुमने दाढ़ीवाले ?

चले गए अगरेज, पर छोड गए निज छाप ।
भारतीय सस्कृति यहा, सिसक रही चुपचाप ॥
सिसक रही चुपचाप, बीबिया घूम रही हैं ।
पैण्ट पहनकर 'मालरोड' पर, झूम रही हैं ॥
कह 'काका', जब देखोगे लल्लू के दादा ।
धोखे मे पड जाओगे, नर है या मादा ?

बीबी जी पर हो गया, फैशन-भूत सवार ।
सडे को साडी वधी, मडे को सलवार ॥
मडे को सलवार, बॉबकट बाल देखिए ।
देशी घोडी, चलती इगलिश चाल देखिए ॥
कह 'काका', फिर साहब ही, क्यो रह अछूते ।
आठ कोट, दस पैण्ट, अठारह जोडी जूते ॥

भूल गए निज सभ्यता, बदल गया परिधान ।
पाश्चात्य रग मे रगी, भारतीय सन्तान ॥
भारतीय सन्तान, रो रही माता हिन्दी ।
आज सुहागिन नारि लगाना भूली बिन्दी ॥
कह 'काका' कवि, बोलो बच्चो डैडी-मम्मी ।
माता और पिता कहने की, प्रथा निकम्मी ॥

मित्र हमारे मिल गए, कैप्टिन घोड़ासिंग।
खींच ले गए 'रिंक' में, देखो स्केटिंग॥
देखो स्केटिंग, हृदय हम मसल रहे थे।
चम्पो के संग मिस्टर चम्पू, फिसल रहे थे॥
काकी बोली—"क्यों जी, ये किसतरह लुढ़कते।
चाभी भरी हुई है, या बिजली से चलते?'

खट्टे-मीठे-चरपरे, अनुभव हुए अनेक।
आई अपने सामने, विकट समस्या एक॥
विकट समस्या एक, भयंकर थी महँगाई।
लूट रहे दुकानदार, होटल हलवाई॥
कहँ 'काका' कवि, दो रुपये के पाव टमाटर।
चार रुपये का किलो, दूध में आधा वाटर॥

हलवाई कहने लगा, फेर मूँछ पर हाथ।
दूध और जल का रहा, आदिकाल से साथ॥
आदिकाल से साथ, कौन इससे बच सकता?
मसूरी में, खालिस दूध नहीं पच सकता॥
सुन 'काका', हम आधा पानी नहीं मिलाएँ।
पेट फूल, दस-बीस यात्री नित मर जाएँ॥

हाथ जोड़ हमने कहा, लाला जी तुम धन्य।
जीवन-भर करते रहो, इसी कोटि के पुण्य॥
इसी कोटि के पुण्य, नाम भारत में पाओ।
बिना टिकट, वैकुण्ठ धाम को सीधे जाओ।
कहँ काकी ललकार—"अरे, यह क्या ले आए?
बुद्धू हो तुम, पानी के पैसे दे आए?"

पानी कहते हो इसे, तुम कैसी नादान?
यह, 'मसूरी-मिल्क' है, जानो अमृत समान॥
जानो अमृत समान, अगर खालिस ले आते।
आज शाम तक हम दोनों, निश्चित मर जाते॥
कहँ 'काका', यह सुनकर, और चढ़ गया पारा।
गर्म हुईं वे, हृदय खौलने लगा हमारा॥

उनका मुखड़ा क्रोध से, हुआ लाल तरबूज।
और हमारी बुद्धि का बल्ब हो गया फ्यूज॥
बल्ब हो गया फ्यूज, दूध है अथवा पानी।
यह मसला गभीर बहुत है, मेरी रानी॥
कह 'काका' कवि, राष्ट्रसघ मे ले जाएगे।
अथवा इसपर, 'जनमत-सग्रह' करवाएगे॥

चीनयुद्ध-सा छिड़ गया, बढ़ने लगा तनाव।
लालबुझक्कड़ आ गए, करने बीच-बचाव॥
करने बीच-बचाव, खोल निज मुह का फाटक।
एक साम मे सभी, दूध पी गए गटागट॥
कह 'काका' यह न्याय देखकर काकी बोली।
"चलो हाथरस, मसूरी को मारो गोली॥"

—काका की फुलझड़ियां · 1965

मस्त गृहस्थ

विधवाएं क्यों बढ़ रही, क्या है इसका राज?
दोषी है इसके लिए, अपन रीति-रिवाज॥
अपन रीति-रिवाज, नीति यह कैसी भोंडी।
वर की आयु, वधू से रखें सवाई-ड्योढ़ी॥
पति जी होकर वृद्ध, ईश्वर के घर जाते।
वेगुनाह सन्नारी को, विधवा कर जाते॥

बदलो नियम समाज के, हो सबको हितकारि।
तीस वर्ष का युवक हो, तीस वर्ष की नारि॥
तीस वर्ष की नारि, रहे जीवन-भर सधवा।
नर हो जाए विधुर, न होगी नारी विधवा॥
सूरत-मूरत ऐसी हो, जैसे चामुडा।
छेड नहीं सकता, उसे कोई भी गुडा॥

रह सकती है अकेली, वह घर मे दिन रैन।
अम्मा जैसी नारि से, कौन लडाए नैन॥
कौन लडाए नैन, सेक्स की चले न चर्चा।
बचे लिपस्टिक, और क्रीम-पाउडर का खर्चा॥

समझदार पति, सुन्दर पत्नी से घबराए।
रखवाली करने पर भी, भवरे भन्नाए॥

और दूसरा फायदा, नोट करें श्रीमान।
अधेड पत्नी के नही, अधिक होय सन्तान॥
अधिक होय सन्तान, न समझो बात हँसी की।
नही लूप की चिन्ता, और न नसबन्दी की॥
बच्चो के पालन-पोषण से, राहत पाओ।
बिना खर्च परिवार-नियोजन, सफल बनाओ॥

उदय हुए उस व्यक्ति के जनम-जनम के पाप।
युवती पत्नी स बना दस बच्चो का बाप॥
दस बच्चो का बाप, दर-बदर ठोकर खाए।
कन्या की शादी का, कर्ज मागने जाए॥
कह 'काका' यदि चाहो, कम्पलीट आजादी।
क्वारे रहिए, या करिए बुढिया से शादी॥

ससद मे भिजवाएगे, 'काका' यह सब्जैक्ट।
नया एक्ट बनवाएगे, तोड 'शारदा एक्ट'॥
तोड शारदा एक्ट, करे सब घर पर काबू।
बडी बहू के बडे भाग्य, होते है बाबू॥
कह 'काका', शिक्षा-विभाग मे कर एप्लाई।
मिल जाए मिस बडी, उमर की पढी-पढाई॥

बेकारी से व्यर्थ ही, घबरा रहे हजूर।
सर्विस वाली लाइए, होय गरीबी दूर॥
होय गरीबी दूर, उन्हे भेजो दफ्तर मे।
चौका-बर्तन करो, खिलाओ बच्चे घर मे॥
बनकर पत्नीव्रती, सदा खुश रक्खो उनको।
चपरासी का पद, दिलवा सकती है तुमको॥

अमरीकन करते नही, नियमो की परवाह।
नवयुवको से वहा पर, बुढिया करें विवाह॥

बुढ़िया करें विवाह, नहीं निन्दा से डरती।
दत्तक पति की भांति, उसे अपने घर रखती ॥
कह 'काका', पाश्चात्य सभ्यता की यह ब्यूटी।
व्यक्ति एक, दे रहा पुत्र-पति दोनों ड्यूटी ॥

—जय बोलो बेईमान की : 1973

महंगाई

जन-गण-मन के देवता, अब तो आंखें खोल।
महंगाई से हो गया, जीवन डावाडोल ॥
जीवन डावाडोल, खबर लो शीघ्र कृपालु।
कलाकन्द के भाव, बिक रहे बैंगन-आलू ॥
कह 'काका', कवि, दूध-दही को तरसें बच्चे।
सवा रुपे के किलो टमाटर, वह भी कच्चे ॥

राशन की दूकान पर, देख भयंकर भीर।
'क्यू' में धक्का मारकर, पहुंच गए बलबीर ॥
पहुंच गए बलबीर, ले लिया नम्बर पहिला।
खड़े रह गए निर्बल-बूढ़े, बच्चे-महिला ॥
कह 'काका' कवि, करके बन्द धरम का काटा।
लाला बोले—"भागो, खतम हो गया आटा ॥"

हाथ पेट पर फेरकर, बोले नेता एक।
गेहूं, चावल छोड़कर, खाओ बिस्कुट-केक ॥
खाओ बिस्कुट-केक, अक्ल से समय काटिए।
दूध नहीं मिलता तो, आइस-क्रीम चाटिए ॥
'काका' क्यों फंस रहे, व्यर्थ राशन-दलदल में।
सब झंझट को छोड़, करो भोजन होटल में ॥

—काका की फुलझड़ियां . 1965

महंगाई का टोकरा

बीड़ी का कश खींचकर, बोले राम नरेश।
हारा पाकिस्तान औ' जीता बंगला देश ॥
जीता बंगला देश, हाथ किसके क्या आया ?
श्री मुजीब ने, प्रधानमन्त्री का पद पाया ॥

इंदिरा की यश कीर्ति, पताका जग फहराई।
भुट्टो खा बन गए, राष्ट्रपति गद्दी पाई॥
तुमने काका! कविता लिख-लिखकर क्या पाया?
"हमने? महगाई से भरा, टोकरा पाया॥

—जय बोलो बेईमान की 1973

महगाई-कुंडली

पाकिट मे पीडा, भरी, कौन सुने फरियाद?
यह महगाई देखकर, वह दिन आते याद॥
वह दिन आते याद, जेब म पैसे रखकर।
सौदा लाते थे बाजार से, थैला भरकर॥
धक्का मारा युग ने, मुद्रा की क्रेडिट मे।
थैले म रुपये हैं, सौदा है पाकिट म॥

—जय बोलो बेईमान की 1973

महगाई क्यो?

जब तक सेफो म भरे, दो नम्बर के नोट।
तब तक जनता पर पड, महगाई की चोट॥
महगाई की चोट, व्यर्थ है सारी कोशिश।
नित्य नई हडतालो के, आते हैं नोटिस॥
उत्पादन कम, व्यय ज्यादा, फिर दगमदगा।
ले जाएगी कहां, हम यह उल्टी गगा?

—काका हाथरसी 1975

महगाई बनाम फैशन

नाइलोन की शर्ट पर, टेरेलिन की पैन्ट।
'ठल्लू क्लब' का हो गया, लल्लू प्रेसीडैन्ट॥
लल्लू प्रेसीडैन्ट, पिता जी खाए चक्कर।
गृहिणी मागे—नून, तेल, घी, चावल, शक्कर॥
कह 'काका' कविराय, भली आजादी आई।
फैशन बाढी उधर, इधर बाढी महगाई॥

—काका के कहकहे 1966

महावीर

करू आपकी वन्दना, महावीर भगवान।
गाधी जी को आपसे, प्राप्त हुआ था ज्ञान॥
प्राप्त हुआ था ज्ञान, अहिंसा के बलबूते।
भारत-भू से भगा दिए, सब हिंसक कुत्ते॥
स्वतन्त्रता मिलन का, यदि विश्लेषण करिए।
तो यह श्रेय जैन-मैनो को, जाना चाहिए॥

वैज्ञानिक चिल्ला रहे, यत्र तत्र-सर्वत्र।
अणुबम का भी बाप, अब बने कौन सा अस्त्र?
बने कौन-सा अस्त्र, प्रश्न काकी स पूछा।
महावीर का अस्त्र, अहिंसा सबस ऊचा॥
इराक या ईरान, अमल कुछ इस पर करते।
तो क्या आपस म दोनो लड-लडकर मरत॥

—काका के कारतूस *1963*

महिला-वर्ष

एवरेस्ट नारी चढी, खडे हो गए कान।
'पत्नी पीडित' डर गए, क्या होगा भगवान?
क्या होगा भगवान, हौसला और बढ गया।
रक्षा करिए नाथ, करेला नीम चढ गया॥
सार्थक महिला वर्ष, किया जापानी माई।
बदल जाय अब, तुलसी बाबा की चौपाई॥
नारी क नहिं आज्ञाकारी।
वे नर ताडन क अधिकारी॥

—काका हाथरसी *1975*

माँ का दूध

प्रश्न कर रहे क्लास म, मास्टर व्यकट राउ।
गुण माता के दूध म, क्या क्या हैं बतलाउ॥
क्या क्या हैं बतलाउ, तभी बोला इक बच्चा।
बिना उबाले इसको, पी सकते हैं कच्चा॥

मदर मिल्क से, 'मदर-मिल्क' होता पावरफुल ।
इसमें चीनी नहीं, डालनी पड़ती बिल्कुल ॥
आखिर में बोली, छोटी-सी लड़की पिल्ली ।
मम्मी जी का दूध, नहीं पी सकती मिल्ली ॥

—काका हाथरसी : 1975

माओ 'फ्लू'

ढांचा बिगड़ा शहर का, फ्लू के देखा ठाट ।
ऐसा बिरला घर मिले, जिसमें बिछी न खाट ॥
जिसमें बिछी न खाट, पड़े हैं भाभी-भैया ।
चक्कर में आ गईं आज, लल्ला की मैया ॥
कहं 'काका' कविराय, फूंकते चूल्हा चाचा ।
दो दिन में ही बिगड़ गया, मूछों का ढांचा ॥

कीड़ा फ्लू का तनक-सा, गहरी इसकी मार ।
लेकर साथ जुकाम को, आया तेज बुखार ॥
आया तेज बुखार, साथ में सूखी खांसी ।
ऐसा मालुम होय, गले में डाली फांसी ॥
कहं 'काका' कविराय, हो रही सिर में पीड़ा ।
निश्चय ही घुस गया, मगज में फ्लू का कीड़ा ॥

गोली ऐस्प्रो की दईं, गेरू के संग पीस ।
दर्द बन्द जब हो गया, मांगन लागे फीस ॥
मांगन लागे फीस, दवा यह नई बनाई ।
नये डाक्टर ने 'लाला' पर, धाक जमाई ॥
कहं 'काका' कविराय, भरी तिकड़म की झोली ।
दो आने में बनी, चार रुपये की गोली ॥

बीमारी में देत सब, अपनी-अपनी राय ।
'काका' ने बतला दिया, हमको एक उपाय ॥
हमको एक उपाय, दालचीनी ले आओ ।
तुलसी, अदरख, मिर्च मिलाकर, चाय बनाओ ॥
कहं 'काका' कवि, इस नुसखे को सब अजमाओ ।
'माओ फ्लू' के साथ, भस्म हो जाए माओ ॥

—हंसगुल्ले 1969

माता

गृहिणी खटिया पर पड़ी, व्याकुल घर के लोग।
मुह पर दाने-से उगे, समझ न पाए रोग॥
समझ न पाए रोग, वैद्य तत्काल बुलाया।
इनके माता निकली है, उसने समझाया॥
कह 'काका' कविराय, धन्य-रे-धन्य विधाता।
मांगी पत्नी, किन्तु भेज दी तुमने माता॥

—काका के कहकहे : 1966

मायाराम

दिन दूनी बढ़ने लगी, जोड़-तोड़ की होड़।
स्वारथ ने सिद्धान्त का, दिया झोपड़ा फोड़॥
दिया झोपड़ा फोड़, मिल गए अधिक दाम।
मिस्टर 'आयाराम' बन गए 'गयाराम' जी।
काका, बढ़ते-बढ़ते, ऊंचे दाम हो गए।
'गयाराम' कुछ दिन में, 'मायाराम' हो गए॥

—काका कोला : 1968

मार के चमत्कार

जीवधारियों को मिले, भिन्न-भिन्न हथियार।
स्वार्थ-सुरक्षा के लिए, करने सभी प्रहार॥
करने सभी प्रहार, मार के भेद बताए।
कैसे, किसको, कौन मारता यह समझाए॥
काका, तोप-तमंचा, बर्छी-भाले, डंडे।
इनसे भी ऊंचे होते हैं, कुछ हथकंडे।

हाथी मारे सूंड़ से, सांड मारता सींग।
नाऊ मारे उस्तरा, चाऊ मारे डींग॥
चाउ मारे डींग, केहरी मारे पंजा।
रीछ मारकर थप्पड़, करे खोपड़ा गंजा॥
'काका', चुपके-से बोला चपरासी भैया।
एम० एल० ए०, बैठे बैठे मारें भत्ता॥

चपरकनाती मारते, मीठी-मीठी बात।
बन्दर घुड़की मारता, गधा मारता लात।।
गधा मारता लात, सुधारक मारें चन्दे।
इस धन्धे से, मारें मौज हज़ारों बन्दे।।
कह 'काका', रिक्शो ने मारे तागे वाले।
स्वर्ण-नियत्रण ने, सुनार जख्मी कर डाले।।

पत्नी ताना मारती, बिजली मारे शाट।
टेलर कपड़ा मारता, जेलर मारे डाट।।
जेलर मारे डाट, चौकड़ी भूलें पापा।
पाकिट पर जिस समय, मारती मम्मी छापा।।
'काका' करके, रजिस्टरों की उल्टा-उल्टी।
चतुर प्रकाशक, लेखक की मारें रायल्टी।।

अफसर मारे कलम से, हटर थानेदार।
रडुआ को घायल करे, पायल की झंकार।।
पायल की झंकार, बचे खाड़ो का मारा।
किन्तु नही बच सके, नैन-बाणो का मारा।।
'काका', दफ्तर म साहब, हस्ताक्षर मारें।
छुट्टी के दिन घर मे, बीवी से सर मारें।।

कलाकार निकले विकट, कविवर श्री बेचैन।
देकर आटोग्राफ वे, मार ले गए पैन।।
मार ले गए पैन, मलाई मारें नेता।
डे-लाइट मे ब्लैकमनी, मारें अभिनेता।।
'काका' कवि टकराए, चाय पिलाकर शुष्कम्।
मार ले गए सयोजक जी, पत्रम्-पुष्पम्।।

नायक कुहनी मारता, गायक मारे तान।
भुट्टो शेखी मारता, गप्प मारता 'डान'।।
गप्प मारता डान, शेख जी मारें मक्खी।
सीमा पर झख मारें, पाकिस्तानी झक्की।।
'काका', चकमा देकर, दुश्मन चोट मारता।
वोट डालने के दिन, वोटर नोट मारता।।

सर्प मारता फुड़ली, बिच्छू मार डंक।
धूर्त परीक्षक मारता, विद्यार्थी के अंक॥
विद्यार्थी के अंक, किन्तु वे नहीं हारते।
मौका पाकर इम्तहान में, नकल मारते॥
कहँ 'काका', अधकचरे वैद्य, मारते रोगी।
रोट मुफ्त के मारें, रंगे रंगाए जोगी॥

'टिकट' मारते तिकड़मी, मन को मारें नेक।
चील झपट्टा मारती, ड्राइवर मारे ब्रेक॥
ड्राइवर मारे ब्रेक, दक्षिणा मारे पंडित।
नहीं मिले तो सिद्ध कार्य को, कर दें खंडित॥
कहँ 'काका' कवि, माल सिद्ध साधक जी मारें।
पारिश्रमिक लेखक का, सम्पादक जी मारें॥

सदाचार पर दे रहे, भाषण सत्यकुमार।
लम्बी रिश्वत मारकर, लेते नहीं डकार॥
लेते नहीं डकार, कार्करी मारे छैला।
कन्ट्रेक्टर मारे, सीमेन्ट सैकड़ों थैला॥
कहँ 'काका' कविराय, चल रही मारामारी।
स्रष्टा में भी तीर, मारते भ्रष्टाचारी॥

ज्ञानी मारे मोह को पानी मारे आग।
सूम सेठ को मारता, इन्कमटैक्स विभाग॥
इन्कमटैक्स विभाग करें जो हाजी-हाजी।
पीठ पिछाड़ी, वही मारते देखे भाजी॥
कहँ 'काका' कवि बल्लेबाज मारते छक्के।
बस कंडेक्टर मुसाफिरों में मारें धक्के॥

टी० टी० मारे टकटकी, सीटी मारे गार्ड।
मिस कौलर ने कौलकर, मारे डाक्टर वार्ड॥
मारे डाक्टर वार्ड उड़े अक्कल की बक्कल।
प्रेमी के जब रुष्ट प्रेमिका मार चप्पल॥
कहँ काका' कवि, 'प्यार मार से मत घबराओ।
उनकी चरण पादुका, मिले अमर हो जाओ॥

—काका के कहकहे 1966

माला-महिमा

फिल्म-क्षेत्र में उस समय, हुआ विकट विस्फोट।
'माला' के माले मिले, बीस लाख के नोट॥
बीस लाख के नोट, खोट क्या उसका भाई?
बचत-योजना को, कहते हो ब्लैक-कमाई?
कह 'काका' कविराय, दया मम्मी पर आई।
दावे साढ़े चार लाख, पर दाव न पाई॥

माला फेरत जुग गया, अब क्यों करता देर।
हरि की माला छोड़कर, धन की माला फेर॥
धन की माला फेर, तजुर्बा देखो लाला।
नोटों का अम्बार, लगा देती है 'माला'॥
कह 'काका' कविराय, होय जब देखा-भाली।
कह देना, खो गई सा'ब लॉकर की ताली॥

जिनके दर्शन के लिए, लगती भीड़ अपार।
वे ही चक्कर काटते, 'साहब' के घर-द्वार॥
साहब के घर-द्वार, न जिसकी फटी बिवाई।
क्या जानेगा वह, बेचारा पीर पराई॥
कह 'काका' मुरझाए, चेहरे प्यारे-प्यारे।
हाय! सितारों के भी, गिरने लगे सितारे॥

—काका की फुलझड़ियां : 1965

मिट्टी का शेर

चुपके से मुंह ढक लिया, घुस आए जब चोर।
डर के मारे तनिक भी, किया न हमने शोर॥
किया न हमने शोर, ले गए टाला-माला।
पर लिहाफ से बाहर हमने, मुंह न निकाला॥
कह 'काका' कविराय, दरोगा जी घर आए।
लिखा दिया यह—'जान बच गई लाखों पाए॥'

—काका की फुलझड़ियां : 1965

मिनिस्टरी का नुस्खा

छात्र प्रशंसा-पात्र वह, जो 'दादा' कहलाय।
दादा से 'नेता' बने, तोड़-फोड़ अपनाय ॥
तोड़-फोड़ अपनाय, पढ़ाई में क्या रक्खा ?
मारा-मारा फिरे, व्यर्थ खाएगा धक्का ॥
बहुत हुआ तो बन जाए, प्रोफेसर, अफसर।
यदि नेता बन गया, शीघ्र हो जाय मिनिस्टर ॥

—काका के धड़ाके : 1969

मिलावट 1964-65

मनसुखलाल मुनीम से, बोले कुशल किशोर।
मेल-मिलावट के लिए, व्यर्थ मच रहा शोर ॥
व्यर्थ मच रहा शोर, जानते सब विज्ञानी।
हाइड्रोजन-ऑक्सीजन मिल, बनता पानी ॥
कह 'काका' कविराय, शहद में गुड़ का शीरा।
पहुँचाता है लाभ, गोंद में मिला कतीरा ॥

वेद-शास्त्र सबने यही, तथ्य किया स्वीकार।
मिलकर माया-ब्रह्म यह, सृष्टि हुई तैयार।
सृष्टि हुई तैयार, विधाता स्रष्टाचारी।
शब्द बिगड़कर यही, हो गया भ्रष्टाचारी ॥
कह 'काका' कर रहे, मिलावट की क्यों निन्दा ?
चलने दो व्यापार, भजो राधे गोविन्दा ॥

कपट-कम्पनी ने किए, पैदा पन्द्रह लाख।
मिला मिला सीमेंट में, फिफ्टी फिफ्टी राख ॥
फिफ्टी-फिफ्टी राख, साख को लगा न धक्का।
क्योंकि चढ़ाते रहे, बड़े साहब पर छक्का।
कह 'काका', क्या करे, अगर बिल्डिंग फट गई।
फर्म कर दिया खत्म, मुनाफा सभी बट गई ॥

कभी घूस खाई नहीं, किया न भ्रष्टाचार।
ऐसे भोंदू जीव को, बार बार धिक्कार ॥

बार-बार धिक्कार, व्यर्थ है वह व्यापारी।
माल तोलते समय, न जिसने डंडी मारी।।
कहं 'काका', क्या नाम पाएगा ऐसा बन्दा ?
जिसने किसी संस्था का, न पचाया चन्दा।

—काका की फुलझड़ियाँ : 1965

मिस और मिस्टर

मिसमिसाय साहब कहे, मिस्टर मिसरीलाल।
किस 'मिस' के लव में हुए, किसमिस जैसे गाल।।
किसमिस जैसे गाल, लुटा बैठे सब माया।
सूख-सूख कर हुई, छुहारे जैसी काया।।
कहं 'काका' कविराय, इश्क की छोड़ो घिस-घिस।
मिस की मिसिल करा देगी, सरविस से डिसमिस।।

—काका के कहकहे : 1966

मिस मंसूरी

माल रोड पर देखिए, मस्त नशीली चाल।
स्लीव-लैस बुश्शर्ट पर, बीटल जैसे बाल।।
बीटल जैसे बाल, प्यार से पूछा हमने।
क्यों बेटा ! यह ड्रैस कहां, सिलवाया तुमने ?
हो करके नाराज, लगाई उसने झिड़की।
हमने लड़का समझा था, वह निकली लड़की।।

—काका के धड़ाके : 1969

मुफ्तखोर

माल मुफ्त दिल बेरहम, कैसे जान बचाए ?
जिधर देखिए उधर ही, मुफ्तखोर मिल जाए ?
मुफ्तखोर मिल जाए, न्याय-दर्शन है कैसा ?
इन पर लागू हो, कोई कानून न ऐसा।।
यदि थोड़ी-सी भी उदारता, आप दिखाए।
चीज भाड़ में गई, आपको भी ले जाए।।

टैस्ट मैच जब चल रहा, आए प्रात:काल।
ट्रांजिस्टर को ले गए, बाबू किरकिट लाल।।

बाबू किरकिट लाल, मांगने पहुंचे जब हम।
कहन लगे कि यार ! बड़े बेसब्री हो तुम ॥
चीज जरा-सी, इतना शोर मचा रखा है।
कविता लिखिए आप, मंच मे क्या रखा है ॥

काव्य-गोष्ठी जम रही, टपक रही थी बूंद।
छाता लेकर चल दिए, प्रोफेसर अमरूद ॥
प्रोफेसर अमरूद, तकाजा भेजा घर पर।
"आप रात लाए थे, वह छाता दे दो सर ॥
जीभ हिलाई 'सर' ने, लेकर एक उबासी।
अभी ले गया है, उसको कल्लू चपरासी ॥

कल्लू खा कहने लगे, सुनिए बरखुरदार।
छाता हमसे ले गया, चुन्ना चौकीदार।
चुन्ना चौकीदार, हमारा सीना धड़का ॥
पता लगा — स्कूल ले गया उसका लडका।
तान मोडकर, मूठ तोडकर वापिस लाया।
फिर भी हमने छाता, छाती से चिपकाया ॥

सुबह डाकखाने गए, देने टेलीग्राम।
रोनी सूरत मे मिले, मिस्टर मुफ्तीराम ॥
मिस्टर मुफ्तीराम, मर गई है माता जी।
तार लिखूगा, जरा पैन देना काका जी ॥
शब्दो की शुमार म, था जब ध्यान हमारा।
पैन जेब मे खोस, कर गए आप किनारा ॥

ले रखा है आपने, घर पर टेलीफोन।
मुफ्तखोर बातें करें, साधे रहिए मौन ॥
साधे रहिए मौन, पडौसी धर्म निभाए।
आधी रात जगाकर, ट्रककाल कर जाए ॥
पैसे मागो तो 'काका', कजूस कहाओ।
गाठ कटाओ, अथवा टेलीफोन कटाओ ॥

काका बैठे ट्रेन म, लेकर 'हिन्दुस्तान।
उठा ले गए बर्थ से, उसे एक श्रीमान ॥

उसे एक श्रीमान, मुफ्तखोरी मे माहिर।
उनसे झपट ले गया, कोई और मुसाफिर ॥
इससे उसपर, उससे उसपर, उससे उसपर।
गायब था अखबार, न जाने पहुचा किसपर ?

फोकट जी कहन लगे, चार पुस्तकें दाब।
हास्य - व्यग्य मे आपका, 'काका' नही जवाब ॥
काका नही जवाब, इन्हे घर पर देखूगा।
हल्ला मच जाए, वह आलोचना लिखूगा ॥
आशावादी बने हुए, हम टाप रहे हैं।
पत्र - पत्रिकाओं के पन्न, चाट रहे है ॥

तीन महीने बाद हम पहुचे उनके पास।
आलोचक जी व्यस्त थे, खेल रहे फल्लास ॥
खेल रहे फल्लास, देखकर बोले हमको।
गजब हो गया काका ! क्या बतलाए तुमको ॥
लगे हुए थे हम कविता की, 'तुकबन्दी' मे।
वाइफ ने पुस्तकें, बेच डाली रद्दी मे ॥

ज्ञानी गुनिजन कह गए, निज जीवन का सार।
पत्नी - पुस्तक - लेखनी, कभी न देउ उधार।
कभी न देउ उधार, नही वापिस आ पाए।
यदि आए भी तो, खराब होकर आए ॥
रक्षा सभव है, डाकू - बरजोर - चोर से।
लेकिन बहुत कठिन है, बचना मुफ्तखोर से ॥

अब न किसीको देंय कुछ, पक्का किया विचार।
साले का 'मनमाड' से, मिला जवाबी तार ॥
मिला जवाबी तार, भेजिए जल्दी सिस्टर।
हमने उत्तर दिया, नही भेजेंगे मिस्टर ॥
'काकी' को दे दे उधार, तो कैसे जीए।
जले दूध के, फूक-फूककर मट्ठा पीए ॥

—जय बोलो बेईमान की : 1973

मुफ्त रस

टिल्लू जी घर से चले, एक रुपैया दाब।
हलवाई से पूछते, रसगुल्ले क्या भाव?
रसगुल्ले क्या भाव, रुपे के चार मिलेंगे।
रस जितना चाहोगे, उतना फ्री दे देंगे॥
टिल्लू जी ने कहा—"सुनो हलवाई भइये!
रसगुल्ले तुम रखो, हमें केवल 'रस' चहिए॥"

—काका के धड़ाके : 1969

मुर्गी या अण्डा

तर्क-शास्त्रियों से मिले, किया विश्व का टूर।
किन्तु न अब तक हो सकी, शंका अपनी दूर॥
शंका अपनी दूर, थके पंडित आचारी।
सर्वप्रथम पृथ्वी पर, नर आया या नारी॥
कह 'काका' कवि, प्रथम पार्टी बनी कि झंडा।
मुर्गी पहले आई, अथवा आया अण्डा?

—काका की फुलझड़ियां : 1965

मुर्दों में रोमांच

खतरे का भोंपू बजा, हो जाओ तैयार।
घुसना चाहे कच्छ में, मगरमच्छ मक्कार॥
मगरमच्छ मक्कार, अहिंसा देवी बोली।
आज्ञा मैं दे रही, मार दो उसको गोली॥
कह 'काका' कवि, ज्ञान जगा अज्ञान खो गया।
मुर्दे हिलने लगे, उन्हें रोमांच हो गया॥

—काका के कहकहे : 1966

मुंह के मुहाविरे

(२० छन्द, ६० मुहाविरे)

लक्खो लाला ने लिया, भुक्खो से 'मुंहफेर'।
कर्जा लेने के लिए, आ जाता हर बेर॥
आ जाता हर बेर, भले ही कुछ मत दीजे।
किन्तु सेठ जी! 'सीधे मुंह', बातें तो कीजे॥

खुले लाटरी मेरी तो, सच्चा हो सपना।
'मुह पर पैसा मार', करू 'उजला मुह' अपना ॥१॥

'मुह लटकाए' जा रहे, लटकन लाल दलाल।
हमने पूछा—क्या हुआ, क्यो है पतला हाल ॥
क्यो है पतला हाल, कहू क्या तुमसे काका।
राशनवाला, खुद राशन पर डाले डाका ॥
बोरे चिने हुए, चीनी के देखो जाकर।
लेकिन साफ मना कर देता, 'मुह बिचकाकर' ॥२॥

'एक दाम' के बोर्ड से, सजी हुई दूकान।
'मुह मे सोना' डालकर, बैठे है श्रीमान ॥
बैठे हैं श्रीमान, कसम गगा की खाते।
दस की है जो चीज, बीस की उसे बताते ॥
मूल्य बढ़ाकर लाभ, ले रहे महगाई का।
'झूठे मुह' पर 'लगा मुखौटा', सच्चाई का ॥३॥

बाथ रूम के फर्श पर, फिसल गए शशिकात।
कुहनी-घुटने छिल गए, टूट गए कुछ दाँत ॥
टूट गए कुछ दाँत, पकड कर रिक्शा भागे।
आ-आकर 'मुह फाड दिया', डाक्टर के आगे ॥
मुसकाया डैन्टिस्ट, बन्द यह फाटक करिए।
बैठी हैं महिला मरीज, मत आहे भरिए ॥४॥

होली खेलन को चले, कुछ हुरियारे ज्वान।
धुत्त नशे मे गा रहे, गन्दे-गन्दे गान ॥
गन्दे-गन्दे गान, बढी आगे को टोली।
'मुह-सिकोड़' कुलवधू, कड़ककर उनसे बोली ॥
खबरदार, जो हाथ लगाया तुमने मुझसे।
'मुह पर डालू आग', भाग जाओ 'मुह-झुरसे' ॥५॥

हलवाई के सामने, सजे मिठाई थाल।
'मुह मे पानी' आ रहा, देख चकाचक माल ॥
देख चकाचक माल, नही पाकेट मे कौडी।
बरफी-पेडा-खुरचन, खस्ता गरम कचौडी ॥

कह 'काका' कवि, 'मुह से लार' टपकती ऐसे।
रसगुल्लो से रस, टपका करता है जैसे ॥६॥

एम० काम० बाबू हुए, मिला न कोई काम।
शादी के बन्धन बधे, 'मुह पर लगी लगाम' ॥
मुह पर लगी लगाम, दुखी हैं दूल्हे राजा।
'मुह मीठा' करवाओ, सब कर रहे तकाजा ॥
पत्नी की फरमाइश, जोर पकडती जाए।
मन म आता, दुलहिन को वापिस दे आए ॥७॥

भ्रष्टाचारी हौज मे, साहब मारें मौज।
आगे-पीछे 'मुह लगें', चमचो की है फौज ॥
चमचो की है फौज, सुरा मे डूबे रहते।
'मुह काला', दिल काला, फिर भी उजले लगते ॥
आत्मप्रशसा करते-करते, नही अघाए।
'अपने ही मुह आप मिया मिट्ठू', बन जाए ॥८॥

कन्या के अश्रु बहा रही, परेशान मा बाप।
काले नोट दहेज मे, सरक रहे चुपचाप ॥
सरक रहे चुपचाप, 'उदासी मुह पर' छाई।
दिन दूनी बढ रही लडकियो की लम्बाई ॥
बेटे वालो का लालच हो कैसे पूरा।
'मुह मागा' दे दें, तो घर हो जाए घूरा ॥९॥

पुजते मूर्ख समाज मे, ऊची इनकी शान।
'ऊचा मुह' करके चलें, सबको नीचा जान ॥
सबको नीचा जान, दक्षिणा लम्बी लेते।
नैन बन्दकर 'मुह मे आया', सो कह देते ॥
भविष्यवाणी का छोडें, नित नया पटाखा।
किन्तु कभी सच्ची न हुई, इनकी 'मुह भाखा' ॥१०॥

तीर चलाकर इश्क के, बजा रहे हैं गाल।
खुद को हीरो समझते, 'मुह मसूर की दाल' ॥
मुह मसूर की दाल, लाडले मुन्ना बाबू।
'मुह बक्कू' हैं, नही जरा भी 'मुह पर काबू' ॥

कह 'काका' कवि, छोडो, नारी का 'मुंह तकना'।
उससे पहिले, 'शीशे मे मुह देखो अपना' ॥११॥

साली से मिलने चले, टैन्य फेल अमिताभ।
बांध टकटकी ले रहे, 'मुख-दर्शन' का लाभ॥
मुख-दर्शन का लाभ, करें अश्लील इशारे।
साली अन्दर भाग गई, लज्जा के मारे॥
फिर आओ तो लाला जी, आना 'मुह-धोकर'।
'औंधा मुह' हो जाए, लगें भैया की ठोकर॥१२॥

पहलवान 'मुह-फट्ट' हो, अथवा हो गभीर।
'मुह देखी' तारीफ से, पुलकित होय शरीर॥
पुलकित होय शरीर, चुनौती देता जिसको।
व्यर्थ नही 'मुह लगे', चित्त कर देता उसको॥
जिसके 'मुह पर मूछे' हो, वह हाथ मिलाए।
वरना कभी अखाडे मे 'मुह नही दिखाए' ॥१३॥

काकी ने 'मुह फुलाया', घर मे हुई अशाति।
'मुह-सीकर' हम खडे है, अपराधी की भाति॥
अपराधी की भाति, नही मन सकी मनाए।
'अपना-सा मुह' लेकर, 'काका' वापिस आए॥
जितने मांगे, उन्हे थमा दो उतने पैसे।
विहँस उठेंगी, 'मुह से फूल झड रहे' जैसे॥१४॥

हो जाते हैं शान्त तव, वडे-वड़े 'मुहजोर'।
जब भौंके तव फेंक दो, टुकडे उनकी ओर॥
टुकडे उनकी ओर, 'खून मुह से लग जाए'।
ऐसे हिंसक-हत्यारे से, कौन बचाए॥
समझदार, बचते हैं उससे भय के मारे।
कैसे पूछें, 'मुंह मे कितने दाँत तुम्हारे' ॥१५॥

मत्री जी के पुत्र की, शादी पर सब मौन।
'कुल कितना धन व्यय हुआ, 'खोल सके मुह' कौन?
खोल सके मुह कौन, धन्य है अपना नेशन।
तीन लाख का ब्याह, चार के प्रेजेन्टेशन॥

छम छम करती, लाज लजीली दुलहिन आई।
स्वर्णहार दे दिया सेठ ने, 'मुह-दिखलाई' ॥१६॥

प्रेमपुरी के पार्क मे, डाल हाथ मे-हाथ।
मिस्टर मधुकर घूमते, मिस चपा के साथ॥
मिस चपा के साथ, वही टकराए पापा।
'मुह पीले पड गए', अचानक मारा छापा॥
क्यो री, इस लडके से क्या रिश्ता है तेरा?
पापा जी! 'यह मुह बोला', भाई है मेरा॥१७॥

बात कहे 'मुह सोहती', बनकर जिगरी यार।
मन के भीतर द्वेष है, 'मुह के ऊपर' प्यार॥
मुह के ऊपर प्यार, अहिंसा के अवतारी।
सत्यपाल कहलाए, किन्तु हैं भ्रष्टाचारी॥
तुलसी की माला, मस्तक पर तिलक जमाए।
रखते 'मुह मे राम, बगल मे छुरी दबाए'॥१८॥

'काका', तुमने छीन ली, मेरे 'मुह की बात'।
आज हुए विख्यात जो, कल तक थे कुख्यात॥
कल तक थे कुख्यात, बात जनहित की करते।
'मुह पर थू थू' होय, नही निन्दा से डरते॥
गगा जी मे बहा रहे हैं, गन्दा नाला।
किससे, कैसे कहे, लगा है 'मुह पर ताला'॥१६॥

झुका दिया 'मुह बनाकर', काकी जी को शीस।
'मुह ढककर' हम सो गए, छन्द हो गए बीस॥
छन्द हो गए बीस, अधिक 'मुह नही बजाए'।
लम्बी कविता हूट होय तो, 'मुह की खाए'॥
मुहाविरे हैं बहुत, कृपा 'काका' पर कीजे।
'सच्चे मुह से' पाठक, प्रतिक्रिया लिख दीजे॥२०॥

—1981

मूंछ-माहात्म्य

मूछ-माहात्म्य सुना रहे, सुनो लगाकर कान।
ऋषी-मुनी करते रहे, मूछों का सम्मान॥
मूछों का सम्मान, कि जिसके मूछ नहीं थी।
भारत मे उस प्राणी की, कुछ पूछ नहीं थी॥
कह 'काका' कविराय, फिरगी जब से आया।
भारत की मूछों का, सत्यानाश कराया॥

दुनिया मे मूछें बहुत, कैसे करू बखान।
अपनी मूछो का सदा, बुध जन रखते ध्यान॥
बुध जन रखते ध्यान कि, जिनके मुह गलगुच्छा।
डरते उससे सदा, नगर के गुण्डा-लुच्चा॥
कह 'काका' कविराय, देखकर मूछ नुकीली।
हो जाती है लाला जी की, धोती ढीली॥

ठाकुर साहब की लगें, ऐसी सुन्दर मूछ।
चिपका दी है काटकर, ज्यो कुत्ते की पूछ॥
ज्यो कुत्ते की पूछ, कठिनता से बनती है।
यह मत समझो मोम लगाकर, ये तनती है॥
कह 'काका' कविराय, भेद तुमको समझाऊ।
मूछो मे छल्ला पडने की, युक्ति बनाऊ॥

जोर-जोर से ऐंठिए, दिन-भर मे दस बार।
कुछ दिन मे हो जाएगी, मूछें छल्लादार॥
मूछें छल्लादार, अकडकर रौब जमाओ।
चाहे जिसका माल, धौंस देकर ले आओ॥
कह 'काका' कविराय, रो रहा काछी दुखिया।
मूछ दिखाकर साग, मुफ्त ले जाता मुखिया॥

ऊची-नीची मूछ हो, नही करें जब मैच।
सडे की सडे करो, कैंची से परकैंच॥
कैंची से परकैंच, भले ही हाफ करा दो।
देवी जी कह दें तो, बिलकुल साफ करा दो॥
कह 'काका', अरजेंण्ट आर्डर उनका जानो।
'व्यास' वचन है—'पत्नी को परमेश्वर मानो'॥

रजर टूटा होय, अरु ब्लेड न होवे पास।
मुख मण्डल पर आपके, उग आई हो घास ॥
उग आई हो घास, तनिक नहिं देर लगाओ।
बाल-सफा साबुन खरीदकर लेप चढाओ ॥
कह 'काका' कविराय, भाड मे जाए नाऊ।
एक मिनट म बन जाओ, कर्जन से ताऊ ॥

ज्यादा लम्बी मूछ भी, रहें नही अनुकूल।
खतरनाक रहती सदा, करो न ऐसी भूल ॥
करो न ऐसी भूल, किसीसे होय लडाई।
मूछ पकडकर बडे मजे से होय पिटाई ॥
कह 'काका' कविराय, मचाओगे तब हल्ला।
पकड-पकडकर लटकेंगे, जब लल्ली-लल्ला ॥

मूछो म आ जाए जब, कोई भूरा बाल।
खीच लीजिए पकडकर, चिमटी से तत्काल ॥
चिमटी से तत्काल, आयु इसस बढ जाव।
सदा जवानी रहे, बुढापा पास न आवे ॥
कह 'काका,' बढ जाए, सफेदी का जब हिस्सा।
ले खिजाब अरु बुरुश, दनादन मारो घिस्सा ॥

जिस दफ्तर मे जाइए, क्लर्कों का सब झुण्ड।
मैनेजर साहब सहित, मिलें तुम्हे मुछमुण्ड ॥
मिलें तुम्ह मुछमुण्ड, किसीने ऐसी रक्खी।
करती हो मीटिंग, नाक के नीचे मक्खी ॥
कह 'काका' कविराय, राज अगरेज दे गए।
इसके बदले मूछ, हमारी मूड ले गए ॥

कभी तुम्हारी मूछ के, उखड जाए कुछ बाल।
शीरा से चिपकाइए, चिपक जाए तत्काल ॥
चिपक जाए तत्काल, मूछ हो जाए मीठी।
भाग्यवान हैं आप, अगर लग जाए चीटी ॥
कह काका' कविराय, सुनो भैया हलमस्ता।
खर्च न पाई होय, पुण्य यह सबसे सस्ता ॥

—काका की फुलझडियां 1965

मृत्यु-कर

कालि मरे सो आज मर, आज मरे सो अब्ब।
मृत्यु कर तो लग गया, फेरि मरेगा कब्ब ?
फेरि मरेगा कब्ब, समय आया है खोटा।
जितना जीवे और, रहेगा तुझको टोटा॥
कह 'काका' सब, जमा-खर्च की चुकती करके।
कौड़ी-कौड़ी ले जाना, छाती पर धर के॥

—काका की फुलझड़िया 1965

मेढक-वन्दना

करूं आपकी वन्दना ! हे मेढक महाराज।
होवे कृपा-कटाक्ष तो, बन जावें सब काज॥
बन जावें सब काज, बहुत हैं वेद-पुराना।
त्रय अक्षर का नाम, आपका जग ने जाना॥
कह 'काका' कविराय, चहु दिशि कीरति फैली।
स्वीकृत हो यह भेंट, करूं कविता की थैली॥

कीचड से निकला कमल, प्रकट भए भगवान।
इसीलिए तो कीच म, करें आप स्नान॥
करें आप स्नान, व्यर्थ पण्डित-आचारी।
जग म केवल आप, मोक्ष के है अधिकारी॥
कह 'काका' कविराय, छोडकर मिया-मसानी।
पूजो घर-घर, मेढक और मढकी रानी॥

हे श्री दादुर देव तुम, हो जग म विख्यात।
वर्षा-ऋतु मे करत हो, 'टर्र टर्र' दिन-रात॥
टर्र टर्र दिन-रात, सुनाते मधुर तराना।
किससे सीखा तुमने यह, क्लासीकल गाना॥
कह 'काका' कविराय, आपकी आज्ञा पाऊं।
ब्राडकास्ट को तुम्हे, रेडियो पर ले जाऊं॥

फूला-फूला गात है, मस्त आपकी चाल।
जिन्ना जैसी नाक है, चर्चिल जैसे गाल॥

चर्चिल जैसे गाल, यदपि वह भी चिल्लाता।
किन्तु आपकी स्वर-लहरी से, पार न पाता॥
कह 'काका', क्या करें आपकी होडा-होडी ?
कहा टर्रकानन्द ! कहा लन्दन का टोडी॥

'उछल-कूद प्रतियोगिता', अगर कही पर होय।
अखिल विश्व मे आपको, जीत सके नहिं कोय॥
जीत सके नहि कोय, विजय दुन्दुभी बजाऊ।
अखबारो मे प्रथम पृष्ठ पर, नाम छपाऊ॥
कह 'काका' कविराय, खिलाडी हो तुम बाके।
टूटें भय से, बडे-बडे वीरो के टाके॥

कहा कहू छबि आपकी, महामान्य 'मडूक'।
चलिए पाकिस्तान तो, ले आऊ बन्दूक॥
ले आऊ बन्दूक, बढोगे जब तुम आगे।
बडे मिया स्वागत को आए, भागे-भागे॥
कह 'काका', यदि पड़ें बीच मे ताल-तलइया।
हमे पीठ पर बैठा लेना, मेढक भइया॥

—चिन्ता : 1950

मेरठ की माया

फिल्मी गाने सुन रहे, लगा लिया 'सीलोन'।
'घनन-घनन' घंटी बजी, आया टेलीफोन॥
आया टेलीफोन, 'हलो' का हल्ला आया।
'नौचदी' के सम्मेलन का, न्यौता पाया॥
होकर के टिपटॉप, सम्हाली हास्य-पताका।
साढे पाच बजे, मेरठ जा धमके 'काका'॥

सम्मेलन मे देर थी, मारा इक राउन्ड।
सयोजक जी ले गए, हमको 'सूरजकुड'॥
हमको सूरजकुड, वहा आकर पछताए।
सूरज तो छिप गया, ढेर मुर्दों के पाए॥
कह 'काका' कविराय, उदासी मन पर छाई।
'बेगम ब्रिज' पर कोई भी, बेगम नहिं पाई॥

इसे छोड आगे बडे, हुआ हृदय को रज।
केसर के दर्शन नहीं, कहते 'केसरगज'॥
कहते केसरगज, भयकर बदबू आई।
केसर नहीं, 'किरोसिन' की, एजेंसी पाई॥
कह 'काका,' यह दृश्य देख सहलाई दाढी।
मिले 'लाल कुर्ती' मे, पीले ब्लाउज-साडी॥

रीते-थोथे नाम थे, जिनका कुछ नहीं सेंस।
'भैंसाली ग्राउड' मे, मिली न कोई भैंस॥
मिली न कोई भैंस, नाम की अद्भुत माया।
'प्रेमपुरी' मे रत्ती भर भी, प्रेम न पाया॥
काका मेरठ का, 'कागजी बजार' निराला।
ढूंढा, लेकिन मिला न कोई कागज वाला॥

आगे हमको ले गए, बाबूराम वकील।
टकी वाटरवर्क्स की, उसे कह 'तहसील'॥
उसे कह तहसील, कल्पना मे बहते हैं।
तोप एक भी नहीं, 'तोपखाना' कहते है॥
'रामनगर' भी गए, वहा पर राम न पाए।
तो फिर 'कृष्णपुरी' म, कृष्ण कहा से आए॥

नगरपालिका का यहा, देखा अजब दिमाग।
मूर्ति गाधी की नहीं, कहते 'गाधी-बाग'॥
कहते गाधी-बाग, व्यर्थ हमको बहकाते।
गजा कोई नही, 'गजबाजार' बताते॥
'काका' 'मानसरोवर', जा करके पछताए।
हस हसिनी नहीं, वहा पर कौए पाए॥

—काका के धडाक , 1969

मेरी इच्छा

सोचा हमने एक दिन, खोल बुद्धि का बक्स।
कवि बनने म क्या धरा, नता बन डी-लक्स॥
नेता बन डी-लक्स, चढो ऊची चोटी पर।
कुटी झोपडी छोड, पहुच जाओ कोठी पर॥

कह 'काका' कविराय, कृपा प्रभु ऐसी कर दो।
नेताओं की सब विशेषता, मुझमे भर दो॥

कामराज-सी कीर्ति दो, राजाजी-सी चाल।
नेत्र लोहिया-से मिलें, जयप्रकाश-से बाल॥
जयप्रकाश-से बाल, भाल जगजीवन जी-सा।
शौर्य और साहस पाऊ, चह्वाण सरीखा॥
कह 'काका' कवि, टी०टी० जैसा बजट बनाऊ।
नन्दा जी - सी नरम - नरम, पद्धति अपनाऊ॥

नेहरू जी-सी नीति हो, जमे विश्व पर धाक।
कृपलानी - से कान हो, मेनन जैसी नाक॥
मेनन जैसी नाक, सभा मे बाजें ताली,
मिले हुकूमत यदि, सरदार हुकमसिंह वाली॥
कह 'काका' कवि, काया शास्त्री जी-सी पाऊ।
सी० बी० गुप्ता जैसी, गुटबन्दी दिखलाऊ॥

—काका की फुलझड़ियां : 1965

मेल बनाम फीमेल

जगह मिल सकी मेल मे, कष्ट अनेकों झेल।
टी० टी० बोला, निकलिए यह डिब्बा फीमेल॥
यह डिब्बा फीमेल, चढ गया उसका पारा।
हमने कहा—जनाव ! इसीका टिकट हमारा॥
कह 'काका', क्यों मुसाफिरों को व्यर्थ सताते।
लिखा 'फ्रन्टियर मेल', आप फीमेल वताते॥

—काका के कारतूस : 1963

मैडम और मच्छर

बीबी जी के बदन पर, होकर के नि.शक।
सुबह नाश्ते के समय, मच्छर मारा डक॥
मच्छर मारा डक, सताता है क्यों मुझको।
दिन में भी क्यों चैन, नहीं पड़ता है तुझको॥
मच्छर बोला, गुजर नही होनी है मैडम।
इसीलिए दिन में, 'ओवर टाइम' करते हम॥

एक डक से हो गई, मम्मी पीली लाल।
मेरे साथी कर रहे, नाले मे हडताल॥
नाले मे हडताल, अगर वे भी आ जाए।
खूनी क्रान्ति मचाकर, तुम को मजा चखाए॥
डी०ए०, टी०ए० बिना, नही होंगे टस से मस।
और बीस परसैन्ट, झपट लें ऐक्सट्रा बोनस॥

सुना क्रान्ति का नाम जब, क्रोध रह गया हाफ।
मुझसे जो गलती हुई, कर दो बेटे माफ॥
कर दो बेटे माफ, ऐक्शन और न लेना।
मेरे घर का पता, उन्हे मत बतला देना॥
कहु 'काका' मध्यस्थ बने, हम झाडा लैक्चर।
समझौता हो गया, उड गए मिस्टर मच्छर॥

(1981)

मोटा और पतला

क्या सुन्दर जोडी बनी, तू पलीत मे जिन्द।
डर के मारे कर रहे, काका कवि जयहिन्द॥
काका कवि जयहिन्द, कहै पतले से मोटा।
मैं तेरा सरदार, मूर्ख तू मुझसे छोटा॥
कह 'काका' कविराय, लीजिए छिडी लडाई।
मोटे-पतले सभी ध्यान से, सुनना भाई॥

मोटा

मैं नित रसगुल्ला भखू, तू पतली-सी दाल।
पिचक गए हैं इसलिए, तेरे दोनो गाल॥
तेरे दोनों गाल, लग रहा ऐसा बदतर।
मोटर के नीचे जैसे, आ जाय कनस्तर॥
कह 'काका' कविराय, शकल है पिचकी पिचकी।
ऊपर यदि गिर पडू, लगेगा लेने हिचकी॥

पतला

तुमको कोई रोग है, फून गया जो गात।
सूजन कैसे आ गई, समझा दे यह बात॥
समझा दे यह बात, ततैया ने है काटा।
बतला दे किस चक्की का, खाया है आटा॥
कह 'काका' कविराय, तोद फूली है भारी।
ऐसा मालुम होय, जलन्दर की बीमारी॥

इससे आगे और सुन, अखबारी मजमून।
बना रही है रेलवे, एक नया कानून॥
एक नया कानून, तुलेंगी सभी सवारी।
डबल किराया लगे, वजन मे हो जो भारी॥
कह 'काका' सब पतले, गाडी मे चढ जावे।
मोटे-मोटे प्लेटफार्म पर, ही रह जावें॥

अड्डे पर जब पहुचते, लाला मोटेचन्द।
कर लेता बस ड्राइवर, खिडकी अपनी बन्द॥
खिडकी अपनी बन्द, वजन म सबसे भारी।
इसीलिए तो पचर, हो जाती है लारी॥
कह 'काका' कविराय, ऊट-गाडी मे जावें।
पहिये 'चू-चू' करें, ऊट को मिरगी आवें॥

इसी शहर के सेठ है, देखो उनके ठाट।
इतनी चौडी तोद है, बिछा लीजिए खाट॥
बिछा लीजिए खाट, बगीची को जब जाते।
चार आदमी कोचवान के, पास बिठाते॥
कह 'काका' जब तागा, लेबिल मे नहिं आया।
बम्ब पकड तब, कोचवान आगे लटकाया॥

मोटा

अजगर करे न चाकरी, पछी करे न काम।
पूज्य पिता जी कह गए, कर बेटा आराम॥

कर बेटा आराम, यही है तेरा धन्दा।
सेलटैक्स को चाट चाट कर, बनो पुलन्दा॥
कह 'काका' कविराय, टहलने कभी न जाऊ।
चूरन खाकर अपनी, पाचन शक्ति बढाऊ॥

पतला

तुझको कुछ मालूम है रे! मिट्टी क ढीम।
जीत गई इगलैंड म, हिन्दुस्तानी टीम॥
हिन्दुस्तानी टीम, छरहरे सभी खिलाडी।
मोटे-मोटे स्पैनी, रह गए पिछाडी॥
कह काका' कविराय, समझ म कैसे आवे।
माया के ही साथ, बुद्धि मोटी हो जावे॥

कान खोल कर और सुन, मोटो के सरदार।
यहा वहा दोनो जगह पतली है सरकार॥
पतली हैं सरकार, हिन्द पर जिनका काबू।
दुबले पतले राष्ट्रपति, राजेन्दर बाबू॥
कह 'काका' मरहूम छीपटी से थे जिन्ना।
लेकर पाकिस्तान, कर गए छिन्ना भिन्ना॥

मोटा

छिन्ना भिन्ना हो गई, इसे भाड म गर।
मोट चर्चिल देख ले, कूटनीति के ढेर॥
कूटनीति के ढेर मजे स भारत चूसा।
मित्रा म भी चलवा देते, थप्पड घूसा॥
कह 'काका' पार्लियामट, सब थर्राता है।
वह टोडी शमशेर, जिस समय गुर्राता है॥

—पिल्ला : 1950

मोटी पत्नी

ढाई मन से कम नहीं, तौल सके तो तौल।
किसी-किसीके भाग्य मे, लिखी ठोस फुटबौल॥
लिखी ठोस फुटबौल, न करती घर का धन्धा।
आठ बज गए, किन्तु, पलग पर पड़ा पुलदा॥
कह 'काका' कविराय, खाय यह ठूसमठूसा।
यदि ऊपर गिर पडे, बना दे पति का भूसा॥

—पिल्ला :

मोटू मामा

काका से कहने लगे, मामा हाथ मिलाय।
ऐसी युक्ति बताइए, मोटापा घट जाय॥
मोटापा घट जाय, मानिए राय हमारी।
एक माह तक घोडे पर, कीजिए सवारी॥
कुछ दिन मे काया का, सकट कट जाएगा।
फुर्तीला हो बदन, वजन भी घट जाएगा॥

उनके हृदय समा गई, राय हमारी नेक।
सस्ते भाडे पर लिया, लद्दू घोडा एक॥
लद्दू घोडा एक, कई दिन तक दौडाया।
श्रम होगा, इसलिए दूध-घी ज्यादा खाया॥
मामा जी का वज़न, और दो पौंड बढ गया।
लेकिन घोडा बेचारा, दस पौंड घट गया॥

—जय बोलो बेईमान की :

युग-बोध

ग्रन्थन का मन्थन किया, प्राप्त हुआ यह ज्ञान।
त्रेता युग से अधिक है, कलियुग का सम्मान॥
कलियुग का सम्मान, कथ्य का तथ्य बताए।
बुरा न मानो तो, प्रमाण देकर समझाए॥
आप स्वर्णमृग त्रेता मे, बतलाते हमको॥
हम कलियुग मे 'स्वर्णसिंह', दिखला दें तुमको॥

—काका हाथरसी :

युद्धबन्दी

भारत की दरियादिली, कूत सके तो कूत।
शाही जीवन जी रहे, पाकिस्तानी भूत ॥
पाकिस्तानी भूत, जुल्म थे जिनके अक्षम।
खिला-पिलाकर, उनका वजन बढाते हैं हम ॥
वह भी हैं, जिसका खाते उस पर गुर्राते।
हम भी हैं, जो विषधर को भी, दूध पिलाते ॥

—जय बोलो बेईमान की 1973

रस-रिसर्च

'नव-रस' ही क्यो मानते, साहित्यिक विद्वान।
इनमे षटरस जोडकर, पन्द्रह रस पहिचान ॥
पन्द्रह रस पहिचान, प्रेम-रस को क्यो छोडा ?
अमरस गोरस, स्वरस, सोमरस से मुह मोडा ॥
कह 'काका' कवि, चरस, दरस, सारस व भक्तिरस।
गिन लो रस छब्बीस, हाथरस और बनारस।

—फिल्मी सरकार . 1972

रामराज में कामराज

विधना यह कैसा हुआ, अद्भुत एक्सीडेण्ट।
छूटी कोठी-कार सब, छूट गए सर्वेण्ट ॥
छूट गए सर्वेण्ट, रात-भर पडे कराहे।
मुख झूठी मुस्कान, निकलती दिल से आहे ॥
कह 'काका' कवि, प्रभो ! दिखाई कैसी माया।
रामराज मे कामराज, कैसे घुस आया ?

—काका की फुलझड़ियाँ :1965

राशि-चमत्कार

रावण मारा राम ने, कृष्ण पछाडा कस।
निश्चित है चव्हाण से, चाऊ का विध्वस ॥
चाऊ का विध्वस, कि बलि वामन ने मारा।
है अयूब का काटा, अर्जुनसिंह हमारा ॥
भारत-वीरो ने, अरि-दल के पैर उखाडे।
पिटे नेट से जेट, पेट पैटन के फाडे ॥

—काका के कहकहे : 1966

राष्ट्रगान का लाभ

चोरी करने के लिए, घुसे गली में चोर।
कुत्ते भौंके, मच गया, 'चोर-चोर' का शोर॥
चोर-चोर का शोर, सभाले डंडा लठिया।
चारों ने 'जन गण मन', गाना शुरू कर दिया॥
खड़ी हो गई भीड़, 'अटेंशन' में सब आकर।
चोर भग गए, राष्ट्रगान का लाभ उठाकर॥

—बाबा भोला : 1968

राष्ट्रीय पशु

घोड़े से कहने लगा, गदहा, सुनिए तात!
बने अहिंसक आप-हम, पिटते हैं दिन-रात॥
पिटते हैं दिन-रात, सुनो खच्चर के फादर।
नेता-मन्त्री करते हैं, हिंसा का आदर॥
रखकर दिल पर हाथ, कहो यह न्याय कहाँ का?
हिंसक शेर 'राष्ट्रीय पशु', बन बैठा, 'काका'।

—फिल्मी सरकार : 1972

राष्ट्रीय पशु : बाघ (चीता)

अब तक था इस देश का, राष्ट्रीय पशु 'शेर'।
उसकी कुरसी छिन गई, समय-समय का फेर॥
समय-समय का फेर, भाग्य चीते का चेता।
बिना इलेक्शन लड़े, बना पशुओं का नेता॥
'वन्य जीव परिषद्' के, इस निर्णय से कक्का।
चरण 'सिंह' के दल को, पहुंचा गहरा धक्का॥

—जय बोलो बेईमान की : 1973

रिश्वत-महिमा

कूटनीति मन्थन करी, प्राप्त हुआ यह ज्ञान।
लोहे से लोहा कटे, यह सिद्धान्त प्रमान॥
यह सिद्धान्त प्रमान, जहर से जहर मारिए।
चुभ जाए काटा, काट से ही निकालिए॥
कह 'काका' कवि, काप रहा क्यो रिश्वत लेकर ?
रिश्वत पकडी जाए, छूट जा रिश्वत देकर॥

—काका की फुलझडियाँ : 1965

रिश्वत-रानी

रिश्वत रानी धन्य तू तेरे अगणित नाम।
हक-रानी, उपहार औ' बख्शिश, घूस इनाम॥
बख्शिश, घूस, इनाम, भेंट, नजराना, पगडी।
तेरे कारण खाऊमल की, इनकम तगडी॥
कह 'काका' कविराय, दौर-दौरा दिन दूना।
जहा नही तू देवि ! महकमा है वह सूना॥

जिनको नही नसीब थी, टूटी-फूटी छान।
आज वहा भन्ना रही, कोठी आलीशान॥
कोठी आलीशान, भिनकती मुह पर मक्खी।
उनके घर मे घूम रही, चांदी की चक्की॥
कह 'काका' कवि, जो रिश्वत का हलवा खाते।
सूखे-पिचके गाल, कचौडी-से हो जाते॥

—काका की फुलझडियाँ : 1965

रूस मे हिन्दी

बटुकदत्त से कह रहे, लटुकदत्त आचार्य।
सुना ? रूस म हो गई है हिन्दी अनिवार्य॥
है हिन्दी अनिवार्य, राष्ट्र-भाषा के चाचा।
बननेवालो के मुह पर, क्या पडा तमाचा ?
कह 'काका' जो ऐश कर रहे, रजधानी म।
नही डूब सकते क्या, चम्मच भर पानी म ?

पुत्र छदम्मीलाल से, बोले श्री मनहूस।
हिन्दी पढनी होय तो, जाओ बेटे रूस॥

सब बारात की राह, सज गए कोतल हाथी।
प्लेटफार्म पर खड़े रहे, ह्वै दिना बराती॥
पंडित बोले—"सेठ ! दोस नहिं कछु हमारौ।
लग्न है गई फेल, रहि गयौ छोरा क्वारौ॥"

—काका हाथरसी : 1975

रैगिंग

छात्रों से कहने लगे, दादा ऊधम सिंह।
मज़ा किरकिरा हो गया, बंद हुई रैगिंग॥
बंद हुई रैगिंग, समझ में बात न आई।
एक वर्ग रह गया, उसे क्यों बख्शा भाई ?
खतरे में भोले-भाले, पतियों की लाइफ।
बेचारों की डेली, 'रैगिंग' करतीं वाइफ॥
कह 'काका' सरकार ! रहम हम पर भी खाओ।
पत्थर-हृदय काकियों पर, प्रतिबंध लगाओ॥

—काका हाथरसी : 1975

लंबाई दुखदाई

सब्ज़ी-मंडी में घुसे, मेजर लम्बूराम।
पके पपीता आपने, समझे कलमी आम॥
समझे कलमी आम, दाम इनके बतलाओ।
और उधर वह नींबू कैसे हैं, दिखलाओ॥
दुकानदार बोला हुज़ूर—"अन्दाज़ न फेंको।
नींबू नहीं, सतरे हैं ये, झुककर देखो॥"

—फिल्मी सरकार : 1972

लक्ष्मी बनाम गृहलक्ष्मी

दीपावली की दीप्ति में, 'काका' मांगें खैर।
लक्ष्मी-गृह-लक्ष्मी खड़ी, किसके लागें पैर॥
किसके लागें पैर, हाथ में पूजन थाली।
टेढ़ी भृकुटी किए, दिखी काकी घरवाली॥
लक्ष्मी जी पर, पुष्प चढ़ाकर पिंड छुड़ाया।
गृहलक्ष्मी को शीश नवाकर, थाल थमाया॥

जाओ बेटे रूस, भली आई आजादी।
इगलिश रानी हुई हिन्द मे, हिन्दी बादी ।।
कह 'काका' कविराय, ध्येय को भेजो लानत।
अवसरवादी बनो, स्वार्थ की करो वकालत ।।

—काका की फुलझड़ियाँ 1965

रेनी लव

भीग रही बरसात म, टप टप नीर चुचाय।
मुख-मण्डल मोती ढुलें, अचरा उड-उड जाय ।।
अचरा उड-उड जाय, न कोई रिश्ता-नाता।
फिर भी तान दिया, मिस्टर ने मिस पर छाता ।।
तनिक मुस्करा गई और फिर चुप्पी साधी।
समझ लीजिए रेनी लव', की स्वीकृति आधी।

—फिल्मी सरकार • 1972

रेल-हडताल

काकी मैके मे फसी, सौ योजन ससुराल।
विदा कराइवे को चले, [भई रेल हडताल ।।
भई रेल हडताल, हाय री किस्मत खोटी।
रूखी-सूखी लील रहे, ढाबे की रोटी ।।
सूने द्वार देहरी, सूनी घर को गोदी।
देख हमारी दशा, मगन है रहे विरोधी ।।

बिजली भागी रूठकर, अधकार है घुप्प।
चीख रहा है चीमटा चौका चूल्हा चुप्प ।।
चौका चूल्हा चुप्प तडपते चकला-बेलन।
उडकर क आ जा, मेरे आगन की हेलन ।।
आस तिहारी मे, उदास हैं अटा-अटारी।
अनशन पर हैं, तवा-पतीली लोटा थारी ।।

एक पडोसी के यहा, आठ मई को ब्याह।
आख फारि कें देखते, सब बारात की राह ।।

सब बारात की राह, सज गए कोतल हाथी।
प्लेटफार्म पर खड़े रहे, द्वै दिना बराती॥
पंडित बोले—"सेठ ! दोस नहिं कछु हमारौ।
लग्न है गई फेल, रहि गयौ छोरा क्वारौ॥"

—काका हाथरसी : 1975

रैंगिंग

छात्रों से कहने लगे, दादा ऊधम सिंह।
मजा किरकिरा हो गया, बंद हुई रैंगिंग॥
बंद हुई रैंगिंग, समझ में बात न आई।
एक वर्ग रह गया, उसे क्यों बख्शा भाई ?
खतरे में भोले-भाले, पतियों की लाइफ।
बेचारों की डेली, 'रैंगिंग' करती वाइफ॥
कह 'काका' सरकार ! रहम हम पर भी खाओ।
पत्थर-हृदय काकियों पर, प्रतिबंध लगाओ॥

—काका हाथरसी 1975

लंबाई दुखदाई

सब्जी-मंडी में घुसे, मेजर लम्बूराम।
पके पपीता आपने, समझे कलमी आम॥
समझे कलमी आम, दाम इनके बतलाओ।
और उधर वह नीबू कैसे हैं, दिखलाओ॥
दुकानदार बोला हुजूर—"अन्दाज न फेंको।
नीबू नहीं, संतरे हैं ये, झुककर देखो॥"

—फिल्मी सरकार 1972

लक्ष्मी बनाम गृहलक्ष्मी

दीपावली की दीप्ति में, 'काका' मांगें खैर।
लक्ष्मी-गृह-लक्ष्मी खड़ीं, किसके लागें पैर॥
किसके लागें पैर, हाथ में पूजन थाली।
टेढ़ी भृकुटी किए, दिखीं काकी घरवाली॥
लक्ष्मी जी पर, पुष्प चढ़ा कर पिंड छुड़ाया।
गृहलक्ष्मी को शीश नवाकर, थाल थमाया॥

अपने घर की क्या कहें, जग की देखी रीति।
प्यार किए पीछे हटें, भय बिनु होय न प्रीति॥
भय बिनु होय न प्रीति, अचल है लक्ष्मी मैया।
मुन्ने की मा सचल, पिता की डगमग नैया॥
इसीलिए काकी से, 'काका' डरते ऐसे।
इंदिरा जी से, मुख्यमंत्री डरते जैसे॥

(1981)

लखपति

नीची-नीची नज़र कर, चलिए आंख गढ़ाए।
ना जाने किस राह में, नोट पड़ा मिल जाए॥
नोट पड़ा मिल जाए, खेल फिर जूआ सट्टा।
लग जाए जो दाव, बांध नोटों का गट्ठा॥
कह 'काका' कविराय, भाग्य यदि फलता जाए।
कुछ दिन में ही शीघ्र, लखपती तू हो जाए॥

—पिल्ला : 1950

लव-लीला

लव-मतलब

लव का मतलब समझिए, लव के लाख प्रकार।
बेमतलब मत लव करो, मतलब का संसार॥
मतलब का संसार, बनाकर लवली मैटर।
लव की तलब लगे, लिख दो उनको लव लैटर॥
लव में हो लवलीन, घुसो लव की रग-रग में।
जिसने लव नहिं किया, व्यर्थ जन्मा इस जग में॥

मनी लव

जिसमें लव का सैन्स हो, और बैंक-बैलेंस।
कम-से-कम दस लाख का, लाइफ-इंश्योरेंस॥
लाइफ-इंश्योरेंस, लाज का परदा फाड़ो।
'इमिटेशन' लव के लटकों से, उसे पछाड़ो॥
ऐसे लव का ढंग बतला दो, मिस किसमिस को।
फंस जाए जब धनी, 'मनी लव' कहते इसको॥

एक्सीडेंटल लव

रिक्शे से टकरा गई, देखा एक्सीडेंट।
जूड़ा उनका खुल गया, क्रैक हो गई पेंट॥
क्रैक हो गई पैंट, रास्ता चिकना ढालू।
जूड़े में से निकल सड़क पर, भागा आलू॥
'काका' आलू पकड़ कहा, यह लीजे सिस्टर।
इसको 'एक्सीडैंटल लव', कहते है मिस्टर॥

सैंटीमैण्टल लव

नाइट-शो के वास्ते, किया उन्हे एंगेज।
बालकनी में हो गया, लव-प्याला लबरेज॥
लव-प्याला लबरेज, प्यार की आहे भरते।
हीरो जैसा करे, क्रिया वैसी ही करते॥
कभी हँस पड़े, कभी आंख म भर ले पानी।
इसे 'सैन्टीमेण्टल लव', कहते हैं ज्ञानी॥

एक्सचेंज लव

देख पश्चिमी सभ्यता, 'काका' आँखें खोल।
शीरी लेकर साथ मे, मजनू करे किलोल॥
मजनू करे किलोल, चकित सब छैली-छैला।
पकड़ हाथ फरहाद, डान्स करती है लैला॥
बदल प्रेयसी, लव से बल मिलता दिन दूना।
'एक्सचेंज लव' का यह, 'एक्सीलेंट' नमूना॥

फिल्मी लव

अरबपति के पुत्र प्रिय, मन में उठी उमग।
मैं तो शादी करूगा, हीरोइन के सग॥
हीरोइन के सग, जाति-कुल-भेद मिटाऊ।
फादर करें विरोध, जहर खाकर मर जाऊ॥
कह 'काका' कवि, मात-पिता की डूबी नैया।
ऐसे लव को 'फिल्मी लव' कहते है भैया॥

बॉस लव

आकर्षित हो आपसे, आफिस के सरकार।
रूप रंग पर रीझ कर, हो जाए बलिहार॥
हो जाए बलिहार, सभी प्रतिबंध हटा दें।
आप गैरहाजिर हों, वे हाजिरी लगा दें॥
'काका' ऐसा लव नसीब, होता है जिसको।
आस पास के दास, 'बॉस लव' कहते उसको॥

गेम लव

लगा 'बैडमिंटन' हमें, सबसे अच्छा गेम।
जितने 'लव' चलें, उतना बढ़ता प्रेम॥
उतना बढ़ता प्रेम, भावना में बह जाओ।
'शटलकाक' का 'शाक' लगे, दिल को सहलाओ॥
कहं 'काका' जब नैन लड़े फीमेल मेल में।
बिना कहे हो गया, 'गेम लव' खेल खेल में॥

ड्रिंक लव

दिन में मद्यनिषेध पर भाषण दें श्रीमान।
क्लब में जाकर रात्रि को, करें सोमरस पान॥
करें सोमरस पान, बार में झोंका खाएं।
गम छोड़ रम और रमी से, मन बहलाएं॥
'काका' जब प्याले से, प्याला, टकराता है।
बिना जान पहचान 'ड्रिंक लव' हो जाता है॥

दशम लव

सखी सिविल मैरिज करो, अच्छा रहे मजाक।
माल चूस मनहूस का, दे दो उसे तलाक॥
दे दो उसे तलाक, त्याग की महिमा भारी।
बदल बदल शौहर, जौहर दिखलाए नारी॥
नौ पति छोड़ चुकी हों, उसे 'नवीना' मानो।
दसवें से लव करे, 'दशम लव' उसको जानो॥

—काका के धड़ाके : 1969

लाउडस्पीकर-वंदना

'लाउडस्पीकर' प्रभो ! कोलाहल के बाप।
भोंपू या कनफोड़वा, नाद ब्रह्म हैं आप॥
नाद ब्रह्म हैं आप, गरज घनघोर दहाड़े।
बहरे सुनने लगें, दाँत गूंगा जी फाड़ें॥
असेम्बली में बैठे, माननीय स्पीकर।
उनसे भी उच्चासन पर, लाउडस्पीकर॥

रामायण का पाठ हो, भजन-कीर्तन-जाप।
धार्मिक कार्यों के लिए, अति आवश्यक आप॥
अति आवश्यक आप, नहीं चिंघाड़ो ऐसे।
तो भक्तों की टेर, प्रभु तक पहुंचे कैसे॥
अभिनन्दन-वन्दन हो, मृतक भोज या शादी।
तुमको चाहें ईश्वर, और अनीश्वरवादी॥

लाला लूटनलाल जी, सल्लो सट्टेबाज।
बने आपकी कृपा से, भक्तों के सिरताज॥
भक्तों के सिरताज, पान वाले हलवाई।
धोबी, तेली, हरिजन, ब्राह्मण, बनिया, नाई॥
जातिवाद को त्याग, आप सबके घर जाते।
स्वर्गलोक में उनकी, सीट रिजर्व कराते॥

एक-तन्त्र, सामंत या, प्रजातन्त्र-[illegible]।
आवश्यक हैं सभी को, ध्वनि विस्तारक यन्त्र॥
ध्वनि-विस्तारक यन्त्र, युद्ध में कभी न [illegible]।
हो निशंक-निर्भीक, देश की [illegible]॥
मिला आपका साथ, [illegible]।
मारी एक दहाड़, [illegible]॥

रात-रात भर [illegible]।
नहीं पहुंच [illegible]॥
दंगा, [illegible]।
पाठ [illegible]॥
[illegible]।
[illegible]

अस्पताल के निकट हो, प्रवचन धुआंधार।
गाली देते आपको, अल्प बुद्धि बीमार॥
अल्प बुद्धि बीमार, नर्स-डाक्टर घबराते।
किन्तु आपकी दया दृष्टि को, समझ न पाते॥
अंत समय प्रभु नाम, कान में पड़ जाएगा।
मरने वाला स्वर्ग-सीढ़ियां, चढ़ जाएगा॥

जिस पार्टी में आपका, नहीं मिल सके मेल।
उसका सम्मेलन तुरत, कर देते हो फेल॥
कर देते हो फेल, भीड़ में मचे तहलका।
काव्य मंच पर कब्जा, हाय विरोधी दल का॥
'पत्र-पुष्प' पर संयोजक जी, डालें डाका।
जान बचाकर स्टेशन को, भागें 'काका'॥

जाएं चुनाव-प्रचार में, प्रत्याशी के साथ।
तारें अथवा डुबो दें, लाज आपके हाथ॥
लाज आपके हाथ, एम० पी० उसे बना दें।
यदि हो जाएं रुष्ट, जमानत ज़ब्त करा दें॥
'डबल डोज़' लेकर आए, मिस्टर खलनायक।
उखड़ गए तो बोले, 'ठीक नहीं था माइक॥'"

पंडित हो या पादरी, सिक्ख होय या शेख।
गुटबंदी से दूर है, आप धर्मनिरपेक्ष॥
आप धर्मनिरपेक्ष, निभाते भाईचारा।
मन्दिर मस्जिद, चर्च होय अथवा गुरुद्वारा॥
कह 'काका', कोयल कूके या रेंके भैंसा।
करो प्रसारित शब्द-शब्द, जैसे का तैसा॥

मधुर मुरलिया बजे या, कूकुर करें प्रलाप।
भेदभाव किंचित नहीं, समद्रष्टा है आप॥
समद्रष्टा हैं आप, राम हो अथवा रावण।
इंदिरा की वाणी हो या, भुट्टो का भाषण॥
बिना सेंसर करते हो, सीधी सप्लाई।
प्रेस रिपोर्टर, सम्पादक, सब करें बड़ाई॥

गर्जन तर्जन शोरगुल, चीख-पुकार समर्थ।
ट्रांजिस्टर या रेडियो, बिन स्पीकर व्यर्थ॥
बिन स्पीकर व्यर्थ, बने हो सबके रीजन।
एम्प्लीफायर, टेपरिकार्डर, टेलीवीजन॥
थ्येटर, ड्रामा, सर्कस और सिनमा सारे।
बिना आपके पड़े रह, सब ठप्प बिचारे॥

शुभ स्वतन्त्रता पर्व पर, स्वीकारें सब लोग।
आजादी में आपका, मिला सक्रिय सहयोग॥
मिला सक्रिय सहयोग, आप यदि नहीं डाटते।
तो भारत को छोड भला अगरेज भागते॥
करते पर-उपकार, नहीं भाती खुदगरजी।
बारम्बार प्रणाम, आपको स्पीकर जी॥

—जय बोलो बेईमान की 1973

ला-कर

काले धन की खोज का, चला विकट अभियान।
कलाकार चिल्ला रहे, रक्षा कर भगवान॥
रक्षा कर भगवान, लगा यह धक्का गहरा,
घर-बगलो पर बैठा दिया, पुलिस का पहरा॥
हमने किए इकट्ठे नोट, नाच गा-गाकर।
भरके 'लाकर' सील, कह रहे ला कर, ला कर॥

—जय बोलो बेईमान की 1973

लाल तिकोन से

बोला 'लाल तिकोन' से, सधा नेता एक।
क्या बच्चों के जन्म पर लगा रहे हो ब्रेक॥
लगा रहे हो ब्रेक, अधर म लटक रही हैं।
बिना जनम के लाखो, आत्मा भटक रही है॥
कृपा करो भगवान! लगा दो इन्ह किनारे।
जनसख्या के साथ, बढेंग वोट हमारे॥

—जय बोलो बेईमान की 1973

लिंग-भेद

'काका' से कहने लगे, ठाकुर ठर्रासिंह।
दाढ़ी स्त्रीलिंग है, ब्लाउज है पुल्लिग॥
ब्लाउज है पुल्लिग, भयंकर गलती की है।
मर्दों के सिर पर, टोपी-पगड़ी रख दी है॥
उछला उनका पर्स, रो रही अपनी पाकिट।
उनका लहगा महगा, सस्ती पति की जाकिट॥

देख विरोधाभास को, लागी दिल पर चोट।
दोनों ही पुल्लिंग हैं, जम्पर-पेटीकोट॥
जम्पर-पेटीकोट, खोट क्या अपना भाई!
स्त्रीलिंग है सभी, पैन्ट, बुश्शर्ट व टाई॥
कह 'काका' कविराय, पुरुष की किस्मत खोटी।
मिसरानी का जूड़ा, मिसरा जी की चोटी॥

दुलहिन का सिंदूर से, शोभित हुआ ललाट।
दूल्हा जी के तिलक को, रोली हुई 'अलाट'॥
रोली हुई अलाट, टौप्स, लाकिट, दस्ताने।
छल्ला, बिछुआ, हार, नाम सब हैं मर्दाने॥
कह 'काका' कविराय, पहनती वाला 'बाला'।
स्त्रीलिंग जंजीर गले, लटकाते लाला॥

लाली जी के सामने, लाला पकड़ें कान।
उनका घर पुल्लिंग है, स्त्रीलिंग दूकान॥
स्त्रीलिंग दूकान, नाम यह किसने बाँटे।
काजल पाउडर हैं पुल्लिंग, नाक के काँटे॥
कह 'काका' कविराय, विधाता भेद न जाना।
मूछ मर्द को मिली, किन्तु है नाम जनाना॥

ऐसी ऐसी सैकड़ों, अपने पास मिसाल।
काकी जी का मायका, काका की ससुराल॥
काका की ससुराल, बचाओ कृष्ण मुरारी।
उनका बेलन देख, काँपती छड़ी हमारी॥
कैसे जीत सकेंगे उनसे करके झगड़ा?
अपनी चिमटी से, उनका चिमटा है तगड़ा॥

कवि-सम्मेलन मे रहे, कवित्रियों की जीत।
कवि की कविता उखडती, जमता उनका गीत।।
जमता उनका गीत, हो गई तबियत खट्टी।
हलवाइन का चूल्हा, हलवाई की भट्टी।
गलत व्याकरणशास्त्र, हुआ गडबड घोटाला।
'काका' की अलमारी मे, काकी का ताला।।

शून्य विधाता आपका, लिंग-भेद का ज्ञान।
बिना व्याकरण पढे ही, बन बैठे भगवान ।।
बन बैठे भगवान, दीप मे डाली बाती।
उनको, नाजुक हृदय, हमे स्त्रीलिंग छाती ।।
स्त्रीलिंग बिल्डिंग, लगाया पुल्लिंग झडा।
मुर्गा को कलगी दे दी, मुर्गी को अडा।।

मन्त्री-सन्त्री-विधायक, सभी शब्द पुल्लिंग।
तो भारत सरकार फिर, क्यो है स्त्रीलिंग।।
क्यो है स्त्रीलिंग, समझ मे बात न आती।
नब्बे प्रतिशत मर्द, किन्तु ससद कहलाती।।
'काका' बस मे चढे, हो गए नर से नारी।
कडक्टर ने कहा—"आ गई एक सवारी।।"

शका करने लग गए, लाला गोपीकृष्ण।
'काका' कवि सुलझाइए, एक हमारा प्रश्न।।
एक हमारा प्रश्न, होय जब रायशुमारी।
राष्ट्रपति का पद, हथिया ले कोई नारी।।
लिंग-भेद की गाठ वहा, कैसे खोलेंगे?
हमने कहा कि उसे 'राष्ट्रपत्नी' बोलेंगे।।

उसी समय कहने लगे, शेरसिंह दीवान।
तोती तोता की भला, कैसे हो पहचान।।
कैसे हो पहचान, प्रश्न यह भी सुलझा लो।
हमने कहा कि, उनके आगे दाना डालो।।
असली निर्णय दाना, चुगने से ही होता।
चुगती हो तो 'तोती', चुगता हो तो 'तोता'।।

प्रश्न तीसरा कर उठे, बाबू बच्चूसिंग।
स्त्रीलिंग-पुल्लिंग से, भिन्न कौन से लिंग?
भिन्न कौन से लिंग, अभी दो और लिंग हैं।
एक दार्जीलिंग, दूसरा डालिंग है॥
लिंग-भेद स व्याप्त देश का, चप्पा-चप्पा।
कांग्रेस अध्यक्ष बन गए, 'निजलिंगप्पा'॥

एक लिंग सबसे विकट, उस न भूलें आप।
वह है स्मग्लिंग, जो सब लिंगो का बाप॥
सब लिंगो का बाप, छोड कविता की घिसघिस।
लिंग-भेद पर मैं, लिखन वाला हू 'थीसिसि'॥
'काका' बडो विचित्र, व्याकरण की है सत्ता।
बौम्बे स्त्रीलिंग, किन्तु पुल्लिंग कलकत्ता॥

—काका कोला 1968

लिंग-भ्रम

विद्यार्थी व्याकरण के, आए अपने ढिग।
'प्रधानमत्री' शब्द को, कह कौन-सा लिंग?
कहे कौन-सा लिंग, प्रश्न सुलझाया ऐसे।
'जैसे शासक, शब्द लिंग होते है वैसे'॥
जनता-शासक आया तो, पुलिंग हो गया।
कांग्रेस ई० मे फिर, स्त्रीलिंग हो गया॥

—काका काकी के लव लैटर्स

लूटनीति

कूटनीति से भी बडी, लूटनीति की चाल।
गज से लडन के लिए, गधा ठोकता ताल॥
गधा ठोकता ताल, तमाशा देखा ऐसा।
पीठ थपथपाता गदहे की, चीनी भैसा॥
कह 'काका' खतरे से, आखे मूद रहे है।
लेकर कजरकोट, कजरे कूद रहे है॥

—काका की फुलझडिया 1965

लोकतन्त्रीय प्रेम

ऋषि-मुनि-साधु-सन्त सब, किया प्रेम गुण-गान।
प्रेम रूप यह जगत है, प्रेम रूप भगवान॥
प्रेम रूप भगवान, प्रेम का पता लगाया।
'काका' ने कलियुगी प्रेम, सर्वोत्तम पाया॥
गले मिलो तब, दो हिस्सों में प्रेम बाँट लो।
करो हृदय से प्रेम, हाथ से जेब काट लो॥

—काका कोला 1968

ल्यूना-लूलू

'ल्यूना-पन्द्रह' उड़ गया, चन्द्र-लोक की ओर।
पहुँच गया, लौटा नहीं, मचा विश्व में शोर॥
मचा विश्व में शोर, सुन्दरी चीनी वाला।
रहे चन्द्रमा पर, लेकर खरगोश निराला॥
उस गुड़िया की चटक-मटक पर, भटक गया है॥
अथवा 'बुढ़िया के चरखे' में, अटक गया है।
कह 'काका' कवि, गया चाँद पर लेने मिट्टी।
'ल्यूना' लूलू बना, हो गई गायब सिट्टी॥

वकील

वकील करते प्रार्थना, कलम चले सर पट्ट।
भाई-भाई में चले, चाकू-गोली-लट्ठ॥
चाकू गोली लट्ठ, मुवक्किल भागे आए।
उनकी पाकिट, मेरी पाकिट में आ जाए॥
केस लड़ें वर्षों तक, कोई टरे न टारे।
हारे सो मर जाय, और जीते सो हारे॥

—1981

वर-विरोध

सेठ भिखारीदास का, बेटा लखमीचन्द।
शादी को बेचैन था, एक नेत्र था बन्द॥
एक नेत्र था बन्द, रात-दिन आहें भरता।
शिवशंकर की पूजा, नित्य नियम से करता॥

भोले हुए प्रसन्न, कहा—"वर मांगो भइए !"
वह बोला, 'वर नहीं, मुझे तो कन्या चहिए॥"

—फिल्मी सरदार 1972

वर्षा-विरह

करत प्रशंसा रात दिन, कविगण नहीं अघात।
पर हमको भावै नहीं, यह बैरिन बरसात॥
यह बैरिन बरसात, लग्यो कोठे में टपका।
दवी जी के पीहर सों, आए द्वै लपका॥
कहं 'काका' कविराय, बन रही उनको पूडी।
टिकरा हमको मिले, देखि चढ़ि आई जूड़ी॥

दामिन दमकै जा समय, लगत करेजा चोट।
नींद न आवै रात भर, गिनैं छत्त की सोट॥
गिनैं छत्त की सोट, फूकते दूल्हा चूल्हा।
दुलहिन सखियन संग, मौज से झूले झूला॥
कहं 'काका' कविराय, वहू को लै जाई भइया।
ऐसी वर्षा में लगाइ दै दियासरैया॥

युक्ति मनोविज्ञान की, है यह सब सों नीक।
वे मैके को जाए जब, तबहिं देउ तुम छींक॥
तबहिं देउ तुम छींक, मिलै नहिं उनको गाडी।
बन्दर कू दै देउ, एक चप्पल या साडी॥
कहं 'काका' सो जाउ, तेल मिट्टी को पी कै।
विना बहू बरखा में, कहा करोगे जी कै ?

इतने हू पर जाए वे, तोहि अकेलो छोड।
दरवज्जे पै लेट जा, चौखट सों सिर फोड॥
चौखट सों सिर फोड, चलो जा सूधो थाने।
कोतवाल के सम्मुख गा विरहा के गाने॥
कहं 'काका' कविराय, फारिकैं कपड़ा तन के।
कहि दीजो हम हैं मजनू सन सत्तावन के॥

नारी को सब कहत हैं, कोमलता की खान।
पर तुम तो निकसीं प्रिये ! पत्थर की चट्टान ॥
पत्थर की चट्टान बाप-भइया-भौजाई।
तुमको प्यारे लगें, पिया को धता बताई ॥
कह 'काका' आ जाउ, पकरिकें पहली गाडी।
विरह-व्यथा मे प्रिये ! रख लई हमने दाढी ॥

देवी जी मैके गईं, सौंप हमें घर-बार।
तीन महीना है गए, सावन-भादों क्वार ॥
सावन भादों क्वार, द्वार की लगि रह्यौ तारौ।
तारौ लै गईं संग, नाहिं विस्वास हमारौ ॥
कह 'काका' कविराय, करि लई करीं छाती।
इतने दिन म आज, मिली है उनकी पाती ॥

'अब पीहर सो निकसिवौ, मरी हँसी न खेल।
इतने पानी भरि रहे, डूबि जाएगी रेल ॥
डूबि जाएगी रेल, कहौ फिर आऊ कैसें ?
अक्कल बडी कि भैंस, तुम्हें समझाऊ कैसें ॥
सुन 'काका' ह्वै रह्यौ, हमारौ चरखा ढीलौ।
अबहि कछू दिन और, पिया होटल मे लीलौ ॥

जब सो तुम मैके गई, मिल्यौ न कोऊ काम।
धीरे धीरे जेब के, निबट गए सब दाम ॥
निबट गए सब दाम, दोस नहिं कछू हमारौ।
बिन पैसा के आख, दिखावै होटल वारौ ॥
कह 'काका' जो नहिं आवै, तू सौन चिरैया।
मनीआडर सो बेगि भेजि दै, साठ रुपैया ॥

बाट तकत अखिया थकी, सूखे अपने प्राण।
नाहिं पधारे आज तक, मनिआडर भगवान ॥
मनिआडर भगवान, समस्या आगे ठाडी।
मोटर ह्वै गई बन्द, मिलै नहिं इक्का गाडी ॥
कह 'काका' कविराय, बताओ जाऊ कैसे।
पीहर मे फसि गई, उन्हे अब लाऊ कैसे ?

गधा डरै घोड़ा मरै, हाथी गोता खाए।
दगरे में पानी भरयौ, जाकौ अर्थ बताए?
जाकौ अर्थ बताए, नाहिं मारग पै काबू।
रेल है गई फेल, टिकस नहिं बाँटें बाबू॥
कहँ 'काका' कविराय, बचाओ गिरवरधारी।
जमुना पल्ली पार, हाय! ससुराल हमारी॥

छाती पै पत्थर धरयौ, पी लोहू कौ घूँट।
भाड़े पै हमने कियौ छै रुपया में ऊँट॥
छै रुपया में ऊँट, दखिकैं ताल तलैया।
बिदक गए श्री ऊँट, ठूठ में अटकी नैया॥
कहँ 'काका' कवि, खैंच नकेल लगायौ झटका।
पहुँच गए ससुरार, काम आयौ यह लटका॥

अब तौ बादर खुलि गए, बरखा ह्वै गई बीति।
प्रिये! तिहारे बिरह में, फाटी घर की भीति॥
फाटी घर की भीति, धस्यौ धरती में कोठो।
दरवज्जो ह्वै गयौ, सवा द्वै अँगुर छोटो॥
कहँ 'काका' कविराय, समझियो हँसी न ठट्ठा।
नीचैं औंधौ आई पर्‌यौ, ऊपर कौ अट्टा॥

मारी उनके सामने, गप्प और द्वै चार।
लहँगा फरिया धारिकैं भई तुरन्त तैयार॥
भई तुरन्त तैयार, ऊँट पै धारिकैं लाए।
बिना जगहुरदंग संग लै घर को आए॥
कहँ 'काका' जब कूटनीति हू काम न आई।
झूठ-नीति अरु ऊँट-नीति, हमने अपनाई॥

—दुलत्ती 1961

वाइफ से लाइफ

नारी शासन चल रहा, यह मत जाना भूल।
बिगड़ जाए हुलिया मियाँ, चले अगर प्रतिकूल॥
चले अगर प्रतिकूल, समझती हम निठल्लू।
सखियों से कहती—'हम लक्ष्मी, वे हैं उल्लू॥"

'काका' कवि शंकित, बजता काकी का डंका।
बिजली के संकट में, झलते उनको पंखा॥

पत्नी क्लब में जाए तो, घर पर रहिए आप।
बैठक में बैठे रहो, प्रहरी बन चुपचाप॥
प्रहरी बन चुपचाप, चोरियत दूर भगाओ।
मुन्ना-मुन्नी गोद खिलाओ, दूध पिलाओ॥
पति बनकर फंस गए, निभेगी कैसे लाइफ।
'नाइफ' से भी तेज, नई लाइट की वाइफ॥

रंग-बिरंगी लिपिस्टिक, क्रीम-पाउडर-सैट।
लाकर फौरन दीजिए, आर्डर है अर्जेन्ट॥
आर्डर है अर्जेन्ट, अगर हो पाकिट खाली।
ले लो कर्जा, क्या हर्जा, खुश हो घरवाली॥
कह 'काका', बीवी पर, रखना चाहो काबू।
उल्टी-सीधी उनकी, आज्ञा मानो बाबू॥

—काका के कारतूस : 1963

वाहन-वर्णन

किसका वाहन कौन है, सुन बेटा हरवंस।
विष्णु का वाहन 'गरुड', सरस्वती का 'हंस'॥
सरस्वती का 'हंस', 'नादिया' शिव को भावै।
दुर्गा देवी 'सिंह', शीतला 'गधा' सुहावै॥
कह 'काका' कवि, लिखा धर्म-शास्त्रों में ऐसा।
लक्ष्मी का वाहन 'उल्लू', यम का है "भैंसा"॥

इन्द्र देव आकृष्ट हैं, 'ऐरावत' की ओर।
कार्तिकेय जी ने चुना, सुन्दर पक्षी 'मोर'॥
सुन्दर पक्षी मोर, कहें पण्डित आचारी।
श्री गणेश गणपति, 'चूहे' पर करें सवारी॥
कामदेव जी बैठ गए, 'तोते' पर अड़कर।
भैरव बाबा, घूम रहे 'कुत्ते' पर चढ़ कर॥

'घोड़ा के रथ' पर लिया, सूर्य देव प्रस्थान।
ब्रह्मा बैठे 'वत्तख' पर, करें विश्व-निर्माण ॥
करें विश्व निर्माण, कुबेर चढ़ें 'पुष्पक' पर।
यमुना जी 'कच्छप', गंगा जी मगन 'मगर' पर ॥
जो पाठक इन छंदों का, पाठ्य करेंगे।
देवी और देवता, उनके क्लेश हरेंगे ॥

—फिल्मी सरकार . 1972

विक्रय-कला

चमकाना है आपको, यदि अपना व्यापार।
गप्प-कला अपनाइए, छोड़ सत्य आधार ॥
छोड़ सत्य आधार, घोर कलयुग है भैया।
बोलोगे यदि सत्य, डूब जाएगी नैया ॥
झूठ बोलने से, मजबूत हार्ट होता है।
माल बेचने का भी एक आर्ट होता है ॥

अपनी अपनी कला है, अपना-अपना रंग।
सब्जीवालों से मिले बिक्री के कुछ ढंग ॥
बिक्री के कुछ ढंग, मिला शहतूतों वाला।
चिल्लाकर कह रहा, ' चलेबी घालो ला ला ॥"
लेकर के अंगूर, नवेली काछिन आई।
लगा रही आवाज, "चमन के मोती लाई ॥'

पूछेंगे यदि आप तो, बतला देगा दाम।
लेकिन असली चीज का, कभी न लेगा नाम ॥
कभी न लेगा नाम, सिंघाड़े रमजानी के।
बोला— काका साब ! बताशे हैं पानी के ॥'
कल्लू ने अमरूद टोकरी, सिर पर लादी।
चिल्लाया, 'लड्डू आ गए इलाहाबादी ॥"

पहुंचे बस स्टैण्ड पर, ड्राइवर मारा ब्रेक।
बस रुकते ही आ गया, केले वाला एक ॥

केले वाला एक, सडे से पक्के-कच्चे।
लगा रहा आवाज़, "मलाई के हैं लच्छे।।"
सबसे सुन्दर एक, व्यजना हमको भाई।
जामुन वाले ने जब, 'काली घटा' बताई।।

—काका के धबाके 1969

विचित्र आशीर्वाद

ठोकर खा बुढिया गिरी, उठा न उससे जाय।
पडी-पडी वह सडक पर, हाय हाय चिल्लाय।।
हाय हाय चिल्लाय, तभी इक लडका आया।
सहज भाव से, हाथ पकडकर उसे उठाया।।
बुढिया बोली—'तूने आज उठाया मुझको।"
उसी तरह बेटा! भगवान उठाए तुझको।।

—काका की कचहरी 1946

वित्तमंत्री से इण्टरव्यू

श्री मुरार जी से मिले, 'काका' कवि अनजान।
प्रश्न किया क्या चाँद पर, रहते है इन्सान?
रहते है इन्सान, मार कर एक ठहाका।
कहने लगे कि तुम, बिल्कुल बुद्धू हो 'काका'।।
अगर वहा मानव होते, हम चुप रह जाते।
अब तक सौ दो-सौ करोड, कर्जा ले आते।।

—काका कोला : 1968

विदाई-दृश्य

मिस-मिस्टर दोनो खडे, प्लेटफार्म पर साथ।
'गुडबाई' के मूड म, झटका मिस का हाथ।।
झटका मिस का हाथ, प्रीति घनघोर दिखाई।
इधर फटा दिल, उधर, फैक हो गई कलाई।।
पीडा से सुकुमारी, 'हाइ-हाइ' चिल्लावें।
'बाइ-बाइ' कह बाबू जी, रूमाल हिलावें।।

—काका के कहकहे : 1966

विदा-वेला

गाजे-बाजे से चली, होकर विदा बरात।
बहू बिचारी रो रही, हाय पिता, हे तात॥
हाय पिता, हे तात, विदेशी एक बराती।
लगा पूछने—"लड़की क्यों रोती-चिल्लाती?"
कह 'काका', इसलिए रो रही है यह बाला।
इतना लिया दहेज, पिता नंगा कर डाला॥

—काका के धड़ाके : 1969

विधाता की भूल

ईश्वर ने आरम्भ में, किया विश्व-निर्माण।
पुनः बनाया आदमी, डाले उसमें प्राण॥
डाले उसमें प्राण, प्रभु फूले न समाए।
"एक आइटम, इससे बढ़िया और बनाए॥"
बढ़ा-चढ़ा कर गढ़ा, सुघड़ नारी के तन को।
तब से चैन न नर को मिला, न नारायण को॥

—जय बोलो बेईमान की : 1973

विधाता को चुनौती

तन से माला फेरता, मन से करूं प्रणाम।
किन्तु विधाता आपके, उल्टे सारे काम॥
उल्टे सारे काम, कहीं पर सूखा पड़ती।
कहीं बाढ़-गरकी से, डूब रही है धरती॥
मूरख मक्खन खाए, मिले पंडित को रूखा।
श्वान पी रहे दूध, आदमी मरता भूखा॥

इन बातों से आ रहा, भक्त-जनों को ताव।
ध्यान न देंगे आप तो, कर दें हम 'घेराव'॥
कर दें हम घेराव, पुलिस का घूमे डंडा।
घेरे में घिर जाए, पुजारी, सेवक, पंडा॥
कह 'काका' कवि, या तो अपनी नीति बदलिए।
या मन्दिर में बैठे बैठे, अनशन करिए॥

—काका कोला, 1968

विरहिनी

रोते-रोते बह गई, दृग-काजल की कोर।
ऐसे नालायक मिले, सैंया हम कठोर॥
सैंया हमे कठोर, फट गई दिल की झिल्ली।
छोड अकेली हमे, आप रहते है दिल्ली॥
कह 'काका' कविराय, सखी सब झूले-झूला।
मो विरहिन के भाग, लिख दिया चक्की-चूल्हा॥

—पिल्ला 1950

विरही

सावन मे सिंगल रहे, घटा उठी घनघोर।
फूट-फूटकर रो रहा, मेरे मन का मोर॥
मेरे मन का मोर, आप तो झूलें झूला।
सूखी रोटी चबा रहा, होटल मे दूल्हा॥
कह 'काका' कविराय, घोसला अपना खाली।
मैके मे मस्त रही, तीज उनकी हरियाली॥

विविध भारती

ट्रांजिस्टर पर आ रहा, मीठा-मीठा गीत।
कौन गा रही गीत यह ? तर्क कर रहे मीत॥
तर्क कर रहे मीत, गलत अन्दाज लगाए।
लता, सुमन, कोई आशा भोसले बताए॥
हमने निर्णय दिया—साफ आवाज आ रही।
यह गाना श्रीमती, 'विविध भारती' गा रही॥

—काका कोला 1968

वृन्दावन-यात्रा

काका वृन्दावन चले, घोट-छानकर भग।
अखियन मे डोरा पडे, फरकन लागे अग॥
फरकन लागे अग, सग काकी को लाए।
यमुना न्हाय, साह जी के मदिर को धाए।
आख फारिकें बोली, यो लल्लू की अम्मा।
इतनी भारी छत्त, परि गए टेढे खम्भा॥

डडा लै पडा ठडो, पूछन लाग्यो नाम।
कौन तुम्हारो नाम है, कौन तुम्हारो गाम?
कौन तुम्हारो गाम, कहाँ ठहरे हो भैया।
बनिया हो, ब्राह्मण हो, नचवैया कि गवैया?
दान-दक्षिणा दओगे, साईं लै लिगे।
दर्शन तुम्हें विहारी जी के, करवा दिगे॥

या मदिर को है गए, वर्ष एक सौ पाच।
परसा गोपीकृष्ण को, भयौ धकाधक नाच॥
भयौ धकाधक नाच, खिल गयौ मन कौ मधुवन।
अद्भुत नर्तक, आधौ राधा, आधौ मोहन॥
आज रात्रि कविसम्मेलन को, जमै अखाड़ौ।
आइ रह्यौ है, 'काका' कवी, हाथरस वारौ॥

पडा जी की बात सुनि, काकी मन मुसकाय।
हमने चुप्पी साध के, आख दई मिचकाय॥
आख दई मिचकाय, प्रेम सौ दर्शन कीने।
इक्यावन पैसा, पडा जी को दै दीने॥
लाल परि गयौ पडा, बोल्यौ आख फाड के।
काहे कू दै रह्यौ, इन्हें हू रखउ राड के?

—काका के धड़ाके 1969

शका

बोले कथा प्रसग मे, पडित सीताराम।
नारी के पश्चात ही, आता नर का नाम॥
आता नर का नाम, कि राधेश्याम कहाते।
गौरीशकर, लक्ष्मीनारायण गुण गाते॥
कह 'काका', शका कर बैठा मैकू मिस्त्री।
शास्त्री' मे तो पहिले, 'शा' है पीछे 'स्त्री'॥

—काका के कहकहे 1966

शंका-समाधान

काकी यों कहने लगी, होकर हमसे क्रुद्ध।
दाढ़ी रखना छोड़ दो, जब तक चलता युद्ध॥
जब तक चलता युद्ध, मान लो सीख हमारी।
लगते हो तुम, पाकिस्तानी छाताधारी॥
काका ! कोई पकड़, पुलिस में दे आएगा।
पुरस्कार में नकद पाँच सौ, ले आएगा॥

हमें डराती हो प्रिये ! करके कच्ची बात।
भोली होती है बहुत, यह औरत की जात॥
यह औरत की जात, न दाढ़ी वाले डरते।
हम तो चिकने गालों पर ही, शंका करते॥
तुम्हीं देख लो, जितने पकड़े पाकिस्तानी।
क्लीन शेव्ड थे, पहिने थे पोशाक जनानी॥

—काका के कहकहे 1966

शतरंज-कुंडली

बेटे को समझा रहे, चाचा झाऊलाल।
फिशर और स्पास्की, हो गए मालामाल॥
हो गए मालामाल, पढ़ाई में क्या रक्खा।
घिसघिस करके कलम, जन्म भर खाओ धक्का॥
फाड़ पुस्तकें, चोला बदल करम के हेटे।
रंज छोड़, शतरंज खेलना सीखो बेटे॥

—जय बोलो बेईमान की : 1973

शब्द-सामर्थ्य

शब्दों की सामर्थ्य भी, हो जाती है व्यर्थ।
आगे-पीछे कीजिए, बदल जाएगा अर्थ॥
बदल जाएगा अर्थ, आप खाते-पीते हैं।
इसका मतलब हुआ, सुखी जीवन जीते हैं॥
'काका' ने कह दिया, आप 'पीते-खाते हैं'।
यह सुनकर बाबू जी, हम पर गुर्राते हैं।

—फिल्मी सरकार

शर्मिला-पटौदी विवाह

खुश होता अल्लाह तो, देता छप्पर फार।
क्रिकेट के कप्तान को, मिली फिल्म स्टार॥
मिली फिल्म स्टार, खिलाडी दोनों पक्के।
वह मारेगा चौका, यह मारेगी छक्के॥
दूल्हा-दुलहिन उन आखो म, खटक रहे है।
जो अब तक, 'वेटिंग लिस्ट' मे लटक रहे हैं॥

हम भविष्यवाणी करें, सुनो खोल कर कान।
पुत्र-रत्न की प्राप्ति हो, सर्वप्रथम सतान॥
सर्वप्रथम सतान, नाम रोशन कर देगा।
पैदा होकर तुरत, गेंद-बल्ला मागेगा॥
'काका' करी रिसर्च, लगाया गहरा गोता।
सब क्रिकेट वालो के पहिले, लडका होता॥
कवि न बोलत झूठ, सत्यभाषी सभापी।
अमरनाथ, मनकड, मुश्ताक अली है साक्षी॥

—हँसगुल्ले 1969

शिखर-वार्ता

शिमला समझौता हुआ, पच कर गए कूच।
अटकी लटकी रह गई, काश्मीर की पूछ,॥
काश्मीर की पूछ पैक्ट को फैक्ट वताया।
यह समझौता भुट्टो खा को, माफिक आया॥
धन्यवाद दीजिए इदिरा जी को किबला।
बचा ले गए अपनी, गद्दी आकार शिमला॥

हल्ले शिमला के सुन, तीस जून की रात।
'काका' कवि भी चल दिए, ले काकी को साथ॥
ले काकी को साथ, भीड की रेलमपेला।
मालरोड पर उस दिन, 'बेनज़ीर' था मेला॥
सबसे अच्छी न्यूज पडी, यह अपने पल्ले।
भुट्टो स ज्यादा थे, मिस भुट्टो के हल्ले॥

शिखर-वार्ता-खर्च का, कीजे कुछ अनुमान।
पाच दिनो मे चर गए, दो हज़ार के पान॥
दो हज़ार के पान, शिखर पर भाव चढ गए।
मुर्ग-मुसल्लम खाकर, उनके वजन बढ गए॥
बोले मुन्ने मिया, मुकद्दर जोर मारता।
तब आयोजित होती, ऐसी शिखर-वार्ता॥

—जय बोलो बेईमान की 1973

शिमला-समझौता

समझौता कैसा रहा, समझो इसका राज।
काग्रेसी खुश हो रहे, जनसघी नाराज॥
जनसघी नाराज, हुई जब हाथापाई।
भ्रान्ति शान्ति करने की, हमने युक्ति बताई॥
कर लो शिखर-वार्ता, इस पर काटो झिक-झिक।
समझौते का समझौता, पिकनिक की पिकनिक॥

सघान्दोलन मे निहित, भाव-भावना शुद्ध।
गहराई को समझिए, क्यो होते हो क्रुद्ध ?
क्यो होते हो क्रुद्ध, जानते बूढे-बच्चा।
इस विरोध का असर पडा, भुट्टो पर अच्छा॥
यदि भारत मे होते, सघी सत्ताधारी।
एक इच भी भूमि, न देते अटलबिहारी॥

—जय बोलो बेईमान की 1973

शिव का धनुष

विद्यालय म आ गए, इस्पेक्टर-स्कूल।
छठी क्लास मे पढ रहा, विद्यार्थी हरफूल॥
विद्यार्थी हरफूल, प्रश्न उससे कर बैठे।
किसने तोडा शिव का, धनुष, बताओ बेटे॥
छात्र सिटपिटा गया बिचारा, धीरज छोडा।
हाथ जोडकर बोला, सर ! मैंने ना तोडा॥

यह उत्तर सुन आ गया, सर के सर को ताव।
फौरन बुलवाए गए, हेडमास्टर साब॥

हेडमास्टर गाय, पढ़ाते हो क्या इनकों।
किसने तोड़ा धनुष, नहीं मालूम है जिनकों।।
हेडमास्टर भन्नाया, फिर तोड़ा किसने ?
झूठ बोलता है, जरूर तोड़ा है इसने।।

इंस्पेक्टर अब क्या कहे, मन-ही-मन मुसकात।
ऑफिस में आकर हुई, मैनेजर से बात।।
मैनेजर से बात, छात्र में जितनी भी है।
उससे दुगुनी बुद्धि, हेडमास्टर जी की है।।
मैनेजर बोला, जी हम चन्दा कर लेंगे।
नया धनुष उससे भी, अच्छा बनवा देंगे।।

शिक्षा-मन्त्री तक गए, जब उनके जज्बात।
माननीय गद्‌गद हुए, बहुत खुशी की बात।।
बहुत खुशी की बात, धन्य हैं ऐसे बच्चे।
अध्यापक-मैनेजर भी है, कितने सच्चे।।
कह दो उनसे, चन्दा कुछ ज्यादा कर लेना।
जो बैलेन्स बचे, वह हमको भिजवा देना।।

—काका के धड़ाके 1969

शुभ कामना

दीपावलि-शुभकामना, कर लीजे स्वीकार।
फ्रिज-टीवी हो, फोन हो, तीन लाख की कार।।
तीन लाख की कार, कारखाने नित बाढ़ें।
शासन के आसन पर, चढ़कर भाषण झाड़ें।।
कह 'काका' कवि, करने दो, जो करते बक-बक।
घर आंगन में नोट, बरसते रहें धकाधक।।

—1981

शुभ सम्मति

लडुआमल रडुआ भए, आयु भई पचास।
टसुआ टपकें रैन-दिन, लगी ब्याह की आस।।
लगी ब्याह की आस, कह रहे आहें भर के।
रखू उच्च आदर्श, ब्याह विधवा सों करके।।

हमने कहा कि लाला जी, तुम हो बडभागी।
शादी कर लो, विधवा तो वह हो ही जागी॥

—फिल्मी सरकार : 1972

शेख अब्दुल्ला की रिहाई

काश्मीर से खबर यह, मिली हमे कुछ लेट।
फिर भी सुन करके इसे, खुशी हुई भरपेट॥
खुशी हुई भरपेट, खोपडी बहुत खुजाई।
समझ न पाए राजनीति की, यह गहराई॥
कह 'काका' राजा जी, बाट रहे रसगुल्ला।
क्योकि जेल से छूट गए, मिस्टर अब्दुल्ला॥

—काका की फुलझडिया - 1965

शोभा-शोध

सत-महित महान वे, सग-सग चले जमात।
नेता धाकड जानिए, चमचे जिनके साथ॥
चमचे जिनके साथ, यात्री की पडो से।
मन्त्री की शोभा बढती, काले झडो से॥
गणिका का गुण द्विगुणित, होता मीरासी से।
अफसर रोबीला हो जाता, चपरासी से॥

चौबे जी के अग पर, रग चढाती भग।
प्रेमी शोभित होय, जब चले प्रेमिका सग॥
चले प्रेमिका सग, शान बढती मोटर से।
प्रत्याशी की शोभा है, अपने वोटर से॥
ससद उसको जान, जहा हो गुत्थमगुत्था।
कोठी वही महान, जहा अल्सेशन कुत्ता॥

लूट मवक्किल को करे, सफल एडवोकेट।
मजिस्ट्रेट शोभित वही, रिश्वत ले भरपेट॥
रिश्वत ले भर पेट, बैंक-शोभा नोटो से।
नारी प्यारी लगे, लिपस्टिक के होठो से॥
दफ्तर-रोजगार की, शोभा बेकारी से।
वैद्यराज की इनकम, बढती बीमारी से॥

पिटक्र आए विदेश से, प्लेयर वह बलवान।
गाठ ग्राहकों की कटे, ऊची वही दूकान ॥
ऊची वही दूकान, धन्य योगी जो भोगी।
अस्पताल वह बडा, अधिक मरते हों रोगी ॥
होटल की शोभा, सुन्दर प्यालो-प्लेटो मे।
आई० टी० ओ० की शाभा, बढती सेठों स ॥

अस्पताल के वास्ते, डाक्टर वह अनुकूल।
मुर्दों से भी कर सके, अपनी फीस वसूल ॥
अपनो फीस वसूल, चढे उन्नति चोटी पर।
वेतन दे सरकार, चिकित्सा हो कोठी पर ॥
पिकनिक की शोभा है, फ्लैश, रमी औ' पपलू।
छिन्न-भिन्न सरकारो की, शोभा दलबदलू ॥

प्रोफेसर वे हैं बडे, आए क्लास मे लेट।
हीरो टाइप छात्र की, शोभा है सिगरेट ॥
शोभा है सिगरेट, क्लब की शोभा व्हिस्की।
गर्ल स्टैनो से रौनक, बढती आफिस की ॥
गृहस्थ शोभा, दो दर्जन हो बच्चा-बच्ची।
चुम्बन जिसमे अधिक, फिल्म वह सबसे अच्छी ॥

शोभनीय वे बीवियां, जो हा नखरेबाज।
फार्वर्ड नारी वही, होय न जिसम लाज ॥
होय न जिसम लाज, कान की शोभा झुमका।
वही नर्तकी कुशल, मटक कर मारे ठुमका ॥
छद काव्य की शोभा, 'काका' के तुकमिल्ला।
मेमसाहब का मानदड, अगरेजी पिल्ला ॥

मिल की शोभा है यही, नित्य होय हडताल।
खून चूस लें दीन का, वे हैं दीनदयाल ॥
वे हैं दीनदयाल, जमाना आया ऐसा।
तोद फुला देता है, 'दो नम्बर' का पैसा ॥
रात अधेरी से बढती, तारो की शोभा।
खबर सनसनीदार, पत्रकारो की शोभा ॥

शोभा की गहराइया, नाप सके तो नाप।
बिच्छु शोभित डक स, विष से शोभित साप ॥
विष से शोभित साप, मढका टर्र-टर से।
घर की शोभा, घरवालो की झर्र झर स ॥
पडित पावें मान, सग हो पोथापत्री।
कवि की शोभा बढे, साथ लाए कवयित्री ॥

शोभनीय वह नाइका, नायक पर छा जाए।
एक कदम आगे बढ़े, चार बार बल खाए ॥
चार बार बल खाय, नैन के सैन चलाए।
गूगा बहरा नर भी, हाय हाय चिल्लाए ॥
टॉपलैस पोशाक पहनकर, नाचे क्लब मे।
त्यागी रागी बनें, डुबकिया मारें लव म ॥

शोभा उस लगूर की, जिसकी लम्बी पूछ।
मेजर वही महान है, रखे नुकीली मछ ॥
रखे नुकीली मूछ पान की शोभा छाली।
कोतवाल वह जिसे, याद हो लाखो गाली ॥
इतवारी आशा मे, प्यारा लगे शनीचर।
नामी वह कॉलिज, पिटें छात्रो से टीचर ॥

खादी से नेता सजे, अपराधी मे जेल।
लटक रहे हो यात्री, वह शोभित है रेल ॥
वह शोभित है रेल घटें दुघटना जितनी ॥
होय, रेल-मन्त्री की, पक्की कुर्सी उतनी ॥
जल से शोभित झील, तीर शोभा कमान की।
होस्टेस स बढ जाती, रौनक विमान की ॥

शोभित हो शोभावनी, कर सोलह श्रृगार।
नथ स शोभा नाक की, कठ सजाए हार ॥
कठ सजाए हार, रेख काजल की मारी।
बिना छुरी तलवार, नैन बन गए कटारी ॥
ब्यूटी दुगुनी करे, अजन्ता टाइप जूडा।
राजस्थानी सस्कृति का, प्रतीक है चूडा ॥

झूठा शोभित झूठ से, बूटों से रंगरूट।
गुंडे गुंडे चाहते, मार काट औ' लूट॥
मार काट औ' लूट मौत खुश हत्यारों में।
सेना की शोभा, अमरीका हथियारों से॥
पहलवान की शोभा, है, अपने दम-खम से।
राष्ट्र की शोभा, मानी जानी अणुबम से॥

शासन जिसके हाथ में, पार्टी वही महान।
टैक्सों की भरमार हो, वही बजट बलवान॥
वही बजट बलवान, संस्था शोभा चन्दा।
स्मगलर की शान, गैर कानूनी धंधा॥
झुग्गी और झोंपड़ी की, शोभा कंगाली।
कलाकार जी की शोभा, हस्ताक्षर जाली॥

काबू कर ले मंच पर, वह कवियों की किंग।
श्रोताओं की बोरियत, दूर करे हूटिंग।
दूर करे हूटिंग, मानते काव्य-पारखी।
सुन्दर नाक-नक्श से, शोभा गीतकार की।
कह 'काका' कवि, वही वीर रस का कवि पुख्ता।
मारे एक दहाड़, मंच के टूटें तख्ता॥

पूरे 'शोभा-शोध' के, करके सोलह छन्द।
सत्रहवां लिखने लगे, हुई लेखनी बन्द॥
हुई लेखनी बन्द, क्योंकि आ टपकी काकी।
हमने कहा, बता दो कोई तुक 'शोभा' की॥
बोली—"जाउ बजार, भाड़ में डालो शोभा।
निबट गई है घर में दाल, उर्द की धोवा॥"

—फिल्मी सरकार 19

श्लील-अश्लील

जीवन भर हमको रहा, इसी बात का खेद।
श्लील और अश्लील का, समझ न पाए भेद॥
समझ न पाए भेद गए थे खजुराहो जब।
दिखी मैथुनिक मूर्ति, कलाकारों के करतब॥

'कावा' काकी देख-देख कर, स्वाद ले रहे।
मंदिर के प्रभु, भक्तों को आनन्द दे रहे॥

जगन्नाथ की पुरी में, पड़ी हृदय पर छाप।
चित्र देख सकते नहीं, संग-संग बेटी-बाप॥
संग-संग बेटी-बाप, कभी कोणार्क जाइए।
इनसे भी घनघोर, कलाकृति वहां पाइए॥
रीतिकाल के कवियों की, कविता शृंगारी।
बड़े-बड़े साहित्यकार, उन पर बलिहारी॥

उस शृंगारी काव्य की, पढ़ने की हो छूट।
सम्मेलन के मंच पर, कवि हो जाए हूट॥
कवि हो जाए हूट, आप मानें ना मानें।
हाय-हाय मच जाए, लड़कियां चप्पल तानें॥
कोकशास्त्र नंगे, चौरासी आसन वाले।
बिकें सरे बाज़ार, जानते शासन वाले॥

—भोगा एण्ड योगा . 1980

श्वान-परिवार

कुत्ता

करें श्वान का मान सब, क्या राजा क्या रंक।
इसीलिए तो 'रंग' का, निकला कुत्ता अंक॥
निकला कुत्ता अंक, बसे हो जन-गण-मन में।
लेखक-आलोचक-सम्पादक-जड़-चेतनमें॥
कह 'काका' कवि, बड़े-बड़े ऋषि-मुनि ललचाए।
धर्मराज के साथ, स्वर्ग को जब तुम धाए॥ 1 ॥

कुतिया

'काका' कुतिया पालिए, बिन कुतिया घर सून।
जैसे टाई के बिना, व्यर्थ कोट-पतलून॥
व्यर्थ कोट-पतलून, जून की गर्मी आवे।
घरवाली को छोड़, तुम्हें शिमला ले जावे॥
आज़ादी से बिता रही, सरकारी लाइफ।
नहीं किसीकी और, सभी कुत्तों की वाइफ॥ 2 ॥

पिल्ला

वस्त्राभूषण से रहित, परमहंस अवधूत।
लल्ला के पिल्ला मुघर, कुतकचन्द के पूत।।
कुतकचन्द के पूत, न बीवी करती गिल्ला।
निर्भय होकर उन्हें, चाट सकता है पिल्ला।।
कह 'काका' कविराय, गोद में लेकर सोती।
देख दृश्य यह इन्सानों को, ईर्ष्या होती।।3।।

—काका कोला · 1968

संकट-काल

फुलझडियों के वास्ते, मिला आपका पत्र।
किन्तु इन दिनों क्रुद्ध हैं, हमसे ग्रह-नक्षत्र।।
हमसे ग्रह-नक्षत्र, हो गया हमला ऐसा।
किया चीन ने धोखे से, भारत पर जैसा।।
कह 'काका' कविराय, होश उड गए हमारे।
सूर्य रात्रि में, दिन में, दीखें चन्दा-तारे।।

असन्तुष्ट ग्रह हो गए, शनि-पार्टी के संग।
'काका' कवि से छेड दी, बिना घोषणा जंग।।
बिना घोषणा जंग, हुक्म मंगल का पाया।
राहु-केतु ने अस्पताल का, गेट दिखाया।।
शुक्र देवता घूर रहे, कर भृकुटी टेढी।
बृहस्पति जी ने बांह पकडकर, सुई घुसेडी।।

पडे-पडे हम कर रहे, पीडा से संघर्ष।
फुदकी-फुदकी फिर रही, अस्पताल में नर्स।।
अस्पताल में नर्स, गीत गुनगुना रही है।
कोई फिल्मी धुन में, सीटी बजा रही है।।
कह 'काका' कविराय, व्यर्थ कवि-जीवन जाना।
पुनर्जन्म में भगवन्! हमको नर्स बनाना।।

—काका की फुलझडियां · 1965

संक्षिप्तीकरण (Short from)

बोले चुन्नीलाल से, लाला मुन्नीलाल।
बी० ए० पिछले जन्म के, 'बनिया अगरवाल'॥
बनिया अगरवाल, 'ट्रेन में टहलें टी० टी०।
घुस जाए जो 'बिना टिकट', कहलाते बी०टी०॥
काका, 'इनकम तर्क और की', आई०टी०ओ०।
'बीबी से डरने वाले अफसर, बी०डी०ओ०॥

'मिडिल पास' है एम०पी०, 'बिना काम बी०काम०।
'मिला काम' तब हो गए, 'एम०काम० हुक्काम॥
एम०काम० हुक्काम, 'चरपरे अफसर' सी०आ०।
'घरवाली का आडर', कहलाता है जी०ओ०॥
'चन्द्रकला के मौसा जी', सी० एम० हो गए।
'दाल मील के मैनजर', डी० एम० हो गए॥

—काका के कहकहे 1966

संभोग-योग

'सं' का प्रत्यय भोग में, लगा बना संभोग।
शब्द इसे अश्लील मयो, कहते बुद्धू लोग॥
कहते बुद्धू लोग, बुद्धि पर जोर लगाओ।
'सं' का संपुट लगा, जीव सजीव बनाओ॥
गम से संगम, चालक से संचालक अच्छा।
यम से संयम, पादक से संपादक अच्छा॥

गायक, वादक जानते, एक शब्द है गीत'।
तीन अर्थ देता हमें, बनकर के संगीत॥
बनकर के संगीत, गुणी गुरुजन बतलाए।
गायन-वादन-नृत्य, सभी इसमें खप जाए॥
सुखद और सुस्वाद भोग, सम्भोग कहाते।
मन्दिर में ठाकुर को, छप्पन भोग लगाते॥

जीवन में 'सं' लगे तो, संजीवन बन जाय।
पति हो संपत्तिवान तो, पत्नी मन मुसकाय॥

पत्नी मन मुसकाय, सगठन बीज बो गए।
जय मे 'स' जोडा तो, 'सजय' अमर हो गए॥
कह 'काका', मानव-जीवन का लाभ लीजिए।
सुखद स्वास्थ्य के लिए, भोग-सभोग कीजिए॥

—काका के कारतूस . 1963

संयोजक की तलाश

कविता पढने मच पर, पहुचे कवि 'घनघोर'।
डेढ मिनट मे कर दिया, श्रोताओं को बोर॥
श्रोताओ को बोर, पडज मे डकराते थे।
एक-एक लाइन को, चार बार गाते थे॥
कभी आख फडकाए, कभी गर्दन को मोडे।
हूट हो गए, किन्तु नही माइक को छोडें॥

कुवर कुल्हाडासिंह जी, रहे काव्य को तौल।
खडे हो गए सीट पर, लेकर के पिस्तौल॥
लेकर के पिस्तौल, चकित थे श्रोता सारे।
कवि जी थर-थर कांप रहे थे, भय के मारे॥
"पढिए कविता, तुमसे नही शिकायत हमको।
उसे बता दो, जिसने बुलवाया है तुमको।"

—काका के धडाके : 1969

सच्चा विद्यार्थी

अधिकारी मानें नही, अगर आपकी माग।
हाकी लेकर तोड दो, अनुशासन की टाग॥
अनुशासन की टाग, वही बन सकता नेता।
जो सभ्यता, शिष्टता का चूरन कर देता॥
फिल्म दिखाए मुफ्त, उसीको मित्र बनाओ।
कापी पर माला सिन्हा के, चित्र बनाओ॥

पूज्य पिता की नाक मे, डाले रहो नकेल।
'रेगूलर' होते रहो, तीन साल तक फेल॥

तीन साल तक फेल, भाग्य चमकता जीरो।
बहुत शीघ्र बन जाओगे, कालिज के हीरो॥
कह 'काका' कविराय, वही सच्चा विद्यार्थी।
जो निकालकर दिखला दे, विद्या की अर्थी॥

—काका के कहकहे 1966

सजा में मजा

पाक-बन्दियों का शिविर, करने गए रिसर्च।
प्रति कैदी पर छह रुपे, होते हैं नित खर्च॥
होते हैं नित खर्च, यहा पर अडे बरसें।
भूखे भारतीय सूखे टुकडो को तरसें॥
मनुआ बोला—कर डालो कुछ 'धूम-धडाका'।
घर से अच्छे रहो, जेलखाने में 'काका'॥

—जय बोलो बेईमान की 1973

सत्य और झूठ

साले की बारात मे, जाना हमे जरूर।
लेकिन साहब ने नहीं, छुट्टी की मजूर॥
छुट्टी की मजूर, गए डाक्टर पर भागे॥
दो रुपये का नोट, रख दिया उनके आगे॥
कह 'काका' कविराय, पिला रिश्वत की घुट्टी।
उसी समय मजूर हो गई, अपनी छुट्टी॥

—काका की फुलझड़ियां : 1965

सत्रह रस

काव्य-कौमुदी मे मिला, अद्भुत रस भडार।
रौद्र, भयानक, वीर रस, करुण, हास्य, शृगार॥
करुण, हास्य, शृ गार, शान्त, वीभत्स दिखाए।
काकी ने चौके मे, षट्‌रस और बताए॥
हमने प्रश्न किया तो, क्या पन्द्रह रस है बस?
दो रस तो रह गए, हाथरस और बनारस॥

—काका के कहकहे : 1966

सफल नेता

सफल राजनीतिज्ञ वह, जो जन - गण में व्याप्त।
जिस पद को वह पकड़ ले, कभी न होय समाप्त।।
कभी न होय समाप्त, घुमाए पहिया ऐसा।
पैसा से पद मिले, मिले फिर पद से पैसा।।
वह 'काका', यह क्रम न कभी, जीवन भर टूटे।
वह नेता है सफल, और सब नेता झूठे।।

—फिल्मी सरकार 1972

सफल प्रत्याशी

प्रत्याशी बनकर घुसे, लड़ने लागे जंग।
किन्तु बीच में पड़ गया, अपना फीका रंग।।
अपना फीका रंग, उधर से आया न्योता।
बैठ गए चुपचाप, किया आर्थिक समझौता।।
धर्म - कर्म - ईमान जाए, चूल्हे-भट्टी में।
'काका' के नारायण, नोटों की गड्डी में।।

—काका कोला · 1968

सफल लेखक

दस ग्रन्थों से टीप कर, पुस्तक की तैयार।
उस पुस्तक पर मिल गया, सरकारी पुरस्कार।।
सरकारी पुरस्कार, लेखनी सरपट रपटे।
सूझ - बूझ मौलिकता, भय से पास न फटके।।
जोड़ - तोड़ में कुशल, पहुंच हो ऊंची जिसकी।
धन्य होय साहित्य, बोलती तूती उसकी।।

—फिल्मी सरकार · 1972

समझ का फेर

तोता लाए बेचने, मियां फकीरुद्दीन।
ले लो इसको शेख जी, राग जानता तीन।।
राग जानता तीन, आप फरमाइश करिए।
बागेश्री-हिंडोल-बिलावल, कुछ भी सुनिए।।
कहा शेख ने—"नहीं चाहिए ले जा इसको।
'शास्तरीय' संगीत, पसंद नहीं है हमको।।"

—काका के कहकहे : 1966

समझौता भंग

काश्मीर की भूमि पर, दृश्य अनोखे देख।
बख्शी की सिगरेट को, सुलगाते हैं शेख।।
सुलगाते हैं शेख, प्रेम की उमड़ी धारा।
डीयर ! एक उसूल, हमारा और तुम्हारा।।
हम दोनों जनमत-संग्रह, करवाकर मानें।
काश्मीर का संघ, अलग बनवाकर मानें।।

लेकिन पहले बात यह, सैटिल कर लो एक।
अब्दुल्ला न राय दी, बख्शी जी को नेक।।
बख्शी जी को नेक, चला नहले पर दहला।
कौन राष्ट्रपति बने, प्रश्न यह सबसे पहला।।
कह 'काका' कविराय, रंग बदरंग हो गया।
होते होते समझौता, यह भंग हो गया।।

—काका की फुलझड़ियां 1965

समान अधिकार

चलो रेलवे-बोर्ड में, रक्खें अपनी मांग।
देवी जी अर्द्धांगिनी, हम भी हैं अर्धांग।।
हम भी हैं अर्धांग, बराबर देते पैसा।
है समान अधिकार, जनाना डिब्बा कैसा।।
'काका' बैठ जाए तो, वे फटकार लगातीं।
लेकिन वे, मर्दाने डिब्बे में घुस जातीं।।

—काका के कारतूस 1963

सरस्वती के घर लक्ष्मी

आवश्यकता से अधिक, नहीं सुहाता हर्ष।
खबर लाटरी की सुनी, हुई मूर्छित नर्स।।
हुई मूर्छित नर्स, सौत को सौत न भाई।
सरस्वती के घर, लक्ष्मी कैसे घुस आई ?
कह 'काका' कवि, जाने क्या हो जाए पल में।
हो जब 'ड्रा' की डेट, डाक्टर रखो बगल में।।

—फिल्मी सरकार 1972

सवाल मे बवाल

रिंग रोड पर मिल गए, नेता जी बलवीर।
कुत्ता उनके साथ था, पकड रखी जजीर॥
पकड रखी जजीर, अलसियशन था कुत्ता।
नेता से दो गुना, भौंकन का था बुत्ता।
हमने पूछा—'कहो, आज कैसे हो गुमसुम?
इस गदहे को लेकर, कहा जा रहे हो तुम?"

नेता बोले क्रोध से, करके टेढी नाक।
कुत्ता है या गधा है, फूट गई हैं आख?
फूट गई हैं आख, नशा करके आए हो।
बिना बात ही, सुबह - सुबह लडने धाए हो॥"
हमने कहा कि— कौन आपसे जूझ रहे हैं?
हम तो यह सवाल, कुत्ते से पूछ रहे हैं॥'

—फिल्मी सरकार 1972

ससुराल-धन दहेज

श्रमधन, पितुधन, मातुधन, इनपर धर मत ध्यान।
जब आवे ससुराल - धन सब धन धूल - समान॥
सब धन धूल समान, ध्यय से ऊचा भागो।
मिले लखपति ससुर यही प्रभु से वर मागो॥
कह काका कवि दुलहिन हो भेंडी या कानी।
कर लीजे स्वीकार नही इसमे कुछ हानी॥

—काका की फुलझडिया 1965

सस्ती कविता

सस्ती कविता जम गई, नही समझना झूठ।
जब महगी कविता पढी, तभी हो गए हूट॥
तभी हो गए हूट, कट गए पत्रम पुष्पम।
अपने पैरो आप कुल्हाडी क्यो मारें हम?
काका, उन श्रोताओ को उपदेश न भाए।
सम्मेलन म जो, मनोरजन करने आए॥

—जय बोलो बेईमान की 1973

सहनशक्ति

साहब ने आर्डर दिया, लाओ ऐसा क्लर्क।
जो दफ्तर में कर सके, बारह घंटे वर्क॥
बारह घंटे वर्क, तर्क में समय न खोए।
डाटो फटकारो, फिर भी नाराज़ न होए॥
'काका' ऐसी सहनशक्ति का, पता लगाया।
यह गुण शादी-शुदा, बाबुओं में ही पाया॥

—काका कोला 1966

सहानुभूति-अनुभूति

मृत पत्नी के शोक में, बैठे थे रजनीश।
फूट फूट कर रो रहे, उनके मित्र हरीश॥
उनके मित्र हरीश, व्यर्थ व्याकुल होते हो।
मैं तो रोया नहीं दोस्त! तुम क्यों रोते हो?
कहने लगे हरीश—"बताऊं कैसे दादा?
मुझे प्यार करती थी वह, तुमसे भी ज्यादा॥"

—जय बोलो बेईमान की 1973

सांड-वन्दना

नमस्कार तुमको करूं, अहो सांड बलवान!
रूप मनोहर आपका, कैसे करूं बखान?
कैसे करूं बखान, होड कर सके न कोई।
गैया के पतिदेव, भैंसिया के बहनोई॥
कह 'काका' कविराय, किसानों के तुम हाऊ।
पडिया के फूफा, धन्य बछिया के ताऊ॥

भिण्डी जब बाजार में, बिकें रुपे की सेर।
सहन आपसे हो भला, कैसे यह अन्धेर॥
कैसे यह अन्धेर, अहो देवन के देवा।
मार झपट्टा तीन सेर का, करो कलेवा॥
कह 'काका' कवि, कांप काछी कुंजरा डर से।
सत्य वचन यह, 'नग बड़े हैं परमेश्वर से'॥

गरम जलेबी देखकर, होते डावाडोल।
भरे थाल पर अड गए, करने लगे किलोल॥
करने लगे किलोल, दाँत पीसे हलवाई।
चाह जितना मार, कसम हटने की खाई॥
कह 'काका' कविराय, सहनशक्ति है भारी।
धन्य आपके पिता, धन्य जननी महतारी॥

करफ्यू आर्डर के समय, सन्नाटा जब होय।
तुम्हारे सिवा बजार मे, और न दीखे कोय॥
और न दीखे कोय, आप जब डकराते हैं।
सोते-सोते लोग रात को जग जात है॥
कह 'काका' कवि, रक्षा करते आप हमारी।
नित्य करें निस्वार्थ, भाव से पहरेदारी॥

कोतवाल की क्या चली, डिप्टी हो या जन्ट।
कोई भी नहिं आपका, बना सके वारन्ट॥
बना सके वारन्ट, पुलिस वाले घबरावें।
हँसकर तहसीलदार, आपसे हाथ मिलावें॥
कह 'काका' कविराय, न कोई रोकनहारा।
स्वतन्त्रता है जन्मसिद्ध, अधिकार तुम्हारा॥

—पिल्ला 1950

सावधान

नेता जी जब आपस, स्वय मिलाए हाथ।
समझो गहरा राज है, भैया भोलानाथ॥
भैया भोलानाथ, दाल मे कुछ काला है।
भला बुरा कुछ-न-कुछ, आज होन वाला है॥
हाथ छुडाकर सर्वप्रथम, वह काम कीजिए।
पाचो उगली सही-सलामत, देख लीजिए॥

—फिल्मी सरकार 1972

सावधान

तिरबन यारो बानियाँ, मासा बारो जाट।
टाइ यारो ज्योतिषी, चसरकनामी भाट॥

चपरकनाती भाट, जोगिया रगी रगायौ।
इनकी गहराई विधना हू, जान न पायौ ॥
कहू 'काका' कवि बडो भयकर, नेता फसली।
देउ पुलिस को खबर, मिलें इंस्पेक्टर नकली ॥

—काका के कहकहे : 1966

साहब-सम्प्रदाय

जब था अपने देश मे, अगरेजो का राज।
भारत के सर पर चढे, बैठे बन करके सरताज ॥
बन करके सरताज, ठसक्के ठाठ निराले।
साहब कहलाते थे, गोरी चमडी वाले ॥
विदा हुए गौराग, राज्य कालो का आया।
तब इनको भी शौक, 'साहबी' का चर्राया ॥

मेजर, मास्टर, मिनिस्टर, मजिस्ट्रेट, हुक्काम।
'साहब' कहकर अदब से, करना पडे सलाम ॥
करना पडे सलाम, मुसाहब जो साहब के।
अब उनसे भी साहब कहना, रहना दबके ॥
उजली होवें अथवा, तारकोल-सी काली।
'मेम साहिबा' कहलाए, उनकी घरवाली ॥

रोजी-रोटी के लिए, रख साहब की शान।
इनका बच्चा हो उसे, छोटा साहब जान ॥
छोटा साहब जान, बदल लें फौरन तेवर।
अगर पुकारो कभी, नाम साहब का लेकर ॥
कहकर देखो डिप्टी साहब को, तुम डिप्टी।
इतनी मार पडे, गायब हो जाए सिट्टी ॥

'साहब' यह बतलाइए, क्या है इसका 'कौज'।
दिन-दिन बढ़ती आ रही, यहा साहबी फौज ॥
यहा साहबी फौज, कि जैसे ई० ओ० साहब।
सी० ओ० साहब, अथवा आई० टी० ओ० साहब ॥
मुसिफ साहब, जज साहब, व कलक्टर साहब।
टी० टी० साहब, गार्ड साब, कन्डक्टर साहब ॥

शिक्षा-संस्था भी यहां, साहब से भरपूर।
'बड़े साब' के नाम से, हैड क्लर्क मशहूर॥
हैड क्लर्क मशहूर, प्रिन्सिपल साहब आए।
घुसे क्लास में, प्रोफेसर साहब घबराए॥
प्रोक्टर साहब से बोले, मानीटर साहब।
फादर के हैं जिगरी दोस्त, चांसलर साहब॥

कागज़ काले क्यों करें, 'काका' कवि बेकार?
गिनने बैठो तो मिलें, साहब कई हज़ार॥
साहब कई हज़ार, और देखो कुछ साहब।
डाक्टर साहब, वकील साहब, ठाकुर साहब॥
मैनेजर साहब से बोले, बाबू साहब।
किसी सीट पर रखवा दीजे, काबू साहब॥

देश साहबों का तभी, इस भारत को जान।
साहब कहलाने लगें, सब मजदूर-किसान॥
सब मजदूर-किसान, कुली खल्लासी साहब॥
चपरासी तक कहलाए, चपरासी साहब॥
श्रोता साहब! सुनो छंद 'काका' साहब से।
मिली प्रेरणा लिखने की 'पापा' साहब से॥

—फिल्मी सरकार: 1972

सिगरेट माहात्म्य

कलाकार बेकार से, हुई हमारी भेंट।
धुआं निकालें नाक से, पी मुंह से सिगरेट॥
पी मुंह से सिगरेट, चकित सबको कर डाला।
चुरट आंख से खींच, आंख से धुआं निकाला॥
कुछ दिन में मर गए, बिचारे होकर अंधे।
हमें तीन उपदेश दे गए, प्रभु के बंदे॥

धूम्रपान हम कर रहे तो क्या इसमें खोट?
बीड़ी औ' सिगरेट के, लाभ कीजिए नोट॥
लाभ कीजिए नोट, प्रथम होती है खांसी॥
कफ हो जाता खुश्क, गले में लगती फांसी॥

रात-रात भर खासेगा जो, ऊचे स्वर म।
चोर कदापि नही आ सकते, उसके घर म।।

और दूसरा फायदा, सुनिए कृपानिधान।
जो पीता सिगरट नित, नहीं काटता स्वान।।
नहीं काटता स्वान, जिसे कफ खासी होगी।
झुक जाएगी कमर, दमा का होगा रोगी।।
जहा कही जाएगा, लाठी लेकर जाए।
किस कुत्ता का कुत्ता है, जो आगे आए।।

लाभ बताए तीसरा, खुले स्वर्ग का गेट।
'चेन स्मोकर' बन पियो, डेली दस पैकट।।
डेली दस पैकेट, सुफल आगे आएगा।
करे ईश्वर कृपा, 'कैंसर' हो जाएगा।।
अस्पताल मे टैस्ट कराकर, रैस्ट लीजिए।
पडे-पडे, नित नई नर्स के, दर्स कीजिए।।

—फिल्मी सरकार 1972

सिगरेट-समीक्षा

मिस्टर भैसानन्द का, फूल रहा था पट।
पीते थ दिन-रात म, दस पैकिट सिगरेट।।
दस पैकिट सिगरेट, डाक्टर गोयल आए।
दिया लैक्चर तम्बाकू के, दोष बताए।।
कैंसर हो जाता, ज्यादा सिगरेट पीन से।
फिर ता मरना ही अच्छा, लगता जीने से।।

बाले भैसानन्द जी, लेकर एक डकार।
आप व्यर्थ ही हो रहे, परेशान सरकार।।
परेशान सरकार, तर्क है रीता-थोता।
सिगरेटो मे तम्बाकू, दस प्रतिशत होता।।
बाकी नब्बे प्रतिशत, लीद भरी जाती है।
इसीलिए तो जल्दी, मौत नहीं आती है।।

सिद्धान्तवादी

क्लब के मेम्बर बन गए, समझे नही रहस्य।
सडे-की-सडे वहा, दावत खाय सदस्य॥
दावत खाय सदस्य, लोग रोजाना आते।
लेकिन अपने राम सिर्फ, सडे को जाते॥
कह 'काका', क्या 'वण्डरफुल' योजना बनाई।
वजन बढ गया, गालो पर आई चिकनाई॥

क्लब के सेक्रेटरी ने, मारी हम पर चोट।
अगली पार्टी के लिए, दीजे सौ का नोट॥
दीजे सौ का नोट, नियम ऐसा बतलाया।
तुम भी उन्हे खिलाओ, जिनका तुमने खाया॥
'काका' लिखकर थमा दिया, इस्तीफा उनको।
'बदले की भावना', नही भाती है हमको॥

—काका कोला : 1968

सिनेमा की सनक

बहरा बोला पकडकर, सूरदास का हाथ।
चलो सिनेमा देखने, आज हमारे साथ॥
आज हमारे साथ, हँसी अधे को आई।
बिन आखो के वहां, हमे क्या देय दिखाई?
तब बहरे ने कहा—"बडे मूरख हो प्यारे।
देखें मेरी आखें, सुनेंगे कान तुम्हारे॥"

—काका-काकी के लव-लैटर्स :

सीमेण्ट का थैला

हे थैला सीमेट के, तुम्हें नवाऊ माथ।
घटो से 'क्यू' मे खडे, लेकर अर्जी हाथ॥
लेकर अर्जी हाथ, हाय तकदीर हमारी।
साहब कुर्सी छोड गए, तब आई बारी॥
कह 'काका' कविराय, मुफ्त मे धक्के खाए।
नही हुए तुम प्राप्त, लौट घर बुद्ध आए॥

—काका की फुलझडिया : 1965

'सु' की सुराही

स्वामी सुतलीदास से, बोले सुकवि सुजान।
'सु' से सुशोभित शब्द को, सदा मिला सम्मान ।।
सदा मिला सम्मान, 'सु' की महिमा है भारी।
किसी कुमारी से सुन्दर, लगती सुकुमारी ।।
मित्रानन्दन का न हुआ, अब तक अभिनन्दन।
'सु' की कृपा से, वन्दित हुए सुमित्रानन्दन ।।

बेढंगे-बेडौल का, उडता रहा मखौल।
लगे सुहाना सभी को, सुघड शरीर सुडौल ।।
सुघड शरीर सुडौल, रहे यूं ही श्रीदामा।
कृष्णचन्द्र से चरण धुलाए, भक्त सुदामा ।।
बिगड जाए शुभ कार्य, अगर लग जाए भद्रा।
'सु' से प्रतिष्ठित हुई, कृष्ण की बहन सुभद्रा ।।

सुबह सु की माला जपो, हाथ सुमरनी धारि।
मिले ससुर की कृपा से, सुखद सुलोचनि नारि ।।
सुखद सुलोचनि नारि, रग महफिल मे छाए।
सुरा-सुराही सग, सुभाषी साकी आए ।।
सुरपुर मध्य सुरेन्द्र, 'सु' की सुषमा से चमके।
सुरमा से बूढी आखो मे, यौवन छलके ।।

सुखदायी हो सभी को, सुरभित सुमन-सुगध।
अतिथि सुखी को देखकर, सुख-सुविधा-सुप्रबन्ध ।।
सुख-सुविधा-सुप्रबन्ध, सुहावत सुमुखी सुकेशी।
हैं सुदेश को हितकारी, सब वस्तु सुदेशी ।।
यद्यपि सिन्धु विशाल, हुई सुप्रसिद्ध सुरसरी।
दरी पद-दलित हुई, सु से बन गई सुन्दरी ।।

सारगी से अधिक है, सुरमडल का नाम।
वही सुगायक जानिए, शुद्ध लेय सुर-तान ।।
शुद्ध लेय सुर-तान, व्यर्थ है छैल-छबीला।
महफिल मे वह जमे, कि जिसका कठ सुरीला ।।
'सु' से बनी ससुराल, 'सु' की पहिचान अभागे।
फाइन डाउन हुआ, सुपरफाइन के आगे ।।

कडवी होय सुनैन, पर मीठे लगें सुनैन।
'सु' के सबब सुग्रीव को, भाए वैद्य सुषेण॥
भाए वैद्य सुषेण, ख्याति पाई जन-जन मे।
छोड कुकर्म, सुकर्म किए, जिसने जीवन मे॥
सुफल उन्हें हो मिला, चले जो सुजन सुपथ पर।
'सुब्रह्मण्यम' हुए प्रतिष्ठित, मन्त्री पद पर॥

शहशाह नामी हुए, सुलेमान सुलतान।
पाया सुर्ख गुलाब ने, नेहरू से सम्मान॥
नेहरू से सम्मान, 'सु' की है अद्भुत माया।
देख सुहासिन नर्स, सुन्न हो जाती काया॥
'सु' से सुलह कर बने, सुखी-सुखिया-सुखकारी।
फीका है वह पान, कि जिसमें नही सुपारी॥

सुज्ञ-सुधीजन से सुने, हमने यह सुविचार।
जहा काम आवे सुई, कहा करे तलवार॥
कहा करे तलवार, जग रहे या कि सो रहे।
सुखानन्द जी सुरानन्द मे, मगन हो रहे॥
यह सिद्धान्त, फेमिली प्लानिंग का है सच्चा।
एक सुपुत्र, पाच पुत्रो से होता है अच्छा॥

फेल नई कविता हुई, सफल सुगम्य-सुछन्द।
नाक सडे दुर्गन्ध से, सुखकर लगे सुगन्ध॥
सुखकर लगे सुगन्ध, सुशिक्षित सुता सुहानी।
कागा से मीठी होती, सुग्गा की बानी॥
धन्य सुरासुर, विष्णु शिखर पर 'सु' को चढाया।
ले 'वराह अवतार', सुअर का मान बढाया॥

कर्ण छिपे इतिहास मे, नामी हुए सुकर्ण।
वर्ण उपेक्षित ही रहा, आगे बढा सुवर्ण॥
आगे बढा सुवर्ण, 'सु' से चमकाई माला।
जब सुनार ने इसपर, तनिक सुहागा डाला॥
सुन सुकाव्य यह बोले, एक सुधारक बच्चा।
सौ दुष्टो से एक सुष्ट, होता है अच्छा॥

कम्पोजिटर कह रहे, कहा करें अब खोज।
'सु' समाप्त सब हो गए, कैसे हो कम्पोज?
कैसे हो कम्पोज, हमारा सर चकराया।
हैं विचित्र 'काका' कवि, 'सु' का सुमेरु बनाया॥
लम्बी कविता पढ़कर, बोर हुए कवि 'राही'।
बहुत हो गया, बन्द कीजिए 'सु' की सुराही॥

—जय बोला बेईमान की : 1973

सुपुत्र

पढ़-पढ़कर पत्थर भए, लिख-लिखकर कमज़ोर।
चढ़ जा बेटा छत्त पर, ले पतंग अरु डोर॥
ले पतंग अरु डोर, दनादन पेच लड़ावै।
पानी अच्छा लगै न, उसको रोटी भावै॥
कह 'काका' कवि, प्यास लगै तो पीवै बीड़ी।
ऐसा पूत सपूत, तार दे सातों पीढ़ी॥

—काका की फुलझड़ियां : 1965

सुरक्षा परिषद् में बुद्धू

परिषद् वाले दोस्त भी, नहीं दे सके साथ।
लौट कराची चल दिए, बुद्धू खाली हाथ॥
बुद्धू खाली हाथ, स्वार्थ-सरिता में डूबे।
छार-छार कर दिए, 'छागला' ने मन्सूबे।
कह 'काका' कवि, बुद्धू जी की यही निशानी।
सिर चीनी, धड़ अंगरेजी, पग पाकिस्तानी॥

चाऊ से कर मन्त्रणा, पुन चलेंगे चाल।
देख-देख ललचा रहे, काश्मीर की शाल॥
काश्मीर की शाल, दाल अब गल न सकेगी।
झूठ-फरेबी चाल सत्य पर, चल न सकेगी॥
कह 'काका' कवि, समझ गए सब गोरे-काले।
जान गए असलियत सुरक्षा परिषद् वाले॥

—काका की फुलझड़ियां : 1965

सुरा-समर्थन

भारतीय इतिहास का, कीजे अनुसंधान।
देव दनुज किन्नर सभी, किया सोमरस पान।
किया सोमरस पान, पिए कवि लेखक शायर।
जो इससे बच जाए, उसे कहते हैं, 'कायर'॥
कह 'काका' कवि 'बच्चन' ने, पीकर दो प्याला।
दो घंटे में लिख डाली, पूरी 'मधुशाला'॥

सभी विभागों में किया, इसने डवलपमैण्ट।
पीकर न्यायाधीश जी, देते हैं जजमैण्ट॥
देते हैं जजमैण्ट, कोर्ट में पीकर जाते।
तब वकील कानूनी, कला कमाल दिखाते।
'काका' सरकारी गवाह को, सुरा अनूठी।
केस जीत ले जाए, गवाही देकर झूठी॥

भेद भाव से मुक्त यह, क्या ऊंचा क्या नीच।
अहिरावण पीता इसे, पीता था मारीच॥
पीता था मारीच, स्वर्ण-मृग रूप बनाया।
पीकर के रावण सीता जी को, हर लाया॥
कह 'काका' कविराय, सुरा की करो न निन्दा।
मधु पीकर के मेघनाथ, पहुंचा किष्किन्धा॥

ठेला हो या जीप हो, अथवा मोटरकार।
ठर्रा पीकर छोड़ दो, अस्सी की रफ्तार॥
अस्सी की रफ्तार, नशे में पुण्य कमाओ।
जो आगे आ जाए, स्वर्ग उसको पहुंचाओ॥
पकड़ें यदि सार्जेण्ट, सिपाही ड्यूटी, वाले।
लुढ़का दो उनके मुंह में, दो-चार पियाले॥

भीमपलासी, भैरवी, भैरव हो कि बिहाग।
महफिल में बे-सुरा के, होय बेसुरा राग॥
होय बेसुरा राग, सुरा सुर करे उजागर।
किया सुरा पर 'सहगल' ने, जीवन न्यौछावर॥
कह 'काका' संगीत कला साधक, आराधक।
सुरा भक्त होते हैं, नर्तक, गायक, वादक॥

नोटों की रिश्वत नहीं, लेता हो हुक्काम।
बोतल रख दो मेज पर, सफल होय सब काम।।
सफल होय सब काम, बचत का सीखो ढर्रा।
व्हिस्की बोतल में, भर ले जाओ ठर्रा।
कह 'काका' कवि, बड़ी शक्ति रखती है 'वाइन'।।
आंख मीच कर साहब, कर देते हैं 'साइन'।।

मदिरा देवी आपको, शत-शत करूं प्रणाम।
सुरा माधुरी-मद्यमय, दारू तेरे नाम।।
दारू तेरे नाम, ब्राण्डी, व्हिस्की, बीयर।
नित्य पियो तो मिले, स्वर्ग की लाइन क्लीयर।।
उच्च कोटि के नेता को, 'स्काच' सुहाए।
ब्लैकिस्टों को सिर्फ, 'ब्लैक नाइट' ही भाए।।

पूरी बोतल गटकिए, होय ब्रह्म का ज्ञान।
नाली की बू इत्र की, खुशबू एक समान।।
खुशबू एक समान, लड़खड़ाती जब जिह्वा।
'डिब्बा' कहना चाहो, निकले मुंह से 'दिब्बा'।
कह 'काका' कविराय, अर्ध उन्मीलित अंखिया।
मुंह से बहती लार, भिनभिनाती हैं मखियां।

इंगलिश पीते एक्टर, फ्रेन्स पिए एक्ट्रेस।
सैक्स जगाने को पिए, डायरेक्टर 'थ्री एक्स'।।
डायरेक्टर थ्री एक्स, साहसी सीने वाले।
पैमाना तक पी जाते है, पीने वाले।।
पी-पी करके कई बन गए, फिल्मी हीरो।
बिना पिए हम बने रहे, जीवन भर जीरो।।

प्रेम-वासना रोग में, सुरा रहे अनुकूल।
सैंडिल-चप्पल-जूतियां, लगती जैसे फूल।
लगती जैसे फूल, धूल झड़ जाए सिर की।
बुद्धि शुद्ध हो जाए, खुले अक्कल की खिड़की।
प्रजातन्त्र में बिता रहे, क्यों जीवन फीका?
बनो 'पियक्कड़चन्द', स्वाद लो आजादी का।।

"ड्राइ एरिया' दख, कवि किन्नर दीने रोय।
काका अब कैसे मगन, कवि-सम्मेलन होय॥
कवि-सम्मेलन होय, तरस कवियों पर खाओ।
जैसे भी हो इस नैया को, पार लगाओ॥
यह सुन सयोजक जी, आए भागे-भागे।
तीन बोतलें रख दी, 'किन्नर जी' के आगे॥

देख बोतलें खिल उठे, कवि जी सिद्ध प्रसिद्ध।
ऐसे झपटे सुरा पर, जैसे टूटें गिद्ध॥
जैसे टूटें गिद्ध, खनाखन बाजें प्याली।
तीन मिनट मे, तीनो बोतल कर दी खाली॥
किन्नर जी मुह फाड, गिर पडे वही सो गए।
बचे-खुचे कविराज, मच पर हूट हो गए॥

राजनीति के पैन मे, कूटनीति की इक।
बोलें मद्यनिषेध पर, नेता करके ड्रिंक॥
नेता करके ड्रिंक, तुम्हे कुछ होश नही है।
मद्यपान मे दोष, ड्रिंक' मे दोष नही हैं॥
कह 'काका' कवि, मद्य-विधेयक शीघ्र बना दो।
नही पिये जो सुरा, जेल मे बन्द करा दो॥

एक बार मद्रास म, देखा जोश-खरोश।
बीस पियक्कड मर गए, तीस हुए बेहोश॥
तीस हुए बेहोश, दवा दी जाने कैसी।
वे भी सब मर गए, दवाई हो तो ऐसी॥
चीफ सिविल सर्जन न, केस कर दिया डिसमिस।
पास्ट मार्टम हुआ, पट म निकली 'वार्निश॥

—काका कोला। 1968

सूखा बनाम बाढ

जगत-पिता की बुद्धि पर, आता हमको तर्स।
पूर्व वर्ष सूखा पडी, बाढ-कोप इस वर्ष॥
बाढ-कोप इस वर्ष, वही को सही बनाओ।
एकाउन्टेंट भुलक्कड को, सस्पेंड कराओ॥

जदपि आपकी बहुत, पुरानी है प्रभु-सत्ता।
गणतन्त्री जनता, काटे सत्ता का पत्ता॥

—काका के कारतूस 1963

सूझ-बूझ

मीटिंग हुई चुनाव की, माग रहे थे वोट।
पत्थर आया मच पर, लगी विरोधी चोट।
लगी विरोधी चोट, पार्टी के अधिकारी।
अस्पताल ले जाने की, कर रहे तयारी॥
नेता बोला, दुर्घटना का लाभ उठाओ।
सबसे पहले, फोटोग्राफर को बुलवाओ॥

—काका हाथरसी 1975

स्वतन्त्रता का नमूना

बिना टिकट के ट्रेन मे, चले पुत्र बलवीर।
जहा 'मूड' आया वही, खीच लई जजीर॥
खीच लई जजीर, बने गुडो के नक्कू।
पकडें टी० टी० गार्ड, उन्ह दिखलाते चक्कू॥
गुडागर्दी, भ्रष्टाचार, बढा दिन दूना।
प्रजातन्त्र की स्वतन्त्रता का, देख नमूना॥

—काका कोला : 1968

स्वतन्त्रता-दिवस

कहा कहू छवि आज की, भले बने हो नाथ।
'काका' मस्तक जब नवै, लेउ तिरगा हाथ॥
लेउ तिरगा हाथ, छोडकर, मन्दिर आओ।
शुभ स्वतन्तता दिवस, हमारे साथ मनाओ॥
कह काका' कविराय, शक्ति भारत मे भर दो।
चक्र सुदर्शन चला, दमन दुष्टो का कर दो॥

आई यहा स्वतन्नता, लेकिन हम परतन्त्र।
मना रहे हैं देख लो, फिर भी दिवस स्वतन्त्र॥
फिर भी दिवस स्वतन्त्र, सैकडो धक्के खाए।
तीन किलो चीनी का, परिमिट लेकर आए॥

कह 'काका' कवि, आख दिखाकर बोले नाना।
चीनी हुई समाप्त, भाग जाओ, कल आना॥

चीनी सकट देश मे, आश्चर्य की बात।
फिर भी 'चाचा' कर रहे, चीनी का निर्यात॥
चीनी का निर्यात, यहा हमको तरसावें।
दस आने की किलो, बेचते अमरीका मे॥
कह 'काका' कविराय, समझ मे भेद न आया।
हैल्थ मिनिस्टर जी ने, तब हमको समझाया॥

तथ्य समझने की नही, तुमको अभी तमीज।
चीनी खाने से अधिक, होती डाइबिटीज॥
होती डाइबिटीज, निबल तुम हो जाओगे।
बतलाओ, दुश्मन से कैसे लड पाओगे?
कह 'काका' कविराय, बात यह उनकी नीकी।
करके आखे बन्द, चाय पी जाओ फीकी॥

—काका की फुलझड़ियां 1965

स्वतन्त्र पत्नी

बाबू जी को सौपकर, घर का सारा काम।
घूम रही है पार्क म, बीवी बिना लगाम॥
बीवी बिना लगाम, छोड प्रीतम पर लल्ला।
साथ ले गईं गोदी म, अलसेशन पिल्ला॥
कह 'काका' कविराय, लौट जब घर को आइ।
बोली आख तरेर, न अब तक चाय बनाई?

—काका की फुलझड़ियां : 1965

स्वर्ण-नियन्त्रण

सर्राफा बाज़ार म देख, पुलिस की शक्ल।
'चौदह कैरट' रह गई, लाला जी की अक्ल॥
लाला जी की अक्ल, शीघ्र स्टॉक दिखाओ।
कितना माना है, इस्पेक्टर को लिखवाओ॥
कह 'काका' कविराय, पेट मे कूदें बिल्ली।
दाब पोटली मे भागे, सोने की सिल्ली॥

मुन्नू की अम्मा ! सुनो, घूंघट के पट खोल।
धन्धा चौपट हो गया, निकल गई सब पोल॥
निकल गई सब पोल, काम क्या चला सकेंगे?
माल डाकुओं का अब, कैसे गला सकेंगे?
कह 'काका' कवि, टूटा तार हृदय-तन्त्री का।
गजब ढा गया भाषण, हाय ! वित्त-मन्त्री का॥

स्वर्ण-नियन्त्रण हो गया, बिगड गया सब काम।
'सोने' के कारण प्रिये ! सोना हुआ हराम॥
सोना हुआ हराम, 'थोक' जो गिरवी रक्खे।
देख-देखकर उन्हें लगें, छाती मे धक्के॥
कह 'काका' अब, जेवर वाले काटें कन्नी।
बात न करते रुपये मे, रह गई अठन्नी॥

चाचा बोले हाफकर, बेटा सूरजभान!
सोने-चांदी से भली, जूतों की दूकान॥
जूतों की दूकान, खोल क्यो डोले भटका?
युद्ध होय या शान्ति, न इसमे कोई खटका॥
कह 'काका' कवि, सर्वश्रेष्ठ व्यापार अछूता।
जो ग्राहक आए, उसको 'दिखलाओ जूता'॥

—काका के कारतूस 1963

स्वर्गाष्टक

जय-जय जनता पार्टी, जय जगजीवनराम।
सोने के नीलाम ने, 'सोना' किया हराम॥
सोना किया हराम, स्वर्ण-तस्कर जी हरषें।
बहू-बेटियां, एक अगूठी तक को तरसें॥
काका के मित्रो पर लक्ष्मी ! कृपा दिखाओ।
खील-बताशे स्वीकारो, सोना बरसाओ॥
आश्चर्य की बात, स्वर्ण के मूल्य बढ गए।
'कर्ण' सिह औ' 'स्वर्ण' सिह के, मूल्य घट गए॥

—भोगा एण्ड योगा . 1980

स्वागत

मिस्टर मक्खीचूस से, बोले श्री मनहूस।
जितने पकड़े जा रहे, भारत में मे जासूस॥
भारत म जासूस, कराओ उनका स्वागत।
मामूली-सा खर्च, नही कुछ ज्यादा लागत॥
कह 'काका' कवि, काला पौडर मल दो मुह पर।
फिर जुलूस निकले, चीनी-गदहो के ऊपर॥

—काका की फुलझड़िया, 1965

स्वास्थ-विज्ञान की उल्टी गंगा

कब्ज व दुर्बलता

वैद्य डाक्टर को कभी, मत दिखलाओ नब्ज।
ठूस-ठूस कर खाइए, भाग जाएगी कब्ज॥
भाग जाएगी कब्ज, बढ़े दिन - दूनी चरबी।
छको उर्द की दाल, मिलाकर भिंडी-अरबी॥
कह 'काका' कवि, रोज रात को रबडी चाटो।
जियो सवा सौ वर्ष, मौज मे जीवन काटो॥ 1॥

हैजा और जूडी

हैजा जब हो जाए तो, खाओ ककडी-फूट।
यदि मर जाओ तो, मुझे कर देना तुम सूट॥
कर देना तुम सूट, कूटकर सूखी - पूडी।
तीन दिना तक खाए, भाग जाएगी जूडी॥
कह 'काका' कविराय, कपकपी आव तन म।
कर कुनैन का कीर्तन प्यारे! मन-ही-मन मे॥ 2॥

बुखार

लघन कबहु न कीजिए, जो आ जाए बुखार।
खाकर देखो तेल की, गरम कचौडी चार॥
गरम कचौडी चार, दूर हो सर्दी - बादी।
इतने पर भी यदि, बुखार हो जाए ज्यादी॥
कह 'काका' कविराय, माग कर लाओ मट्ठा।
खट्टा - कट्टा बनो, रायता पीकर खट्टा॥ 3॥

जुकाम

पिन्न - पिन्न हो नाक मे, सर मे होवे दर्द ।
पर नारी को देखकर, आहे भरिए सर्द ॥
आह भरिए सर्द, अगर पड जाए चप्पल ।
सब जुकाम झड जाए, ठीक हो जाए अक्कल ॥
कह 'काका' कविराय, व्यर्थ है मिर्च-बताशा ।
यह नुसखा अजमाइ, देखिए जल्द तमाशा ॥ 4 ॥

निमोनिया

छाती के जिस भाग मे, होती होवे पीर ।
उसी जगह चिपकाइए, 'निम्मी' की तस्वीर ॥
निम्मी की तस्वीर, निमुनिया होवे ठडा ।
क्लब मे जाकर खेल, मजे से गिल्ली-डडा ॥
कह 'काका' कविराय, तरक्की करते जाओ ।
लेकर बोतल, प्याले पर प्याला लुढकाओ ॥ 5 ॥

पायोरिया

गर्म - गर्म भोजन करो, निगल जाउ झट-पट्ट ।
उसके ऊपर बर्फ का, पानी पी गर - गट्ट ॥
पानी पी गरगट्ट, अहिंसा व्रत को धारें ।
मजन करके मुख - कीटो को, कभी न मारें ॥
कह 'काका' कुछ दाँत, गिर पडे तो क्या हानी ?
लाखो रुपये बचा रहा, 'भूडो - अडवानी' ॥ 6 ॥

नकसीर

अगर आपकी नाक से, चले बराबर खून ।
गर्मा - गरम चबाइए, मूगफली को भून ॥
मूगफली को भून, जून मे, कभी न न्हाओ ।
काया को छै घण्टे दिन मे, धूप दिखाओ ॥
कह 'काका' कविराय, औषध सबसे पक्की ।
शीघ्र ठीकाने पर आ जाती, इसमे नक्की ॥ 7 ॥

नेत्र रोग

नेत्र रोग के विषय म, शास्त्रा का यह लेख।
जेब काटकर बाप की, नित्य सिनेमा देख ॥
नित्य सिनेमा देख, एक हो जाए कानो।
एक आख से देख, नही इसमे कुछ हानी ॥
कह 'काका' यदि बिलकुल ही हो जाए अन्धा।
हो भवसागर पार, पकड 'कुक्कू' का कन्धा ॥ 8 ॥

टी० बी०

कफ खासी के रोग म, खाउ खटाई-तेल।
रमणपुरी म पहुच कर डण्ड रात भर पेल ॥
डण्ड रात भर पेल, सुबह के दस बज जाए।
लात मार, जो इससे पहिले तुझे जगाए ॥
कह काका' कविराय सुनो बाबू की बीवी।
दे दो उन्हे तलाक अगर हो जाए टी० बी० ॥ 9 ॥

म दाग्नि

अग्निमन्द हो जाए तो खा कच्चे अमरूद ।
जल्द हजम हो जाएगे, जोर जोर से कद ॥
जार जोर से कूद एक दजन ला कला।
धीरे-धीरे निगल बैठकर तु ही अकेला ॥
कह काका' कविराय, जिया फिर मेरे राजा !
इतनी अग्नी बढ, कि चाहे जिसको खा जा ॥ 10 ॥

सन्निपात

सन्निपात हो जाए तो होना नही अधीर।
मालपुआ से खाइए लगा-लगाकर खीर ॥
लगा-लगा कर खीर वायु के आवें झटके।
जो कोई आवे पास उसे पीटो बेखटके ॥
कह काका' कवि, छुट्टी है चाहे जो तू खा।
मरना ही है तो फिर क्यो मरता है भूखा ? 11 ॥

पेट-गति

या अनुरागी पेट की, गति समुझे नहिं कोय।
जेतौ भोजन डारिए, तेतो ऊचो होय।।
तेतो ऊचो होय, फूलकर होवे तम्बू।
हाथ फेरकर मुख से बोलो—हर-हर शम्भू'।।
कह 'काका', ऐसी, डकार आएगी फौरन।
लॉरी ओवर लोड, दे रही जैसे हौरन।। 12।।

—पिल्ला 1954

हजारी नोट पर चोट

कवि-सम्मेलन का मिला, कलकत्ते से तार।
एक हजार लिखे मगर, मिले तीन हज्जार।।
मिले तीन हज्जार, छोडकर चूल्हा-चाकी।
नोट पर्स मे दाब, उछलकर बोली काकी।।
"पहले कभी न देखे, नोट हजारी ऐसे।
सयोजक ने तिगुने, तुम्हे दे दिए कैसे?"

"नवरस मे हैं हास्य के, सबसे ऊचे दाम।
चमक रहा है विश्व मे, काका कवि का नाम।।
'काका' कवि का नाम, सुबह बाजार जाएगे।
टेलीवीजन सैट और साडिया लाएगे।।"
"सैया! लऊ बलैया, तुम पर मर जाऊ मैं।
मन मे आता, दाढी पकड लटक जाऊ मैं।।"

पहुचे जब बाजार मे, मिली भयकर न्यूज।
काकी जी के हृदय का, बल्ब हो गया फ्यूज।।
बल्ब हो गया फ्यूज, व्यर्थ रोती हो रानी।
नोटो से है मूल्यवान, आखो का पानी।।
कह 'काका', हम आलोचक से क्यो घबराए।
बडे नोट के, बडे भोग-उपभोग बताए।।

तेल नही स्टोव मे, क्यो भरते हो हाय।
नोट अगीठी मे रखो, बन जाएगी चाय।।

बन जाएगी चाय, और उपयोग बताए।
जो प्रयोगवादी हैं, उन्हे प्रयोग बताए॥
बिछा लीजिए टेबिल पर, ब्रेकफास्ट लीजिए।
या तबाकू पर लपेट, सिगरेट पीजिए॥

—काका-काकी के लव लैटर्स

हज़ूर और मज़ूर

भोंदूमल से छिड गया, औंधूमल का तर्क।
कहो, हज़ूर - मज़ूर म, क्या होता है फर्क॥
क्या होता है फर्क, न कुछ निर्णय हो पाया।
कूद बीच मे, हमने यह, जजमेन्ट सुनाया॥
जिसके नाचे कार, जान लो वह 'हज़ूर' है।
जिसके ऊपर कार, मान लो वह 'मज़ूर' है॥

—काका के कहकहे 1969

हथियार-रहस्य

अमरीका न हिन्द को, नही दिए हथियार।
ऐसी झूठी बात क्यो, कहते हो बेकार?
कहते हो बेकार, दृश्य देखा जन-जन ने।
मिया नियाज़ी की मार्फत, भेजे निक्सन ने॥
नीची नज़र किए सब, सैनिक खडे अभागे।
ढेर लगा था, जनरल मानिक शा के आगे॥

—जय बोलो बेईमान की 1973

हाउस फुल

स्वर्ग-नरक पर व्यर्थ क्यो, करते तर्क वितर्क।
लिखा भाग्य म नर्क तो, क्या पडता है फर्क॥
क्या पडता है फर्क, हाय क्या 'काका' व्याकुल।
बोर्ड नरक पर लगा, लिखा उस पर 'हाउसफुल'॥
होय विवश यमराज, स्वर्ग म भिजवा देंगे।
अथवा मर्त्यलोक को, वापिस करवा देंगे॥

—जय बोलो बेईमान की 1973

हाथरस के लाला

गगा जी के घाट पै, भई लपकन की भीर।
मलमल का कुर्ता पहिन, लटका ली जजीर॥
लटका ली जजीर, अगोछा कन्धे डाला।
लीजे झट पहिचान, हाथरस के हैं लाला॥
कह 'काका' कविराय, दुअन्नी की ला पुडिया।
भर गांजे की चिलम, जमा दे सिल पर लुढिया॥

—पिल्ला 1950

हार-पर-हार

जब से तुम को शर्मिला ने, पहनाया है हार।
जाने कैसा हार था? मिली हार-पर-हार॥
मिली हार-पर-हार, क्रिकिट की नाव डुबो दी।
इससे क्वारे अच्छे थे, नव्वाब पटौदी॥
शादी से पहले तो, तुम सेंचुरी बनाते।
अब दो-चार रनो पर ही, आउट हो जाते॥ 1॥

राय हमारी मान लो, समझो नही मजाक।
हिम्मत का हिट मारकर, दे दो उन्हे तलाक॥
दे दो उन्हें तलाक, इश्क से छुट्टी ले लो।
उन्हे फिल्म फिल्माने दो, तुम खुलकर खेलो॥
बेगम से मिलने की, धुन मे खो जाते हो।
इसीलिए तो जल्दी 'आउट' हो जाते हो॥ 2॥

कप्तानी छिन गई तो, नही किसीका दोष।
नारी ने ठडे किए, बडो-बडो के जोश॥
बडो-बडो के जोश, आप क्यो पछताते हैं?
प्रेम-युद्ध मे सभी, पिलपिले हो जाते हैं॥
कह 'काका' कविराय, सुना है ऐसा हल्ला।
बल्ला लाया साथ, शर्मिला जी का लल्ला॥ 3॥

—फिल्मी सरकार 1972

हिजडिस्तान

'काका' दाढी के तले, पहनें पेटीकोट।
मिल जाए इस युक्ति से, जनखा के सब वोट॥
जनखो के सब वोट, अर्ध नर आधे नारी।
सभी दग रह जाए, देखकर धजा हमारी॥
तोप तमचा व्यर्थ, चोट चितवन की मारें।
बडे-बडे मर्दुए, जग मे हमसे हारें॥

अनशन करके देश पर, हो जाए कुरबान।
हम भी अलग बनाएगे, अपना 'हिजडिस्तान'॥
अपना हिजडिस्तान, बन रहे इतने सूबा।
तो फिर पूरा क्यो न, होय मेरा मनसूबा?
'काका' दाढी का जवाब, दाढी से देंगे।
मोर्चा, पेटीकोट और साडी से लेंगे॥

—काका के कहकहे 1966

हितोपदेश

काल खाय सो आज खा, आज खाय सो अब्ब।
गेहू महगे हो रहे, फेरि खाएगा कब्ब॥
फेरि खाएगा कब्ब, अरे मूरख अज्ञानी।
जल्दी-जल्दी खा, दुनिया दो दिन की फानी॥
कह 'काका', भरपेट करो फिर चोर बाजारी।
पाप होय सब दूर, भजो राधे-गिरधारी॥

जब अपने घर का सभी, चाट चुको धन-माल।
कुछ दिन चरने के लिए, चले जाउ ससुराल॥
चले जाउ ससुराल, फेंक ऐसे हथकण्डे।
सास-ससुर दोनो, जल्दी हो जाए ठण्डे॥
कह 'काका' कविराय, लगा बाहर से ताला।
हो जा अतर्धान, बाध सब टाला-माला॥

'काका' या ससार म, व्यर्थ राम का नाम।
नोट जेब म होय तो, बन जावें सब काम॥

बन जाव सब काम, करेगी क्या महगाई।
जुग - जुग जीवें, कण्टरोल - दफ्तर - सप्लाई ।।
कह 'काका' कविराय, यही दुनिया म सारम्।
सब झंझट को छोड, भजो भैया कलदारम् ।।

—काका की फुलझडिया 1965

हिन्दी का मटका

हिन्दी भाषा राष्ट्रपद पर, करने अभिषिक्त।
ताल ठोकते थे वही, 'वीर' हो गए चित्त ।।
'वीर' हो गए चित्त, कुलक्षण ऐसे पाए।
इस झझट म सीट, हाथ से निकल न जाए ।।
कह 'काका' कवि, सविधान मे मारा झटका।
बदल पैंतरा फोड दिया, हिन्दी का मटका ।।

—काका के कारतूस 1963

हिन्दी-प्रेम

हिन्दी हिन्दू हिन्द का, जिनकी रग मे रक्त।
सत्ता पाकर हो गए, अगरेजी के भक्त ।।
अगरेजी के भक्त कहा तक करें बडाई।
मुह पर हिन्दी - प्रेम, हृदय अगरेजी छाई ।।
शुभचिन्तक श्रीमान, राष्ट्रभाषा के सच्चे।
'कानवेण्ट' म दाखिल, करा दिए हैं बच्चे।

—काका की कचहरी 194(

हिन्दी बनाम अंगरेजी

हिन्दी माता को करें, काका कवि डडौत।
बूढी दादी सस्कृत, भाषाओ का स्रोत ।।
भाषाओं का स्रोत, कि 'बारह बहुए' जिसकी।
आख मिला पाए उमसे, हिम्मत है किसकी ?
ईर्ष्या करके ब्रिटेन ने, इक दासी भेजी।
सब बहुओ के सिर पर, चढ बैठी अगरेजी ।।

गोरे-चिट्टे-चुलबुले, अग प्रत्यग प्रत्येक।
मालिक लट्टू हो गया, नाक नक्श को देख।।

नाक-नक्श को देख, डिग गई नीयत उसकी।
स्वामी को समझाय, भला हिम्मत है किसकी ?
अगरेजी पटरानी बनकर, थिरक रही है।
सस्कृत-हिन्दी, दासी बनकर सिसक रही है ॥

परिचित हैं इस तथ्य से, सभी वर्ग-अपवर्ग।
सास-बहू मे मेल हो, घर बन जाए स्वर्ग ॥
घर बन जाए स्वर्ग, सास की करे हिमायत।
प्रगति करे अवरुद्ध, भला किसकी है ताकत ?
किंतु फिदा दासी पर है, 'गृहस्वामी' जब तक।
इस घर से वह, नही निकल सकती है तब तक ॥

—काका हाथरसी · 1975

हिन्दी-भक्त

सुनो एक कविगोष्ठी का, अद्भुत सम्वाद।
कलाकार द्वय भिड गए, चलने लगा विवाद ॥
चलने लगा विवाद, एक थे कविवर 'घायल'।
दूजे श्री 'तलवार', नई कविता के कायल ॥
कह 'काका' कवि, पर्त काव्य के खोल रहे थे।
कविता और अकविता को, वे तोल रहे थे ॥

शुरू हुई जब वार्ता, बोले हिन्दी शुद्ध।
साहित्यिक विद्वान् थे, परम प्रचण्ड प्रबुद्ध ॥
परम प्रचण्ड प्रबुद्ध, तर्क मे आई तेजी।
दोनो की जिह्वा पर, चढ बैठी अगरेजी ॥
कह 'काका' घनघोर, चली इगलिश मे गाली।
सयोजक जी ने गोष्ठी, 'डिसमिस' कर डाली ॥

—काका कोला : 1968

"हिन्दू-कोड बिल"

साडी पहिनें देवता, देवी धारें पैन्ट।
कमरा उनका झाडिए, है आर्डर अरजैन्ट ॥
है आर्डर अरजैन्ट, बनाओ हलकी रोटी।
यदि कोई जल गई, तोड़ दें बोटी-बोटी ॥

कह 'काका' कविराय, मुसीबत आगे ठाडी।
बाबू जी अब जल्द, बाधना सीखो साडी॥

हो जाएगा पास जब, पूरा हिन्दू कोड।
देवी जी इस खुशी मे, चूल्हा देंगी फोड॥
चूल्हा देंगी फोड, छोड प्रीतम पर लल्ला।
क्लब मे दौडी जाए, हाथ म लेकर बल्ला॥
कह 'काका' कविराय, बुद्धि अपनी खो जाए।
सजनी साजन बने, साजन सजनी हो जाए॥

हिस्सा अपना छीनकर, मौज करें दामाद।
बटवारे के फेर म, ससुर होय बरबाद॥
ससुर होय बरबाद, चार हो जाए बिटिया।
समझ लीजिए डूब गई, फादर की लुटिया॥
कह 'काका' कविराय, मार कानूनी घिस्सा।
नाक पकड कर रखवा लेंगी, अपना हिस्सा॥

राय हमारी एक है, मान चहे मत मान।
झगडा सब मिटि जाए, यदि बद करो सतान॥
बन्द करो सतान, कभी घर को मत जाओ।
बिछा सडक पर खाट, वहीं लम्बे हो जाओ॥
कह 'काका' कविराय, दूर हो विपदा सारी।
बुरी लगे तो लौटा देना, राय हमारी॥

—म्याऊ 1954

हिप्पीवाद

'काका' हिप्पीवाद से, क्या घबराते आप ?
'हरे कृष्ण' की आड मे, छिपें हज़ारो पाप॥
छिपें हज़ारो पाप, साथ म हिप्पिन चेली।
अलकोहल की गध, वासना की रगरेली॥
इस विलायती नुस्खे से, मिट जाता है गम।
रहो लगाते दम, कि जब तलक है दम मन्दम॥

—जय बोलो बेईमान की 1973

हेमा-धर्मेन्द्र विवाह

धन्य-धन्य धर्मेन्द्र जी, खूब निभाया धर्म।
निंदक क्या समझें भला, इस विवाह का मर्म ?
इस विवाह का मर्म, आपको था यह 'डाउट'।
हेमामालिनी जमी हुई, हम हो गए आउट ॥
अर्थ खींच करके, पति को समर्थ कर देगी।
होंठो से दिल, नोटों से कमरे भर देगी ॥

पहली पत्नी भर रही, सिसक-सिसक कर आह।
बच्चे गाली दे रहे, मत करिए परवाह ॥
मत करिए परवाह, तीन दशरथ की रानी।
एक और ले आना, जब हो जाए पुरानी ॥
केस चलाए तुम पर, है किसका बलबूता।
गजा कर देगा उसको, चाँदी का जूता ॥

अखबारों मे पढी जब, इस शादी की न्यूज।
यारों की उम्मीद के, बल्ब हो गए फ्यूज ॥
बल्ब हो गए फ्यूज, लगे 'क्यू' मे बेचारे।
लपक ले गए आप, रह गए सभी कुआरे ॥
कह 'काका', गोदी म, जब मुन्ना आएगा।
मधुर स्वरों मे, 'हे-मा, हे मा' चिल्लाएगा ॥

—काका के कारतूस 1963

... ... : १८ सितम्बर १९०६
भाषा-ज्ञान : हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी
रुचि . हास्य-व्यग्य, सगीत, नाट्य एव चित्रकला
सस्थापक 'सगीत' मासिक एव सगीत कार्यालय, हाथरस
कृतित्व हास्य-व्यग्य के रचनात्मक साहित्य की ३२ पुस्तको, सगीतकला पर चार ग्रथो एव तुकात-कोश व राग-कोश के रचयिता, १५० तैलचित्रो के चित्रकार
ग्रामोफोन रिकार्ड स स्वय की आवाज म एच०एम०वी० द्वारा तीन डिस्क रिकार्ड्स तथा 'अमरनाद' द्वारा २ कैसेट
फिल्म : राजश्री प्रोडक्शन्स (बबई) द्वारा निर्मित फिल्म —'कवि-सम्मेलन' मे कविता पाठ
प्रदाता प्रतिवर्ष हास्य-व्यग्य के एक श्रेष्ठ कवि को १० हजार रु० और ब्रजभाषा के श्रेष्ठ कवि को २५०० रु० के काका हाथरसी पुरस्कार' प्रदाता
कुछ उपलब्धिया · १९६६ मे 'काका हाथरसी हीरक-जयती समारोह' मे भारत सरकार के सूचना एव प्रसारण मत्री द्वारा सम्मानित। १९७४ मे थाईलैड व सिंगापुर का विदेश भ्रमण, १९७६ म ठिठाली पुरस्कार द्वारा हास्य रस के सर्वश्रेष्ठ कवि के रूप म पुरस्कृत। १९७९ म उपराष्ट्रपति जी द्वारा 'कलारत्न' की उपाधि से विभूपित।
स्थायी पता सगात कार्यालय, हाथरस २०४१०१